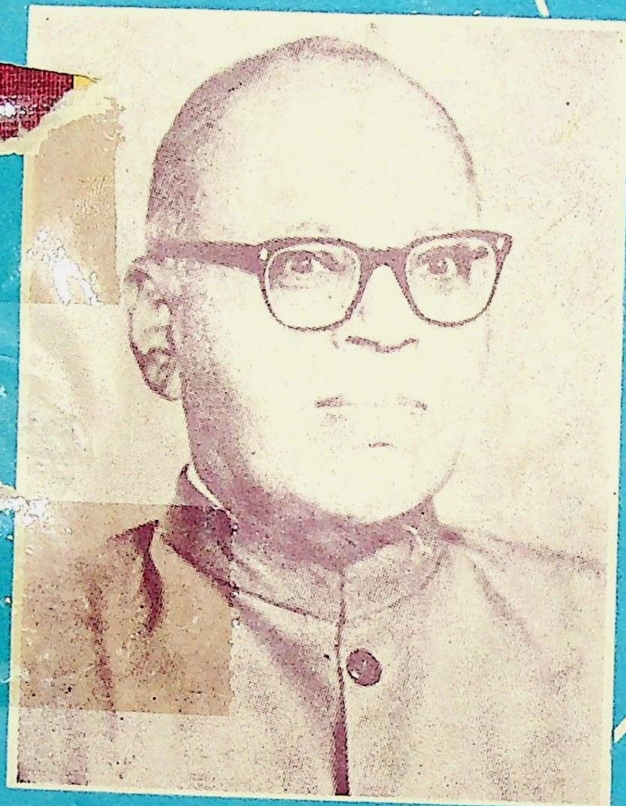
बाबू वृन्दावनदास के पत्र



—रमण शाण्डिल्य

बाबू वृन्दावन दास की रुचि मूलतः साहित्यिक है····इनके जीवन का यह तीसरा काल है, इसमें ये सर्वतो-भावेन साहित्य सेवा के लिए समर्पित हो चुके हैं। तन मन धन सभी इन्होंने इस समय साहित्य सेवा के निमित्त सरस्वती मंदिर में चढ़ा दिया है। फलतः एक ही छलांग में ये सूर्य की भाँति हिन्दी सुमेरु पर जगमगाते दिखायी पड़ रहे हैं।

—(डॉ०) सत्येन्द्र

उनकी साहित्य सेवा ४०-४५ वर्षों के विस्तृत काल फलक पर फैली हुई है।

—(डॉ०,) रामशंकर द्विवेदी

श्री वृन्दावनदास जी में ऐसे अनेक गुण पाये जाते हैं, जो वर्तमान समाज में अत्यन्त दुर्लभ हो गए हैं।

—(डॉ०) बनारसी दास चतुर्वेदी

बाबू वृन्दावन दासजी ब्रज की अद्वितीय विभूति हैं।

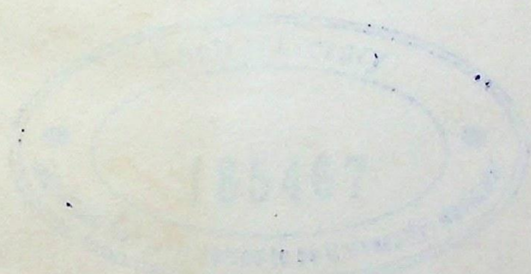
—गौरी शङ्कर द्विवेदी 'शङ्कर'

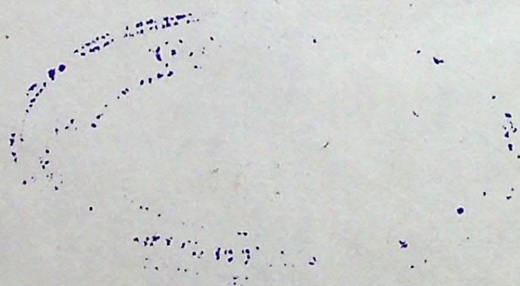
मेरी तो कई बार इन सम्पादकीय लेखों को पढ़कर यह इच्छा हुई है कि दिल्ली के केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय का अध्यक्षपद बाबू जी को दे दिया जाना चाहिए, भले ही वह ५ वर्ष के कण्ट्रेक्ट पर ही क्यों न हो। इससे लाखों करोड़ों रुपयों का बजट हिन्दी की सच्ची सेवा में लग सकेगा।

—रमेश चन्द्र दुबे

बाबू वृन्दावन दास प्रत्येक दृष्टि से वही भूमिका निवाह रहे हैं जो लगभग सौ वर्ष पूर्व हरिश्चन्द्र ने स्वीकार की थी।

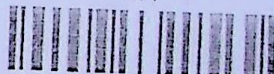
—निरंकुश

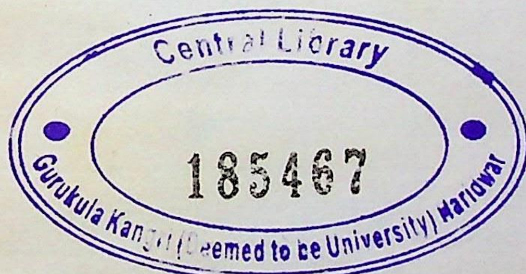




बाबू वृन्दावनदास के पत्र

सम्पादक :
श्री रमण शाण्डिल्य





साहित्य प्रकाशन
नई सड़क, मालीवाड़ा दिल्ली—६

बाबू वृन्दावनदास के पत्र

—रमण शाण्डिल्य

★

प्रथम संस्करण : १ जनवरी सन् १९७८

मूल्य : १२५-००

प्रकाशक : साहित्य प्रकाशन
नई सड़क, मालीवाड़ा, दिल्ली-६

मुद्रक : अजन्ता फाइन आर्ट प्रिन्टर्स, मथुरा.
ओम प्रिंटिंग प्रेस, मथुरा.

अनुक्रमणिका



साहित्य वारिधि बाबू वृन्दावनदास



समकालीन इतिहास के मूल्यवान दस्तावेज

—रमण शाण्डिल्य

बाबू वृन्दावनदास के पिछले ५० वर्षों के जीवन काल पर दृष्टिपात करने से ज्ञात होता है कि इनका जन्म हिन्दी के संवर्द्धन और प्रचार के लिए ही हुआ। १९२७-२८ ई० से ही आपकी लेखनी अविराम चलती रही है। भारतीय इतिहास और संस्कृति के क्षेत्र में आपकी घोर निष्ठा है। इसके साक्षी हैं हिन्दी की सुधा, माधुरी, विशाल भारत, विश्वमित्र, नागरी प्रचारिणी पत्रिका, जनार्दन, संगठन, चाँद, दैनिक नागरिक, गोरक्षण, भविष्य, सरस्वती, नवयुग सन्देश, सैनिक, अमर उजाला, जागरण, ब्रज-भारती आदि जैसी प्राचीन पत्र-पत्रिकाएँ जिनमें हिन्दी हितार्थ आपके निर्मल विचार भरे पड़े हैं। 'भारतीय संस्कृति के विविध परिदृश्य' से आपकी अनमोल कृति है। 'प्राचीन भारत में हिन्दू राज्य' ने तो आपको इतिहासकारों की पंक्ति में खड़ा कर दिया है। इस वार्द्धक्य में भी आपमें युवकोचित उत्साह है। श्री उमाशंकर शुक्ल 'उमेश' ने आपके इसी उत्साह को इन पंक्तियों में व्यक्त किया है—"बाबू वृन्दावनदास जी वृद्धावस्था में भी कितने सक्रिय एवं कर्तव्यनिष्ठ हैं इसका अनुमान उनकी विभिन्न दिशाओं में पल रही गतिविधियों को देखकर लगाया जा सकता है। वे अपनी धुन के पक्के और अपने सिद्धान्त पर दृढ़ रहने वाले व्यक्ति हैं। अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए वे एक साधक की भाँति सतत सचेष्ट रहते हैं। गीता का कर्मयोग उनको पाकर साकार हो उठा है। यही कारण है कि उनका कर्तव्यपरायण एवं जीवन्त व्यक्तित्व आज हर स्थान पर समादृत है।"

बाबूजी द्वारा लिखे गये ये पत्र 'विभिन्न दिशाओं में चल रही' उनकी गतिविधियों को स्पष्ट करते हैं। ये पत्र बाबूजी के विचारों के वाहक तो हैं ही विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत साहित्यिकों के व्यक्तित्व और कृतित्व पर भी प्रकाश डालते हैं।

यहाँ जिन पत्रों को स्थान दिया गया है उनके प्राप्तकर्ता साहित्यकार उत्तर प्रदेश, बिहार, बंगाल, दिल्ली, राजस्थान आदि प्रदेशों में कश्मीर से केरल एवं अरुणाचल प्रदेश से महाराष्ट्र तक के लेखक कवि हैं। अधिकांश पत्र तो मथुरा में ही लिखे गये हैं लेकिन कुछ पत्र मथुरा (प्रकाश भवन) से बाहर बम्बई से लिखे गये हैं। बाबूजी यात्राक्रम में भी पत्र लिखने के अभ्यस्त हैं।

इनमें अंग्रेजी में लिखा गया पत्र एक भी नहीं है। हाँ एक अंग्रेज लेखक अलवर्ट क्रू के कथन का हवाला डा० लल्लन मिश्र को लिखे गये पत्र में अवश्य दिया है। बाबूजी पहले अंग्रेजी में पत्र लिखने में माहिर रहे हैं।

मेरा विचार था यहाँ कुछ पारिवारिक पत्रों को भी स्थान दूँ जिससे पाठक इतने बड़े साहित्यिक के जीवन को कुछ और निकट से जान सकें।

प्रारम्भिक जीवन के पत्र भी प्राप्त करने में मैं असफल रहा।

हिन्दी सेवा यात्रा में बाबूजी ने अनेक देशी-विदेशी विद्वानों से भी पत्र प्राप्त किये हैं। मेरी प्रबल इच्छा रही है बाबूजी के संग्रह में आये ऐसे कुछ मूल्यवान पत्रों को भी यहाँ स्थान दूँ किन्तु स्थानाभाव के कारण यह सम्भव नहीं हो सका।

मुझे विश्वास है बाबूजी के ये पत्र मात्र उनके विचारों के ही वाहक न होकर हिन्दी साहित्येतिहास पर प्रचुर सामग्री प्रदान करते हैं। ये पत्र बाबूजी के समकालीन इतिहास के मूल्यवान दस्तावेज हैं।

कृष्णाष्टमी
६ सितम्बर १९७७ ई०

रमण शाण्डिल्य
जवाही

प्राक्कथन

बाबू वृन्दावनदास के पत्र संस्मरण, रिपोर्ताज, डायरी आदि यात्रा-विवरण पढ़ने के आनन्द, चलचित्र देखते वक्त की उत्सुकता, ऐतिहासिक विवरणों के रोमांच और जीवनी लेखन की शैली लिए हुए हैं। ये पत्र मात्र बाबूजी के जीवन और कार्यों के ही दस्तावेज नहीं हैं वरन् उनके समकालीनों के सम्पूर्ण व्यक्तित्व और कृतित्व के प्रकाशक हैं।

"बाबूजी जनपदीय ध्वज के दण्ड, समर्पणशील साहित्यसेवी गुणानुवादक प्रेरक तथा अपने आप में एक व्यक्ति नहीं संस्था है। ऐसे साहित्य सेवी के अनगिनत बिखरे मूल्यवान पत्रों का संग्रह कर आप उसे प्रकाशित करने का महान यज्ञ कर रहे हैं। आप अपनी सम्पादन कुशलता, अवधानता पूर्ण संचयशीलता, गुणग्राहकता तथा धीरता से इस महान दायित्व का निर्वाह कर ले जायेंगे, इसका विश्वास मेरे मन में है। स्वीकार-संग्रह करते समय विविधता पर भी ध्यान देने की कृपा कीजिएगा। विभिन्न पत्र पुष्पों में से कुछ पाटल, कुछ कमल कुछ जुही, कुछ चमेली, रजनीगंधा, चम्पा, गेन्दा सभी कुछ अंगीकार कीजिएगा। रंग-विरंगे, विविध सुवास और रूप के सुदर्शन पत्र पुष्प।"[1] बाबूजी के पत्र सचमुच में अनेक रंग और गन्ध लिए हुए हैं।

वस्तुतः पूर्व से ही मेरे मन में ये विचार पलते रहे हैं कि बाबूजी के पत्र विविधधर्मी होने के साथ-साथ एक लेखक एक सम्पादक, जनपदीय भाषा साहित्य के महान् संरक्षक के दायित्व बोध से युक्त ही नही मिलते बल्कि अपने युग के सर्वश्रेष्ठ हिन्दी उन्नायकों की अगली पंक्ति में खड़े मिलते हैं। हिन्दी की आश्रयदाता परम्परा को नवरूप देने वाले महान साहित्यकार बाबू वृन्दावनदास के व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डालते हैं ये पत्र।

डा० भगवानसहाय पचौरी ने ठीक ही तो लिखा है—"हिन्दी में जनपदीय आन्दोलन को नया जन्म देकर हिन्दी की विविध बोलियों के कोष-प्रकाशन की योजना को उन्होंने नया बल दिया है। अहिन्दी क्षेत्रों में हिन्दी के लिए पुरस्कारों की योजना का भी उन्होंने सूत्रपात किया है। गत कुछ वर्षों से वे हिन्दी के प्रचार-प्रसार हेतु सचेष्ट और तन-मन-धन से सक्रिय हैं। अपने शेष जीवन को वे एक प्रकार से हिन्दी सेवार्थ दान कर चुके हैं। सैकड़ों हिन्दी सेवियों के लिए वे प्रेरणा के स्रोत बन चुके हैं।"[2]

---

१. मेरे नाम आंजनेय जी का २१-१-७५ का पत्र।

२. १ जनवरी १९७१ को लिखित प्रचारित एक पत्रक से।

उनके पत्रों का संचय करते वक्त अपने युग को प्रभावित करने वाला उनका व्यक्तित्व बार-बार मेरे सामने उभर कर आया है। ब्रजभाषा-साहित्य संस्कृति, जनपदीय भाषा साहित्य की समृद्धि, हिन्दी के अनन्त अभावों की पूर्ति एक समृद्ध राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी को देखने की उनकी चाह, अहिन्दी भाषी क्षेत्रों और विदेशों में हिन्दी को सम्मानप्रद स्थान दिलाने का कार्य दिवंगत साहित्यकारों की स्मृति रक्षा, जनपदीय भाषाओं का कोश प्रकाशन नवोदितों को स्थापित करने का कार्य, कलाकारों, संगीतज्ञों स्वातंत्र्य सेनानियों का सम्मान आदि सैकड़ों सन्दर्भों से जुड़े आपके पत्र सागर की भाँति विशाल और तरंगित हैं।

पत्र-संग्राहकों के नामानुक्रम से ही पत्र सकलित किए गये हैं। उनमें सभी पत्र-संग्राहक हिन्दी के ख्यातिलब्ध साहित्यकार हैं। हिन्दी की जनपदीय भाषाओं के क्षेत्र में कार्य करने वाले विद्वान् सर्वश्री नाहटा आंजनेय, डा० सुमन, डा० सहल, पं० कृष्णानन्द गुप्त, कुवेर नाथराय, पं० गणेश चौवे, डा० बुधौलिया गोविन्द अग्रवाल, गौरीशंकर द्विवेदी शंकर, चकोर, पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय, डा० सलिल, डा० पचौरी, सेंगर, डा० सिसोदिया, डा० रंजन, मित्र, रामनगीना राय, रामनारायण उपाध्याय, रामरीझन रसूलपुरी, डा० रामशंकर द्विवेदी, डा० आर्य, श्यामसुन्दर बादल, डा० तिवारी, हरिश्चन्द्र प्रसाद और हरिश्चन्द्र सिंघल जी के साथ हुए पत्राचार वाले पत्रों में मुख्य विषय हिन्दी और जनपदीय भाषा साहित्य की समृद्धि ही है। साथ में अन्य सूचनाएँ भी संयुक्त हैं। ये पत्र बड़े ही महत्वपूर्ण और साहित्येतिहास की सामग्री लिए अर्घ्य दे रहे हैं। जनपदीय भाषा-साहित्य के क्षेत्र में कार्यरत सर्वश्रेष्ठ कार्यकर्ताओं के कार्यों विचारों और व्यक्तित्व के उद्घाटक ये पत्र जनपदीय भाषा-साहित्य के इतिहास के अङ्ग बन गये हैं। ब्रजभाषा, राजस्थानी, बुन्देली, भोजपुरी, अंगिका, निमाड़ी और वज्जिका के समृद्ध, सुरुचिपूर्ण साहित्य की अद्यतन प्रगतियों से ये पत्र परिचय कराते हैं। करायें भी क्यों न! बाबूजी अन्तर्जनपदीय हिन्दी परिषद् के संयोजक जो ठहरे। 'योजकस्त दुर्लभः' को साकार कर दिया है बाबूजी ने इन पत्रों के द्वारा सम्पूर्ण हिन्दी वाङमय को आन्दोलित कर।

डा० सुमन के नाम लिखे दोनों ही पत्र बाबूजी के जीवन कार्य और विचारों के दस्तावेश हैं। वहीं श्री आंजनेय के नाम लिखा पत्र उनके पत्र-साहित्य सम्बन्धी दृष्टिकोण का दस्तावेज है। डा० माधवन के नाम लिखे पत्र में माधवन के चिर मूल्यवान साहित्य का पता चलता हैं वहीं 'बाबू वृन्दावनदास पुस्तकालय वाचनालय एवं संग्रहालय के लेखा जोखा भी हैं। आचार्य पद्मसिंह

शर्मा स्मृति समारोह (हरिद्वार) का उल्लेख श्री कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर, डा० स्वर्ण किरण के नाम लिखे पत्रों में है ।

डा० केदारदत्त तत्राड़ी, श्री उदयशंकर दुबे शील, तोताराम पंकज, ब्रजमोहनलाल शर्मा के नाम वाले पत्र विभिन्न विषयों की ओर इंगित करते हैं।

श्री काजी अशरफ महमूद के नाम वाले पत्र काजी साहब के कृतित्व व्यक्तित्व का परिचय देने के साथ-साथ बाबूजी की हिन्दी के प्रति निष्ठा और आस्था के प्रमाण हैं।

श्री यशपाल जैन के नाम वाले पत्र 'हरिशंकर शर्मा स्मृति ग्रन्थ' और 'डा० वासुदेवशरण अग्रवाल के पत्र' नामक ग्रन्थों के प्रकाशन के लिए की गई उनकी तत्परता के परिचायक हैं।

श्री रमेश गुप्त के नाम वाले पत्र अ० भा० ब्रज साहित्य मण्डल मथुरा का सम्पूर्ण इतिहास बतला देते हैं।

श्री रमेशचन्द्र दुवे, डा० राजेन्द्र रंजन, डा० भगवानसहाय पचौरी डा० आनन्दस्वरूप पाठक, श्री ह० सिं० निरंकुश, डा० आर्य, डा० सिसोदिया, पं० कृ० नं० गुप्त, पं० गणेश चौबे, श्री गौरीशकर द्विवेदी. श्री रसूलपुरी. डा० द्विवेदी, श्री रामनारायण उपाध्याय, श्री बादल के नाम लिखे पत्र बाबूजी के साथ इनके अत्यन्त ही निकटवर्ती और मधुर सम्बन्ध के द्योतक हैं।

पत्र संकलन में मैंने सभी तरह के पत्र जुटाने के भरसक प्रयत्न किये हैं। उन्हीं प्रशंसनीय पत्रों को यहाँ रक्खा गया है जिनके प्रमाण उपलब्ध हैं। ऐसे पत्र जिनसे पत्र लेखक और पत्र प्राप्तकर्ता दोनों के व्यक्तित्व-कृतित्व का विवेचन मिलता है, यहाँ हैं।

समानशील, गुण, सेवा, निष्ठा, परोपकारिता, गुण-ग्राहकता, परिष्कृत रुचि और हिन्दी भाषा साहित्य की समृद्धि के लिए किये गये सारे प्रयत्नों के अनेक बिम्ब-प्रतिबिम्ब इन पत्रों में दीख पड़ते हैं।

अलग-अलग पत्र संग्राहकों से प्राप्त पत्रों को तिथिक्रम से ही सजाया गया है। इसका मैंने सदा ध्यान रखा है कि कोई भी महत्वपूर्ण पत्र छूटने न पाये। इस संकलन से बाबूजी के विचारों, कार्यों और जीवन पर काफी प्रकाश पड़ता है।

यहाँ एक बार उन सभी परिचित-अपरिचित बन्धुओं का हार्दिक स्वागत करता हूँ जिनकी सहायता (पत्र प्रेषण) से इस कृति को हिन्दी जगत के सामने ला सका और बाबूजी को धन्यवाद किस तरह दूँ ?

बाबू वृन्दावनदास के पत्रों में ६ पत्र संग्राहकों (सर्वश्री अनिलकुमार राय 'आंजनेय', कुलदीपनारायण राय 'झड़प', डा० बनारसीदास चतुर्वेदी, मधुसूदन चतुर्वेदी, युगलकिशोर चतुर्वेदी और रमण शाण्डिल्य) के अनेक पत्र हैं। हालांकि पत्र-संग्रह में पत्र संग्राहकों विभिन्न क्षेत्रों दिशाओं में कार्यरत विद्वानों को प्र० सं० में लिखे गये पत्र जहाँ विविधधर्मी हैं वहीं इस पत्रों में बाबूजी के सम्पूर्ण जीवन, विचार कार्य पद्धति एवं कृतियों के बारे में विस्तार से जानने का अवसर मिलता है। उनकी हिन्दी सेवा, जनपदीय भाषाओं के माध्यम से हिन्दी की वृद्धि ब्रज-साहित्य मण्डल एवं उत्तर प्रदेशीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन के कार्य कलाप, ब्रजभारती का सम्पादन नई पत्र-पत्रिकाओं को प्रोत्साहन नये लेखकों को मार्ग-दर्शन वहीं शोधी विद्वानों को सत्परामर्श, पुस्तकालयोपयोगी योजना, अन्तरजनपदीय हिन्दी परिषद्, सभा, सम्मेलन, बैठक एवं यात्राओं के विवरण यहाँ सहज रूप में उपलब्ध हैं।

बाबूजी प्रतिदिन अनेकों पत्र लिखते हैं। पत्र लेखन को आप 'एकान्तता को विनष्ट करके दो मित्रों का मिलन' मानते हैं। श्री अनिल कुमार राय आंजनेय के नाम लिखे १-२-७५ वाले पत्र में आप लिखते हैं—"एक बात मैं आपसे कह दूँ प्रशंसात्मक कथ्यों का प्रयोग मुझे रुचिकर है, अधिकारी व्यक्ति की प्रशंसा करने में मुझे किसी प्रकार का भय भी नहीं है। पात्रता की सराहना गुण ग्राहकता का प्रथम सोपान है, उसकी उपेक्षा एक प्रकार की अवहेलना है है जो कदापि वांछनीय नहीं। अधिकारी व्यक्तित्व में एक सम्मोहिनी शक्ति है एक प्रकार का आकर्षण है जिसके वशीभूत होकर पत्र लेखक अपने हृदयोद्गार प्रकट करता है और स्थिति के इस सन्दर्भ में उस पर किसी प्रकार के आरोप का औचित्य नहीं है। पत्र-लेखक की सामग्री का श्रेय मेरे विचार से उस व्यक्ति को अधिक है जिसको पत्र लिखा गया है।"

इस प्रकार के विचार 'डा० वासुदेवशरण अग्रवाल के पत्र' शीर्षक ग्रन्थ के 'प्राक्कथन' में पृ० २ पर भी आपने प्रकट किए हैं। किसी को पत्र लिखने की रुचि उस व्यक्ति के उदात्त व्यक्तित्व के कारण ही किसी पत्र-लेखक में उत्पन्न होती है।

बाबूजी द्वारा श्री आंजनेय के लिखे गये पत्रों के सम्बन्ध में २७-१-७५ वाले अपने पत्र में श्री आंजनेय लिखते हैं—"बन्धुवर शाण्डिल्य जी, बहुत दिनों के बाद आपकी आज्ञा का पालन कर रहा हूँ। क्षमा करेंगे। बाबूजी जनपदीय ध्वज के दण्ड, समर्पणशील साहित्य सेवी, गुणानुवादक, प्रेरक तथा अपने आपमें

एक व्यक्ति नहीं संस्था हैं। ऐसे साहित्य सेवी के अनगिन बिखरे मूल्यवान पत्रों का संग्रह कर आप उसे प्रकाशित करने का महान् यज्ञ कर रहे हैं। बाबूजी के कमीवेश १०० पत्र मेरे पास हैं। मेरी मधुकरी धन्य है। विनिया-विछिया करना एक कठिन कार्य था। सभी पत्र मूल्यवान हैं। लेकिन मोह-ममता एवं अपनत्व के कारण कहीं पिष्ट-पेषण न हो जाय, इसका विवेक बनाए रखने के लिए मैं प्रयत्नशील था।

विविधता पर भी ध्यान देने की कृपा कीजिएगा। पत्र-पुष्पों में से कुछ पाटल, कुछ कमल, कुछ जुही, कुछ चमेली, रजनी गंधा, चम्पा, गेंदा सभी कुछ अंगीकार कीजिएगा। रंग-विरंगे, विविध सुवास और रूप के सुदर्शन पत्र पुष्प।"

वस्तुतः बाबूजी के ये पत्र जिन्हें उन्होंने आंजनेय जी को लिखे हैं निर्मल सुवास और रङ्ग से भरे हुए हैं।

पत्रों का चयन करते हुए मैंने सदा इस बात का ध्यान रखा है कि इनसे बाबूजी के विचार, कार्य, सुरुचि, शील, लक्ष्य सेवा, निष्ठा, परोपकारिता, गुणग्राहकता पर विशेष रूप से प्रकाश पड़े। पत्र लेखक के साथ ही पत्र प्राप्त-कर्ता के व्यक्तित्व कृतित्व का भी पता चले। पाठक उन घटनाओं स्थितियों से परिचय प्राप्त कर सके जिसका उल्लेख किसी लेख में नहीं मिलता है।

श्री आंजनेय को लिखे गये पत्रों में अनेक शोध विषयक मूल्यवान ग्रन्थों की चर्चा है। डा० श्री बनारसीदास चतुर्वेदी के पत्र, ब्रजभारती, सस्ते मूल्य वाली पुस्तकालयोपयोगी योजना, रूस में हिन्दी की स्थिति, डा० वासुदेवशरण अग्रवाल के पत्र एवं उनकी जनपदीय योजना, ज्ञानतरंगिनी, श्री नरेश पाण्डेय चकोर, चतुर्मुख के सहजानन्द सरस्वती एवं पं० पद्मसिंह शर्मा स्मृति अङ्क हरिद्वार में अन्तरजनपदीय परिषद् की बैठक, श्री उदयशंकर शास्त्री कृत 'पं० पद्मसिंह शर्मा के पत्र', जनपदीय आन्दोलन की वर्तमान अवस्था, दिशा, प्रवृत्ति एवं रूप, चतुर्मुख के श्रद्धांजलि अङ्क के लिए सामग्री जुटाने का कार्य, इलाहाबाद में भोजपुरी सम्मेलन, मथुरा के श्री वृन्दावनदास पुस्तकालय, वाचनालय एबं संग्रहालय, की स्थापना का उल्लेख मुख्य रूप से मिलता है। श्री आंजनेय के नाम लिखे अनेक पत्र यहाँ संकलित हैं।

श्री कुलदीप नारायण राय 'झड़प' जी के नाम लिखे गये अनेक पत्र यहाँ प्रस्तुत हैं। लगता हे वर्ष ७३ के उत्तरार्द्ध में बाबूजी के साथ श्री झड़प जी

का पत्र-सम्पर्क हो सका। श्री झड़प जी की कृति गोस्वामी तुलसीदास जीवन वृत्त और व्यक्तित्व और 'विकास की धारा' के साथ ही बाबूजी का आपके साथ सम्पर्क हुआ। बाबूजी ने आपकी इन दोनों कृतियों की समीक्षा की थी।[1] दरअसल में पण्डित बनारसीदास जी चतुर्वेदी ने ही इन दोनों विद्वानों के बीच मैत्री के सूत्र जोड़े जो जनपदीय आन्दोलन की दिशा में क्रान्तिकारी सिद्ध हुए।

श्री झड़प जी को लिखे गये पत्र जनपदीय आन्दोलन की गतिविधियों, अन्तरजनपदीय परिषद् एवं उसके कार्य, सदस्यों आदि से ही अधिकांश रूप में सम्बद्ध हैं। इन पत्रों में अनेक महत्वपूर्ण सूचनाएँ हैं यथा—'जनपदीय आन्दोलन की रूपरेखा' जो 'वृत्तान्त' नामक एक पत्र में छपा था, पद्मसिंह शर्मा स्मृति ग्रन्थ, पं० गणेश चौबे, श्री रमेशचन्द्र दुबे, श्री आंजनेय हरिद्वार का समारोह, अन्तरजनपदीय हितों के रक्षार्थ बाबूजी के निर्मल विचार (पत्र ४-२-७४, ८-२-७४) डा० श्यामसुन्दर बादल के जनपदीय आन्दोलन सम्बन्धी विचार (झाँसी अधिवेशन) विदुर कुटी में महाभारत के काल निर्णय सम्बन्धी गोष्ठी वज्जिका के विद्वानों को परिषद् सम्बन्धी सूचनाएँ भेजने का आग्रह, विभिन्न लोकभाषाओं के विद्वानों से कम से कम ३० लेखों की माँग, अन्तरजनपदीय परिषद् की बैठक (मथुरा) आदि का इन पत्रों में भरपूर उल्लेख किया गया है।

बाबूजी द्वारा पं० बनारसीदास चतुर्वेदी के नाम लिखे गये पत्रों में सबसे पुराना पत्र १८-२-१९६६ ही मुझे मिला है। यद्यपि बाबूजी हिन्दी में ४०-४५ वर्षों से लेखनरत हैं किन्तु श्री चतुर्वेदी जी के निकट सम्पर्क में आप वर्ष १९६३ ई० में ही आ सके जब आपने ब्रज-साहित्य मण्डल के सभापति का पद सुशोभित किया। डा० वासुदेवशरण अग्रवाल की ही भाँति श्री चतुर्वेदी जी भी ब्रज साहित्य मण्डल के संस्थापकों में रहे हैं। सम्पर्क शीलता और संयोजकत्व की गहरी प्रवृत्ति के कारण ही चतुर्वेदी जी ने बाबूजी को आगरा कमिश्नरी का साहित्यिक कमिश्नर की संज्ञा से अभिहित किया था।

अपने संग्रह के सभी पत्रों को यहाँ संकलित करना मैंने उचित नहीं समझा। भविष्य में सम्भव हुआ तो उन सबों को एक पुस्तक का आकार देकर प्रकाशित कराऊँगा। इन पत्रों से जनपदीय दृष्टिकोण का थोड़ा भी फैलाव हो सका तो अपना श्रम सार्थक समझूँगा। बाबूजी के व्यक्तित्व और कृतित्व का मूल्यांकन तो होगा ही।

—**रमण शाण्डिल्य**

---

१. **ब्रजभारती, सं० २०३०, वर्ष २७, अङ्क—२, पृ० ३६–३७।**



श्री रमण शांडिल्य

—संपादक



भूमिका

डा० रामशंकर द्विवेदी लिखते हैं 'पत्र साहित्य का महत्व इसलिये है कि उसमें 'बने-ठने, सजे-सजाये' मनुष्य का चित्र नहीं वरन् एक चलते-फिरते मनुष्य का स्नैप शार्ट मिल जाता है, लेखक के वैयक्तिक सम्बन्ध, उसके मानसिक और बाह्य संघर्ष तथा उसकी रुचि और उस पर पड़ने वाले प्रभावों का पता चल जाता है। जिन पत्रों के विषय और शैली दोनों ही महत्त्वपूर्ण हों, वे साहित्य की स्थायी सम्पत्ति बन जाते हैं।.......पत्रों में सब विधाओं की अपेक्षा व्यक्तित्व की झलक अधिक रहती है।' तो बाबू वृन्दावनदास अपने पत्रों में हमें उसी अनसँवरे रूप में मिलते हैं। खुला हृदय, मुक्त विचार अपार स्नेह। विषय और शैली दोनों ही दृष्टियों से आप पत्र लेखन के क्षेत्र में बाजी मार ले गये हैं। आपके पत्र विभिन्न विषयों को अपने में समेटे हुये हैं। पत्र लिखने की आदत आपकी पचास वर्ष पुरानी है। आप तब अँग्रेजी में लेटर्स टू एडीटर' स्तम्भ के अन्तर्गत विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में पत्र लिखा करते थे। उनके विषय सामयिक और तत्कालीन होते थे। बाद में उन्होंने अनुभव किया पत्र हिन्दी में ही लिखे जाने चाहिये।

जब आप 'ब्रज साहित्य मण्डल, मथुरा' के अध्यक्ष पद पर विराजमान हुए और 'ब्रजभारती' (त्रै०) का सम्पादन भार भी आपके ही कन्धों पर आया तो पत्र लेखन की संख्या और रफ्तार दोनों में ही वृद्धि हुई। घण्टों पत्र लेखन की आदत सी पड़ गई।

साठ के दशक में जो पत्र आपने हिन्दी के विभिन्न विद्वानों, लेखकों, कवियों, पत्रकारों सम्पादकों विदेशी हिन्दी विद्वानों, पाठकों अथवा सरकारी अधिकारियों या विश्वविद्यालयों के मान्य प्राध्यापकों या समीक्षकों के नाम लिखे वे पत्र साहित्य की अमूल्य निधि बन गये। यहाँ संकलित अधिकांश पत्र ऐसे ही हैं।

आपके पत्रों में मात्र आपके विचार ही व्यक्त नहीं हुये हैं वरन् आपका मानवीय रूप खिल उठा है। आप एक साथ हिन्दी के महान् विद्वान ही नहीं, सम्पादक, पत्रकार, यात्रा-साहित्य-लेखक, संस्मरण-लेखक हिन्दी प्रचारक, जनपदीय भाषाओं के संरक्षक एवं मनीषी, पत्र साहित्य के संग्राहक-विश्लेषक ब्रजभाषा और ब्रज संस्कृति के पोषक, इतिहास एवं पुरातत्व के आचार्य के रूप में भी इन पत्रों में दिखाई देते हैं। निस्सन्देह भारतेन्दु हरिश्चन्द्र और महावीर

प्रसाद द्विवेदी के बाद साहित्याकाश में उदित होने वाले आप एक जाज्वल्यमान नक्षत्र की भाँति लगते हैं। राजर्षि पुरुषोत्तमदास टंडन और सेठ गोविन्ददास की तरह आप भले ही संसद सदस्य न बनाये गये किन्तु हिन्दी के हितों की रक्षा में आप उनसे एक कदम भी पीछे नहीं रहे।

असमिया भाषा साहित्य की समृद्धि और प्रसार के लिये जो कार्य अपने पत्रों चिट्ठियों के माध्यम से स्व० लक्ष्मीनाथ बेजबरुवा ने असम में किया उसी निष्ठा और संकल्प के साथ आपने अपने पत्रों में हिन्दी सम्बन्धी विचार व्यक्त किए। हिन्दी की विशेषताओं पर जहाँ आपने प्रकाश डाला वहीं हिन्दी को कमियों की ओर भी लक्ष्य किया। उन कमियों की पूर्ति के लिये स्वयं लेखनी चलाई।

आप द्वारा लिखित सम्पादकीय लेखों, टिप्पणियों में जिन विचारों का उल्लेख मिलता है उनसे कहीं अधिक खुले और मुक्त रूप में आपके विचार आपके इन पत्रों में अभिव्यंजित हैं। हिन्दी के लिये हर क्षण आशान्वित कार्यान्वित व्यक्तित्व।

जैसे किसी ने कहा है यदि मार्क्स नहीं होते तो कम्यूनिज्म का जन्म नहीं होता, यदि एन्जेल्स नहीं होते तो साम्यवाद प्रकाश में नहीं आता और यदि लेनिन नहीं हुए होते तो साम्यवाद को भूमि नहीं मिलती। ठीक मैं भी उसी लहजे में कहने का साहस कर रहा हूँ कि यदि म० राहुल और डा० वासुदेवशरण अग्रवाल नहीं हुये होते तो जनपदीय आंदोलन की उत्पत्ति नहीं होती, यदि श्री बनारसीदास चतुर्वेदी नहीं होते तो जनपदीय आंदोलन जन-जन तक नहीं पहुँचता और यदि बाबू वृन्दावनदास नहीं होते तो जनपदीय आंदोलन की लोक-गङ्गा ही सूख जाती, आंदोलन उतना समृद्ध नहीं होता। अपने पत्रों के माध्यम से बाबूजी ने इस जनपदीय आंदोलन को प्रदेशों की सीमाओं को तोड़ अखिल भारतीय स्तर पर प्रतिष्ठित किया। जनपदीय भाषा साहित्य की समृद्धि के लिये विद्वानों को प्रेरित किया। जनपदीय शब्द सम्पदा से हिन्दी को समृद्ध करने की योजना बनाई आपने।

गोष्ठी सभा एवं परिचर्चाओं के माध्यम से आपने हिन्दी के विस्मृत लेखकों, कवियों की जयन्तियाँ मनाईं, उनके सम्मान में ग्रन्थ प्रकाशित करवाये, छुटभैयों, स्वातन्त्र्य सेनानियों एवं उपेक्षित साहित्यकारों की सुधि ली। आपकेमें इन सबकी खुली व्याख्या है। उन्हें हर तरह से सहायता एवं परामर्श देने की कसक है।

आपका पत्र संग्राहक और विश्लेषक का रूप तो अनूठा ही है। 'डा० बनारसीदास चतुर्वेदी के पत्र' एवं 'डा० वासुदेवशरण अग्रवाल के पत्र' शीर्षकों

स आपने इन दो महान पत्र लेखकों के अनमोल पत्रों का संकलन, सम्पादन एवं प्रकाशन कर, हिन्दी पत्र साहित्य विधा को समृद्ध किया। आपने अनेक दूसरे विद्वानों के महत्वपूर्ण पत्र ब्रजभारती में स्वयं छापे तथा अच्छे पत्रों के आप सदा ही प्रशंसक हैं।

हिन्दी-साहित्यिकों के पत्र हिन्दी में प्रकाशित किये जाने चाहिये, इस दृष्टिकोण का मैं वर्षों से समर्थक रहा हूँ। वर्ष १६५६ ई० में ही मैंने परम पूज्य महापण्डित राहुल सांकृत्यायन के कुछ महत्वपूर्ण पत्र भदई निवासी लोक-साहित्य के मनीषी श्री राम इकबालसिंह जी राकेश के यहाँ देखे थे। तभी मैंने राकेश जी से उन पत्रों को प्रकाशित कर देने की बात कही थी। उन्होंने कुछ पत्रों का उपयोग करते हुये साप्ताहिक हिन्दुस्तान में एक लेख राहुल जी पर लिखा था। जब वर्ष १६६३ ई० में मैं दिल्ली में था उन्हीं दिनों मेरे मन में राहुल जी के पत्रों को संकलित-सम्पादित कर प्रकाशित करने की बात आई थी। भाई श्री शिव शर्मा ने इसका समर्थन भी किया था। राहुल जी के संस्मरण इकट्ठे करने में तो मैं सफल हो सका किन्तु पत्र बहुत कम उपलब्ध हुये। उनके संस्मरण जिन्हें 'राहुल-स्मृति' के नाम से प्रकाशित करना चाह रहा था अब तक अप्रकाशित पड़े हुये हैं।

बाबूजी के निकट सम्पर्क में होने के कारण उनके ढेर सारे अमूल्य पत्र मुझे समय-समय पर मिलते रहे हैं। उन मूल्यवान पत्रों की तरफ मेरा ध्यान जाना स्वाभाविक था। मैंने अपने और दूसरे साहित्य सेवियों के नाम लिखे उनके पत्रों को पुस्तकाकार प्रकाशित करने का निर्णय लेते हुये दो विज्ञप्तियाँ प्रचारित कीं। परिणाम स्वरूप मेरे पास पत्र सामग्री आने लगी। हाँ, कुछ साहित्य सेवियों ने आश्वासन के बावजूद अपने संग्रह के महत्वपूर्ण पत्र नहीं दिये।

अपने पत्रों में जहाँ जनपदीय आंदोलन का महानाद आपने फूँका है वही उसके सभी पहलुओं पर यत्र-तत्र विचार भी प्रस्तुत किया है। ब्रजभारती की सम्पादकीय टिप्पणियों में जनपदीय भाषाओं पर किये गये कार्यों का जहाँ लेखा-जोखा दिया है वहीं अपने पत्रों में जनपदीय क्षेत्र के कार्यकर्ताओं को प्रेरणा भी दी है।

हिन्दी के पत्रकारों को आप जहाँ कोसते नजर आते हैं वहीं उनमें जिन्होंने जनपदीय आंदोलन की भावनाओं, उद्देश्यों को प्रचारित करने में सहायता दी है उन्हें सराहा भी है।

मैं तो कभी-कभी अनुभव करता हूँ पं० बनारसीदास जी चतुर्वेदी जब

इस महानाद को दूर-दूर तक पहुँचाने में थक रहे थे तो जनपदीय यात्रा क्रम में उन्हें बाबूजी जैसा आधुनिक दधीचि मिल गया जिनके कन्धों पर इस आंदोलन का भार रख वे निश्चिन्त हो गये।

बाबूजी इस उत्तरदायित्व पूर्ण गुरुतर भार को निवाहने में कहाँ तक सफल रहेहैं उसका साक्ष्य दे रहेहैं, ये अनमोल पत्र। ये पत्र नहीं ये दस्तावेज हैं हिन्दी की श्रीवृद्धि के लिये जनपदीय भाषाओं के माध्यम से हिन्दी को और भी गौरवशाली और प्रतिष्ठा युक्त बनाया जा सकता है। इनमें बाबूजी के आशा-आकांक्षाओं का दिग्दर्शन मिलता है। खाते-पीते, सोते जागते, उठते बैठते, सभा-गोष्ठियों में, आपसी बातचीत में, यात्राओं में उनका यह चिंतन किस रूप में चलता रहता है इसका विवरण तो इन्हीं पत्रों से प्राप्त होता है। रात के १२ और १ बजे भी वे किसी जनपदीय कार्यकर्ता के ऊपर लेख लिखते होते हैं तो कभी पत्र में इस आन्दोलन को अग्रसरित करने की सलाह दे रहे होते हैं।

आपके ये पत्र कहीं डायरी, कहीं संस्मरण तो कहीं यात्रा विवरण पढ़ने जैसा आनन्द देते हैं।

बाबूजी ने आसेतु हिमालय देश की यात्रायें की हैं हिन्दी हितार्थ। अहिन्दी भाषी क्षेत्रों में भी हिन्दी का शंखनाद आपने पहुँचाया है। 'एक महिला के दानफण्ड से' शब्द खण्डों का प्रयोग कर उन्होंने अपनी श्रीमती प्रकाशवती का नाम ओझल ही रखना उचित समझा हैं। किन्तु प्रकाश की किरणें कैसे अन्धेरे में रह सकती हैं। पुस्तकालयों के आंदोलन को इस दान फण्ड से अत्यधिक बल मिला है। अहिन्दी भाषी क्षेत्र के हिन्दी लेखकों को पुरस्कार देने का आपका कार्य भी अत्यन्त श्रेयस्कर है। इन पत्रों में ऐसे प्रकरणों की चर्चा आती है। आप कहीं इतिहासकार, तो कहीं पुरातत्वशास्त्र वेत्ता, कहीं भाषाशास्त्री, तो कहीं शुद्ध लेखक, कहीं पत्रकार, तो कहीं सम्पादक, कहीं जनपदीय भाषा साहित्य के संरक्षक, तो कहीं ब्रजभाषा साहित्य संस्कृति के पोषक, कही संस्मरण, यात्रा, रिर्पोताज लेखक, तो कहीं आप सफल निबन्धकार दिखाई पड़ते हैं। पत्रों में दी गई तिथियों के आधार पर तो आपकी डायरी तैयार की जा सकती है।

जितना स्नेह आपको 'पृथिवी पुत्र' (डा० वा० श० अग्रवाल) से है उससे थोड़ा भी कम 'निषाद बाँसुरी' (श्री कुवेरनाथ राय) से नहीं। जहाँ आप 'मधुकर' के जनपदीय अंक की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा करते हैं वहीं आशा' (डा० राजेन्द्र रंजन सम्पादित) के सासनी सर्वेक्षण की भी। जितनी चिन्ता उन्हें हिन्दी की समस्याओं को सुलझाने की है उतनी ही जनपदीय भाषाओं के

द्वारा हिन्दी श्रीवृद्धि कराने की भी। एक ओर ये पत्र आपके दैनिक जीवन की छोटी छोटी बातों को प्रकट करते हैं तो दूसरी ओर ये आपके जीवनचरित्र का मसाला भी दे गये हैं।

एक ओर वयोवृद्ध सर्वश्री गौरीशंकर द्विवेदी शंकर, पं० कृष्णानन्द गुप्त, पं० गणेश चौबे, रामनारायण उपाध्याय, रामचरण हयारण मित्र, रामरीझन रसूलपुरी, श्यामसुन्दर बादल, डा० अम्बाप्रसाद सुमन, श्री नाहटा, श्री प्रभाकर आदि ख्याति प्राप्त साहित्यकारों के प्रिय स्नेही हैं वहीं युवा साहित्य-सेवी डा० रामशंकर द्विवेदी, डा० राजेन्द्र रंजन, डा० गनेशीलाल बुधौलिया, डा० आनन्द स्वरूप पाठक, डा० केदारदत्त तत्राड़ी, डा० सिसोदिया, श्री रमेशचन्द्र दुबे, श्री चकोर, श्री सेंगर, श्री निरंकुश आदि के अत्यन्त निकटस्थ शुभैषी। अपने स्वभाव, विचार और कार्यों से इन्हें अपनी ओर खींचने वाले बाबूजी का व्यक्तित्व कितना महान, कितना श्रद्धास्पद है ये पत्र उन नंगे ऋतसत्यों के दर्पण हैं।

पत्र-लेखन और बाबू वृन्दावनदास

पत्र-लेखन बाबू जी के लिये 'एक स्वान्तः सुखाय प्रक्रिया' है जो उनके 'भावों की अभिव्यक्ति की छटपटाहट' लिये हुये है। पत्र लिख चुकने के बाद आपको उतनी ही प्रसन्नता होती है जितनी किसी व्यक्ति को किसी कार्य में मिली सफलता पर होती है। मुझे नहीं मालूम बाबू जी ने अपना पहला पत्र किसे और कब लिखा होगा। किन्तु इतना अवश्य पता है वे विद्यार्थी जीवनसे ही पत्र लिखने में अभ्यस्त रहे हैं। वे स्वयं स्वीकार करते हैं, वे पिछले पचास वर्षों से पत्र लिखते रहे हैं। वह समय १९२०-२५ के बाच का होगा। मुझे उनके सबसे पुराने पत्र १९३०-३५ के बीच के मिले हैं जो उन्होंने ज्योतिषी पं० राधेश्याम द्विवेदी स्वामीघाट, मथुरा के नाम लिखे थे। ये पत्र अंग्रजी में लिखे मिलते हैं। इनमें बड़ी ही रोचक शैली मैं कई यात्राओं के वृतान्त हैं।

आपने श्री अनिल कुमार राय अंजनेय के नाम लिखे अपने अत्यन्त ही महत्वपूर्ण पत्र (८-१२-७५) में स्वीकार किया है—'अधिक संख्या में पत्र लिखने का अवसर तो मुझे तब से मिला जब से कि मैंने हिन्दी-सेवा का कार्य सक्रिय रूप से प्रारम्भ किया। पन्द्रह वर्ष पहले लगभग तीस वर्षों तक मैं नगरपालिका तथा सहकारिता एवं शिक्षा-संस्थाओं के कार्यकलापों में संलग्न रहा। नगरपालिका तथा शिक्षा संस्थाओं के कार्य अधिकांशतः स्थानीय थे। सहकारिता के कार्य में मुझे यात्रायें बहुत करनी पड़ीं। अतः इन कार्यों में

वैयक्तिक उपस्थिति अनिवार्य होने के कारण पत्र लेखन का विशेष प्रश्न ही न था। परन्तु 'ब्रज साहित्य मण्डल' एवं उत्तर प्रदेशीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन' के विनम्र कार्यकर्त्ता और ब्रजभारती' के सम्पादक की हैसियत से तो प्रभूत पत्र-लेखन अनिवार्य बन गया। दूरस्थ साहित्यिक मित्रों से सम्पर्क पत्र-लेखन द्वारा ही सम्भव था। हिन्दी-जगत के एक विनम्र कार्यकर्त्ता के नाते पत्रों का ताँता लगा रहता है और एक कृतज्ञ हिन्दी-सेवी का यह परम कर्त्तव्य हो जाता है कि वह प्रत्येक पत्र का उत्तर दे।'

हिन्दी साहित्याकाश में पत्रों के प्रति इतने प्रतिबद्ध आप कम ही विद्वानों को पायेंगे। अपने को साहित्य महारथी कहने वाले अधिकांश हिन्दी के विद्वान दूसरे के पत्रों का उत्तर तो छोड़ दीजिये रिप्लाई कार्ड या लिफाफे भी डकार जाते हैं। किन्तु पिछले दशक में यह बीमारी कुछ दूर हुई है फिर भी पत्रखोरों की कमी नहीं।

दूसरी ओर उन पत्र लेखकों की महान् परम्परा है जिनमें भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र, प्रतापनारायण मिश्र, बालमुकुन्द गुप्त, आचार्य पद्मसिंह शर्मा, आ० महावीर प्रसाद द्विवेदी, डा० वासुदेव शरण अग्रवाल, महापण्डित राहुल सांकृत्यायन, मुंशी प्रेमचन्द, आ० शिवपूजन सहाय, पं० बनारसीदास चतुर्वेदी, पं० कृष्णानन्द गुप्त आदि आते हैं। बाबू वृन्दावनदास इसी परम्परा की कड़ी है।

बाबू जी अपने लेखकीय और सम्पादकीय दायित्वों के प्रति सतत सजग और चौकस रहे हैं। ९-११-७१ वाले अपने पत्र में डा० राजेश्वर प्रसाद चतुर्वेदी को लिखते हैं—'इस बीच में इतने पत्र इकट्ठे हो गये हैं कि कहा नहीं जा सकता। तीन दिन से १५ उत्तर प्रतिदिन लिख रहा हूँ। अभी इतनी ही डाक और शेष है। ११ ठिकानों से लेख की माँग है और सभी त्वरा में हैं। सुबह ६ बजे से ९ बजे तक और फिर भ्रमण, भोजन और शयनोपरान्त मध्याह्नान्तर ३ बजे से रात्रि के ११ बजे तक लेखन कार्य चल रहा है। पत्र लेखन में शायद श्रद्धेय बनारसीदास जी के परछायाँ पड़ गया प्रतीत होता है। वे तो झेल गये मेरा क्या होगा, यही सोच है।'

पंडित बनारसीदास जी चतुर्वेदी की तरह ही आप भी कभी दिन के १० और कभी १५-१५ घण्टे पत्र-लेखन को समर्पित कर देते हैं। 'परछायाँ' पड़ जाने की बात को आपने स्वयं स्वीकार किया है।

पत्रों की भाषा के बारे में भी आप अधिक सावधान दीखते हैं—'पत्र शिष्ट और शालीनता युक्त मिष्ट भाषा में लिखे जाँय।' सम्पादक के कर्तव्य बोध और सीमा के बारे में भी आपके विचार तीखे और स्पष्ट है—'न तो

सम्पादक सर्वविद्या सम्पन्न होता है और न उसके पास सभी रचनाओं को स्थान देने की क्षमता होती है। उमसे इतनी माँग की जाती है कि वह विचलित हो सकता है, अपना मानसिक संतुलन खो सकता है। परन्तु इसमें ही उसके धैर्य और शील की परीक्षा होती है। उसको मधुर व्यवहार से सबका समाधान करना ही चाहिये।'

अच्छे पत्रों के आप सदा प्रशंसक रहे हैं। 'ब्रजभारती' में अनेक ऐतिहासिक महत्व के पत्रों को आपने स्वयं प्रकाशित किया है। डा० वासुदेवशरण अग्रवाल एवं पं० बनारसीदास जी चतुर्वेदी के पत्र पुस्तकाकार सम्पादित-प्रकाशित करने के बाद भी आप अनुभव करते हैं—'हिन्दी में अनेक विद्वान अभी ऐसे रह गये हैं, जिनके पत्रों का संकलन होना चाहिये और यदि हम उसे कर सकें तो वह साहित्य की एक अमूल्य निधि होगी।

पत्रों के बारे में आपका एक प्रबल तर्क है—'लेखक द्वारा लिखे हुये अपार पत्र सग्रह से उसके व्यक्तित्व का मूल्यांकन हो सकता है, जो शायद लेखों द्वारा न हो सके। कारण लेखों की संख्या तो सीमित ही होगी और अधिकांश लेख विषयगत होते है, जबकि पत्रों के विशाल संग्रह में व्यक्ति के विचारों और मनोभावों की समग्र झाँकी उपलब्ध हो सकती है।'

आप निर्भीक स्वर से घोषित करते हैं, पत्र भी साहित्य की एक प्रमुख विधा है—'महापुरुषों और कवि-साहित्यकारों के पत्र भी साहित्य की सीमा में प्रविष्ट किये जाँय। वे साहित्य शरीर की सुदृढ़ रीढ़ का काम देंगे।'[1]

सर्वोत्कृष्ट पत्रों के जन्म के पीछे पत्र प्राप्तिकर्त्ता के उदात्त व्यक्तित्व की प्रेरणा छिपी होती है। आप अच्छे पत्रों की उत्पत्ति का कारण पत्र प्राप्तकर्त्ता को मानते हैं—'जहाँ साहित्यिक महत्व की दृष्टि से पत्र-लेखक प्रशंसा का पात्र है वहाँ वह व्यक्ति भी जिसको पत्र लिखे गये वन्दनीय है, कारण उस व्यक्ति की ओर पत्र लेखक की रुचि उसके उदात्त व्यक्तित्व के आकर्षण से ही उत्पन्न होती है। यदि उस व्यक्ति में जिसको पत्र लिखे गये कोई विशेषता न होती अथवा उसमें कोई आकर्षण नहीं होता तो शायद महत्वपूर्ण पत्र लिखे ही न जाते और उनका अस्तित्व ही संदिग्ध हो जाता।'[2]

देश विदेश में फैले ऐसे उदात्त व्यक्तित्व वाले सैकड़ों विद्वानों से सम्पर्क की बाबत आप स्वयं लिखते हैं—'चतुर्वेदी जी ने मुझे अनेक पत्रों में उन विद्वानों के नाम व पते लिखकर भेजे जिनसे मुझे मण्डल और हिन्दी के हित

(१) डा० वासुदेव शरण अग्रवाल के पत्र, भूमिका पृष्ठ ३२,
(२) ,, प्राक्कथन पृष्ठ २।

में सम्पर्क स्थापित करना उन्होंने अभीष्ट समझा। मैंने उनकी प्रेरणा से अनेकों ऐसे विद्वानों से पत्र-व्यवहार किया जो बड़े सहृदय व्यक्ति थे और हिन्दी सेवा के प्रति जिनकी लगन सराहनीय थी।........'[१]

श्री हरिश्चन्द्र सिंघल जी के नाम लिखे अपने पत्र (२६-७-७१) में बाबू जी पत्रों की उपयोगिता पर लिखते हैं – 'साहित्यिकों में सम्पर्कशीलता का माध्यम पत्राचार ही है। यद्यपि भेंटवार्ता में जो साहित्यिक आनन्द है वह पत्राचार में कहाँ, परन्तु जब ईश्वर वह सुअवसर ही छीन ले तो चार पंक्तियाँ ही उस दुर्भाग्यपूर्ण शून्यता को भंग करने में सक्षम होती है, अतः विनम्र प्रार्थना है कि कभी-कभी कुछ दो-चार शब्द लिखकर पुरानी साहित्यिक स्मृतियों को ताजा रखने की कृपा करते रहें।'

जहाँ बाबू जी स्वयं पत्रों के उत्तर देने में अतिशय उदार हैं वहीं दूसरों के द्वारा धोखे से कुछ पत्रों के उत्तर नहीं दिये जाने पर या देर से उत्तर दिये जाने पर लिखते हैं, 'यह तो आपकी विशाल हृदयता ही है कि आप दो-एक पत्रों का उत्तर शीघ्र न दे सकने पर इतनी आत्म-भर्त्सना किये जा रहे हैं। वास्तव में प्रत्येक पत्र का उत्तर अभीप्सित भी नहीं होता। सामग्री प्रेषण और कतिपय पत्र भी ऐसे होते हैं जिनका उत्तर लिखा भी क्या जाय। हमें पत्रकार साहित्यिकों के समय समय पर अहर्निश पड़ते हुए दबाव को भी दृष्टि में रखना है।'[२]

वे मात्र इतने से ही संतुष्ट नहीं होते। एक दूसरे पत्र में आप लिखते हैं—....'अब अपने विचार स्पष्टतया लिखना चाहता हूँ। मेरी धारणा है कि पत्र लिखने का एक व्यसन है और यह जरूरी नहीं कि यह प्रत्येक व्यक्ति में हो। दूसरी बात महत्वपूर्ण यह है कि साधारणतया पत्र इसलिये नहीं लिखे जाते कि उनका उत्तर प्राप्त ही किया जाय। यदि हमारा मन पत्र लिखने का है तो हम भले ही लिखें परन्तु यह आशा करना कि उसका उत्तर भी हमें मिले, पत्र लिखे जाने वाले के प्रति घोर अन्याय है। प्रत्येक व्यक्ति की स्थिति दूसरे से भिन्न है, वह वातावरण भी जिसमें कि उसे रहना पड़ता है; भिन्न है। फिर आप तो पत्र भी लिखते ही हैं, आपके प्रति किसी दोषारोपण की तो स्वप्न में भी कल्पना नहीं की जा सकती।'

(१) 'श्री बनारसीदास चतुर्वेदी और उनके पत्र', ब्रजभारती, अंक—३, सं० २०२४।

(२) श्री रामरीझन रसूलपुरी (सं० उत्तर बिहार, पटना) के नाम लिखे २०-८-७१ वाले पत्र में।

किसी पत्र या पत्रिका का सम्पादक विद्वान लेखकों के पत्रों का उत्तर नहीं देता इसकी आप भर्त्सना करते हैं। कुछ सम्पादकों का सम्पर्कशीलता में विश्वास नहीं होता और वे आत्म केन्द्रित होते हैं।[1] प्रत्युत्तर नहीं देने के कार्य को आप 'शुष्क व्यवहार' की संज्ञा देते हैं।

पत्रों के प्रकाशन में बड़ी-बड़ी बाधाएँ भी आती हैं विशेषकर स्वर्गीय साहित्यकारों के पत्रों के प्रकाशन की दिशा में। हिन्दीका दुर्भाग्य ही कहेंगे ढेर सारे विद्वानों के पत्र काल के गाल में चले गये। जिनके पत्र उपलब्ध भी हो सकते हैं तो लोग अपने संग्रह के मूल्यवान पत्रों या उसकी प्रतिलिपि को देना नहीं चाहते। कुछ स्वर्गीय विद्वानों के कुटुम्बियों ने पत्रों के प्रकाशन की अनुमति नहीं दी।

वैसे देखा जाय तो पत्रों के छापने में किसी नैतिक आधार पर तो आपत्ति होनी नहीं चाहिये। इस प्रकार के प्रकाशन से तो हम माननीय महानुभावों को सम्मान ही देते हैं तथा उनके कार्यों और विचारों को जनसाधारण के समक्ष लाते हैं।

डा० बच्चन ने एक पुस्तक जिसका शीर्षक है 'पन्त के १०० पत्र बच्चन के नाम'[3] कुछ दिन हुए छपाई थी। उसमें पारिवारिक किस्म के पत्र अधिक हैं, साहित्यिक महत्व की दृष्टि से तो मैं उन पत्रों को मूल्यवान नहीं समझता। यह सच है कि घनिष्ठ पारिवारिक सम्बन्ध होते हुये भी पन्त जी को यह अरुचिकर हुआ और उन्होंने बच्चन को नोटिस दे दिया। आगे क्या हुआ यह अभी पता नहीं चला है।

पीछे चलकर लम्बे अन्तराल के बाद 'डा० वासुदेव शरण अग्रवाल के पत्र'[4] शीर्षक पुस्तक का प्रकाशन हो सका। इसी संदर्भ में आप श्री हरिश्चन्द्र सिंघल निरंकुश को लिखे अपने पत्र ३०-४-७४ में बतलाते हैं—'मुझे कुछ ऐसा अनुभव हुआ है कि दिवंगत महापुरुषों से उत्तराधिकार में वंशजों को सम्पत्ति के अतिरिक्त एक घटिया चीज भी मिली है और वह है अपने पूर्व पुरुष की कीर्ति के प्रति उपेक्षा का भाव। जीवन की जाज्वल्यमान कीर्ति की मरणोपरान्त यह कैसी भीषण प्रतिक्रिया है।........चतुर्वेदी जी ने और उनके

(१) वही पत्र, १२-३-७२ से।

(२) पत्र—डा० रामशंकर द्विवेदी के नाम, ३०-४-७०।

(३) प्रकाशक—राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, प्र० वर्ष—मई १९७०, मूल्य ४.००।

(४) प्रकाशक—साहित्य प्रकाशन, नई सड़क, माली बाड़ा, दिल्ली-६,

आदेश से मैंने अनेक बार अग्रवाल जी के परिवारीजनों को पत्रों के लिये लिखा लेकिन उनके द्वारा तो मुझे एक भी पत्र प्राप्त नहीं हुआ।

हिन्दी के अन्य दिवंगत साहित्यिकों के पत्रों को भी प्रकाशित करने की चिंता आपको लगी हुई है—'मुख्य बाधा पत्रों के संग्रह में है। राहुल जी अथवा परिव्राजक जी के पत्र संग्रह हो सकेंगे इसमें मुझे संदेह है। मेरा चतुर्वेदी जी व अग्रवाल जी से व्यक्तिगत घनिष्ट परिचय था इसलिये सग्रह कार्य सुगम था। परन्तु राहुल जी के तो मैंने कभी दर्शन भी नहीं किये थे और परिव्राजक जी को बाल्यावस्था में एक-दो बार ही सुना था। फिर भी मैं हताश नहीं हूँ।'[1]........यहाँ परिव्राजक जी से तात्पर्य स्वामी सत्यदेव परिव्राजक से है।

जहाँ तक पत्रों की भाषा का प्रश्न है बाबू जी हिन्दी में ही पत्र लिखना अच्छा मानते हैं। पहले आप अपने पत्र अंग्रेजी में ही लिखा करते थे किन्तु आजकल विदेशी विद्वानों से भी आप पत्राचार हिन्दी में ही करते हैं। बाँगला देश के विद्वान काजी अशरफ महमूद साहब को आपने हिन्दी में ही पत्रोत्तर देने पर मजबूर कर दिया। उन्होंने इसे खुशी-खुशी स्वीकारा भी।

हिन्दी की गरिमा और मर्यादा की रक्षा में सन्नद्ध बाबू जी ने काजी साहब को सूचित किया—'मुझे भी अभिव्यक्ति की छटपटाहट शुरू से ही रही है। पहले मैं भी अँग्रजी में पत्र लिखा करता था और अंग्रेजी पत्रों में मेरे पत्र अविरल प्रकाशित होते ही रहते थे यहाँ तक कि सहस्राधिक मेरे पत्रों की कतरनें मेरे संग्रहालय में आज भी सुरक्षित हैं, परन्तु लगभग दो दशाब्दी से मैं पत्र लेखन में हिन्दी का ही व्यवहार करता हूँ। मेरी धारणा है कि हिन्दी के साथ अद्यतन न्याय नहीं हुआ है और इसका कुछ दोष अँग्रेजी प्रियता पर आता है। हिन्दी में कोई कमी नहीं है, हमारे देश में ठोस राष्ट्रीय भावना का उदय तभी होगा जब यहाँ का जन-जन हिन्दी-प्रेमी हो जाय।

पत्र संकलनों के सम्पादन और प्रकाशन के ऊपर भी आप अपने कुछ विशिष्ट तरह के विचार रखते हैं—'मेरी धारणा है कि पत्र तो स्वयं बोलते हैं अतः उनको सन्दर्भों आदि से बोझिल बनाना अनावश्यक है। यदि सन्दर्भ दिये जांय तो सभी पत्रों के साथ एक-सी पद्धति अपनाई जानी चाहिये।[2]........ निश्चित सीमा के भीतर अधिकाधिक पत्रों का समावेश हो जाय यह भावना भी बलवती रहती थी।[3]

---

(१) श्री अयोध्या सिंह के नाम १४-८-७४ वाले पत्र में।

(२) पत्र ११-१२-७५ काजी साहब के नाम।

(३) पं० कृष्णानन्द गुप्त के नाम २२-६-७४ वाले पत्र में।

आपने अपने पत्र संकलनों में महान् पत्र लेखक पं० बनारसीदास जी चतुर्वेदी की प्रणाली को ही पल्लवित किया। पत्रों को प्रकाशित करने की नई प्रणाली का जन्मदाता आप चतुर्वेदी जी को ही मानते हैं। पद्मसिंह शर्मा के पत्र'[१] में इस प्रयोग को देखा जा सकता है। 'चिट्ठी पत्री : प्रेमचन्द'[२] की तरह आने जाने वाले दोनों तरह के पत्रों को एक ही संग्रह में छापने के पक्ष में आप नहीं हैं। इस सम्बन्ध में आपके तर्क में दम है।[३] आगत और निर्गत दोनों पत्रों को संग्रह में स्थान देना पुस्तक के आकार और मूल्य को तो बढ़ायेगा किन्तु इससे अधिक लाभ की सम्भावना नहीं रहती।

बंगरी (चम्पारन) के पंडित गणेश चौबे लोक-साहित्य के मान्य मनीषियों में हैं। डा० वासुदेवशरण अग्रवाल, पं० बनारसीदास चतुर्वेदी, पं० कृष्णानन्द गुप्त आदि के सहस्रों पत्र चौबे जी के संग्रह की शोभा बढ़ा रहे हैं, पूज्य बनारसीदास जी चतुर्वेदी की ही तरह आप भी पत्र लेखन के आचार्य हैं। बाबू जी के संग्रहालय में अनेक जनपदीय विद्वानों के पत्रों की अलग अलग फाइलें हैं।[४] इससे इनकी पत्र-प्रियता का पता चलता है साथ ही पत्रों को संजोकर रखने की भावना का भी।

पत्रों के उत्तर देने में भी आप अत्यन्त सावधानी रखते हैं। 'अनुत्तरित पत्रों की गड्डी'[५] आप अलग रखते हैं। जैसे-जैसे उत्तर भेजते जाते हैं पत्र उस गड्डी से अलग होते रहते हैं। आप मात्र पत्रोत्तर ही नहीं भेजते पत्र प्रेषक के सुझावों को भी निर्दिष्ट स्थान तक पहुँचने का कार्य करते हैं।[६] आप सामान्य पत्रों के भी उत्तर देते हैं। किसी पत्र प्रेषक द्वारा जवाबी कार्ड भेजे जाने पर आपको दुःख होता है।[७]

जिस प्रकार श्री बनारसीदास चतुर्वेदी को पत्र लिखने, प्राप्त पत्रों को

---

(१) प्रकाशक—आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली-६, प्र० वर्ष १९५६, मूल्य १०.००।

(२) प्रकाशक—हंस प्रकाशन इलाहाबाद, प्र० वर्ष १९६२, मूल्य ८.००।

(३) द्रष्टव्य—श्री ह० सिंघल के नाम ३०-४-७५ के पत्र में।

(४) पं० गणेश चौबे के नाम लिखा ८-२-६८ का पत्र।

(५) श्री भगवानसिंह सेंगर के नाम लिखा १०-२-७२ का पत्र।

(६) डा० बच्चन पाठक सलिल कोषनाम लिखा पत्र २८-१०-६५ का पत्र।

(७) श्री ब्रजमोहनलाल शर्मा को लिखा १६-१-७१ का पत्र।

संजोकर रखने तथा अच्छे पत्रों को पुस्तकाकार या पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित करवाने का रोग है उसी प्रकार बाबू वृन्दावनदास को पुस्तकें छपवाने, उन्हें वितरित करने का महारोग है। इस सम्बन्ध में वे स्वयं स्वीकारते हैं—'डा० वासुदेव शरण जी की धर्मपत्नी जी तथा श्री देव कुमार से जो बातें हुई थीं, वह मैं कदाचित आपसे कह चुका हूँ। उनके पत्र काफी संग्रहीत हो चुके हैं। सर्वश्री सत्येन्द्र जी और मोतल जी के पत्र भी अतिशीघ्र आने वाले हैं। देवकुमार जी ने कहा था कि मैं सब मसाला आपके सुपुर्द कर दूँ और वे घरेलू पत्रों को आपको दे देंगे। वे इस ग्रन्थ को आपके मण्डल द्वारा ही ही प्रकाशित देखना चाहते हैं ऐसा प्रतीत होता है। मुझे तो उनकी बात ही पसन्द आई.......आगे क्या किया जाय। यदि आपकी राय हो तो मैं भूमिका लिख दूँ.......अपनी स्थिति भी स्पष्ट कर दूँ। मुझे आर्थिक रूप में कोई रायल्टी कदापि न चाहिये परन्तु मुझे अपने द्वारा निर्मित रचित अथवा सम्पादित साहित्य को मित्र वर्ग में वितरित करने का महारोग लगा हुआ, उसके बिना चित्त को शांति नहीं मिलती। अतः छपने पर आप १०० पुस्तकें मुझे दे देंगे तो आपका बड़ा कृतज्ञ होऊँगा, अधिक दे सकें तो और भी कृपा परन्तु १०० से अधिक के लिए मैं आपसे कहूँगा कभी नहीं।'[१]

इस संग्रह में सबसे पहले श्री अनिलकुमार राय आंजनेय के नाम लिखा बाबू जी का पत्र है। इससे पत्र साहित्य पर बाबू जी के दृष्टिकोण का पता चलता है। इनके विचार से पत्र सच्चे अर्थों में लेखक के मन का दर्पण होता है। पत्र लेखक द्वारा लिखे गये अनगिनत पत्रों में लेखक के विचारों और मनोभावों की समग्र झाँकी उपलब्ध हो जाती है। यह पत्र वस्तुतः एक महत्व-पूर्ण ऐतिहासिक पत्र है जिसे प्राप्त करने का सौभाग्य श्री आंजनेय जी को ही मिला।

पिछले पचास वर्षों से पत्र लेखन का कार्य बाबू जी करते रहे हैं। अनेकों पत्र-पत्रिकाओं में, लेख, कवियों एवं सम्पादक के नाम पत्र-स्तम्भ में छपे हैं। पत्र-पत्रिकाओं में छपे पत्रों का विशाल संग्रह तो बाबू जी के पास अब भी उपलब्ध है। ये पत्र तत्कालीन परिवेश एवं परिस्थिति को उजागर करने वाले हैं।

जब बाबू जी का सम्पर्क सक्रिय रूप से ब्रज-साहित्य मण्डल एवं 'ब्रजभारती' (त्रै०) से जुड़ा तो पत्र लेखन दैनिक जीवन का अनिवार्य अंग बन गया।

---

(१) श्री यशपाल जैन को लिखा २६-१२-७० का पत्र।

एक दंभी या गर्वी साहित्यकार कभी एक सफल पत्र-लेखक नहीं हो सकता। हिन्दी जगत में कुछ लेखक पत्रों के उत्तर न देना गौरव की बात समझते हैं। नये लेखकों की तो बात ही क्या श्री अयोध्यासिंह (बख्तियारपुर) जैसे वृद्ध लेखक के पत्र का उत्तर न देने वाले साहित्यिक भी हमारे बीच मौजूद हैं। हममें से कुछ तो पत्र लेखन को अनुपयोगी एवं समय नष्ट करने वाला कार्य समझते हैं।

बाबू जी इन सबसे अलग एक अतिविनीत एवं कुशल पत्र-लेखक हैं। किसी भी पत्र का उत्तर देना आप लेखकीय या सम्पादकीय धर्म मानते हैं। पत्र शालीन और शिष्ट भाषा में लिखे जाँय इस दिशा में आप अधिक जागरूक हैं। एक पत्र लेखक को धैर्यवान और मिष्ठभाषी भी होना चाहिये। बाबू जी के पत्रों में ये गुण सर्वत्र विद्यमान हैं।

बाबू जी एक कुशल पत्र लेखक ही नहीं सफल पत्र संग्रहक एवं सम्पादक भी हैं। पंडित बनारसीदास चतुर्वेदी एवं स्व० वासुदेव शरण अग्रवाल जैसे महान् पत्र लेखकों के पत्रों का सफल सम्पादन-प्रकाशन ही इसका सबसे बड़ा प्रमाण है।

आप समय-समय पर हिन्दी में जो पत्र साहित्य की कमी है इसे दूर करने के लिये अनेक विद्वानों को प्रेरित भी करते हैं[1] 'चतुर्वेदी जी के पत्रों के तो विभिन्न व्यक्तियों द्वारा कई संग्रह प्रकाशित होने चाहिये। .. ....अगर अग्रगामी मेरा संग्रह अन्य बन्धुओं को इस दिशा में प्रोत्साहित या उत्प्रेरित कर सका तो मैं अपने प्रयास को सार्थक समझूँगा।'[2]

बाबू जी नियमित रूप से पत्र प्राप्त करने के आदी हैं। जब कभी किसी मित्र की ओर से इस कार्य में देरी होती है तो आप एक अजीब सी 'शून्यता' का अनुभव करते हैं—यह तो मैं जानता हूँ कि पत्र तो आपकी ओर से पहले भी कम आते थे। परन्तु उनकी कसर आपसी भेंटों में निकल जाती थी। कभी आप पधारते थे और कभी हम ही आगरा पहुँच जाते। अतः पत्राचार अधिक आवश्यक भी नहीं था। परन्तु अब तो यह शून्यता बहुत अधिक खलने लगी है। महीनों हो जाते हैं, कोई समाचार नहीं। कभी-कभी दर्शनों की बड़ी तीव्र इच्छा होती है, स्थान भी इतना दूर और वक्र है कि सुगमता से भेंटवार्ता की सम्भावना ही समाप्त हो गई है। अतः प्रार्थना है कि इस दुर्भाग्यपूर्ण शून्यता को कभी दो-चार पंक्तियाँ लिखकर तोड़ दिया करें।'[3]

---

(१) डा० राजेन्द्र रंजन को लिखा २०-१०-७० का पत्र।

(२) श्री यशपाल जैन को लिखा २६-१२-७० का पत्र।

(३) श्री रमेशचन्द्र दुबे को लिखा २६-७-७१ का पत्र।

एक ओर जहाँ पत्राचार को आप आवश्यक मानते हैं, इस शून्यता पर प्रहार करने वाला ब्रह्मास्त्र समझते हैं वहीं एक मित्र को लिखते हैं—'सासनी इतनी निकट है फिर भी आप पत्रों से ही टरकाते हो, दर्शन नहीं देते।'[1] यानी पत्र का प्रयोग आप दूरस्थ मित्रों के लिये ही अनिवार्य मानते हैं।

दूसरों के द्वारा लिखे गये अच्छे पत्रों के आप प्रशंसक भी हैं 'कुछ दिन कोई पत्र न लिख पाये तो क्या हुआ जब लिखने बैठे तो ऐसा हृदयस्पर्शी लिख दिया कि सौ बार पढ़ो तब भी तबियत न भरे।'[2]

वे आवश्यक और अनिवार्य पत्रों के उत्तर तत्काल प्रेषित करने के समर्थक हैं। १९७१ में एक बार 'जय बाँगला' नामक आँखों की बीमारी चली थी, इसमें आँखें लाल हो जाती थीं और पीड़ा भी। बाबू जी भी इस नेत्र व्याधि से पीड़ित थे। किन्तु उस अवधि में आये लगभग सभी पत्रों का उत्तर उन्होंने अपने पौत्र चि० ब्रजेश कुमार की हस्तलिपि में प्रेषित कराये मेरे पास आये पत्रों में चि० ब्रजेश कुमार लिखित कई पत्र[3] हैं। पीड़ा और अस्वास्थ्य की स्थिति में भी पत्रों के उत्तर तो जाने ही चाहिये। ऐसे पत्र लेखक हैं बाबू जी।

बाबू जी के पत्र—इनकी नजर में

बाबू जी के पत्र-लेखन के सम्बन्ध में अनेक विद्वानों ने अपने विचार प्रकट किये है। यहाँ कुछ के विचार प्रस्तुत हैं।

डा० मलखान सिंह सिसौदिया—'वास्तव में आत्मान्वेषण की दीर्घ यात्रा में बाबू जी अनेक पड़ावों पर स्वल्प काल के लिये रमते हुये भी निरन्तर आगे चले आ रहे हैं।........'डा० बनारसीदास चतुर्वेदी के पत्र' नामक ग्रन्थ का सम्पादन बाबू वृन्दावनदास जी द्वारा हिन्दी साहित्य को उनकी एक महत्व-पूर्ण देन है। हिन्दी भाषा में केवल नामोल्लेख के लिए ही पत्र-साहित्य मिलता है। यद्यपि यह एक महत्वपूर्ण साहित्य विधा है, किन्तु हिन्दी के साहित्यकारों का इसके प्रति किंचित उपेक्षाभाव रहा है, अन्यथा गत एवं वर्तमान मूर्धन्य साहित्यकारों के पत्रों के संकलन उनके प्रशंसकों एवं प्रेमियों द्वारा निकाले जाने चाहिये थे, क्योंकि पत्र ही एकमात्र ऐसी विधा है जिसमें व्यक्ति और

(१) " " ६-८-७१ का पत्र।
(२) राजेन्द्र रंजन को लिखा गया १४-७-७१ का पत्र।
(३) " " १२-५-७२ का पत्र।

युग की अन्तरङ्ग झांकी मिल सकती है। इन पंक्तियों के लेखक ने इस ग्रन्थ के विमोचन के अवसर पर बोलते हुए बाबू जी की देन की सराहना करते हुए कहा था, 'हम आज सब कुछ लिखते हैं, कविता लिखते हैं, कहानी लिखते हैं, नाटक लिखते हैं और भी बहुत-सी चीजें हैं—अगर कुछ नहीं लिखते हैं तो केवल पत्र, पत्र जो उत्प्रेरक हों, युग के प्रतिबिम्ब हों और हों व्यक्ति के परिचायक।' इस दृष्टि से बाबूजी द्वारा इस ग्रन्थका सम्पादन पत्र-साहित्य में मील का पत्थर माना जाना चाहिये।'[1]

डा० श्यामसुन्दर बादल—'मैं उनको एक सफल पत्र-लेखक भी मानता हूं।......साहित्य वारिधि बाबू वृन्दावनदास जी पूर्ण विकसित अर्वाचीन-विधा के पत्र-लेखक हैं। आपका पत्र-व्यवहार प्रायः स्वस्थ पत्र-शैली में ही होता है, फिर भी इनके कुछ पत्र विस्तृत-शैली और तार शैली की सीमा का स्पर्श करते हैं।'[2]

पंडित गणेश चौबे—'श्री वृन्दावनदास जी पत्र लिखने में बड़े तत्पर हैं। वे सीधी-सादी भाषा और नपे-तुले शब्दों में छोटे-छोटे पत्र लिखते हैं।'[3]

डा० भगवान सहाय पचौरी—....'आप लेखक से बढ़कर लिक्खाड' हैं। एतदिरिक्त पत्र लेखन का अभ्यास खासा है। दस-बीस साहित्यिक पत्र प्रतिदिन लिखना आपके लिये साधारण सी बात हैं। लिखने में कोई कंजूसी नहीं।'[4]

पं० बनारसीदास चतुर्वेदी—'वे पत्र व्यवहार में अत्यन्त सावधान हैं।'[5]........

श्री जगदीशप्रसाद चतुर्वेदी—'वे पत्र कितने मँहगे होते हैं इसका पता इस बात से ही लगता है कि उन्हें उन पत्रों को विधिवत् रूप देने के लिये एक लम्बी-चौड़ी किताब ही छपवानी पड़ी।.......इस पुस्तक में ३०० छपे पृष्ठ हैं और.......'श्री पद्मसिंह शर्मा के पत्र' पुस्तक से कहीं ऊंचे दर्जे की है।'[6]

---

(१) सौम्य एवं समन्वयशील व्यक्तित्व : बाबू वृन्दावनदास अभि० ग्र०, पृष्ठ ६८-६६।

(२) निष्णात पत्र-लेखक : बा० वृ० दा० अभि० ग्र०, पृ० ६२।

(३) जनपदीय कार्यकर्ता की दृष्टि में : बा० वृ० दा० अभि० ग्र०, पृ० १३२।

(४) निर्वैर, कर्मठ और जीवन्त व्यक्तित्व बा० वृ० दा० अभि० ग्र०, पृ० १४२।

(५) बन्धुवर श्री वृन्दावनदास जी, अभि० ग्र०, पृ० २१।

( ) साहित्य सेवी—बा० वृ० दा० अभि० ग्र०, पृ० २-३।

डा० नारायणदत्त शर्मा—'पत्र-पत्रिकाओं में 'सम्पादक के नाम पत्र' शीर्षक अन्तर्गत उनकी टिप्पणियाँ महत्त्वपूर्ण मानी जाती रही हैं। निकट साहचर्य और सम्पर्क से जितने लोग उन्हें जानते हैं उनसे बहुत अधिक उन टिप्पणियों के माध्यम से।'[1]

श्री रमेशचन्द्र दुबे—'व्यक्तिगत पत्र अकृत्रिम भाव-व्यंजना के सरल वाहक होते हैं। इनसे आदमी के अन्तरतम का सही पता चलता है।'

श्री हरिश्चन्द्र सिंघल 'निरंकुश'—'बाबू जी सम्पादक के नाम पत्र लिखने के माहिर रहे हैं। अँग्रेजी और हिन्दी पत्रों में उनके ऐसे पत्र भारी सख्या में प्रकाशित हुये।'[3]

श्री युगल किशोर चतुर्वेदी—'ब्रज साहित्य मण्डल तथा हिन्दी साहित्य सम्मेलन जैसी दो बड़ी-बड़ी संस्थाओं के साहित्यिक, प्रशासनिक तथा प्रबन्ध सम्बन्धी कार्य में व्यस्त रहने के अतिरिक्त आप नित्य प्रति अनेक पत्र लिखते तथा आये हुये पत्रों के उत्तर भी देते रहते हैं।........स्व० पं० हरिशंकर शर्मा का पत्र-व्यवहार प्रकाशित कराने जा रहे हैं।'[4]

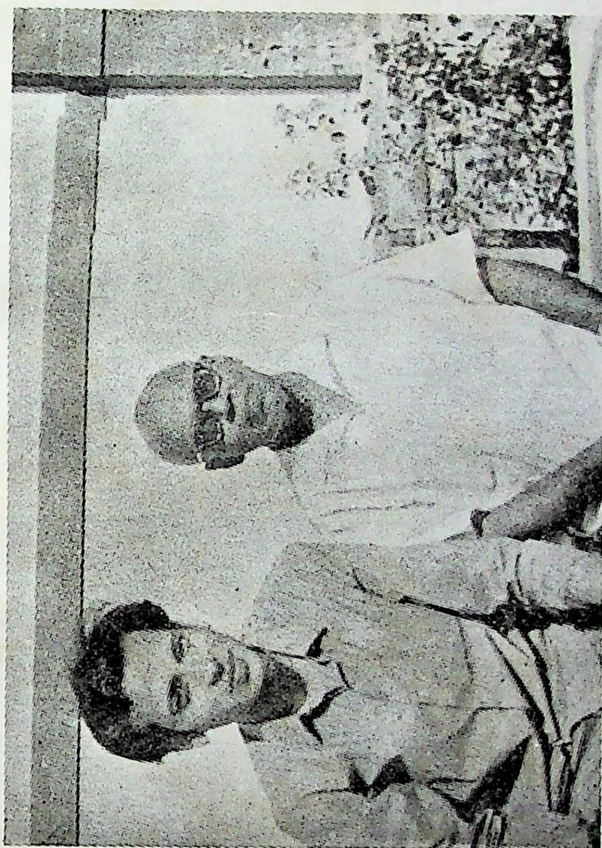
डा० राजबुद्धि राजा—'........बाबू जी के व्यक्तित्व की यह विशेषता है कि वह दूर-दूर से आय पत्रों का उत्तर अविलम्ब देना चाहते हैं। उसके संदर्भ में पत्रों को रद्दी के टोकरे में डालने का तो प्रश्न ही नहीं उठता। इस दृष्टि से वे श्रद्धेय बच्चन जी के समकक्ष ठहरते हैं जो प्रत्येक पाठक के पत्र का उत्तर अपने हाथ से लिखकर देते हैं। इनके पत्र ठीक नाप तोल कर इनके व्यक्तित्व को प्रस्तुत करते हैं। इन पत्रों द्वारा ब्रज साहित्य तथा शोध सम्बन्धी सूचनाएँ पूर्णरूपेण मिल जाती हैं।'[5]

डा० बरसानेलाल चतुर्वेदी—'जहाँ तक मुझे स्मरण है उन्होंने सामाजिक समस्याओं पर अब तक अँग्रेजी और हिन्दी में सैकड़ों पत्र लिखे होंगे जिनकी प्रशंसा बड़े-बड़े सम्पादकों ने की है।....'[6]

श्री हरिश्चन्द्रप्रसाद—'पत्र-लेखक के रूप में भी दास जी विश्व के महान् पत्र-लेखकों के समकक्ष ठहरते हैं। उनमें पत्र लिखने की अद्भुत क्षमता

---

(१) साहचर्य के संस्मरण बा० वृ० दा० अभि० ग्रन्थ, पृ० १३।
(२) साहित्य के निःस्वार्थ साधक ,, ,, पृ० ३२।
(३) अधिमानित अध्यक्ष— ,, ,, पृ० ५३।
(४) ब्रजभाषा के अनन्य आराधक ,, ,, पृ० ६५-६६।
(५) एकनिष्ठ साधक ,, ,, पृ० ७१।
(६) बहुविद् मृदुल व्यक्तित्व ,, ,, पृ० ८१।



श्री रमण शांडिल्य और बाबू वृन्दावनदास





है। नपे-तुले शब्दों में अधिक-से-अधिक बातों को कह देना उनके लिये मामूली-सी बात है। उनके पत्रों में एक भी शब्द ऐसा नहीं रहता जो बेकार समझा जा सके।'[१]

श्री रमण शाण्डिल्य—'ये कुछ पत्र प्रमाण हैं कि उनके भीतर आत्मीयता सहृदयता सेवा भावना किस प्रकार कूट-कूट कर भरी हुई है।'[२]

डा० लल्लन मिश्र—'आपने....श्रद्धेय पं० ब्र० दा० चतुर्वेदी के कुछ पत्रों में एक प्रतिमान स्थापित कर दिया है।'[३]

श्री मोहम्मद शाहमीर मलीह—'अँग्रेजी भाषा में इलाहाबाद के अखबार 'लीडर' में जो अब बन्द हो चुका है, मैं एडीटर के नाम पत्रकालम में समय-समय पर देश के समक्ष आने वाली समस्याओं पर उनका दृष्टिकोण और राय अक्सर पढ़ता रहता था।....मैंने बाबूजी को कई परामर्श दिये हैं कि अँग्रेजी भाषा के ऐसे तमाम छपे हुये लेखों की कटिंग के जो उनके पास मौजूद हैं तरतीब देकर अपने सामने ही छपवा दें ताकि आगे आने वाली पीढ़ी उनके विषय में यह भी जान सके कि वे केवल हिन्दी में ही नहीं बल्कि अँग्रेजी भाषा में किस बेतकुल्लफी और सादगी के साथ अपने विचारों को प्रकट करते हैं।[४]

आचार्य जुगल किशोर चतुर्वेदी—'साहित्य की एक विधा पत्र-लेखन शैली के तो बाबू जी मूर्द्धन्य विद्वान् हैं।........बहुत समय से अँग्रेजी एवं हिन्दी पत्रों में बाबू जी के मौलिक एवं आधुनिक विषयों पर पत्र छपते रहते हैं।'[५]

श्री मोहनलाल शर्मा—'... ऐसे कितनेई प्रसङ्ग ऐं, जिनपै बाबू जी ने प्रत्यक्ष वार्तालाप और पत्रन के माध्यम सौं चर्चा करीऐ।'[६]

श्री रघुनाथ गुप्त—'....पत्रों के आधार पर ही व्यक्ति की विशेषता आसानी से स्पष्ट हो जाती है। मिलनसार, सहज प्रकृति, अहंभाव से परे व्यक्ति नहीं संस्था बाबू वृन्दावनदास जी ब्रजभाषा के उत्थान में व्यस्त हैं।'[७]

---

(१) साहित्यकारों के प्रेरणा-स्रोत—बा० वृ० दा० अभि० ग्र०, पृ० ८७-८८।
(२) जनपदीय ज्ञ के पुरोधा बा० वृ० दा० „
(३) एक समर्पित व्यक्तित्व— „ पृ० ९७।
(४) निष्णात राजमर्मज्ञ— „ १०५।
(५) मण्डल के सारथी— „ पृ० १०८।
(६) ब्रज साहित्य मण्डल और बा० वृ० दा० „ पृ० ११३।
(७) निरहंकार और मिलनसार „ पृ० ११६।



डा० रामशंकर द्विवेदी—'ये पत्र उनके व्यक्तित्व की कई विशेषताओं को व्यक्त करते हैं।'[१]

डा० राजेन्द्र रंजन—'मेरे पास उनके अनेक ऐसे पत्र हैं, जिनमें उन्होंने समस्याओं पर अत्यन्त स्पष्ट विचार प्रस्तुत किए हैं।'[२]

आचार्य बैजनाथ राय—' 'बनारसीदास चतुर्वेदी के पत्र' आपकी लेखन-कला का सुन्दर परिचायक ग्रन्थ है।'[३]

डा० रघुवीरशरण 'व्यथित'—'यों तो जीवन में अनेक पत्र पढ़ने का अवसर प्राप्त हुआ है पर बा० वृन्दावनदास जी की पत्र-लेखन शैली में स्वकीयता का भाव प्रति शब्द से निःस्तृत होता है।'[४]

डा० योगेन्द्रनाथ शर्मा अरुण'—'अपने समयुगीन साहित्यकारों एवं पत्रकारों की कितनी स्मृतियों को उनके पत्रों के रूप में बाबू जी ने सुरक्षित रक्खा है उसका अनुमान बाबू जी द्वारा संग्रहीत पत्रों से ही लगाया जा सकता है।'[५]

डा० लक्ष्मी नारायण दुबे—'पत्र-लेखक के रूप में वृन्दावनदास जी डा० बनारसीदास चतुर्वेदी की भाँति चिर स्मरणीय हैं। उनके पत्र हिन्दी की निधि हैं। उन्होंने अपने पत्रों के द्वारा हिन्दी की अनेक योजनाओं को प्राणान्वित किया है।'[६]

डा० सरला देवी—'उन्होंने साहित्यज्ञों के पत्र संग्रह प्रकाशित एवं सम्पादित करके हिन्दी की पत्र विधा के उन्नयन में स्तुत्य योगदान किया है।'[७]

डा० शरण बिहारी गोस्वामी—'परिस्थितियों का सही और ओजपूर्ण आकलन देखना हो तो समाचार पत्रों में प्रकाशित उनके पत्रों में देखिये। ओज, निर्भीकता और वही बेलागपना। भय किसी से नहीं, सच बात सब को, झूँठ से समझौता नहीं। ऐसा प्रखर और धारदार व्यक्तित्व रहा है बाबू जी का।'[८]

---

(१) मर्मज्ञ सम्पादक—बा० वृ० दा० अभि० ग्रं० पृ० १२०।
(२) आगरा मण्डल के साहित्यिक कमिश्नर ,, पृ० १३५।
(३) बाबू वृन्दावनदास : पूर्व के क्षितिज से ,, पृ० १४३।
(४) विपश्चित साधक— ,, पृ० १५०।
(५) एक पारदर्शी सौम्य-व्यक्तित्व ,, पृ० १५८।
(६) साहित्य वारिधि— ,, पृ० १६५।
(७) पत्र विधा के उन्नायक— ,, पृ० १६६।
(८) वार्धक्ये मुनिवृत्तीनां— ,, पृ० १७२।

श्री हरगोविन्द गुप्त—'....कई कृपा पात्र उनके मेरे पास आये, जिनमें हर बार उनके सरल, सहज और सौम्य दर्शन ही मुझे मिलें।'[१]

डा० राजेन्द्रसिंह कुशवाहा—'पत्र विधा के तो आप निष्णात पंडित हैं।'[२]

श्री राधेविहारीलाल सक्सेना 'राकेश'—'अर्वाचीन समस्याओं एवम् सार्वजनिक जीवन की कठिनाइयों पर ध्यान आकर्षित करने के उद्देश्य से आपने अँग्रेजी, हिन्दी के दैनिक, साप्ताहिक पत्रों में जब तब अनेकों पत्र भेजकर प्रदेश के सार्वजनिक कार्यकर्ताओं में लोकप्रिय स्थान बना लिया है।........पत्र लेखन का स्थान पाश्चात्य साहित्य संसार में अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इसकी उपयोगिता सार्वजनिक व राजनीतिक कार्यकर्ता के लिये अत्यधिक होती है। बाबू जी ने इस कला को आत्मसात् कर राजनैतिक एवम् सामाजिक जनोपयोगी विषयों पर खूब लिखा और जब तब लिखते रहे हैं।'[३]

अफलासिह वर्मा—'साहित्य सृजन, पत्र-लेखन एवं समारोहों का आयोजन तथा उनमें भाषण करना यही उनकी संक्षेप में गतिविधियाँ हैं।[४]

डा० द्वारिकाप्रसाद मित्तल—'आप कहीं.......पद्मसिंह स्मृति समारोह में........स्वागत भाषण दे रहे हैं तो कहीं ब्रज साहित्य मण्डल की पत्रिका का सम्पादन, कहीं पत्रों का संकलन कर रहे हैं तो कहीं प्राचीन हिन्दू संस्कृति पर शोध।[५]

डा० माधुरी दुबे—'हिन्दी पत्र विधा के क्षेत्र को आपने 'डा० बनारसीदास चतुर्वेदी के पत्र' एवं 'डा० वासुदेव शरण अग्रवाल के पत्रों का सम्पादन कर समृद्ध बनाने में अपना योगदान दिया है।'[६]

डा० भगवानदयाल श्रीवास्तव—'साहित्य के क्षेत्र में उनके द्वारा सम्पादित........पत्रों के संग्रह पत्र विधा के क्षेत्र में गण्य कृतियाँ हैं।'[७]

राजेन्द्र कृष्ण—'आपकी धाराप्रवाह शैली में परिपक्व विचार श्रृङ्खला अजस्रभाव से प्रभावित होती है।'[८]

---

(१) मेरा नमन— ,, पृ० १७५।
(२) सौमनस्य की मूर्ति—बाबू वृन्दावनदास अभि० ग्रं० पृ० १७८।
(३) बाबू वृन्दावनदास जी का व्यक्तित्व और कृतित्व अभि० ग्रं० पृ० १८२-१८३।
(४) साहित्यनिष्ठ ,, पृ० १८८।
(५) हिन्दीमय व्यक्तित्व ,, पृ० १९३।
(६) पत्र साहित्य के संकलनकर्ता ,, पृ० १९४।
(७) संस्कृति अनुरागी ,, पृ० ७१५।
(८) एकनिष्ठ साधक ,, पृ० ७१६।

श्री श्यामसुन्दर खत्री—'बाबू वृन्द वनदास हिन्दी जगत में उन इने-गिने महानुभावों में हैं जिन्होंने महामान्य साहित्यिकों और मनीषियों के पत्रों का संग्रह और प्रकाशित करने का महत्वपूर्ण रूप समझा है।

हिन्दी और जनपदीय भाषाएँ—आपकी दृष्टि में

डा० वासुदेव शरण अग्रवाल ने अपने २४-१०-४३ के पत्र में श्री वनारसीदास जी चतुर्वेदी को जनपदीय कार्य के महत्व को बतलाते हुए लिखा, 'अनेक सम्पादकों को अपनी लेखनी घिसनी पड़ेगी, कितने ही लेखकों को मस्तिष्क की उधेड़-बुन इस काम में खर्च करनी पड़ेगी, अनेक भाषणों में इस सन्देश की व्याख्या करनी होगी—तब इस महानाद का सम्मिलित घोष सिन्धु और ब्रह्मपुत्र के बीच की अगणित प्रजाओं तक पहुँच पायेगा और इन सबसे बढ़कर आवश्यकता होगी—किसी तपस्वी दधीचि के अपनी हड्डियों को इस काम में गलाने की।'

जनपदीय आंदोलन का महानाद बाबू वृन्दावनदास ने अपने सहस्रों पत्रों, ब्रजभारती की सम्पादकीय टिप्पणियों, यत्र-तत्र प्रकाशित लेखों के माध्यम से जन जन तक पहुँचाने का कार्य पिछले दशक में बड़ी ही निष्ठा के साथ किया है। सही अर्थों में इस आधुनिक दधीचि ने अपने को इस महत् कार्य के लिए इस प्रकार गला दिया कि आज वे रुग्णावस्था में शैय्याग्रस्त हैं। १० से १५ घन्टे प्रतिदिन इस कार्य को समर्पित करने का नतीजा यह हुआ कि ७० वर्ष की आयु में अपने को आप दुर्बल महसूस कर रहे हैं। फिर भी आपकी लेखनी अबाधगति से चल ही रही है। कहीं गतिरोध नहीं, कहीं विराम नहीं।

जनपदों में व्याप्त सामग्री की शत-साहस्त्री संहिता तैयार करने की प्रेरणा उनके प्रत्येक पत्र में अभिव्यंजित हुई है। एक-एक जनपदीय शब्द को बटोर लेने की उनकी कामना को पं० कृष्णानन्द गुप्त, पं० गणेश चौबे, श्री रामनारायण उपाध्याय आदि विद्वानों और इन पंक्तियों के लेखक ने भी साकार किया है अलग-अलग जनपदीय भाषाओं के कोश निर्माण कर उन के सम्बन्ध में लेख लिखकर।

२७-८-६८ के अपने पत्र में श्री कृष्णानन्द गुप्त जी को आपने लिखा था—'... मैं आश्वस्त हूँ कि आप बुन्देली का कोश निर्माण शीघ्र ही कर लेंगे ....गणेश जी का भोजपुरी कोश पर लेख इसी अंक में छप रहा है। श्री रामनारायण उपाध्याय निमाड़ी का कोश स्वयं छाप लेंगे।' आपका विश्वास

है इन जनपदीय कोशों के प्रकाशनोपरान्त हिन्दी का कमनीय रूप, विराट रूप खिल उठेगा। हिन्दी भारती समृद्ध होगी।

अपने ४-२-७५ वाले पत्र में आपने गुप्त जी को लिखा था—'ब्रज-संस्कृति भारतीय संस्कृति की आत्मा है और ब्रज-संस्कृति की आत्मा है जनपदीय भावना। श्रद्धेय बनारसीदास जी चतुर्वेदी, स्व० डा० वासुदेव शरण अग्रवाल स्वयं आप एवं डा० सत्येन्द्र समय-समय पर जनपदीय भावना को स्वस्थान प्रेम (लोकल पैट्रियोटिज्म) की संज्ञा देते रहे हैं। आज से ५००० वर्ष पूर्व भगवान् श्रीकृष्ण ने दूरस्थ विदेशी देवता इन्द्र के स्थान पर स्थानीय देव गोवर्द्धन की पूजा का विधान कराया था। श्रीकृष्ण स्वयं जनपदीय संस्कृति के प्रतीक थे, 'ऊधौ मोहिं ब्रज विसरत नाहीं' यह वाक्य श्रीकृष्ण के जनपदीय प्रेम का द्योतक था।

आज भारतीय भाषाओं तथा हिन्दी की लोक भाषाओं में साहित्यिक उन्नयन की एक लहर-सी चल पड़ी है। अनेक लेखक मैदान में आ गये हैं, विभिन्न भाषाओं में पत्र-पत्रिकाएं अगणित संख्या में उदित हो चुकी हैं। यह सब जनपदीय आंदोलन का ही शुभ परिणाम है।

पूर्वांचलीय भाषाओं के क्षेत्रों में जनपदीय आंदोलन प्रखर-सा प्रतीत हो रहा है। मैथिली, भोजपुरी, आङ्गिका वज्जिका आदि लोक भाषाएँ काफी समुन्नत हुई हैं।'........

जनपदीय भावना का लोक जीवन से अविच्छिन्न सम्बन्ध है।....... यह भावना तो शाश्वत है और जब तक लोक जीवन रहेगा इस भावना का अस्तित्व भी अनिवार्य रूप से बना रहेगा। यदि जनपदीय भावना के उत्कर्ष से छोटे-छोटे घटक उन्नति के पथ पर अग्रसर होने लगें तो यह राष्ट्रीय अभ्युत्थान और राष्ट्रीय एकता के लिए एक शुभ चिह्न के रूप में होगा। यदि छोटी छोटी इकाइयाँ सबल हो गईं तो वे सब मिलकर एक प्रबल राष्ट्र के रूप में अवस्थित होंगी। विगत दो दशकों में अनेक पत्रिकाएँ और अगणित छोटी-छोटी पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं।........सच्चे अर्थों में यही जनपदीय आन्दोलन है।

जनपदीय भाषाओं का संस्कार करके हमें हिन्दी की शब्द सम्पदा और अभिव्यक्ति सामर्थ्य बढ़ानी है।.... ...'जनपदीय आन्दोलन का वेग अप्रतिहत है।'

श्री नरेश पाण्डेय चकोर के नाम लिखे अपने ८-२-७४ वाले पत्र में आप निर्भीक होकर घोषणा करते हैं—'जो लोग हिन्दी का विरोध करते हैं वे तो हमारे शत्रु हैं, हम उन्हें राष्ट्रद्रोही समझते हैं।'

एक दूसरे पत्र में आप चकोर जी को ही लिखते हैं—'चार कोस पर पानी बदले आठ कोस पर भाखा। आठ-आठ कोस पर बदलने वाली भाषा और कुछ नहीं हिन्दी के ही विभिन्न रूप हैं।' (१५-२-७४)

श्री भगवान सिंह सेंगर के नाम लिखे पत्र १०-३-७१ में आप लिखते हैं—'मैं ब्रज बुन्देली, भोजपुरी, अवधी, राजस्थानी, मैथिली आदि उपभाषाओं में भेदभाव अथवा पारस्परिक स्पर्द्धा की कल्पना भी नहीं करता। हिन्दी तो अब जन-जन के मानस सिंहासन पर राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिष्ठित हो चुकी है, उसके इस उच्चासन से अब उसे कोई शक्ति अपदस्थ नहीं कर सकती।' ऐसे अनेक सन्दर्भ आपके पत्रों में बिखरे हुए हैं।

८-११-७१ वाले पत्र डा० राजेन्द्र रंजन जी को आप लिखते हैं—'आशा' के इस अंक में आपकी साधना फलवती हुई है।.... ...अद्यतन प्रकाशित समस्त विशेषांकों में इस अंक का स्थान बहुत ऊँचा है।

वस्तुतः मैं आपको इस विषय का ज्ञाता मानता हूँ। जनपदीय आंदोलन के कार्यकर्ता पुराने पड़ गये हैं, कुछ पहले ही खिसक गये हैं, मुझे विश्वास है कि किसी दिन आप ही इस ध्वजा को धारण करेंगे।'

जनपदीय आंदोलन में कहीं भी किसी नवीन कार्य की सूचना बाबू जी को मिलती हैं तो वे परम आनन्दित होते हैं।

डा० रंजन के नाम एक दूसरे पत्र में आप लिखते हैं—.........ब्रजभाषा हिन्दी के ही सर्वाधिक सन्निकट है। प्रत्येक भाषा के साथ एक संस्कृति भी जुडी होती है, हिन्दी के साथ जिस महान संस्कृति को आबद्ध करने की कल्पना की जा सकती है ब्रजभाषा उसकी किन्हीं अर्थों में संवाहिका है। कैसा अटूट सम्बन्ध है ?.... ...हम सब को अपने कार्य व्यवहार, सभी गोष्ठियों आदि में हिन्दी को ही व्यवहृत करना है। हिन्दी के स्थान पर ब्रजभाषा के व्यवहार का आग्रह एक प्रकार से हिन्दी के प्रति प्रतियोग की भावना का सूचक है जो कि गर्हित और अवांछनीय है, हिन्दी लोक भाषाओं की नवनीत रूपा है।........ यह हमारी राष्ट्रीय एकता की कड़ी है।........हमें ब्रजभाषा का कार्य तो करना है परन्तु हिन्दी के प्रतियोग में अथवा उसके हितों का बलिदान करके कदापि नहीं।' (२०-७-७२)

और उसे यथासाध्य कार्यान्वित किया है........वे पत्र-लेखन कला के विख्यात आचार्य हैं। उन्होंने अपने पत्रों का ऐसा समुद्र सृजन कर दिया है जिसका आर-पार नहीं है।........

दूसरा ग्रन्थ है 'डा० वासुदेव शरण अग्रवाल के पत्र।' प्राक्कथन में

उन्होंने डा० अग्रवाल के महत् ज्ञान और कृतियों का बड़ा ही सुन्दर वर्णन किया है। बड़ी सारगर्भित भूमिका लिखी है।'

इस प्रकार अनेक विद्वानों ने बाबू वृन्दावनदास के पत्र लेखन, उनके पत्रों के महत्व, साहित्य की इस उपेक्षित विधा को समुन्नत करने वाले उनके प्रयत्नों पर विस्तार से अपने विचार प्रकट किये हैं।

हिन्दी का पत्र-साहित्य

हिन्दी पत्र-साहित्य पर विचार करने के क्रम में सबसे पहले पं० बनारसीदास चतुर्वेदी और प० हरिशकर शर्मा द्वारा सम्पादित 'पद्मसिंह शर्मा के पत्र' पर दृष्टि जाती है। आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली से १९५६ में इसका प्रकाशन किया गया। इसमें कुल ३२ विद्वानों के नाम लिखे शर्मा जी के पत्र हैं। कुछ अन्य पत्र संग्रह इस प्रकार हैं।

'चिट्ठी-पत्री' श्री मदनगोपाल और श्री अमृतराय द्वारा २ खण्डों में सम्पादित स्व० प्रेमचन्द के पत्रों का संकलन है जो १९६२ में हंस प्रकाशन, इलाहाबाद से प्रकाशित हुआ।

'महाकवि निराला के पत्र' श्री जानकीवल्लभ शास्त्री ने राजकमल प्रकाशन, दिल्ली से प्रकाशित करवाये हैं।

'पन्त के सौ पत्र बच्चन के नाम' (सं० डा० हरिवंश राय 'बच्चन') राजपाल एण्ड सन्स ने छापे हैं।

'बच्चन के पत्र निरंकार देव सेवक के नाम', 'प्रसाद के पत्र' आदि कई संकलन इधर छपे हैं।

पत्र संकलनों में 'डा० बनारसीदास चतुर्वेदी के पत्र' और 'डा० वासुदेवशरण अग्रवाल के पत्र' तो स्वय बाबू जी ने ही सम्पादित किये हैं। जिसे साहित्य प्रकाशन, माली बाड़ा, नई सड़क दिल्ली ने छापा है। ये दोनों पत्र-संग्रह पत्र साहित्य के क्षेत्र में धूमकेतु की तरह आये :

हिन्दी में पत्रों को प्रकाशित करने की परम्परा का पूर्णतया अभाव नहीं रहा है। पहले भी इस क्षेत्र में कुछ काम हुआ है।

कभी स्वामी श्रद्धानन्द एवं श्री भगवतदत्त जी ने अलग-अलग स्वामी दयानन्द सरस्वती के पत्र प्रकाशित करवाये थे।

---

(१) ब्रज विभूति साहित्य वारिधि बाबू वृन्दावनदास जी —
बा० वृ० दा० अभि० ग्रं० स्मारिका पृष्ठ ४४।

श्री बैजनाथ सिंह विनोद ने सम्भवतः ५३-५४ में 'द्विवेदी पत्रावली' और द्विवेदी युगीन साहित्यकारों के पत्र भारतीय ज्ञानपीठ वाराणसी से प्रकाशित कराये थे। इनमें आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के पत्र हैं।

बापू के पत्र संग्रह नवजीवन प्रकाशन ने छपे हैं। श्री बिनोबा और श्री नेहरू के पत्र भी अब हिन्दी में उपलब्ध हैं। 'स्वामी विवेकानन्द पत्रावली', स्व० जमनालाल बजाज के पत्र (५ खण्डों में) शरत पत्रावली' (सं० डा० महादेव साहा) भी उपलब्ध हैं। आदर्श पत्र लेखन (श्री यज्ञदत्त शर्मा) पाँचवें पुत्र को बापू के आशीर्वाद (काका कालेलकर), किरणें (चाँदमल अग्रवाल, लोकोदय प्रकाशन, वर्धा), पति पत्नी के पत्र, चन्द हसीनों के खतूत, परमार्थ-पत्रावली (४ भाग), (श्री जयदयाल गोयिन्दका), शिक्षाप्रद पत्र, अध्यात्म विषयक पत्र दोनों ही ज० गो० के आदि अनेक संग्रह प्रकाशित हैं।

इनके अतिरिक्त कुछ और पुस्तकें हैं जिनमें अच्छे पत्र छपे मिलते हैं—(१) पृथ्वी पुत्र (डा० वासुदेव शरण अग्रवाल), (२) कवियों में सौम्य पंत (डा० बच्चन), (३) बाजत आवे ढोल (श्री देवेन्द्र सत्यार्थी), (४) लाल धरती (अमृत राय), (५) निराला की साहित्य साधना (डा० राम विलास शर्मा)।

इधर निकलने वाले अभिनन्दन ग्रन्थों में भी विशेष रूप से पत्र छपने लगे हैं। 'प्रेरक साधक': पं० बनारसीदास चतुर्वेदी अभि० ग्रन्थ में तो ढेर सारे पत्र हैं।

स्व० बालकृष्ण गुप्त की स्मृति में निकाले गये ग्रन्थ में भी उनके पत्र हैं।

हमारे आराध्य, रेखाचित्र, साहित्यिक जीवन के अनुभव और संस्मरण, सन्ताप आदि अनेक संस्मरणात्मक कृतियों में पत्रों का उपयोग मिलता है।

हिन्दी की पुरानी पत्र पत्रिकाओं का सर्वेक्षण भी इस दृष्टि से महत्व-पूर्ण रहेगा। इनमें अनेक मृत-जीवित साहित्यकारों के पत्र प्रकाशित हैं। पुरानी-नई पत्र-पत्रिकाओं के अन्तर्गत सरस्वती, चाँद, सुधा, भारत मित्र, नागरी प्रचारिणी पत्रिका, सम्मेलन पत्रिका, परिषद पत्रिका, प्रतीक, अवन्तिका, ज्ञानोदय, अजन्ता, नया साहित्य, राष्ट्रभारती, नई धारा, विक्रम, जीवन-साहित्य, प्रवाह, आलोचना, कल्पना, साहित्य सन्देश, जयभारती, दक्षिण भारत, हिमालय, साहित्य, आजकल, विश्व साहित्य, इतिहास वीणा, नवनीत, धर्मयुग, साप्ताहिक हिन्दुस्तान, हंस, पाटल, ब्रजभारती, उत्तर विहार, आदि

ढेरों पत्र-पत्रिकाएँ हैं जिनकी फाइलों से अनमोल पत्रों को छाँटा जा सकता है।

स्व० पं० बालकृष्ण शर्मा नवीन के पत्र 'नर्मदा' में स्व० रामवृक्ष बेनीपुरी और स्व० राजा राधिकारमण सिन्हा के पत्र 'नईधारा' में छपे थे।

आये दिन अनेक मूल्यवान पत्र छपते ही रहते हैं। हिन्दी के दिवंगत और जीवित साहित्यिकों के महत्वपूर्ण पत्रों का एक अलग संकलन निकाला जाये तो उससे हिन्दी के चढ़ाव उतार की गाथा का स्पष्ट आभास मिलेगा। पत्र साहित्य की श्री वृद्धि तो होगी ही।

आचार्य शिव पूजन सहाय महापंडित राहुल सांकृत्यायन रामवृक्ष बेनीपुरी के पत्र यदि शीघ्र 'संकलित-प्रकाशित नहीं' कर लिए गये तो विस्मृति के गर्त में चले जायेंगे। स्व० राहुल जी के कुछ पत्रों को तो मैंने स्वयं 'उत्तर बिहार' में छपा दिया है।

देर ही सही हिन्दी-जगत ने पत्रों का महत्व समझना शुरू कर दिया है। हाल के वर्षों में इधर कुछ प्रकाशकों की रुचि पत्र-साहित्य प्रकाशन के क्षेत्र में हुई है। फलस्वरूप कई पत्र-संग्रह प्रकाश में आये हैं। हिन्दी साहित्य में बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध के पत्र अत्यधिक मूल्यवान हैं।

ऋग्वेद काल से चली आ रही जनपदीय विचार धारा को अपने वर्तमान जनपदीय आंदोलन (जो बाबू जी के इन पत्रों में ध्वनित है) के साथ एकाकार करते हुए परमानन्दित हूँ। अन्त में इन्हीं शब्दों के साथ—

ये ग्रामा यदरण्यं याः सभा अधि भूम्यां
ये संग्रामास्समितयस्तेषु चारु वदेम ते। (ऋ०, पृथिवी सूक्त ५६)

(पृथिवी पर जो ग्राम और आरण्य हैं, जो सभायें और समितियाँ हैं जो सार्वजनिक सम्मेलन हैं, उनमें हे भूमि, हम तुम्हारे लिये सुन्दर भाषण करें।)

स्थान—पोब्दी (अ० प्र०)
सोलुङ्ग पर्व
६-६-१६७६

—रमण शाण्डिल्य

नम्र-निवेदन

पुस्तक की भूमिका तो छप चुकी परन्तु मैं अपने कर्तव्य पथ से च्युत ही समझा जाऊँगा यदि मैं बाबू जी के उन प्रेरणादायक पत्रों का उल्लेख न करूँ जो कि आरम्भ में ही मुझे मिले। इन पत्रों में मुझे साहित्यिकों के प्रति बाबूजी का असीम स्नेह परिलक्षित हुआ। भूमिका को अधिक बोझिल न बना दिया जाय, इस दृष्टि से मैं उन पत्रों को पाठकों की जानकारी के लिए यहाँ उद्धृत कर देना चाहता हूँ। हिन्दी और हिन्दी वालों के प्रति बाबू जी कितने जागरूक हैं और हिन्दी के संवर्द्धन में उनकी कितनी रुचि है यह इन पत्रों से भलीभांति विदित हो जाता है।

(१)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ५-११-७०

बन्धुवर शांडिल्य जी, प्रणाम।

कृपा पत्र यथासमय मिल गया, धन्यवाद।

ब्रजभारती के प्रति आपने जो भावनायें व्यक्त कीं उनके लिए अनुग्रहीत हूँ। स्व० डा० वासुदेवशरण के पत्रों का मैं संग्रह कर रहा हूँ। उनके पत्र संग्रह पर एक पुस्तक प्रकाशित करने का विचार है। सम्पादन मैं ही कर रहा हूँ। सम्प्रति मैं पं० बनारसीदास चतुर्वेदी के पत्रों को पुस्तकाकार प्रकाशित करने का विचार कर रहा हूँ। उसमें मुझे प्राप्त लगभग २५० पत्र होंगे तथा भूमिका भी मेरी होगी।

'मधुकर' की पुरानी फाइलों के विषय में चतुर्वेदी जी ही साधिकार बतला सकते हैं।

श्री रामशंकर द्विवेदी का पता ६३ सुभाष नगर, उरई (उ० प्र०) है। वे बड़े सज्जन हैं और विद्वान भी।

मुझे प्रसन्नता हुई कि आप उत्तर पूर्व सीमान्त की जन भाषाओं पर अनुसन्धान कर रहे हैं। श्री राहुल जी के पत्र हमारे संग्रह में नहीं हैं। कदाचित् चतुर्वेदी जी के पास उनके पत्र हों।

ब्रजभारती का मार्गशीर्ष अंक २, ३ सप्ताह में निकलेगा। उसमें

अन्तर जनपदीय परिषद विषयक पर्याप्त जानकारी आपको प्राप्त होगी, वह अंक प्रकाशित होते ही आपको भेजा जायगा।

शेष सब कुशल है।

आपका
वृन्दावनदास

(२)

प्रकाश भवन,
मथुरा. १०-१२-७०

प्रियवर शांडिल्य जी।

कृपा पत्र मिला। धन्यवाद।

दोनों महारथियों के पत्र साहित्य पर निरन्तर काम कर रहा हूँ। आपकी शुभ कामनाओं और सद्भावनाओं के लिये अनुग्रहीत हूँ।........अन्तर जनपदीय विषयक चतुर्वेदी जी के भाषण की प्रति तथा अन्य मुद्रित साहित्य जो एक समारोह में वितरित हुआ था आपको पृथक् रूप से प्रेषित है।

ब्रजभारती तो अब आपके पास निरन्तर पहुँचती रहेगी विशेष प्रतियाँ ही केवल भेजने का तो प्रश्न ही नहीं उठता।

गणेश जी हमारे परममित्र हैं, उन्होंने हमें आपके विषय में लिखा है, अतः अब तो आपको हम अपने परिवार का ही अंग मानते हैं।

डा० सियाराम जी तिवारी को भी अंक विशेष भेज देंगे।

आपका
वृन्दावनदास

(३)

प्रकाश भवन,
मथुरा. १४-६-७१

बन्धुवर शांडिल्य जी।

कृपा पत्र मिला। धन्यवाद। ब्रजभारती ज्येष्ठ अंक तथा अध्यक्षीय भाषण की एक प्रति आपको प्रेषित हो चुकी है। आशा है आपको प्राप्त हुई होगी।

डा० बनारसीदास जी के पत्रों पर मेरी पुस्तक छप चुकी है। परन्तु अन्दर के दो चित्र, जिल्द पर आवरण तथा ऊपर का आवरण अभी छपने शेष हैं। आजकल प्रेस वाले स्कूली पुस्तकें छापने में व्यस्त हैं। अतः इन चीजों के छपने पर ही पुस्तक पूर्ण होगी और जिल्दें बंधेगी। हम स्वयं आपको एक प्रति तैयार होते ही भेज देंगे।

साङ्गपो पर व्रजभारती के अगले अंक में टिप्पणी दे दी जायेगी। आशा है आप स्वस्थ एवं सानन्द है।

आपका
वृन्दाबनदास

(४)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ६-७-७१

मान्यवर शांडिल्य जी, प्रणाम।

आपका २५-६-७१ का कृपा पत्र यथासमय प्राप्त हो गया। अनेक धन्यवाद। आप जनपदीय भाषाओं के पुनरुद्धार का महान् कार्य कर रहे हैं। साङ्गपो पर हम भाद्रपद अंक के सम्पादकीय में निश्चित रूप से अपने विचार प्रकट कर रहे हैं। आपका प्रयास स्तुत्य है तथा वहाँ के स्थानीय कार्यकर्ताओं को प्रेरणादायक है। २८ जून के उत्तर विहार में मेरी पुस्तक पर आपकी भव्य समीक्षा भी प्रकाशित हो गई है। इस पुस्तक पर अद्यतन प्रकाशित समस्त समीक्षाओं में मैं आपकी समीक्षा को सर्वश्रेष्ठ मानता हूँ। आपने पुस्तक का साद्यन्त अध्ययन किया है। नूतन तथ्यों को उद्घाटन करने वाली आपकी समीक्षा एक बहुश्रुत एवं प्रौढ़ अन्वेषक की दृष्टि प्रस्तुत करती है। मैं तो भूल गया था कि आठ वर्ष पहले मैंने कभी लिखा था कि पूर्व पाकिस्तान से प्रत्येक हिन्दू भारत आकर ही रहेगा। आपने उन शब्दों को खोज निकालकर मुझे भविष्यवक्ता का आदर प्रदान किया है। इस भव्य समीक्षा के लिए मैं आपका कितना आभार प्रगट करूँ। यह समीक्षा आपके प्रकाण्ड पाण्डित्य और विपुल अध्ययनशीलता की परिचायक है। बहुत-बहुत कृतज्ञ हूँ। रसूलपुरी जी भी हमारे कृपालु मित्र हैं।

पत्रों वाली पुस्तक तैयार होते ही सेवा में प्रेषित होगी। चित्रों और जिल्द बन्दी के कारण कुछ विलम्ब हो रहा है। आप जो कुछ साहित्य भेजेंगे हम सब का उल्लेख व्रजभारती में करेंगे। शेष फिर

आपका
वृन्दावनदास

(५)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २०-७-७१

मान्यवर शांडिल्य जी।

आपका लेख यथासमय प्राप्त हो गया। व्रजभारती के भाद्रपद अंक

की सामग्री तो प्रेस को बहुत पहले ही जा चुकी थी। आपका लेख मार्गशीर्ष अंक में निश्चित रूप से छप जायेगा। आपने लोक भाषा साहित्य का गहन अध्ययन किया है। आपके लोक भाषाओं पर लिखे हुए लेख जहाँ-जहाँ भी प्रकाशित हों उनकी एक-एक प्रति मुझे मिलनी चाहिए। वे संग्रहणीय हैं। उनका उल्लेख भी ब्रजभारती में होना आवश्यक है। अपने जनपदीय आंदोलन का यह ध्येय है। वास्तव में आपका योगदान हम सबसे अधिक है और परमस्तुत्य है। पत्रों की पुस्तक प्राप्त होते ही सेवा में प्रेषित होगी।

कृपा भाव रखें।

आपका
वृन्दावनदास

(६)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २७-७-७१

मान्यवर शांडिल्य जी, प्रणाम।

आपका पत्र पढ़कर अत्यधिक प्रसन्नता हुई। आपने बड़ा शुभ सम्वाद सुनाया है। आप सामने होते तो आपको बड़ा स्वादिष्ट मिष्ठान्न अर्पित करता। पुत्र जन्मोत्सव के उपलक्ष में आपको और श्रीमती बसुन्धरा जी को अनेक बधाइयाँ। नवजात शिशु को खूब प्यार एवं आशीर्वाद। बालक दीर्घायु प्राप्त करता हुआ सदैव सुखी एवं समृद्धिशाली रहे यही हमारी मंगल कामना है।

आज आपको डा० बनारसीदास चतुर्वेदी के पत्र शीर्षक पुस्तक की एक प्रति रजिस्टर्ड बुक-पोस्ट से भेजी है। कृपया पहुँच लिखें।

कुशल समाचार देते रहें।

आपका
वृन्दावनदास

(७)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २४-८-७१

बन्धुवर शांडिल्य जी, प्रणाम।

कृपा पत्र ता० १५-८-७१ प्राप्त हुआ। अनेक धन्यवाद। आपने पुस्तक पर विस्तार पूर्वक अपने महत्वपूर्ण विचार प्रकट किये एतदर्थ कृतज्ञ हूँ। हिन्दी साहित्य की पत्र विधा का सही मूल्यांकन आप सदृश मनीषी ही कर सकते हैं। सभी मित्रों ने इस पुस्तक का बड़े प्रेम से स्वागत किया है

और मेरे ऊपर जो स्नेह वर्षा की है उसे मैं आशीर्वाद के रूप में ग्रहण करता हूँ।

अभिनन्दन ग्रन्थ का काम सम्पादक लोगों ने जोरों से हाथ में ले रखा है। आपके लोक भाषाओं से सम्बन्धित लेख सम्पादक गण मुझसे ग्रन्थ में प्रकाशनार्थ ले गये हैं। मैं समझता हूँ वहाँ उनको अधिक समादृत स्थान प्राप्त होगा।

फुटबाल के खेल में चोट लग गई यह जानकर दुःख हुआ। आशा है अब पीड़ा शांत हुई होगी। मेरा इतिहास ग्रन्थ (प्राचीन भारत में हिन्दू राज्य) ११२ पृष्ठ तक छप चुका एक डेढ़ महीने में पूरा छप जायेगा तब एक प्रति सेवा में प्रेषित होगी।

आपका
वृन्दावनदास

(८)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २०-१२-७१

मान्यवर शांडिल्य जी, प्रणाम।

कृपा पत्र मिला। धन्यवाद। इससे पूर्व भी आपका एक कृपा पत्र मिला था। मार्गशीर्ष अंक (ब्रजभारती का) भेजा जा चुका है। एक दूसरी प्रति भी दो दिन हुए भेजी गई हैं। मेरा इतिहास ग्रन्थ अभी छप ही रहा है। वह ३०० पृष्ठ में भी पूरा नहीं हुआ है। अभी इसमें एक मास पूरा होने में लगेगा। श्रद्धेय चतुर्वेदी जी के 'सेतुबन्ध' और 'वे पत्र वे दिन' के विषय में मैं आपको फिर लिखूँगा। आसामिया साहित्य पर लेख भेज सकते हैं।

क्राउन साइज सोलह पेजी मौनो टाइप की छपाई ३०-३२ प्रति हजार के लगभग समझिये। कागज जैसा भी लगे। आप पाण्डुलिपि भेजें हम उसी प्रेस का तखमीना भिजवा देंगे जिसमें कि हम अपना इतिहास ग्रन्थ छपवा रहे हैं और जिसमें कि डा० बनारसीदास चतुर्वेदी के पत्र शीर्षक पुस्तक छपी थी।

आशा है आप स्वस्थ एवं सानन्द हैं। अभि० ग्रन्थ के प्रकाशन में अभी देर है:

आपका
वृन्दावनदास

(६)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २-५-७२

बन्धुवर शांडिल्य जी ।

आपका १७ अप्रैल का पत्र सामने रखकर यह पत्र लिख रहा हूँ। मैंने आपको जिनी के पते पर साहित्यालोक का एक अंक और अध्यक्षीय भाषण की एक प्रति बुक-पोस्ट से करीब ५ दिन हुए भेजी थी। मालूम नहीं वह पैकट आपको मिला या नहीं। डॉक की जिस गड़बड़ी का आपने उल्लेख किया है उसको देखते हुए तो सन्देह है।

ब्रज साहित्य मण्डल के १६ वें अधिवेशन के अध्यक्षीय भाषण की एक और प्रति इस पत्र के साथ प्रेषित है। अधिवेशन तो धूमधाम से हो गया परन्तु अब फिर मण्डल के कार्यकर्ताओं में दलबन्दी का भूत अपना मनहूस शिर उठा रहा है। हम तो 'कर्मण्ये वाधिकारस्ते' के सिद्धान्त को मानते हुये अविचलित होकर कार्यरत रहते हैं, पटेगी जब तक करते रहेंगे नहीं तो विरत हो जावेंगे। अपने आपको खपाकर भी काम करने का पुरस्कार स्नेह के बजाय ईर्ष्या के रूप में मिलता है।

२० जनवरी से नेफा के स्थान पर अरुणाचल प्रदेश के रूपमें नामकरण स्वागत योग्य है परन्तु असमिया भाषा का अँग्रेजी द्वारा अपदस्थ किया जाना शोचनीय है।

बन्धुवर रसूलपुरी जी भयानक बीमारी से उठे हैं। वे बड़े ही सज्जन और सहृदय व्यक्ति हैं। उनके हृदय-सागर में साहित्यिकों के प्रति स्नेह हिलोरें लेता रहता है। प्रत्येक मित्र के लिये उनके पास सौजन्य है। ईश्वर से प्रार्थना है वे शतायु हों।

आपको केन्द्रीय हिन्दी संस्थान में प्रवेश दिलाने के लिए मैंने डा० व्रजेश्वर वर्मा को लिखा था। खेद है उन्होंने उत्तर देने की भी कृपा नहीं की। आज मैंने उनको अभी एक पत्र और लिखा है। वहाँ क्या गड़बड़ है इसका तो मुझे अब पता लगाना ही है।

शेष सब कुशल हैं।

आशा है आप स्वस्थ एवं सानन्द हैं।

आपका
वृन्दावनदास

(१०)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ३-८-७२

बन्धुवर शांडिल्य जी।

कृपा पत्र तथा वज्जिका साहित्य की प्रति मिली। धन्यवाद। आपके द्वारा प्रेषित सभी साहित्य पर ब्रजभारती के भाद्रपद अंक में लिखेंगे।

ब्रजभारती का ज्येष्ठ अंक चाङ-लाङ के पते पर कल फिर भेज दिया है। पहुँचा होगा।

आपके विस्तृत पत्र में लिखित सभी बातों से अगवत हुआ। अरुणाचल में निर्जीव लोक-भाषा को पुनर्जीवित कर आप एक महान कार्य कर रहे हैं। अरुणाचल में असमिया की उपेक्षा और हिन्दी का विरोध उतनी ही दुःखद घटनाएँ हैं जितनी कि अँग्रजी के प्रति आसक्ति। इस रोग की जड़ बड़ी गहरी है। मित्रवर रसूलपुरी जी का अब क्या हाल है ? उनकी रुग्णावस्था चिन्तनीय है। विधि की विडम्बना है। एक स्नेह और सौजन्य की मूर्ति को भी अपनी निर्दयता से मुक्त नहीं करना चाहती।

आपका
वृन्दावनदास

(११)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २२-१२-७२

बन्धुवर शांडिल्य जी।

कृपा पत्र मिला। धन्यवाद। प्राचीन भारत में हिन्दू राज्य की एक प्रति भेजी जा चुकी है। आज ब्रजभारती का नवीन अंक भी भेज दिया है। इस अंक में हमने भी सम्पादकीय में पृष्ठ २ पर इसकी चर्चा की है।

संसद की चर्चा अनेक पत्रों में छपी थी। आगे भी चलेगी। पहले Cutting तो मैंने नहीं रक्खे। यह चर्चा तो अभी और चलेगी, आगे कतरनें भेजूंगा। कल शायद प्रकाशवीर शास्त्री मथुरा आवेंगे और मेरी पुस्तक प्राचीन भारत में हिन्दू राज्य का विमोचन करेंगे। उस समय विस्तार से बातें होंगी।

आशा हैं आप स्वस्थ एवं सानन्द हैं।

आपका
वृन्दावनदास

(१२)

प्रकाश भवन,
मथुरा.

बन्धुवर शांडिल्य जी।

हमारे मित्र श्री जगदीश प्रसाद चतुर्वेदी मथुरा पधारे थे। चतुर्वेदी जी लोकराज के सम्पादक हैं तथा पुराने साहित्यकार एवं पत्रकार हैं। हमने आपकी पांडुलिपि उनको एक नजर से दिखाई थी। वे बोले कि इसमें केवल पूर्वी क्षेत्रों की बोलियों के साहित्य पर लिखा गया है अतः इसका नाम पूर्वी क्षेत्र की जनपदीय भाषाओं का साहित्य होना चाहिये। जैसा होगा देख लेंगे।

मैं कल बम्बई जा रहा हूँ। ८, १० दिन में लौटूँगा। आशा है आप स्वस्थ एवं सानन्द हैं।

आपका
वृन्दावनदास

(१३)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ६-४-७४

बन्धुवर शांडिल्य जी।

जनपदीय भाषाओं का साहित्य शीर्षक आपकी पुस्तक वस्तुतः कई विद्वानों के लिखे हुए निबन्धों का संग्रह है तथा निबन्धों में पूर्वी क्षेत्र की लोक-भाषाओं विषयक सामग्री ही है। कभी मैं सोचता हूँ कि इस निबन्ध संग्रह में राजस्थानी, ब्रजभाषा और बुन्देली पर भी एक-एक निबन्ध और सम्मिलित कर दिया जाय और कभी यह विचार हो जाता है कि यथास्थिति ही रहने दी जाये। भूमिका भी लिखनी है।

शेष सब कुशल है। आशा है आपका स्वास्थ्य अब बिल्कुल ठीक है।

आपका
वृन्दावनदास

(१४)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ७-५-७५

बन्धुवर शांडिल्य जी।

आपका २६-४-७५ का पत्र जबाही से प्राप्त हुआ।

आपकी पुस्तक ११२ पृष्ठ तक छप चुकी है उसमें आपका लेख वज्जिका के रचनाकार भी छप चुका है। अब तो आपकी प्रेषित सामग्री में केवल

दसवां भाग ही भाषा और साहित्य तथा ११ वां आधुनिक मैथिली भाषा और साहित्य लेख छपने शेष हैं। इसके बाद 'सप्न 'फूल' अंगिका के प्रथम गद्य का नमूना' शीर्षक 'प्रकाश' जी का लेख और तदुपरान्त अंगिका एवं अंगिकेतर बिहारी भाषाओं के पर सर्ग शीर्षक लेख (डा० तेज नारायण कुशवाहा लिखित) तथा आपका बिहार की जनपदीय भाषाएँ और हिन्दी शीर्षक लेख छापे जायेंगे प्रकाश जी वाला अन्य लेख छापना उचित नहीं कारण उसमें केवल पुनरावृत्ति और पिष्टपेषण है।

क्या आपको मुद्रित फार्मों की एक-एक प्रति अवलोकनार्थ भेज दी जाय और भेजी जाय तो कब तक, किस पते पर। आपको पत्र शायद मिलते भी देर से है? यह पुस्तक तो लगभग १५ दिन में पूरी हो जायगी।

अभि० ग्रन्थ छप तो गया परन्तु चित्र और आरम्भिक पृष्ठ छपने शेष हैं।

मैं आजकल श्री वृन्दावनदास पुस्तकालय, वाचनालय एवं संग्रहालय नामक निबन्धित संस्था के भवन निर्माण में व्यस्त हूँ। लगभग एक मास में निर्माण कार्य पूरा हो जावेगा।

शेष सब कुशल है।

शुभेच्छु
वृन्दावनदास

(१५)

प्रकाश भवन,
मथुरा. १६-४-७५

बन्धुवर शांडिल्य जी, प्रणाम।

आशा है आप जवाही आ पहुँचे हैं। यह रजिस्टर्ड पत्र आपको जवाही के पते पर ही भेज रहा हूँ।

जनपदीय भाषाओं का साहित्य शीर्षक पुस्तक ७२ पृष्ठ तक छप गई है। २ फार्म १७-२४ व २५-३२ आपके अवलोकनार्थ भेज रहा हूँ। पहले १६ पृष्ठ आरम्भिक सामग्री भूमिका आदि के लिये सुरक्षित कर लिये हैं वे पुस्तक छपने के बाद छपेंगे।

मेरे पास तीन लेख ऐसे हैं जो आपकी पुस्तक के विषय से मेल खाते हैं। मैंने दो की बावत आपसे पूछा था, आपका कोई उत्तर इस सम्बन्ध में नहीं मिला। ये लेख तो आपके दिये हुये मैटर के बाद ही छप सकते हैं। आप लिखें तो उन्हें आपके अवलोकनार्थ भेज दें।

मैंने 'श्री वृन्दावनदास पुस्तकालय, वाचनालय एवं संग्रहालय' नाम की

एक संस्था का निबन्धन कराया है। लगभग तीन सप्ताह हुये लखनऊ से निबन्धक का निबन्धन पत्र आ चुका है तथा दिनांक १६ अप्रैल से अपेक्षित भवन निर्माण का कार्य प्रारम्भ हो गया है। आजकल उसमें कुछ व्यस्त रहता हूँ।

आशा है आप स्वस्थ एव सानन्द हैं। कृपा कर इस पत्र का उत्तर शीघ्र दें। लेखों के विषय में आपका निर्णय शीघ्र होना चाहिये।

आपका
वृन्दावनदास

(१६)

प्रकाश भवन,
मथुरा. १४-५-७५

बन्धुवर शांडिल्य जी। नमस्कार।

आपका पत्र मिला। समाचार से अवगत हुआ। आज आपकी पुस्तक के ३३ से ११२ तक के मुद्रित फार्म रजिस्टर्ड बुक-पोस्ट से आपके घर के पते पर भेजे जा रहे हैं। उनके अवलोकन से आपको मुद्रण की प्रगति का आभास हो जायगा। इसके बाद परिशिष्ट समेत छपने वाला मैटर १६८ तक पहुँचेगा ऐसा अनुमान है। इस सामग्री में मैथिली वाला लेख श्री 'प्रकाश' का सात फूल पर लिखा लेख, डा० तेजनारायण कुशवाहा वाला लेख तथा स्वयं आपका लगभग २० पृष्ठीय बिहार की जनपदीय भाषाओं वाला लेख सम्मिलित हैं। हमारी इच्छा है कि पुस्तक २०० पृष्ठ की रक्खी जाय, अतः आप जो चार पाँच लेख भेजना चाहते हैं अविलम्ब भेज दें। कृपाकर लेखों को एक बार पढ जाँय और जहाँ जो कुछ सरलता से पढ़ा न जा सके उसे काटकर उसके ऊपर साफ सुस्पष्ट सुवाच्य अक्षरों में लिख दें, इससे प्रूफ की अशुद्धियाँ कम होंगी।

परिशिष्ट तो अन्त में ही छपेगा वह लगभग ८ पृष्ठीय है। पहले १६ पेजों में ८ पेज के लगभग तो आपने रच ही दिये हैं। आठ पृष्ठ की भूमिका मेरी होगी।

इस पुस्तक में दो चित्र भी होंगे, एक सम्पादक का और दूसरा भूमिका लेखक का। अतः अपना एक चित्र शीघ्र भेजें। आपके चित्र के नीचे 'श्री रमण शांडिल्य सम्पादक' ऐसा लिखा जायगा। हमारे चित्र के नीचे क्या लिखा जाय यह आप बताइये।

आवरण आर्ट पेपर पर तिरङ्गा होगा। आपका प्रेषित नमूना दुरङ्गा है, उसे डिजाइनर से तिरङ्गा बनवाएंगे। आजकल जब तब पुस्तक की चटक

मटक अच्छी न हो वह कम चलती है चाहे उसके भीतर सामग्री कितनी ही मूल्यवान क्यों न हो।

आजकल मैं श्री वृन्दावनदास पुस्तकालय, वाचनालय एवं संग्रहालय शीर्षक निबन्धित संस्था के लिये भवन-निर्माण कार्य में रत हूँ। यह निर्माण लगभग एक माह हुआ प्रारम्भ हो गया था। अभी इसके पूर्ण होने में लगभग एक-डेढ़ माह का समय और लगेगा। इससे मेरा उद्देश्य भविष्य के लिये अपने सम्पूर्ण संग्रह को सुरक्षित कर देने का है।

अभि० ग्रन्थ छप तो चुका, उसके चित्रादि छप रहे हैं तथा प्रारम्भिक पृष्ठों की समायोजना भी अभी सम्पादकों द्वारा प्रयाग प्रेस को भेजी जानी शेष हैं।

शेष फिर, आप झंझटों को शांतचित्त से सुगमतापूर्वक सुलझाइये। ईश्वर आपकी सहायता करेगा कारण हिन्दी सेवी एक प्रकार का पुण्य तो अर्जित करते ही हैं।

आपका
वृन्दावनदास

(१७)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ६-६-७५

बन्धुवर शांडिल्य जी, सादर नमस्कार।

कृपा पत्र प्राप्त हुआ। अनेकानेक धन्यवाद। अन्तर जनपदीय परिषद का अधिवेशन बड़ी सफलता पूर्वक सानन्द समाप्त हो गया। आपकी बधाई के लिये हार्दिक धन्यवाद। निस्सन्देह आप सदृश मित्रों की सद्भावनाएँ ही मेरे जीवन का महान् सम्बल रही हैं।

अधिवेशन का पूरा विवरण ब्रजभारती के भाद्रपद अंक में प्रकाशित होगा। यह अंक आपकी सेवा में लगभग तीन सप्ताह में पहुँचेगा।

आपका
वृन्दावनदास

मुझे आशा ही नहीं विश्वास है कि हिन्दी के पत्र-साहित्य में बाबू वृन्दावनदास के पत्रों को समुचित स्थान प्राप्त होगा।

हिन्दी में पत्र-साहित्य की विधा कमजोर है, प्रस्तुत प्रकाशन यदि हिन्दी के पत्र साहित्य की अभिवृद्धि में अपनी उचित भूमिका अदा करता है तो मैं अपने प्रयास को सफल मानूँगा।

—रमण शाण्डिल्य

बाबू वृन्दावनदास के पत्र
अगरचन्द नाहटा के नाम

(१)

मथुरा, १२-५-७२

मान्यवर नाहटाजी,

कृपा पत्र मिला। धन्यवाद ! आपकी लिखी बातों का उत्तर इस प्रकार है—

(१) डा० वासुदेवशरण के पत्रों का संग्रह छपने की आशा तब तक नहीं की जा सकती, जब तक उसके छापने की स्वीकृति उनके पुत्रों से नहीं मिलती। वे लोग पत्रों का उत्तर नही दे रहे हैं।

(२) ब्रजभारती का ज्येष्ठ अंक अभी नहीं निकला है। ज्येष्ठ में ही निकलेगा।

(३) आपके लेख ज्येष्ठ अंक में शायद न छाप पावें, कारण इसमें मंडल के अधिवेशन का वृत्त छपेगा। भाद्रपद में आपके लेख निश्चित रूप से छप जायेंगे।

(४) मेरी इतिहास की पुस्तक तो छप गई आवरण छपना शेष है— अभी १५ दिन की देर है।

(५) अभिनन्दन ग्रन्थ तो अभी छपना भी शुरू नहीं हुआ है। अभी बहुत देर है। लोक साहित्य छापने को मंडल के पास धन नहीं है।

आपका

वृन्दावनदास

(२)

४-६-७२

मान्यवर नाहटाजी,

आपके पत्रों के उत्तर में निवेदन है कि आपका हमारे यहाँ केवल एक लेख अवशिष्ट है वह ब्रजभारती के भाद्रपद अंक में प्रकाशित हो रहा है। इसके बाद हमारे पास कोई अन्य लेख नहीं होगा।

अबकी बार अपनी वाराणसी यात्रा में हम स्व० अग्रवाल जी की पत्नी और पुत्र से मिल आये हैं। उन्होंने मौखिक अनुमति दे दी है। अब

हमने पत्रों को प्रकाशित करने का निश्चय कर लिया है परन्तु जिस प्रेस में हम छपाते हैं उसने १।। माह बाद काम हाथ में लेने को कहा है अतः इस यज्ञ की पूर्णाहुति में लगभग ६ मास तो लग ही जायेंगे।

अभिनन्दन ग्रन्थ के मुद्रण की व्यवस्था की जा रही है। मुरादाबाद अधिवेशन का भाषण संलग्न है। यह सम्मेलन सफलता पूर्वक ३०, ३१ अगस्त को सम्पन्न हुआ था।

मेरे इतिहास ग्रन्थ का बाइन्डिग अब भी नहीं हो पाया है। आवरण भी नहीं छप पाया है। दिन ही जा रहे हैं। यह सब अब जल्द होगा।

आशा है आप स्वस्थ एवं सानंद हैं।

आपके अभिनन्दन ग्रन्थ का क्या हुआ।

आपका—

वृन्दावनदास

(३)

१६-१२-७३

प्रिय नाहटा जी !

नमस्कार। श्री युगल किशोर चतुर्वेदी का अभिनंदन ग्रन्थ सेवा में प्रेषित है। मार्ग शीर्ष अंक कल भेजा जा चुका है। अभि० ग्रन्थ अभी छप ही रहा है। डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल के पत्र शीर्षक पुस्तक भी छप रही है। आपके पत्रों का उपयोग कर लिया है। शेष कृपा

श्री युगल किशोर चतुर्वेदी अभिनन्दन ग्रन्थ रजिस्टर्ड बुक पोस्ट से भेजा है।

आपका

वृन्दावनदास

(४)

१४-६-७४

मान्यवर नाहटा जी !

आचार्य पद्मसिंह शर्मा समारोह के अध्यक्षीय भाषणों की एक-एक प्रति तथा वासुदेवशरण अग्रवाल के पत्र शीर्षक ग्रन्थ की एक प्रति रजिस्टर्ड बुक पोस्ट से सेवा में प्रेषित हैं। ग्रन्थ में आपके काफी संख्या में पत्र प्रकाशित हो गये हैं।

आचार्य हजारी प्रसाद जी द्विवेदी अस्वस्थतावश न पधार सके अतः अध्यक्षता का भार मुझे ही उठाना पड़ा। समारोह सफलतापूर्वक सम्पन्न हो गया।

आपका लेख प्रेस वाले ने कम्पोजीटर न पढ़ पाया ऐसा कहकर लौटा दिया है। वह आपकी अन्य छपाई की बाबत भी यहीं शिकायत कर रहे थे। यदि आप इस लेख को टाइप कराकर अथवा किसी खुशखत वाले से दुबारा लिखवाकर भिजवा दें तो ठीक हो।

शेष कुशल हैं। ग्रन्थ की पहुँच लिखना जी।

आपका
वृन्दावनदास

(५)

मान्यवर नाहटाजी प्रणाम !

कृपा पत्र यथा समय मिला। आपका मेरे पास केवल एक लेख विद्यमान है, व्याकरण सम्बन्धी जो प्रेस वाले ने लौटा दिया था। अब मैं उसी को फाल्गुन अंक में निकलवा रहा हूँ। मेरे पास और कोई लेख नहीं है सो जानना जी।

अभि. ग्रन्थ के लगभग ६५० पृष्ठ छप चुके हैं। १०० पृष्ठ के अनुमान छपना शेष हैं। वृन्दावन शोध संस्थान सम्बन्धी जो जानकारी हमें थी हमने संपादकीय में लिख दी, आप अन्य जानकारी उनसे पत्र व्यवहार करके संगृहीत करें।

ब्रज साहित्य मंडल के लिये आपने जो हस्तलिखित ग्रन्थों के संग्रह सम्बन्धी उपयोगी सुझाव दिये उनका स्वागत है। भवन का अधिग्रहण तो हो चुका है। कार्यकर्त्ताओं को अब इसी ओर उन्मुख होना है। उपयोगी सुझाव के लिए धन्यवाद !

शुभाकांक्षी
वृन्दावनदास

(६)

श्री अनिलकुमार राय आंजनेय के नाम

प्रकाश भवन,
मथुरा ८-१२-७५

बन्धुवर आंजनेय जी,

आपका बड़ा मोहक पत्र मिला। आपने मुझसे पत्र साहित्य के सम्बन्ध में मेरा अपना दृष्टिकोण पूछा है।

पत्र-लेखन एक स्वान्तः सुखाय प्रक्रिया है। जब तक लेखक का मन न होगा वह कभी पत्र न लिखेगा। किसी काम को पूरा कर लेने के बाद जो प्रसन्नता होती है, वह पत्र लिखने के बाद सुलभ हो जाती है। लेख या निबन्ध लिखने में और पत्र लिखने में भेद है। लेख या निबन्ध लिखना समय एवं श्रमसाध्य है अतः उसकी समाप्ति पर जो सुख होता है वह बड़ी देर में प्राप्त होता है जब कि पत्र लिखकर तत्काल ही वह प्राप्त हो जाता है। यही कारण है कि अनेक चिन्तनशील विद्वान् अपने भावों की अभिव्यक्ति की छटपटाहट को पत्र लेखन द्वारा शान्त करते रहते हैं। लेख तो अपना समय और अपेक्षित श्रम लेता ही है जब कि पत्र सीमित होने के कारण त्वरित वर्तमान हो जाता है।

लेखक के जो कुछ मन में होता है वही पत्र में समाविष्ट होता है अतः सच्चे अर्थों में पत्र लेखक के मन का दर्पण होता है। लेखक द्वारा लिखे हुए अपार पत्र संग्रह से उसके व्यक्तित्व का मूल्यांकन हो सकता है जो शायद लेखों द्वारा न हो सके कारण लेखों की संख्या तो सीमित ही होगी और अधिकांश लेख विषयगत होते हैं जब कि पत्रों के विशाल संग्रह में व्यक्ति के विचारों और मनोभावों की समग्र झाँकी उपलब्ध हो सकती है।

आपने मुझसे मेरी निजी स्थिति के सम्बन्ध में जिज्ञासा प्रकट की है। वैसे तो मैं विद्यार्थी जीवन से ही पत्र लिखने का अभ्यस्त हूँ और इसको लगभग ५० वर्ष व्यतीत हो चुके हैं। परन्तु फिर भी अधिक संख्या में पत्र लिखने का अवसर तो मुझे तब से मिला जब से कि मैंने हिन्दी-सेवा का कार्य सक्रिय रूप से प्रारम्भ किया। पन्द्रह वर्ष पहले लगभग तीस वर्षों तक मैं नगर पालिका तथा सहकारिता एवं शिक्षा संस्थाओं के कार्यकलापों में संलग्न रहा। नगर पालिका तथा शिक्षा संस्थाओं के कार्य अधिकांशतः स्थानीय थे। सहकारिता के कार्य में मुझे यात्राएँ बहुत करनी पड़ीं। अतः इन कार्यों में वैयक्तिक उपस्थिति अनिवार्य होने के कारण पत्र लेखन का विशेष प्रश्न ही न था। परन्तु 'ब्रज साहित्य मण्डल एवं उत्तर प्रदेशीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन' के विनम्र कार्यकर्त्ता और 'ब्रज भारती' के सम्पादक की हैसियत से प्रभूत पत्र-लेखन अनिवार्य बन गया। दूरस्थ साहित्यिक मित्रों से सम्पर्क पत्र-लेखन द्वारा ही सम्भव था। हिन्दी जगत् के एक विनम्र कार्यकर्त्ता के नाते पत्रों का ताँता लगा रहता है और एक कृतज्ञ हिन्दी-सेवी का यह परम कर्त्तव्य हो जाता है कि वह प्रत्येक पत्र का उत्तर दे।

पत्र लिखने में सावधानी क्या बरती जाय। लेखक तो स्वानुभूति को ही सहज भाव से प्रकट करता है। पत्र शिष्ट और शालीनता युक्त मिष्ट भाषा में लिखे जाँय यह तो सर्व सम्मत है और इसमें कोई विवाद का प्रश्न ही नहीं है।

सम्पादक की हैसियत से अपने अनुभवों को इस सम्बन्ध में अवश्य लिख देना चाहता हूँ। सम्पादक का मेरी दृष्टि में एक दायित्व है। बहुत से जिज्ञासु सम्पादक से अनेक प्रकार की जानकारियों की अपेक्षा करते हैं, उदीयमान लेखक अपनी रचनाओं को स्थान दिलाने के इच्छुक होते हैं। न तो सम्पादक सर्व विद्या सम्पन्न होता है और न उसके पास सभी रचनाओं को स्थान देने की क्षमता होती है। उससे माँग इतनी हो जाती है कि वह विचलित हो सकता है अपना मानसिक सन्तुलन खो सकता है। परन्तु इसमें ही उसके धैर्य और शील की परीक्षा होती है। उसको मधुर व्यवहार से सबका समाधान करना ही चाहिये। वशीकरण एक मन्त्र है तज दे वचन कठोर।"

हिन्दी पत्र लेखकों में मैं सम्पादकाचार्य पं० बनारसीदास चतुर्वेदी को इस युग का सर्वश्रेष्ठ पत्र-लेखक मानता हूँ। हिन्दीतर भारतीय-भाषाओं में कवीन्द्र रवीन्द्र और विश्ववन्द्य महात्मा गाँधी भी अपने समय के सर्वश्रेष्ठ पत्र लेखकों में थे। टालसटाय और गोर्की योरोपीय विद्वानों में उच्चकोटि के पत्र लेखक थे।

हिन्दी में पत्र साहित्य की बड़ी कमी है। मेरे ख्याल से १०, १२ ही पत्र-संग्रह अद्यतन प्रकाशित हुए हैं। इससे तो उर्दू में ही अच्छी स्थिति है। उर्दू में लगभग ४० पत्र संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं और हाल ही में उन पर एक शोध प्रबन्ध भी प्रकाशित हो चुका है। हिन्दी में अनेक विद्वान अभी ऐसे रह गये हैं जिनके पत्रों का संकलन होना चाहिए और यदि हम उसे कर सके तो वह साहित्य की एक अमूल्य निधि होगी।

मैं समझता हूँ, इस समय इतना ही पर्याप्त है। यदि इस विषय पर आगे मैं कुछ और लिखने की स्थिति में हुआ तो आपको उससे अवगत करूँगा। आशा है, आप सानन्द हैं।

शुभाकांक्षी,
वृन्दावनदास

डॉ० अम्बा प्रसाद सुमन के नाम

(६)

प्रियवर डॉ० सुमन जी !

आपका कृपा पत्र मिला। अन्य बातों का उत्तर तो मैं दे चुका हूँ लेकिन आपके इस प्रश्न का उत्तर कि सर्व प्रथम मुझे लिखने की प्रेरणा कहाँ और कैसे प्राप्त हुई मैं पृथक रूप से देना चाहता था। आपके इस प्रश्न का उत्तर भली भाँति देने के लिए मुझे अपने बचपन की थोड़ी कहानी आपको बतानी पड़ेगी। हमारे पितामह स्वर्गीय लाला श्यामलाल जी मथुरास्थ श्याम काशी प्रेम के संस्थापक थे। इस प्रेस से लगभग ४०० प्रकाशन निकले थे तथा आयुर्वेद, हिकमत, लोकसाहित्य, उपन्यास, कहानी, संगीत और धार्मिक ग्रन्थों के प्रकाशक के रूप में इस प्रेस की अच्छी ख्याति थी तथा खासा मान था। मैं और मुझसे लगभग दो वर्ष छोटे भाई कुँजलाल अपने पितामह के पास प्रेस में रहते तथा सोते थे। हम लोग दोनों बार केवल भोजन करने ही घर जाया करते थे जो प्रेस से कुछ दूर ऊँची घाटी पर एक मुहल्ले में स्थित था। हमारे पितामह हमारी बाल्यावस्था में हम पर कड़ी नजर रखते थे, हमारा ६ वर्ष की अवस्था से १४ वर्ष की अवस्था तक ही उनसे सम्पर्क रहा, कारण जब हमारी १४ वर्ष की अवस्था हुई तब उनका स्वर्गवास हो गया। पितामह के नियन्त्रण के कारण हम लोग गली, मुहल्ले अथवा बाजार में घूमने के बजाय प्रेस में ही अधिक रहते, वहाँ खुली जगह थी, पेड़ और कुछ गमले भी थे, वहीं खेलते और जब खेलते-खेलते थक जाते तो पुस्तकों के अथाह महासागर में गोते लगाते रहते। अनेक प्रकार की पुस्तकें पढ़ने का शौक बचपन से ही लग गया। घण्टों पुस्तकें पढ़ते रहते। मुझे इतिहास सम्बन्धी पुस्तकें पढ़ने का शौक था। यही कारण है कि इतिहास मेरा बी० ए० तक खास विषय रहा। यदि एम० ए० करता तो भी शायद इतिहास में ही करता। बचपन से पुस्तक पढ़ते-पढ़ते मेरे मन में भावना आती कि मैं भी पुस्तक लिखूँ या कम से कम लेख तो लिखूँ ही। १५ वर्ष की अवस्था में हाई स्कूल पास करके जब कालेज पहुँचा तो वहाँ की कालेज पत्रिका और उसमें प्रकाशित अनेक विद्यार्थियों के लेखों को देखकर लिखने की इच्छा पुनः बलवती हुई। वास्तव में यह विचारों की अभिव्यक्ति की छटपटाहट बचपन से ही लग गई थी। आपको सुनकर आश्चर्य होगा कि दस वर्ष की अवस्था में मैंने बाल सुलभ प्रयास के रूप में कहानी या संगीत लिख डाला था। कालेज पहुँचकर तो मैंने पत्रिका के लिए

लेख लिखे और वे जब छप गये तो उत्साह का ठिकाना न रहा। कालेज से आकर मैंने वकालत की ओर तनिक भी ध्यान न दिया और सुधा, माधुरी, चाँद, विशाल भारत आदि में लेख भेजने लगा। माधुरी और विशाल भारत ने ५-५ रु० के पुरस्कार भी भेजे, इससे उत्साह द्विगुणित हो गया और फिर मैं शोधपूर्ण लेख नागरी प्रचारिणी आदि शोध पत्रिकाओं में भी भेजने लगा।

मेरा मत है कि वातावरण का संस्कारों पर बड़ा प्रभाव पड़ता है। जिस वातावरण में मैं पला उसमें इस प्रवृत्ति को प्रोत्साहन मिला। लेखन की प्रवृत्ति विचारों के बाहुल्य से बनती है और विचारों का निर्माण स्वाध्याय के परिणाम स्वरूप होता है।

आशा है आप स्वस्थ एव सानन्द हैं। स्नेहभाव बनाये रक्खें।

आपका
वृन्दावनदास

(७)

मान्यवर सुमन जी !

कृपा पत्र मिला। धन्यवाद। अब मुझे आपके इस प्रश्न का उतर देना है कि पुस्तक लिखने की प्रेरणा मुझे कैसे हुई तथा पुस्तकें लिखने का क्रम मेरा कैसे बना ? यह तो मैं आपको अपने पिछले पत्र में लिख ही चुका हूँ कि मैं किस प्रकार लेख लिखने लगा। मेरे संख्यातीत लेखों की काफी ख्याति हो गई और मेरे मित्र उनमें से चुनींदा लेखों को पुस्तकाबद्ध करने पर जोर देने लगे। मित्रों का आग्रह जब चरम सींमा पर पहुँच गया तब मैंने अपने ६०, ७० निबन्धों का संग्रह छपा डाला। मैंने संग्रह का नाम निबन्ध निचय रक्खा था परन्तु पुस्तक के प्रकाशक श्री देवेन्द्र वर्मा ने उसका नाम बदलकर भारतीय संस्कृति के विविध परिदृश्य रख दिया। यह पुस्तक खूब चली और बहुत थोड़े समय में इसके दों संस्करण समाप्त हो गये।

इस निबन्ध-संग्रह के प्रकाशन से लगभग दो दशक पूर्व मैंने मार्कण्डेय पुराण का हिन्दी अनुवाद किया था जो श्यामकाशी प्रेस से प्रकाशित हो चुका था। तत्पश्चात् मैंने सुप्रसिद्ध कवि स्वर्गीय हरदयालुसिंह जी के सहयोग से एक हिन्दी अँग्रेजी विश्वकोष का भी निर्माण किया था जो मथुरा के लक्ष्मी बुक स्टोर से प्रकाशित हुआ था, वैसे उसका नाम हिन्दी-इंगलिश डिक्शनरी था। परन्तु जो खुशी मुझे अपने निबन्ध संग्रह के प्रकाशन की सफलता पर हुई वह मुझे अनुवाद ग्रन्थ और डिक्शनरी की रचना पर न हुई, यद्यपि ये

दोनों ग्रन्थ भी शीघ्र ही समाप्त हो गये और अब तो उनकी एक-एक प्रति भी मिलना कठिन है। मैं कई वर्ष से हिन्दू शासन का इतिहास लिख रहा था, मेरी दृष्टि में इतिहासकारों ने हिन्दू शासन के प्रति न्याय नहीं किया था अतः मेंरी नजर में एक निष्पक्ष इतिहास की बड़ी आवश्यकता थी। निबन्ध संग्रह की सफलता से प्रोत्साहित होकर मैंने उस इतिहास को छपा डाला। उसका नाम रक्खा गया 'प्राचीन भारत में हिन्दू राज्य।' इसमें लगभग दस हजार वर्ष के हिन्दू शासन का इतिहास है। यह ग्रन्थ अत्यन्त लोकप्रिय हुआ, दिल्ली की शिक्षा संस्थाओं में इसको मान्यता प्राप्त हुई तथा इतिहासप्रेमियों ने इसे बड़े चाव से पढ़ा। संस्करण बहुत शीघ्र समाप्त हो गया और मैं उसका दूसरा संशोधित और परिवर्द्धित संस्करण निकालने पर विचार कर रहा हूँ।

इतिहास ग्रन्थ के प्रकाशन के बाद श्रद्धेय बनारसीदास जी चतुर्वेदी की प्रेरणा से डा० वासुदेवशरण अग्रवाल के पत्रों का संग्रह करने लगा। उनका संग्रह करते-करते मन में भाव आया कि क्यों न श्रद्धेय चतुर्वेदी जी के पत्रों को ही पहले छपा दिया जाय, कारण वे तो काफी तादाद में मेरे पास ही जमा थे। अतः डॉ० बनारसीदास चतुर्वेदी के पत्र शीर्षक ग्रन्थ को अपनी ३२ पृष्ठीय भूमिका सहित प्रकाशित कराया। इस ग्रन्थ ने भी बड़ी लोकप्रियता अर्जित की। चतुर्वेदीजी के अगणित भक्तों और प्रशंसकों ने साधुवाद के संख्यातीत पत्र मेरे पास भेजे। इस ग्रन्थ का हिन्दी जगत में स्वागत हो ही रहा था कि डॉ० वासुदेव शरण अग्रवाल के पत्रों के संग्रह की पाण्डुलिपि भी तैयार हो गई और मैंने उन पर ३२ पृष्ठीय प्राक्कथन एवं भूमिका लिख डाली तथा दो तीन लेख भी उन पत्रों के महत्व पर अलग लिखे। पुस्तक सुन्दर बन गई। उसका विमोचन आचार्य प्रवर डॉ० हजारी प्रसाद जी द्विवेदी ने हिन्दी समिति के तत्वावधान में लखनऊ में किया था।

इस बीच में अपने अनुज श्री कुंजलाल (जो लगभग ६ वर्ष हुए स्वर्गवासी हो चुके हैं) के आग्रह पर मैंने सूर सागर का संपादन भी किया जो श्यामकाशी प्रेस से प्रकाशित हो चुका है।

मैं लगभग १२ वर्षों से ब्रज भारती का संपादक हूं। जैसा कि आप जानते ही हैं यह ब्रज साहित्य मंडल की त्रैमासिक शोध पत्रिका है। मैंने अपने परिश्रम से इसको सींचा है। मेरा प्रयास रहा है कि इसका प्रकाशन नियमित होता रहे और किसी प्रकार का क्रम भंग न हो। परन्तु इस सम्पादकीय साधना ने ग्रन्थ-लेखन के लिए वक्त कम ही छोड़ा है। फिर भी साहित्येतिहास

सम्बन्धी मेरी दो पुस्तकें अधूरी पड़ी हैं। कभी मैं सोचता हूँ कि इनको भी मैं पूरा कर ही डालूँ। कृपा भाव रक्खें।

आपका
वृन्दावनदास

श्री अयोध्यासिंहजी के नाम

(८)

प्रकाश भवन,
मथुरा. १८-३-७१

बन्धुवर !

कृपा पत्र मिला। डॉ० वासुदेव शरण जी के पत्रों की प्रतिलिपि भी मिली। धन्यवाद ! पत्रों का उपयोग पुस्तक के मुद्रण के समय अवश्य कर लिया जायगा।

आशा है आप स्वस्थ एवं सानन्द हैं।

आपका
वृन्दावनदास

(९)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २२-७-७१

मान्यवर श्री अयोध्यासिंहजी प्रणाम !

आपका कृपा पत्र यथा समय मिल गया था। अब की बार आपके लेख से आपकी महानता का आभास हुआ। आप वयोवृद्ध हैं तथा सौजन्य और विनम्रता की प्रतिमूर्ति। आपकी साधना, निष्ठा और सदाशयता उच्च कोटि की है। मैं आपके इन सभी महान् गुणों के प्रति नतमस्तक हूँ। आप जैसे सद्गुणों से अलंकृत महानुभाव से व्यवहार पर हृदय में शंका के लिए कतई स्थान न रहा और यह इच्छा बलवती हुई कि आपकी साधना तथा आपके ज्ञान कुटीर का कार्य रुपये पैसे के कारण अटका नही रहना चाहिए।

आशा है आप स्वस्थ एवं सानन्द हैं। कृपा भाव रखें।

आपका
वृन्दावनदास

(१०)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २२-८-७१

मान्यवर अयोध्यासिंहजी,

डॉ० बनारसीदास चतुर्वेदी के पत्र एक प्रति व श्री जलज अभिनन्दन ग्रन्थ एक प्रति इस प्रकार दो पुस्तकें आज रजिस्टर्ड बुक पोस्ट से आपकी सेवा में भेजी जा रही हैं।

आशा है आप स्वस्थ एवं सानन्द हैं।

आपका
वृन्दावनदास

(११)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ४-९-७१

बन्धुवर श्रद्धेय अयोध्यासिंहजी !

आपका कृपा पत्र मिला। आपके कृपापूर्ण उद्गारों और महती सद्-भावनाओं के लिए मैं बड़ा ऋणी हूँ। वास्तव में यदि १० वर्ष पहले से हमारा आपका पत्र व्यवहार से ही सही सम्पर्क स्थापित हो जाता तो बड़ा काम होता। आप सच्चे साहित्य सेवी हैं और साहित्यिकों के प्रति बड़े स्नेह के भाव रखते हैं आपके विचार प्रेरणास्पद हैं और काम करने वालों को संबल प्रदान करते हैं।

आशा है आप स्वस्थ एवं सानन्द हैं, कृपा भाव रखें।

आपका
वृन्दावनदास

(१२)

प्रकाश भवन,
मथुरा. १०-९-७१

सम्माननीय बन्धुवर !

कृपा पत्र तथा लेख दोनों मिले। अनेक धन्यवाद। मैं तो विनम्र हिन्दी सेवक हूँ, आपने मुझे आचार्य बना डाला। आपका आशीर्वाद सिर माथे। आपके वचन की अवहेलना करना पाप है। आपका हिन्दी प्रेम और आपकी हिन्दी सेवा उच्च कोटि के हैं। यही कारण है कि आपका हिन्दी जगत् के शीर्षस्थ विद्वानों से संपर्क रहा हैं। आपका लेख बड़ा ही भव्य है। उसको

सम्मानित स्थान सुरक्षित रहेगा। भाद्रपद अंक प्रेसाध्यक्ष की शिथिलता से कुछ देरी से निकल रहा है। अब तीन चार दिन में ही आपकी सेवा में पहुँच जायगा। कृपा भाव रखें। बिहार अवश्य आऊँगा और आपके दर्शन भी अवश्य करूँगा। बख्तियारपुर पटना से कितनी दूर है? देर भले ही लगे परन्तु एक बार आपके दर्शन अवश्य करूँगा।

आपका
वृन्दावनदास

(१३)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ९-१०-७१

मान्यवर श्री अयोध्यासिंहजी !

कृपा पत्र यथा समय प्राप्त हो गया था। आपका प्रेम निश्छल है तथा आपकी भावनाएँ पवित्रतम। मुझे बड़ी प्रसन्नता है कि मेरी हिन्दी सेवा की पद्धति आपको पसन्द है और यही कारण आपके विशुद्ध प्रेम और कृपा का है। मेरे साधन तथा शक्तियाँ सीमित हैं परन्तु मेरी धारणा है कि जो कुछ किया जाय वह सच्चे मन और निष्ठा से किया जाय। इससे बहुत सी त्रुटियों और दोषों का निवारण हो जाता है।

मैं ता० १८ को बंबई, बंगलौर, मैसूर, तिरुपति और हास्पेट की यात्रा पर मथुरा से चला था। बंबई में मेरे एक पुत्र और दो विवाहित पुत्रियों के परिवार हैं तथा बंगलौर में भी एक पुत्री का परिवार है। मैसूर का दशहरा देखा और तिरुपति में भगवान वेंकटेश्वर के दर्शन किए। हास्पेट में तुंगभद्रा का विशाल बाँध देखा। यात्रा में परिवारीजनों तथा जहाँ तक संभव हुआ स्थानीय साहित्यिक बन्धुओं से भी मिला। बड़ा आनन्द रहा। मेरी पत्नी भी यात्रा में मेरे साथ थी। हम लोग ७ को ही मथुरा आये हैं। इस कारण आपको पत्र लिखने में विलम्ब हो गया।

आशा है आप स्वस्थ एवं सानन्द हैं।

आपका
वृन्दावनदास

(१४)

प्रकाश भवन,
मथुरा. १०-१०-७१

मान्यवर अयोध्यासिंहजी !

आपको कल पत्र भेज चुकने के बाद ही आपका दूसरा पत्र मिला। धन्यवाद ! मैं कल के पत्र में पत्रोत्तर में बिलम्ब का कारण लिख चुका हूँ।

मेरी संपादकीय टिप्पणी से अनेक साहित्यिकों ने सहमति प्रकट की है। मैं अबकी बार विस्तार से केन्द्रीय मंत्रालयों की योजना प्रस्तुत करूँगा कि किस प्रकार और कौन सी ठोस सेवा वे कम लागत पर ही कर या करा सकते हैं। मैं चाहता हूँ कि जो रुपया उनके पास उपलब्ध है उससे उन लोगों का कुछ काम चले जो इस स्थिति में हैं कि उन्हें सस्ता और अच्छा काम करके दे सकें। देश में प्रतिभा की कमी नहीं हैं वह बिखरी पड़ी है। आवश्यकता है उसके संगठन और व्यवस्था की। रुपये पैसे के विषय में ऊँचे दर्जे की ईमानदारी की जरूरत तो है ही। बिना इसके तो कुछ हो ही नहीं सकता।

आपकी ओर जब कभी भी आऊँगा आपके दर्शन किए बिना कदापि न मानूँगा। उधर आने की बात और आपका निमंत्रण मेरे ध्यान में है। ब्रज भारती का मासिकीकरण अभी संभव नहीं। कारण स्पष्ट हैं। यह भी अधिकांश भार मेरे ही निर्बल कन्धों पर है, अवस्था भी पकती जा रही है। फिर भी प्रयास कर रहा हूँ यदि कुछ सहयोग प्राप्त हो गया तो शायद कभी आपकी आकांक्षा साकार हो सके। कृपा भाव रखिए।

आपका
वृन्दावनदास

(१५)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २७–४–७३

बन्धुवर अयोध्यासिंहजी !

आपका स्नेहसिक्त पत्र मिला। आपका उपालम्भ साधार है और आपकी गहरी आत्मीयता और आपका घना स्नेह उसकी पृष्ठभूमि में है। मैं अपनी पत्नी और छोटी बहिन के साथ लखनऊ होकर रामनवमी पर अयोध्या पहुँचा था। वहाँ मैंने एक सार्वजनिक पुस्तकालय स्थापित किया है यह तो आप जानते ही होंगे। वहाँ पर ९ को प० पद्मसिंह शर्मा और कविरत्न सत्यनारायण की जयन्ती भी मनाई थी। तदुपरान्त भैरहवाँ हवाई अड्डे से वायुयान द्वारा पशुपतिनाथ जी के दर्शनार्थ काठमांडू पहुँचे, लौटती बार भैरहवा से यात्रा उपलब्ध न हुई अतः वायुयान से पटना आये, वहाँ केवल डेढ़ दिन ठहरे कारण घर से निकले ३ सप्ताह हो चुके थे। मुझे पटना प्रवास में निरंतर आपका ध्यान बना रहा और जब बन्धुवर शांडिल्य के बख्तियारपुर जाने को कहा तब तो मैं अधीर हो उठा और मैंने उससे कहा भी कि मुझे भी वहाँ बन्धुवर अयोध्यासिंहजी से मिलने जाना है, मैं वचनबद्ध हूँ। एक दिन

और बिताने की स्थिति में न होकर आपकी शिकायत बनी रही। खैर, ईश्वर शीघ्र ही अवसर देगा, और आप हम अवश्य मिलेंगे। आशा है आप सानन्द हैं।

आपका
वृन्दावनदास

(१६)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २४-८-७४

मान्यवर अयोध्यासिंहजी !

कृपा पत्र यथा समय प्राप्त हो गया। मैं बंबई प्रवास पर था। १६ दिन बाद १७ को मथुरा लौटा हूँ। डॉ० वासुदेवशरण के पत्रों की पुस्तक बंबई से लौटकर ही यत्र तत्र भिजवा रहा हूँ। बंबई जाने से पूर्व तो १०-१२ जिल्दें ही बँधी थी और उन्हें मैं आप सदृश कृपालु मित्रों को भेजकर बंबई चला गया था। अब तो साहित्यिकों और प्रकाशक के पास लगभग ५०० प्रतियाँ पहुँच चुकीं, पुस्तक का सर्वत्र स्वागत हुआ है। इसका श्रेय डॉ० वासुदेवशरणजी के अनुपम महिमामय व्यक्तित्व को है।

आपने अन्य पत्र संग्रहों को प्रकाशित करने को लिखा सो मुख्य बाधा पत्रों के संग्रह में है। राहुलजी अथवा परिव्राजकजी के पत्र संग्रह हो सकेंगे इसमें मुझे सन्देह है। मेरा चतुर्वेदीजी व अग्रवाल जी से व्यक्तिगत घनिष्ठ परिचय था इसलिए संग्रह कार्य सुगम था। परन्तु राहुलजी के तो मैंने कभी दर्शन भी नहीं किए थे और परिव्राजक जी को बाल्यावस्था में एक दो बार ही सुना था। फिर भी मैं हताश नहीं हूँ। राहुलजी के पत्रों पर अपने मित्र श्री सूरज प्रसाद मिश्र से और परिव्राजकजी के पत्रों के सम्बन्ध में श्री सुधाकर पांडे से सम्पर्क स्थापित करूँगा। पांडेय जी मेरे परम मित्र हैं, आशा है वे मुझे निराश न करेंगे। उपरोक्त दोनों महानुभाव इनका प्रकाशन भी करा सकते हैं। कृपा भाव रखिये।

आपका
वृन्दावनदास

श्री आनन्द शंकर माधवन के नाम

(१७)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २२–३–७४

मान्यवर माधवनजी,

आपका स्नेहसिक्त पत्र मिला। आपने मेरे प्रति जो आत्मीयता आपूरित उद्‌गार प्रकट किये हैं उनके लिए अत्यधिक आभारी हूँ। जीवन की संध्या में मैं तन, मन, धन से हिन्दी सेवा में तल्लीन हूँ। परन्तु मेरा क्षुद्र व्यक्तित्व क्या कर पायगा? आप सदृश मनीषियों की आराधना से ही कुछ संतोष होता है।

अपने लघु लेखकों ब्रज भारती के आगामी अंक के लिये सुरक्षित उसी समय कर लिया जिस समय उसकी एक प्रतिलिपि आपको भेजी थी। ब्रज भारती का फाल्गुन अंक जो अभी आपको मिला है उस समय छप चुका था। आप इस लेख को अपने व्यक्तित्व और कृतित्व सम्वन्धी ग्रन्थ में अवश्य सम्मिलित कर दें। मैंने उसी के लिये तो उसे भेजा था, यद्यपि उस कार्य में बड़ा विलम्ब हो गया था। आपके पुण्यशील पावन अनुष्ठान के मधुर फल से भावी पीढ़ियां उपकृत होंगी ऐसी मेरी दृढ़ धारणा है। आपकी यह वसीयत उन्हें सतत प्रेरणा प्रदान करती रहेगी। कृपा भाव रखें।

आपका
वृन्दावनदास

(१८)

प्रकाश भवन,
मथुरा. १८–३–७५

मान्यवर माधवनजी प्रणाम !

कृपा पत्र (कार्ड) तथा लेख सहित दूसरा पत्र दोनों ही प्राप्त हुए। आपकी दृष्टि परम सात्विकी है और आपके भाव हृदय की गहराइयों से समुद्‌भूत हैं। आपका चिन्तन स्वयमेव एक दर्शन हैं। आपने अपने चिन्तन की अपने साहित्य में ही प्राण प्रतिष्ठा कर दी है। इसलिए वह हिन्दी भाषा और उसके साहित्य की तो निधि बन ही गया है परन्तु मुझे लगता है कि कालान्तर में वह विश्व की भी एक अपूर्व देन के रूप में सिद्ध होगा। शोध पथ के अविश्रान्त पथिक किसी दिन उच्च स्वर से घोषित करेंगे कि माधवन कृत साहित्य मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठापना में जितना सहायक हुआ है अथवा

हो सकता है उतना अथवा तद्वत् अन्य साहित्य सुगमता से उपलब्ध नहीं होगा। आप नेकी कर और कुआ में डाल वाली कहावत को चरितार्थ कर रहे हैं परन्तु मेरा दृढ़ विश्वास है कि एक दिन आवेगा जब आपके चिन्तन का नवनीत आपके अमर साहित्य के माध्यम से जन-जन के मानस को स्निग्ध करने में सक्षम होगा।

श्रद्धेय पं० बनारसीदास चतुर्वेदी ने आपको मन्दार विद्यापीठ से छुट्टी पाने की सलाह दी। वे मुझे भी अगणित वार मण्डल को छोड़कर साहित्य सृजन की ओर दत्तचित्त होने का परामर्श दे चुके हैं। मुझे ऐसा आभास होता है कि संस्था को लेकर जो मुझ पर बीत रही हैं वही किन्ही अंशों में आप पर भी। चतुर्वेदीजी के आदेश पर न मैं चल पा रहा हूँ और न आप ही। शायद हम और आप दोनों ही इस बलवती आशा को लेकर जीवित हैं कि कोई तो आवे और हमें इस भार से मुक्त करे। आने वाला नहीं आ रहा है और हम भार से पिसे जा रहे हैं। परिणाम अदृश्य पर छोड़कर कर्त्तव्य कर्म करते जा रहे हैं। अत्यधिक व्यस्तता में मूल समस्याओं को भूल भी जाते हैं। जो हो।

विचार सम्पादक से कल कानपुर में भेंट हुई थी। मैं वहाँ सपत्नीक दस दिवसीय प्रयाग, अयोध्या लखनऊ यात्रा करता हुआ पहुँचा था। यात्रा का उद्देश्य था प्रयाग में आयोजित अखिल भारतीय भोजपुरी सम्मेलन, अन्तर जनपदीय परिषद् की बैठक, अयोध्या में पुस्तकालय की नवीन व्यवस्था तथा लखनऊ में हिन्दी समिति द्वारा आयोजित वृहत् पुस्तक प्रदर्शनी एवं तत्सम्बन्धी विचार गोष्ठी आदि। 'विचार' सम्पादक मेरे सम्मान में एक विशालकाय अंक निकाल रहे हैं। उन्होंने प्रचुर सामग्री एकत्रित कर ली है। आपके लेख की उनको बड़ी प्रतीक्षा थी। वे अब उसे पाकर बड़े प्रसन्न होंगे।

मैं यहाँ कई कन्या महाविद्यालयों के प्रबन्धकों के सम्पर्क में तो हूँ परन्तु मैं आपके प्रस्ताव की व्यावहारिकता के प्रति आशावान नहीं हूँ। मैं चाहता हूँ आप एक बार मथुरा पधारें। मेरा विचार जन्माष्टमी पर (जो मेरी जन्म तिथि है) अन्तर जनपदीय परिषद् की बैठक करने का है। उनमें मैं अपने अनेक मित्रों को बुलाऊँगा। साहित्यिक समागम खूब रहेगा। हम लोगों ने पूज्य पिताजी की स्मृति में एक विशाल धर्मशाला बनवाई थी सन् १९६० में। उसमें दूसरी मंजिल पर मैं एक भवन बनवा रहा हूँ जिसमें मैं एक पुस्तकालय, वाचनालय एवं संग्रहालय स्थापित करूँगा। उसमें मेरे पास संग्रहीत सम्पूर्ण साहित्यिक सामग्री सुरक्षित कर दी जायगी। उस अवसर पर उसका उद्घाटन समारोह भी सम्पन्न हो जायगा। मेरे पास लगभग ५० वर्षों

से भी अधिक दर्जनों पत्र पत्रिकाओं के निबन्धों की कतरनें हैं जो लगभग १५० बण्डलों में बँधी हुई हैं। यह अमूल्य निधि मुझे सेठ कन्हैयालाल पोद्दार के पुत्र स्वर्गीय सेठ रामनिवास पोद्दार से मिली थी। उसमें अनन्त शोध सामग्री है। पुस्तकालय में उस पर अनुसन्धान कर्ता कार्यरत हो सकेंगे।

पत्र बहुत लम्बा हो गया। दस बारह दिन की डाक भी देखनी है। लिखने के लिए बहुत कुछ है। आपसे पत्र लिखते-लिखते जो सत्संग होता है उसे छोड़ने का जी नहीं चाहता, अतः शीघ्र ही एक और पत्र लिखूंगा।

स्नेह भाव बनाये रहें।

आपका

वृन्दावनदास

डॉ० आनन्दस्वरूप पाठक के नाम

(१६) प्रकाश भवन,

मथुरा २१-६-७४

बन्धुवर डॉ० पाठक जी !

मैं इलाहाबाद होकर परसों रात्रि को ही लौटा हूँ। अमावस का स्नान करने के उपरान्त ही वहाँ से चला था।

आपका पत्र अभी इस चिट्ठी को लिखने के दौरान मिला। ब्रज भारती सम्बन्धी सुझाव, शिकायत पर ध्यान दे रहा हूँ। मैंने जो कुछ किया है उसे दोष समझकर अथवा अविचारतः नहीं किया है। हमारी पत्रिका अन्तरजनपदीय क्षेत्र को भी संस्पर्शित कर रही है। आपने मण्डल के पदाधिकारियों को publicity न देने की शिकायत की है, क्या आप मुझे उनकी उल्लेखनीय सेवाओं और उपलब्धियों से अवगत करेंगे। अधिग्रहण सम्बन्धी सेठ झंवर, डॉ० किशनलाल और श्री जुगलकिशोर चतुर्वेदी, श्री बालकृष्ण पाठक आदि का एकाधिक बार प्रमुख रूप से सम्पादकीय अग्र लेख में भूरि-भूरि प्रशंसा के रूप में उल्लेख किया जा चुका है, उसके बाद कुछ हुआ ही नहीं है जिसका उल्लेख किया जाय। सेठ झँवर की भी जीवनी प्रकाशित की जा चुकी है। जवाहरलाल जी पर सम्पादकीय तो निरा उनकी प्रशंसा से ही भरा हुआ है। वे ब्रजभारती से एक वर्ष के लिए ही सम्बद्ध थे। उनकी व्यवस्था के विषय में बड़ा अपवाद है, हमने उसका जानबूझ कर उल्लेख नहीं किया है, कारण पत्र में न लिखकर आपको व्यक्तिगत रूप से बतायेंगे। आप मण्डल के मन्त्री हैं, और अभिनन्दन ग्रन्थ के संपादन के रूप में असाधारण श्रम कर रहे हैं परन्तु यह कार्य सर्वथा मण्डल से सम्बन्धित नहीं है। यह तो मेरे आपके व्यक्तिगत सम्बन्धों का फल

है, अतः और कौन से पदाधिकारी का कौन सा कार्य है जिसका उल्लेख किया जाय। श्री कमल ने पुलिस सहायता दिलवाई थी उसका भी उल्लेख कर चुका हूँ। एक ही काम का अनेक बार उल्लेख अत्यन्त अशोभनीय, एवं आपत्तिजनक है और वह मुझे इसलिए बदनाम कर देगा कि यह तो लोगों की अनर्गल प्रशंसा करके गुटबन्दी का प्रयास करते हैं, प्रत्यक्षतः कोई भी उपलब्धि जनता की दृष्टि में नहीं है। न कोई गोष्ठी होती है, न हिन्दी दिवस न जयन्ती मनाई जाती है।

सूर स्मारक मण्डल ने सूर के सम्बन्ध में जो काम करके दिखाया है वह वास्तव में मण्डल द्वारा किये जाने के योग्य था। परन्तु यहाँ तो कर्मठता का पूर्णतया अभाव है। हम जो कुछ कर रहे हैं उससे पिसे जा रहे हैं और मुक्ति चाहते हैं। अब दिन दूर नहीं है जब यह मुक्ति ली जायगी, परिणाम कुछ भी हो। परिणामों के भय से सुविचारित संकल्पों का कार्यान्वयन रुक नहीं सकता। डॉ० सुधांशु को आचार्य शुक्ल के बाद समीक्षा क्षेत्र में स्थान दिये जाने की बात मैंने अनेक विद्वानों के लेखों में पढ़ी हैं। बिहार में सुधांशु जी का स्थान हिन्दी सेवा के क्षेत्र में सर्वोच्च था, दिनकरजी तो अखिल भारतीय स्तर का व्यक्तित्व पा चुके थे। सम्पादकीय में हम 'सरस्वती' की पद्धति का अधिकांशतः अनुसरण कर रहे हैं। जिन सूचनाओं को हम दे रहे हैं उससे जिन लोगों को सन्तोष हुआ है उनकी सूची बहुत लम्बी है, कारण वे अयाचित हमें साधुवाद भेजते रहे हैं।

इस सबके होते हुए भी मैं आपके सुझावों पर पूरा ध्यान दूँगा और अब एक मोड़ दे दूँगा जो आपको रुचिकर होगा। यह कला तो इतनी बहुमुखी है कि चित्र को अनेक रंगों में प्रस्तुत किया जा सकता है। मैं मनसा वाचा कर्मणा हिन्दी का एक क्षुद्र कार्यकर्त्ता हूँ, मेरे कार्य का मूल्यांकन करते समय आपको इस तथ्य को दृष्टिगत रखना होगा। सम्भव है इससे कुछ अनिष्ट हो रहा हो परन्तु संस्कार जो पड़ चुके हैं जीवन की सन्ध्या में उनका बदला जाना असम्भव नहीं तो दुष्कर अवश्य है। आप तो मित्र हैं कटु निन्दक नहीं यह मैं जानता हूँ अतः आपके लक्ष्य को समझना मेरा कर्तव्य है और मैं उसे समझकर आपको तुष्ट भी करने की क्षमता रखता हूँ, आप निश्चिन्त रहें, यह तो साधारण सी बात है।

आप अब मथुरा कब आवेंगे। आशा है स्वस्थ एवं सानन्द हैं।

आपका

बृन्दाबनदास

श्री उदयशंकर दुबे शील के नाम

(२०)

प्रकाश भवन,
मथुरा १५–४–७०

बन्धुवर सादर नमस्कार ! कृपा पत्र मिला ।

फाल्गुन अंक आपकी सेवा में भेजा जा चुका है। एक प्रति आज फिर भेजी जा रही है। चतुर्वेदीजी के पत्रों की प्रतिलिपि आपने मुझे भेजी थीं या बाबू यशपाल जैन को। मेरे पास तो ब्रज भूमि (साहित्य एवं संस्कृति) विषयक लेखादि आये थे जिनका सम्पादन कर मैंने यशपाल जी को भेज दिया था। थोड़े लेख संस्मरण खण्ड सम्बन्धी भी आये थे, उनको मैंने यथावत् यशपाल जी को ही भेज दिया था। न मालूम यह गड़बड़ कैसे हुई ? क्षेमचन्द्र जी का पता निम्नांकित है।

श्री क्षेमचन्द्र सुमन, अजय निवास, दिलशाद कौलोनी, शाहदरा, दिल्ली–३२। आप उनको लिखें।

आप जब चाहें मथुरा पधारें और दर्शन दें। दतिया यहाँ से ऐसा दूर ही क्या है ?

श्री राधाचरण जी गोस्वामी को डॉ० वासुदेवशरण जी के पत्रों की बावत लिख रहा हूँ।

हमारे ख्याल से काम्यक वन और कामवन एक ही बात है। कामवन को आजकल कॉमा कहते हैं। यह नगर भरतपुर जिले में डीग के पास है। यहाँ एक पहाड़ी भी है। आनन्दघन और घनानन्द दो अलग-अलग व्यक्ति थे। कामवन आजकल वैष्णवों (पुष्टि सम्प्रदाय) की तीर्थ स्थली है। शेष फिर

आपका
बृन्दावनदास

(२१)

प्रकाश भवन,
मथुरा १३–८–७०

बन्धुवर !

कृपा पत्र मिला ! धन्यवाद ! मैं १५ ता० को यहाँ ही हूँ। १२ बजे दुपहर तक ४ संस्थाओं में ध्वजारोहण कार्य सम्पन्न करने जाऊँगा। १२ से ३ तक घर रहूँगा, फिर ३ बजे थोक उपभोक्ता सहकारी भण्डार का समारोह है,

उसमें १, १।। घण्टा लगेगा। फिर घर पर ही रहूँगा, आप अवश्य पधारें। उसके उपरान्त १६ ता० को यहाँ ही रहूँगा। १७ को पालीवाल जयन्ती में आगरा जाऊँगा फिर यहाँ ही रहूँगा।

आशा है आप सानन्द हैं।

आपका
वृन्दावनदास

(२२)

प्रकाश भवन,
मथुरा. १४-९-७०

बन्धुवर दुबेजी, नमस्कार।

कृपा पत्र मिला। धन्यवाद! 'ज्ञानदा' में मेरा लेख व्रज में जाटों के राज्य पर अवश्य निकला है। उस लेख में मैंने कुछ समय पूर्व बड़ा परिश्रम किया था। ज्यो० राधेश्याम जी उसे ज्ञानदा में प्रकाशित करने उठा ले गये थे। मैंने उनसे एक पुनर्मुद्रण आपको भेजने को कहा तो था परन्तु शायद उन्होंने अभी आपको भेजा नहीं। आप कृपा कर उनको सीधा लिख दें। पता यह है—

ज्यो० राधेश्यामजी द्विवेदी
भारती अनुसंधान भवन,
स्वामी घाट, मथुरा।

द्विवेदी जी 'ज्ञानदा' के सम्पादक भी हैं आप ज्ञानदा का नवीनतम अंक उनसे मँगा लीजिये।

आशा है आप स्वस्थ एवं प्रसन्न हैं।

आपका
वृन्दावनदास

(२३)

प्रकाश भवन, डोरी बाजार,
मथुरा. ३०-९-७०

प्रिय उदयशंकर जी!

आप उस दिन न आ सके इसका कारण विदित हुआ। कोई बात नहीं, शास्त्रीजी से हमारा प्रणाम कहिये। उस दिन आयोजन बड़ा सफल रहा और शास्त्रीजी का भाषण सुन्दर और ज्ञानवर्द्धक था। मैं २ अक्टूबर को आना चाहता था परन्तु मण्डल के प्रधानमंत्री जी ने २ अक्टूबर को मथुरा में ही एक मीटिंग रख दी है, अतः अब आना सम्भव न होगा।

आशा है आप सानन्द हैं।

आपका
वृन्दावनदास

(२४)

प्रकाश भवन,
मथुरा. १७-१०-७१

बन्धुबर दुबे जी !

प्रस्तावित दोनों पुस्तकों का प्रकाशन बड़ा ही श्रेष्ठ कार्य सिद्ध होगा परन्तु मण्डल के पास तो आर्थिक साधन उपलब्ध नहीं हैं। जब तक अधिग्रहण की प्रक्रिया पूरी न हो जाय कोई अन्य आर्थिक भार अपने ऊपर लेना उचित नहीं।

रंजन जी का पत्र सासनी से आया है। उनके पत्र का उत्तर लिख रहा हूँ उसी में आपका सन्देश भी लिख दूँगा।

आपका
वृन्दावनदास

(२५)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ९-७-७४

बन्धुबर दुबे जी, कृपा पत्र मिला !

मण्डल की भूमि का अधिग्रहण तो हो चुका है परन्तु वहाँ पर रहने वाले व्यक्तियों का अभाव है। मण्डल को ऐसे व्यक्तियों की अपेक्षा है जो एक मिशन लेकर समर्पित जीवन व्यतीत करें। सरकार, जन सामान्य, ब्रजभाषा के प्रेमियों की सहानुभूति अर्जित कर मण्डल का काम जिस तरह बने करें। मेरी सेवा तथा सम्मान उन्हें उपलब्ध होगा। शेष फिर

आपका
वृन्दावनदास

श्री कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर के नाम

(२६)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ८-७-७४

मान्यवर प्रभाकरजी, प्रणाम !

कृपा पत्र मिला। अनेकानेक धन्यवाद। डॉ० पाठक का पता तो आपने सही लिखा था, न मालूम किस प्रकार आपका पत्र वापिस आ गया। अस्तु ! अब तो आपकी प्रेषित सामग्री यथा स्थान भेज दी जावगी और निश्चित रूप से उसका उपयोग हो जायगा। बड़ी सुन्दर पंक्तियां लिखी हैं आपने, क्यों न हो

आप रेखाचित्र लेखन में सिद्धहस्त जो हैं। मेरे प्रति आपकी सुन्दर भावनाओं को मैं आपके आशीर्वचन के रूप में ग्रहण करता हूँ। आपकी पक्तियों में प्रेरणा का स्रोत निहित है और एक कार्यकर्ता उनसे संबल प्राप्त कर सकता है।

मैंने डा० वासुदेवशरण अग्रवाल के पत्रों का संग्रह कर लिया है, पुस्तक मेरे प्राक्कथन और भूमिका सहित छप गई है। पुस्तक की जिल्दें बँध रही हैं। जैसे ही तैयार हो जायगी एक प्रति सेवा में प्रेषित होगी, पुस्तक प्राप्त होने पर अग्रवालजी के पत्रों को तो आप पढ़ेंगे ही, कृपा कर एक दृष्टि प्राक्कथन और भूमिका पर भी अवश्य डालें।

हरिद्वार में आपकी बड़ी प्रतीक्षा रही। आचार्य हजारीप्रसाद जी, विश्वनाथ प्रसाद जी, डा० बनारसीदासजी चतुर्वेदी आदि कोई भी सज्जन न पधार सके। प्रातः दुबेजी और विष्णुदत्त जी राकेश मेरे पास आये और कहने लगे कि अब तो आपको ही सभापतित्व करना है। मैंने उसी समय आपको टेलीफोन करने को कहा परन्तु कुछ देर बाद वे लोग फिर आये और कहा कि आप भी उपलब्ध न हो सकेंगे। मैंने तो कहा था कि मैं स्वागताध्यक्ष हूँ प्रभाकर जी को अध्यक्ष बनाइये। आप अस्वस्थ होने के कारण न आ सके थे। खैर, अब भेंट ब्रज में हो होनी चाहिये, ब्रज तो सदा ही आपकी टेर लगाता है आप आ जाँय तो आपका अनुग्रह ही है।

दोनों भाषणों की मुद्रित प्रतियाँ पृथक् डाक से भेज रहा हूँ। कृपा भाव रखिये।

पुनश्च मेरी इच्छा तो हुई थी कि सहारनपुर आपके दर्शन करता हुआ लौटूँ, परन्तु मेरे साथ पूरा काफिला था और गर्मी बेहद पड़ रही थी, मथुरा के लिए सीधी गाड़ी में बैठ गया।

आपका

वृन्दावनदास

श्री डा० कन्हैयालाल सहल के नाम

(२७) प्रकाश भवन,

मथुरा. ९-५-७३

मान्यवर डा० सहलजी, प्रणाम !

कृपा पत्र मिला। संपादक तथा प्रकाशक द्वारा प्रेषित व्यक्तित्व और कृतित्व की प्रति भी प्राप्त हो गई, अनेक धन्यवाद। रसीद पर हस्ताक्षर करके इसी क्षण डॉ० कृष्णबिहारी सहल को उनके सीकर के पते पर भेज रहा हूँ।

ग्रन्थ को अभी मैंने सरसरी दृष्टि से देखा है, मुझे तो ब्रजभारती में इसकी विस्तृत समीक्षा करनी है। ज्येष्ठ अंक तो लगभग छप चुका है, भाद्रपद अंक में यह समीक्षा निश्चित रूप से प्रकाशित हो जायगी।

आपका स्थान मेरी दृष्टि में उन उच्चातिउच्च महानुभावों की पंक्ति में है जिन्होंने सम्प्रति जनपदीय आन्दोलन की ध्वजा फहरा रक्खी है। राजस्थान में तो निस्संदेह आपने इस आन्दोलन को नेतृत्व प्रदान किया है। आपने जिस योग्यता, लगन और तत्परता से लोकभाषा रूपी उद्यान का अनवरत सिंचन किया है उससे लोकभाषा तो स्वस्थ और सुन्दर हुई ही है साहित्यिक समाज भी आपका चिरकाल तक ऋणी रहेगा तथा आपकी अमर यशोगाथा का गान करता रहेगा। आजकल लोकभाषाओं के साहित्य को उनके अपने-अपने क्षेत्र में परिष्कृत करने के प्रयास चल रहे हैं। यह प्रयत्न स्तुत्य हैं, हिन्दी वालो को इनसे भयभीत होने की आवश्यकता नहीं। लोकभाषा साहित्य का परिष्कार उसके किंचित् संस्कृतनिष्ठ होने पर ही सम्भव है। लोकभाषाओं की संस्कृतनिष्ठता उनको हिन्दी और संस्कृत के निकट लाएगी। हिन्दी के प्रति निकटस्थता के परिणामस्वरूप लोकभाषाओं में बहुत कुछ एकरूपता के दर्शन होंगे।

राजस्थानी के प्रति की हुई आपकी सेवाएं अन्य लोकभाषाओं के कार्यकर्त्ताओं को एक आदर्श रूप में विद्यमान है। आपके प्रतिभासम्पन्न और कुशल व्यक्तित्व एवं कृतित्व से अन्य लोकभाषाओं के कार्यकर्तागण अजस्र प्रेरणा ग्रहण करके कार्यरत हो सकते है और अपना जीवन भी सफल बना सकते हैं।

पृथक् रजिस्टर्ड बुकपोस्ट से स्वरचित दो पुस्तकें सेवा में प्रेषित कर रहा हूँ (१) डा० बनारसीदास चतुर्वेदी के पत्र (२) प्राचीन भारत में हिन्दू राज्य। हो सके तो मरु वाणी में इन पर कभी कुछ पंक्तियाँ लिख दें।

श्रद्धेय डा० बनारसीदासजी चतुर्वेदी की मेरे ऊपर बड़ी कृपा है। उनसे मुझे अपनी हिन्दी सेवा में बड़ी प्रेरणा मिलती है।

कृपा भाव रक्खें। योग्य कार्य से सदैव सूचित करते रहें।

आपका
वृन्दावनदास

श्री काजी अशरफ महमूद के नाम

(२८)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २८–४–७२

मान्यवर काजी साहब !

श्रद्धेय बनारसीदासजी चतुर्वेदी की प्रेरणा से आपने अपनी अमूल्य कृति मुझे भेजने की कृपा की है। अनेक धन्यवाद ! आपके विचार बड़े उच्च हैं। क्रूरता का जो नग्न नृत्य बंगला देश में हो चुका है उसके उपरान्त इस प्रकार की कृतियाँ धैर्य धारण और शान्ति लाभ में अनुपम योगदान दे सकती हैं।

अनेक धन्यवाद सहित।

आपका
वृन्दावनदास

(२९)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २५–४–७३

मान्यवर काजी साहिव !

कृपा पत्र मिला। उससे पहले दो सुन्दर कविताएँ डा० बनारसीदास के पत्र सहित भी प्राप्त हो गई है। आप बड़े मधुर और मनमोहक काव्य का सृजन करते हैं। अलंकार की दृष्टि से भी आपका काव्य निर्दोष है। आपकी रचनाएँ ब्रज भारती के भाद्रपद अंक में प्रकाशित कर दी जायेंगी। ब्रजभारती का ज्येष्ठ अंक १ आपकी सेवा में पहुँचा होगा। कृपाभाव रक्खें।

आपका
वृन्दावनदास

(३०)

प्रकाश भवन,
मथुरा. १२–७–७४

प्रिय काजी साहब, प्रणाम !

कृपा पत्र मिला। आपकी सुमधुर पंक्तियाँ प्रकाश्य थीं अतः हमने उन्हें प्रकाशित कर ब्रज रस प्रेमियों को लाभान्वित किया है।

आपका पिछला पत्र भी मिल गया। हम आपकी अन्य रचनाएँ भी यथा समय मुद्रित करेंगे। धन्यवाद !

आपका
वृन्दावनदास

(३१)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २१–६–७४

मान्यवर काजी साहब प्रणाम !

आपके दोनों कृपा पत्र मिले। आपके जीवनवृत्त से मैं प्रभावित हुआ हूँ। मैं ब्रज भारती के आगामी अंक में आपके जीवन पर प्रकाश डालूँगा।

ब्रज भारती का ज्येष्ठ अंक तो आपको मिल गया यह विदित हुआ। भाद्रपद का अंक भी आपको भेजा जा चुका है, उसमें आपकी कविता ब्रज दर्शन मुद्रित है। उसकी पहुँच आपने नहीं लिखी। यदि न पहुँचा हो तो लिखें दूसरी प्रति अविलम्ब भेज दी जायगी।

आपके हिन्दी में लिखे पत्र को पढ़कर हृदय गद्गद् हो गया। आप तो हिन्दी बहुत अच्छी लिखते हैं तथा आपका लेख भी सुन्दर है।

आपका
वृन्दावनदास

(३२)

प्रकाश भवन,
मथुरा २१–६–७४

मान्यवर काजी साहब !

आशा है आप स्वस्थ एवं सानन्द हैं। मैं आपको कुछ पुस्तकें भेजने का विचार कर ही रहा था कि श्रद्धेय बनारसीदासजी चतुर्वेदी का पत्र मिला। जिसमें आपको एक प्रति गालिब अमृत भेजने को लिखा है। आज रजिस्टर्ड बुक पोस्ट से निम्नलिखित सामग्री भेज रहा हूँ।

१ डॉ० बनारसीदास चतुर्वेदी के पत्र

१ गालिब अमृत

४ प्रतियाँ भाषण आदि।

स्नेह भाव बनाये रहिये। ब्रज भारती के संपादकीय में आपके जीवन-वृत्त पर टिप्पणी लिख दी है। पत्रिका छप रही है।

आपका
वृन्दावनदास

(३३)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ११-२-७५

मान्यवर काजी साहिब, प्रणाम !

आपके सभी पत्र यथा समय प्राप्त हो गये। आप स्वच्छ शुद्ध हिन्दी लिखते हैं इसे अवलोकन कर बड़ी प्रसन्नता होती है। आप स्वयं उच्च कोटि के ब्रजभाषा कवि हैं, श्रद्धेय बनारसीदासजी चतुर्वेदी को आपकी कविताओं में वह रस प्राप्त होता है जो उन्हें रसखान की कविताओं से मिला था। मुझे भी आपके काव्य में उसी प्रकार की रसानुभूति होती है। आपकी सरस कविताओं में ब्रजभूमि और ब्रज संस्कृति की ऐसी सुन्दर और अनुपम झाँकी मिलती है कि हृदय गद्गद् हो जाता है। आप तो पहले अपने हृदयोद्‌गार अंग्रेजी में लिखे पत्रों में व्यक्त करते थे और जब मैंने श्रद्धेय चतुर्वेदी जी को लिखा कि काजी साहब को हिन्दी में पत्र लिखने को कहें तो उन्होंने बात अनसुनी सी कर दी। परन्तु मुझे चैन नहीं आया और मैंने अपनी मनोभावना आपसे निवेदित कर ही दी। मैं आपके प्रति आभार मानता हूँ कि आपने मेरी प्रार्थना स्वीकार कर ली। मैं आपको विश्वास दिलाना चाहता हूँ कि आपकी हिन्दी में लिखी पंक्तियाँ अँग्रेजी में लिखी लाइनों से सौगुनी प्रभावोत्पादक हैं। इस परिवर्तन के लिए आपको धन्यवाद देने की आवश्यकता भी नहीं समझता कारण आपको किसी असुविधा या कष्ट का प्रश्न ही नहीं, आप तो स्वयं हिन्दी के उद्भट विद्वान हैं।

पुस्तकों की प्राप्ति स्वीकृति मिली। मैं कुछ दिन बाद और भी साहित्य भेजूँगा तथा अपनी कृतियाँ तो अवश्य ही।

डा० बनारसी दास चतुर्वेदी के पत्र शीर्षक पुस्तक को पारायण कर आपने जो विचार व्यक्त किये हैं उनके लिए आभारी हूँ। मेरी तो केवल ३२ पृष्ठीय भूमिका ही है। वास्तविक यश के अधिकारी पत्र-प्रेषक महोदय ही हैं। श्रद्धेय चतुर्वेदी जी का साहित्येतिहास में सदैव विशिष्ट स्थान रहेगा यह असंदिग्ध है। उनका योगदान कई दृष्टियों से बड़ा विलक्षण रहा है।

आपने ठीक लिखा है कि रामचरित मानस ब्रह्म विद्या का अनुपम ग्रन्थ है। भगवान् वेद व्यास ने कहा है।

"गुह्यं ब्रह्म तदिदम् ब्रवीमि नाहि मानुषात्छ्रेष्ठतरं हि किंचित्।" रामचरितमानस में इस अकाट्य सत्य का प्रतिपादन पग-पग पर हुआ है। मानस क्या है श्रेष्ठ मानवीय चरित्रों की खान है। मानस भारत और हिन्दुओं का

ही नहीं विश्व का ग्रन्थ है। आप अद्वैत सिद्धान्त के समर्थक एवं अनन्य प्रेमी हैं यह मैं भली भाँति जानता हूँ। आपकी इसी शुभ प्रवृत्ति के कारण आपको मानस में रसानुभूति होती है यह तो स्पष्ट ही है।

एक बात और। मुझे भी अभिव्यक्ति की छटपटाहट शुरू से ही रही है। पहले मैं भी अँग्रेजी में पत्र लिखा करता था और अँग्रेजी पत्रों में सम्पादक के नाम लिखे पत्रों में मेरे पत्र अविरल प्रकाशित होते ही रहते थे यहाँ तक कि सहस्त्राधिक मेरे पत्रों की कतरनें मेरे संग्रहालय में आज भी सुरक्षित हैं। परन्तु लगभग दो दशाब्दी से मैं पत्र-लेखन में हिन्दी का ही व्यवहार करता हूँ। मेरी धारणा है कि हिन्दी के साथ अद्यतन न्याय नहीं हुआ है और इसका कुछ दोष अँग्रेजी प्रियता पर आता है। हिन्दी में कोई कमी नहीं है, हमारे देश में ठोस राष्ट्रीय भावना का उदय तो तभी होगा जब यहाँ का जन-जन हिन्दी-प्रेमी हो जाय।

स्नेह भाव बनाये रहें। मेरे योग्य सेवा से सदैव सूचित करते रहें।

भवदीय
वृन्दावनदास

(३४)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २०-२-७५

मान्यवर काजी साहब, प्रणाम !

आपका कृपा पत्र तथा कविता दोनों प्राप्त हुए। हम यथा सम्भव शीघ्र ही आपकी सरस राष्ट्रीय कविता को ब्रजभारती में प्रकाशित करेंगे।

आपका पिछला पत्र भी प्राप्त हो गया था। -

आपने हिन्दी और ब्रजभाषा की जो सेवा की है वह अविस्मरणीय रहेगी। स्नेह भाव बनाये रहें।

भवदीय
वृन्दावनदास

(३५)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ३०-१२-७५

प्रिय काजी साहब !

कृपा पत्र तथा सरस एवं सुमधुर रचना मिली। धन्यवाद ! आप ब्रज-भाषा के मर्मज्ञ कवि हैं। आपकी रचनाएँ सुललित और कमनीय होती हैं। आपकी रचनाओं को प्रकाशित करने से हमारी पत्रिका गौरवान्वित होती है। आप जैसे ब्रजभाषानुरागियों पर हमको गर्व है। सधन्यवाद,

आपका
वृन्दावनदास

श्री कुबेरनाथ राय के नाम

(३६)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ५-१०-७४

मान्यवर राय जी ।

कृपा पत्र तथा 'निषाद बांसुरी की हस्ताक्षरित प्रति दोनों प्राप्त हुए । अनेक धन्यवाद ! बन्धुवर अनिल कुमार ने आपकी कृति की भूरि-भूरि प्रशंसा की थी और मुझको साग्रह लिखा था कि मैं कहीं से भी उसकी एक प्रति पठनार्थ प्राप्त करूँ । आपने मेरी समस्या हल कर दी, एतदर्थ धन्यवाद !

मैं अवश्यमेव साद्यन्त इस पुस्तक को पढ़कर स्वयं ही इसकी समीक्षा लिखूँगा और उसे ब्रज भारती में प्रकाशित भी कर दूँगा ।

मैं अपनी नवीनतम कृति 'डा० वासुदेवशरण अग्रवाल के पत्र' रजिस्टर्ड बुक पोस्ट से आपकी सेवा में प्रेषित कर रहा हूँ कृपया ग्रहण करें ।

पुस्तक को पढ़कर उसके विषय में शीघ्र ही लिखूँगा । कृपा भाव रक्खें, आशा है सानन्द हैं ।

आपका
वृन्दावनदास

(३७)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ६–१०–७४

मान्यवर राय जी,

आपकी पुस्तक को पढ़ रहा हूँ । ३ परिच्छेद पढ़ चुका हूँ । आपकी टिप्पणी तथा सरस्वती का संपादकीय लेख भी पढ़ा । यह तो निर्विवाद है कि आपका अध्ययमन बड़ा गहन है, आपने नाना पुराण निगमागम शास्त्र में गहरी पैठकर उनमें से रत्नों का संग्रह किया है । आपके निष्कर्ष आपकी प्रबल तर्क शक्ति पर आधारित हैं । मैं तो आपके गहन ज्ञान के प्रति नत मस्तक हूँ । आपने लोक साहित्य, लोक शास्त्र, लोक संस्कृति की जो विवेचना की है वह अकाट्य है ।

आपकी पुस्तक 'निषाद बाँसुरी' को मैं 'पृथ्वीपुत्र' की श्रेणी में रखता हूँ, यद्यपि आपका विचार-क्षेत्र 'पृथ्वी पुत्र' के क्षेत्र से कहीं अधिक व्यापक है । पूरी पुस्तक पढ़कर समीक्षा लिखूँगा और 'ब्रज भारती' में प्रकाशित करूँगा ।

कृपा भाव रक्खें ।

आपका
वृन्दावनदास

डा० कृष्णदत्त बाजपेयी के नाम

(३८)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ७-९-७५

मान्यवर बाजपेयीजी। प्रणाम !

कृपा पत्र मिला। आप मथुरा पधारे और ऐसा कुयोग बन गया कि मैं आपके दर्शनों से वंचित रहा।

डा० वासुदेवशरण अग्रवाल के पत्र शीर्षक पुस्तक को प्रकाशित हुए काफी समय व्यतीत हो गया। लखनऊ में हिन्दी समिति के भवन में आयोजित एक समारोह में आचार्य हजारीप्रसाद जी द्विवेदी ने उसका विमोचन भी कर दिया था। एक प्रति रजिस्टर्ड बुक पोस्ट से आपकी सेवा में भेजी जा रही है।

अभिनन्दन ग्रन्थ के प्रकाशन में अभी कुछ देर है। उसको शीघ्र प्रकाशित किये जाने के लिए सम्बन्धित व्यक्ति प्रयास कर रहे हैं।

आशा है आप स्वस्थ एवं सानन्द हैं।

आपका
वृन्दावनदास

(३९)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २७-३-७६

मान्यवर बाजपेयी जी !

आशा है आप स्वस्थ एवं सानन्द हैं। मण्डल में बड़ा ऊथल पाथल हो रहा है। अधिवेशन हो गया परन्तु प्रधान मन्त्री का निर्वाचन न हो पाया। सभी पदाधिकारियों का मनोनयन अध्यक्ष राजबहादुर जी पर छोड़ दिया गया है जो अनुपस्थित थे। देखें, क्या होता है।

आपका—
वृन्दावनदास

श्री कृष्णानन्द गुप्त के नाम

(४०)

प्रकाश भवन,
मथुरा. १७-५-६८

मान्यवर गुप्तजी,

नमस्कार ! आपका पत्र यथा समय प्राप्त हो गया। आपके पिछले दो पत्र अन्तर्जनपदीय कार्य की चर्चा की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं, अतः हम उन्हें

ज्येष्ठ मास के अङ्क में छाप रहे हैं। और कुछ अभी न हो पावे तो जो साधन हमारे पास उपलब्ध हैं उसके माध्यम से चर्चा तो चलती रहे। कभी आपसे भेंट होगी तभी इस कार्य की रूप रेखा बनेगी और हिम्मत करके कार्यारम्भ करेंगे। ब्रजभारती और मण्डल का इतना काम है कि दम मारने को फुरसत नहीं मिलती। इस पर नित्य नये उत्सवों में शरीक होना भी समयाभाव में वृद्धि ही कर देता है।

स्व० वासुदेवशरण के पत्र क्यों न छापेंगे? उनको छापकर तो हम अपने आपको धन्य और कृतार्थ मानेंगे। क्या हमारे धर्मानुकूल उस सामग्री से बढ़कर कोई चीज हो सकती है? कृपाकर उनको लेखबद्ध करके भेजिये। पहिले ब्रजभारती में ही छपना ठीक होगा। यदि ज्यादा मैटर हो तो कई लेख हो जायेंगे, प्रत्येक अङ्क में थोड़े-थोड़े निकलते रहेंगे।

शेष कुशल हैं। कृपा भाव रक्खें।

आपका
वृन्दावनदास

(४१)

प्रकाश भवन,
मथुरा. १८–५–६८

मान्यवर गुप्तजी नमस्कार!

कृपा पत्र मिला। श्रद्धेय चतुर्वेदी जी का कथन अक्षरशः सत्य है। कोश-निर्माण का कार्य राज्य अथवा केन्द्रीय सरकार की प्रचुर आर्थिक सहायता बिना दुष्कर है। हमें उसी दिशा में प्रयत्न करना है। आप कृपाकर एक योजना तो तैयार करें जिसमें कोश की आनुमानिक लागत का विवरण हो। उसमें कोश का आकार, उसकी तयारी पर व्यय, तथा मुद्रण की लागत आदि का सविस्तर उल्लेख होना चाहिए। यदि हम कोई सुसम्बद्ध तखमीना प्रस्तुत कर सकें तो सरकारी अनुदान प्राप्त करने में सुगमता होगी।

मण्डल का अधिवेशन निकट भविष्य में सम्पन्न होने जा रहा है, उसमें उसके आय व्यय का लेखा जोखा तथा वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत हो जायगी। अनुदान के प्रार्थना पत्र में उन बातों के समावेश की भी आवश्यकता है जिनका अद्यतन अभाव है। मैं उस अभाव की पूर्ति कराने में व्यस्त हूँ। अपने घर का ठीक ठाक हो जाय तभी तो दूसरे से कुछ कहते बने।

आप ऐसे साहित्यिकों की भी सूची बनाइये जिनसे यह काम लेना है। एक-एक उपभाषा का अलग-अलग कोष हो इस पर आपका क्या मत है। चतुर्वेदीजी द्वारा प्रस्तुत रेखाचित्र के विषय में तो यही निवेदन है कि वे अनन्त प्रेरणा के स्रोत हैं। वे ब्रज साहित्य मण्डल के जन्म दाता हैं। आजकल मैं उन्हीं के मानसपुत्र की सेवा में लीन हूँ। अतः वे मुझ पर आत्मीयता का भाव रखते हैं। वस्तुतः उनकी मुझ पर महान् कृपा है।

आपका
वृन्दावनदास

(४२)

प्रकाश भवन,
मथुरा. १६–७–६८

मान्यवर गुप्त जी,

कृपा पत्र मिला। वर्षा के कारण गतिरोध हुआ इससे अवगत हुआ। ठीक है, स्थानीय हिन्दी भाषा कोष ही नामकरण रहा।

श्री रामस्वरूपजी की बाबत लिखा सो जाना। मण्डल की दशा आप स्वयं जानते हैं। मण्डल से २००) २५०) की व्यवस्था होने में भी कठिनाई होगी। लेकिन खर्च तो धीरे-धीरे होगा। २५०) तो करा ही देंगे। आधा-ऊधा काम होने पर उसे मन्त्रिमण्डल के सदस्यों को दिखाकर कुछ और भी व्यवस्था की जा सकती है। काम तो आपकी ही निष्ठा के परिणाम स्वरूप होगा। आप तो उसके प्राण ही है।

कार्यारम्भ कर ही दें। बुन्देली का कोष कितने फार्म में आ जायगा, अनुमानतः लिखें। मुद्रण व्यय पर विचार करना है।

आपका
वृन्दावनदास

पुनश्चः

कोष पर तथा डा० वासुदेवशरणजी पर लेख अवश्य भेजिये।

(४३)

प्रकाश भवन डोरी बाजार,
मथुरा. १२–८–६८

मान्यवर गुप्तजी प्रणाम !

कृपा पत्र यथा समय मिल गया था। मेरे मकान पर ता० ११ अगस्त को मण्डल की स्थायी समिति की बैठक होने वाली थी। मैं चाहता था कि

कोशों के निर्माण की बात सदस्यों के कर्णगोचर कर दी जाय तथा इस पर उनकी प्रतिक्रिया भी जान ली जाय और तभी आपके पत्र का उत्तर दिया जाय। यही कारण है कि पत्रोत्तर में विलम्ब हुआ। क्षमा प्रार्थी हूँ।

कल स्थायी समिति की बैठक सम्पन्न हो गई। लोगों ने कोश निर्माण के प्रस्ताव का अच्छा स्वागत किया और यह भी कहा कि इससे एक बड़े अभाव की पूर्ति होगी। इन कोशों की मुद्रण आदि की लागत पर भी विचार हुआ। राजकीय अनुदान के लिए प्रयास आरम्भ करने की सलाह दी गई। एक सुझाव यह भी आया कि मण्डल के अनेक केन्द्रों में से कुछ केन्द्र एक-एक कोश के प्रकाशन का भार अपने ऊपर लें। गाजियाबाद में एक केन्द्र है, वह कुछ सम्पन्न भी है। एक केन्द्र आगरा में शीघ्र खुलने जा रहा है, उसमें भी उत्साही लोग हैं। क्या झाँसी में एक केन्द्र के खुलने की सम्भावना हो सकती है? क्या वर्माजी, गौरीशंकरजी, हयारण मित्र जी आदि को लिखने से कुछ नतीजा निकल सकता है? यदि ऐसा हो सके और झाँसी केन्द्र बुन्देली के कोश के मुद्रण की व्यवस्था का भार अपने ऊपर ले ले तो मुद्रण भी आपकी देख-रेख में हो सकता है। केन्द्रों के इस सुझाव के अन्तर्गत यह भी कहा गया कि पारस्परिक और मथुरा कार्यालय के प्रकाशित ग्रन्थों के विनिमय से प्रत्येक केन्द्र के पास पुस्तकों का एक संग्रह हो जायगा जिससे वे अपने यहाँ एक छोटा सा बिक्री केन्द्र खोल लेंगे।

ये सब बातें अगर उत्साही कार्यकर्ता हों तो यथार्थ सिद्ध हो सकती हैं अन्यथा कल्पना जगत के विचरण की सी हैं।

कोशों के मुद्रण की आर्थिक व्यवस्था तो करनी ही है किसी भी माध्यम से हो।

आपने कोश निर्माण हेतु मण्डल धीरे-धीरे करके कितना रुपया दे सकेगा यह पूछा है। मण्डल पाँच सौ ५००) कुल जमा में दे सकेगा, वह भी सौ-सौ डेढ़-डेढ़ सौ करके। शेष आपको वहाँ ही से करना है। कोश तैयार होने पर मुद्रण की व्यवस्था तो मण्डल करेगा ही। निर्माण कार्य पर मण्डल के पास अधिक रुपया व्यय करने का साधन नहीं है।

श्री गणेशजी भोजपुरी के कोश निर्माण का कार्य आरम्भ कर रहे हैं। उन्होंने आपको लिखा होगा।

शेष कुशल हैं।

आपका
वृन्दावनदास

(४४)

प्रकाश भवन डोरी बाजार
मथुरा. २७-८-६८

मान्यवर गुप्तजी, सादर नमस्कार !

आपका पत्र ता० १७ का यथा समय मिल गया। आपकी रुग्णावस्था का समाचार पढ़कर बड़ी मानसिक वेदना हुई। आपके इन शब्दों से कि चिन्ता नहीं करेंगे, तबियत कल से कुछ अच्छी है, कुछ सान्त्वना होती है। कृपाकर स्वास्थ्य का पूरा ध्यान रक्खें। आपको अभी महान् कार्य करना है।

आपके पत्रों को पढ़कर मैं आश्वस्त हूँ कि आप बुन्देली कोश का निर्माण शीघ्र ही पूर्ण कर लेंगे। शायद उसमें जैसी कि धारणा है एक वर्ष न लगे और दो चार मास में ही पूरा हो जाय। काम तो आप कर ही चुके हैं। किए हुए कार्य का पुनराकलन ही करना है।

प्रस्तावित लेख आप यथा सम्भव शीघ्र २, ३ दिन में ही भेज दें, उसे ब्रज भारती में छाप देंगे तथा रिप्रिन्ट्स भी निकलवा लेंगे। उस प्रतिलिपि के साथ एक अपील भी तैयार हो जाय जो आपके बताये हुए सब स्थानों पर भेज दी जाय। प्रचार द्वारा वातावरण तैयार करना होगा। मैं हिन्दी साहित्य सम्मेलन को भी लिख रहा हूँ और जैसा आपने लिखा है उनसे अनुमानित लागत का लेखा-जोखा माँगता हूँ। अधिक संख्या में नहीं, थोड़ी तादाद में ही छापा जाय; परन्तु एक बार एक कोश तो निकले।

आपका यह प्रस्ताव कि चार-चार पेज नमूने के तौर पर ब्रज भारती में अगले अंक से छापे जाँय बड़ा महत्वपूर्ण है। मैं यह सहर्ष कार्यान्वित करूँगा। कृपा कर यह चार पेज का मैटर भी अगले अंक के लिए तैयार करा दें।

सम्पादकीय लेख में अब की वार अधिक प्रकाश डालूँगा। गणेशजी का भोजपुरी कोश पर लेख इसी अंक में छप रहा है। श्री रामनारायण उपाध्याय निमाड़ी का कोश स्वयं छाप लेंगे, ऐसा उन्होंने मुझे लिखा है।

आपकी तबियत ठीक हो जाय तब वायु परिवर्तनार्थ अवश्य इधर की तरफ आवें जैसा कि आप पिछले पत्र में लिख चुके हैं।

सरकार, विश्व विद्यालयों, कालेजों, कार्यकर्ताओं आदि को आपके लेख के रिप्रिन्ट के साथ एक मुद्रित अपील मण्डल के फार्म पर भेजी जायगी जिससे वातावरण बनेगा। कृपाकर सुविधानुसार अपील का मजमून भी भेजें। हम

तो आपकी योजनाओं के अनुसार ही चलेंगे, हमारा मार्ग शुभ है, आशा है अवश्य सफलता मिलेगी।

ब्रज भारती आधी के करीब छप चुकी है, अतः लेख शीघ्र भेजें। उसे इसी अंक में निकालना है। धन्यवाद एवं शुभ कामना सहित।

आपका
वृन्दावनदास

(४५)

१८-७-७०

मान्यवर गुप्तजी, सादर नमस्कार !

कृपा पत्र दो मिले। वादलजी ने वास्तव में बड़ा सुन्दर लेख लिखा था। कुछ घण्टों के लिए वे मथुरा भी पधारे थे। उनसे भेंट करके भी बड़ा आनन्द प्राप्त हुआ।

झिर और झार की व्याख्या आपके द्वारा की हुई ही हमारी समझ में आई है। इच्छा होती है कि इस व्याख्या को और प्रकाशित कर दें।

आज दिन आपको बुक पोस्ट से ५ प्रतियाँ ब्रज भारती के ज्येष्ठ अंक की भेजी हैं।

आपको ६ फार्म की पुस्तक किस साइज में छपानी है। राष्ट्रीय प्रेस वाले अति व्यस्त रहते हैं, हम ब्रज भारती का मुद्रण ही उनसे बड़ी कठिनता से करा पाते हैं। प्रेसाध्यक्ष एक अवकाश प्राप्त प्रधानाचार्य हैं। उनका मुख्य काम परीक्षाओं के प्रश्न पत्र छापना है।

अच्छा तो यह रहे कि आप झाँसी के किसी प्रेस की सेवाओं का उपयोग करें, वहाँ आपको प्रूफ आदि देखने की सुविधा भी रहेगी।

आपका
वृन्दावनदास

(४६)

२८-८-७०

मान्यवर गुप्तजी,

कृपा पत्र यथा समय मिल गया। धन्यवाद ! श्रद्धेय चतुर्वेदी जी तथा सर्वश्री अमृतलाल चतुर्वेदी, राजेश्वर चतुर्वेदी, जगदीशप्रसाद चतुर्वेदी, डा० टीकमसिंह तोमर, उदय शंकर शील आदि सज्जन पधारे थे। मथुरास्थ विद्वत्मण्डली तो थी ही। ५०, ६० विद्वज्जन विचार विमर्श करते रहे। मथुरा

के विद्वान् तो अन्तरजनपदीय को बिल्कुल ही भूल चुके थे, उन्हें तो उसके समझने में भी कठिनाई हुई। उनके मस्तिष्क में कुछ वात आ गई, वैठक की एक उपलब्धि यह ही समझी जानी चाहिये। हमने अब तक जो कुछ ब्रज-भारती और पत्र-व्यवहार के माध्यम से किया था उसका लेखा जोखा प्रस्तुत कर दिया। चतुर्वेदीजी ने मौखिक तो कहा ही अपने विचार लिपिबद्ध भी हमें दे दिये हैं जिन्हें अब हम पत्रिका के अगले अंक में ही छाप सकेंगे। भाद्रपद अंक तो निकल चुका, बहुत शीघ्र आपकी सेवा में पहुँचेगा।

शेष सब कुशल हैं।

आपका

वृन्दावनदास

(४७)

प्रकाश भवन,

मथुरा २४-१-७१

मान्यवर गुप्तजी,

सौभाग्यकांक्षिणी उमा के विवाहोपलक्ष में निमन्त्रण पत्र प्राप्त हुआ। अनेक धन्यवाद। इस अवसर पर आपको सपरिवार अनेक वधाइयाँ। मैं चि० वर वधू की सुख, समृद्धि और दीर्घायुष्य की मंगल कामना करता हूँ। एक बार मैंने सम्मिलित होने के लिए भी सोचा, परन्तु गत २० ता० से मेरे अनुज श्री कुंजलाल ब्रेन हैमरेज के आघात से गम्भीर रूप से रुग्ण हो गये हैं और दिल्ली के अस्पताल में पड़े हैं, आज ही वहाँ से आया हूँ और संध्या को फिर वहीं लौट जाऊँगा।

कृपा भाव रक्खें।

आपका

वृन्दाबनदास

(४८)

प्रकाश भवन,

मथुरा. २६-११-७१

मान्यवर गुप्त जी,

कृपा पत्र मिला। धन्यवाद! यह जानकर कि आपकी पुत्रवधू पाक-शाला में झुरस गई बड़ा दुःख हुआ। कृपा कर लिखें अब क्या हाल है। चतुर्वेदीजी के उन्हीं पत्रों को मैं छापना चाहता था जो उन्होंने मुझे लिखे थे, परन्तु कुछ पत्र तो स्वयं चतुर्वेदी जी ने प्रतिलिपि करके भेजे और कुछ उन

मित्रों ने भेज दिये जिन्हें यह ज्ञात था कि मैं पत्र संग्रह छपा रहा हूँ। बस इसी कारण कुछ पत्र अन्यों को लिखे छप गये। फिर भी मुझको लिखे पत्रों की संख्या पुस्तक में १५० है और ७१ पत्रों में अन्य सब ही समा गये। जो भी हो। गुड़िया का पत्र वास्तव में अद्वितीय है। फिलहाल मेरा चतुर्वेदीजी के अन्य किसी पत्र संग्रह को छपाने का विचार नहीं है।

आपसे भेंट करके बड़ा आनन्द प्राप्त हुआ। आप जो संग्रह ब्रज साहित्य मण्डल को भेंट करना चाहें सहर्ष कर सकते हैं। मण्डल उसको प्राप्त कर आपका आभार मानेगा।

आशा है आप स्वस्थ एवं सानन्द है। कृपा भाव रक्खें।

यों तो झाँसी में सभी बन्धु परम स्नेही हैं परन्तु मैं श्री सुमित्रानन्दन गुप्त की सज्जनता से अत्यधिक प्रभावित हुआ।

आपका
वृन्दावनदास

(४९)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ६–२–७२

मान्यवर गुप्तजी, प्रणाम !

आपके दोनों पत्र मिले। अनेक धन्यवाद ! आपके सुझाव बहुमूल्य हैं। मैं आपके पत्रों को अपने नोट के साथ ब्रजभारती के आगामी अंक में ही प्रकाशित कर रहा हूँ।

अयोध्या में तो इस पद्धति को चालू करना सम्भव नहीं। हाँ, मथुरा के पुस्तकालय से इसे चालू करने की व्यवस्था पर अवश्य विचार किया जायगा। कृपा भाव रखें।

आपका
वृन्दावनदास

(५०)

प्रकाश भवन
मथुरा. ४-३-७३

मान्यवर गुप्तजी,

आपका एक पत्र यथा समय प्राप्त हो गया था। इन दिनों कुछ तो पौत्र के विवाह में व्यस्त रहा फिर कुछ अस्वस्थ हो गया। अब ठीक हूँ।

मेरा विचार अब डा० अग्रवाल के पत्रों को छाप देने का है। अधिकांश पत्रों का संपादन कर चुका हूँ तथा भूमिका भी लिखना प्रारम्भ कर दिया हैं। आप जितने पत्र इस संग्रह में देना चाहें अविलम्ब भेज दें।

मेरा ख्याल है कि आप सब पत्रों का तो अपना ही एक संग्रह छपा दें। इस संग्रह के लिए कुछ पत्र जिन्हें आप उपयुक्त समझें भेज दें। परन्तु इसमें अन्तिम निर्णय आपका ही होगा।

आशा है आप स्वस्थ एवं सानन्द हैं।

आपका

वृन्दावनदास

(५१)

प्रकाश भवन,

मथुरा. ९-३-७३

मान्यवर गुप्तजी,

कृपा पत्र मिला। धन्यवाद ! आप जितने पत्र भेजना चाहें भेज दें। मैं उन्हें उसी क्रम से छपवा दूँगा। वैसे मेरी इच्छा थी कि इस प्रकार की भूमिकाओं का उनके लेखकों के नाम से ही उस बड़ी भूमिका में समावेश कर दूँ जो मैं लिख रहा हूँ। मैं उसी प्रकार की भूमिका लिख रहा हूँ जैसी मैंने चतुर्वेदीजी के पत्र संग्रह के लिए लिखी थी। परन्तु आपके मामले में तो जैसी आपकी इच्छा होगी वही होगा। मैं १०० पुनर्मद्रण अवश्य निकलवा दूँगा और कागज आदि का मूल्य आपसे लेना मेरे लिए अचित्य है। कृपया अपने सूक्ष्म लेख सहित पत्रों को शीघ्र भिजवा दें। शेष कुशल हैं।

आपका

वृन्दावनदास

(५२)

प्रकाश भवन,

मथुरा. ६-४-७३

मान्यवर गुप्तजी,

रजिस्टर्ड पत्र के साथ पत्रों की प्रतिलिपियाँ मिल गईं। धन्यवाद ! आज लखनऊ अयोध्या की यात्रा पर जा रहा हूँ, वहाँ से आकर पत्र संग्रह के मुद्रण का काम आरम्भ करा दूँगा। अब तो यह काम करना ही है।

आपका

वृन्दावनदास

(५३)

२०२ नीलाम्बर ३७ पैंडर रोड,
बंबई २६—२०-६-७३

मान्यवर गुप्तजी,

आपके दोनों कार्ड पुनर्प्रेषित होकर मुझे बम्बई में मिल गये। मैं यहाँ एक मास की यात्रा पर आया हूँ। बम्बई में मेरी ४ विवाहित पुत्रियों में से तीन और तीन पुत्रियों में से दो सपरिवार यहाँ रहते हैं, अतः मैं प्रति वर्ष यहाँ कम से कम एक मास के लिए आता और इन लोगों के पास रहता हूँ।

आपने श्रीराम इकबाल सिंह जी के लेख के सम्बन्ध में जो कुछ लिखा है उससे मैं अक्षरशः सहमत हूँ। वह लेख मेरे पास लगभग १॥ साल से पड़ा था और जितना छपा है उससे आकार में तिगुना था। इतना बड़ा लेख हमारी छोटी सी पत्रिका के आकार के सर्वथा अनुपयुक्त था। वन्धुवर राम इकबाल सिंह जी पुराने जनपदीय कार्यकर्ता हैं। जनपदीय आन्दोलन में उनका योगदान सराहनीय रहा है। इसलिए उनके प्रति श्रद्धा का भाव है। वस्तुतः वह लेख मेरे अभिनन्दन ग्रन्थ के लिए भेजा गया था, परन्तु ग्रन्थ के सम्पादकों की समझ में कुछ न आया और उसे उन्होंने मेरे माथे मढ़ दिया। मुझे श्री सिंह का लिहाज है। अतः लेख का आकार घटाकर उसे ब्रज भारती में छाप दिया।

मैं मासान्त मैं मथुरा पहुँच जाऊँगा, वहाँ पहुँचकर डा० अग्रवाल के पत्रों का मुद्रण प्रारम्भ करना है। आशा है आप स्वस्थ एवं सानन्द हैं।

आपका
वृन्दावनदास

(५४)

प्रकाश भवन,
मथुरा. १०-८-७३

मान्यवर गुप्तजी, प्रणाम !

कृपा पत्र मिले। श्री राम इकबाल सिंह लोक साहित्य के विशिष्ट कार्यकर्ता तथा सुधी लेखक हैं। वे आदरणीय पं० बनारसीदास जी चतुर्वेदी के मित्र हैं। चतुर्वेदी जी ने ही उनसे मेरा परिचय कराया था। उनका लेख करीब डेढ़ साल से मेरे पास पड़ा था और अब जब छपने की बारी आई तो उसके वृहदाकार के कारण मुझे उस पर संपादकीय कलम चलाकर उसे आधे से भी कम कर देना पड़ा। सिंह साहब ने एक बार पोस्टेज भेजकर मुझसे उस लेख को वापिस भी माँगा था। इन सब जटिल स्थितियों की पृष्ठभूमि में अब

उस लेख पर टिप्पणी उनके तथा चतुर्वेदीजी के हृदय को निश्चय ही आघात पहुँचाती। मैं इस स्थिति में उस लेख पर आपके तथा अपने विचार व्यक्त करना उचित नहीं समझ रहा हूँ।

कागज के अभाव के कारण डा० अग्रवाल के पत्रों के मुद्रण का कार्य शिथिल पड़ गया है। लोको हड़ताल के कारण कागज कानपुर के गोदाम में ही पड़ा है। कागज आते ही कार्य शुरू होगा।

आशा है आप स्वस्थ एवं सानन्द हैं।

आपका
वृन्दावनदास

(५५)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २२–२–७४

मान्यवर गुप्तजी। प्रणाम!

कल आपको रजिस्टर्ड बुक पोस्ट से निम्नलिखित सामग्री प्रेषित की है पहुँच लिखिएगा।

(१) डा० वासुदेवशरण अग्रवाल के पत्र शीर्षक पुस्तक की एक प्रति।
(२) १०१ आपके पत्रों के पुनर्मुद्रण।
(३) अध्यक्षीय भाषण की दो प्रतियाँ।

आपके पहले पत्र यथा समय प्राप्त हो गये थे, मैं सोचता था कि काम पूरा करके ही उत्तर लिखूँ, कारण जिस समय आपके पत्र मिले थे उससे बहुत पहले ही आधी पुस्तक से अधिक छप चुकी थी।

मैंने पुस्तक में सम्पादन की विधि श्री बनारसीदास चतुर्वेदी संपादित आचार्य पं० पद्मसिंह शर्मा के पत्र के आधार पर निश्चित की थी। स्वयं मैंने डा० बनारसीदास चतुर्वेदी के पत्र उसी पद्धति के अनुसार छपाये थे। मेरी धारणा है कि पत्र तो स्वयं बोलते हैं अतः उनको सन्दर्भों आदि से बोझिल बनाना अनावश्यक है। यदि संन्दर्भ दिये जाँय तो सभी पत्रों के साथ एक सी पद्धति अपनाई जानी चाहिए। यदि केवल कुछ ही पत्रों के साथ संदर्भ दिये जाते और अन्यों के साथ नहीं तो पुस्तक का एकसा स्वरूप ही नष्ट हो जाता। भूमिका में पत्र-लेखक तथा जिसको पत्र लिखे गये उस व्यक्ति के स्वरूप की चर्चा कर दी गई है तथा प्रत्येक विद्वान् को लिखे गये पत्रों को लेकर पृथक्-पृथक् पत्रों के महत्व पर प्रकाश डाला गया है। आशा है आप मेरे उत्तर को

सन्तोषजनक मानेंगे। निश्चित सीमा के भीतर अधिकाधिक पत्रों का समावेश हो जाय यह भावना भी बलवती रहती थी।

हरिद्वार का समारोह सफल रहा। आचार्य हजारीप्रसाद जी द्विवेदी न पधार सके, अतः अध्यक्षता का भार मेरे निर्बल कन्धों पर ही आ पड़ा। आपके उपस्थित न हो सकने का भी दुःख रहा। जनपदीय कार्य में आपका मार्ग दर्शन अपेक्षित है। कृपा भाव रखें।

(५६)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ४-२-७५

मान्यवर गुप्तजी। प्रणाम !

कृपा पत्र मिला। धन्यवाद ! जनपदीय आन्दोलन के सम्बन्ध में आपका कुछ लिखने का विचार है यह जानकर प्रसन्नता हुई। ब्रज संस्कृति भारतीय संस्कृति की आत्मा है और ब्रज संस्कृति की आत्मा है जनपदीय भावना। श्रद्धेय बनारसीदासजी चतुर्वेदी, स्व० डा० वासुदेवशरण अग्रवाल स्वय आप एवं डा० सत्येन्द्र समय-समय पर जनपदीय भावना को स्वस्थान प्रेम (लोकल पैटरियोटिज्म) की संज्ञा देते रहे हैं। आज से ५००० वर्ष पूर्व भगवान् श्रीकृष्ण ने दूरस्थ विदेशी देवता इन्द्र के स्थान पर स्थानीय देव गोवर्धन की पूजा का विधान कराया था। श्रीकृष्ण स्वयं जनपदीय संस्कृति के प्रतीक थे। "ऊधौ मोहि ब्रज बिसरत नाहीं" यह वाक्य श्रीकृष्ण के जनपदीय प्रेम का द्योतक था।

आज भारतीय भाषाओं तथा हिन्दी की लोक भाषाओं में साहित्यिक उन्नयन की एक लहर सी चल पड़ी है। अनेक लेखक मैदान में आ गये हैं, विभिन्न भाषाओं में पत्र-पत्रिकाएँ अगणित संख्या में उदित हो चुकी हैं। यह सब जनपदीय आन्दोलन का ही शुभ परिणाम है। पूर्वांचलीय भाषाओं के क्षेत्रों में जनपदीय आन्दोलन प्रखर सा प्रतीत हो रहा है। मैथिली, भोजपुरी, अंगिका, वज्जिका आदि लोक भाषाएँ काफी समुन्नत हुई हैं और उनमें अपार साहित्य की सृष्टि हुई है। ब्रज क्षेत्र में ब्रज भारती ब्रज साहित्य मण्डल की स्थापना के बाद ही तो निकली। वस्तुतः माण्डलिक स्तर पर साहित्य संस्थाओं की स्थापना जनपदीय आन्दोलन की ही उपज हैं।

जनपदीय भावना का लोक जीवन से अविच्छिन्न सम्बन्ध हैं। जनपदीय भावना को लोक जीवन से पृथक किया ही नहीं जा सकता। इस दृष्टि से जनपदीय भावना को कालक्रम की परिधि में बाँधना उचित नहीं। यह भावना

तो शाश्वत है और जब तक लोक जीवन रहेगा इस भावना का अस्तित्व भी अनिवार्य रूप से बना रहेगा। यदि जनपदीय भावना के उत्कर्ष से छोटे-छोटे घटक उन्नति के पथ पर अग्रसर होने लगें तो यह राष्ट्रीय अभ्युत्थान और राष्ट्रीय एकता के लिए एक शुभ चिन्ह के रूप में होगा। यदि छोटी-छोटी इकाइयाँ सफल हो गईं तो वे सब मिलकर एक प्रबल राष्ट्र के रूप में अवस्थित होंगी। विगत दो दशकों में अनेक पत्रिकाएँ और अगणित छोटी-छोटी पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। जनपदीय भावना हमारी रग-रग को उद्वेलित करती है और सच्चे अर्थों में यही जनपदीय आन्दोलन है।

दुर्भाग्य की बात यह है कि कुछ विद्वान् जनपदीय भाषाओं के उन्नयन में हिन्दी का अहित देखते हैं। जनपदीय भाषाओं का संस्कार करके हमें हिन्दी की शब्द संपदा और अभिव्यक्ति सामर्थ्य बढ़ानी है। जनपदीय भाषाओं और हिन्दी की कोई प्रतिद्वन्दिता है ही नहीं। कुछ विद्वानों की धारगा है कि यदि लोक भाषाओं का उन्नयन हो गया तो हिन्दी भाषी रह ही कहाँ जायेंगे और जन गणना में हिन्दी भाषियों की गणना नगण्य रह जायगी। यह धारणा भ्रान्त है और अविचार की द्योतक है। हमें यह लेकर चलना है कि प्रत्येक भारतवासी दो भाषाएँ जानता है फिर चाहे यह शिक्षित हो या अशिक्षित। (१) मातृभाषा (२) सम्पर्क भाषा हिन्दी। इस बहु भाषाभाषी देश में विभिन्न भाषाभाषी लोग अधिकतर अपनी-अपनी मातृभाषा में ही बोलते हैं। परन्तु जब एक भाषाभाषी का दूसरी भाषा के बोलने वाले से बोलने का अवसर आता है तो उनकी बातचीत का माध्यम हिन्दी ही हो सकती है, दूसरी भाषा कदापि नहीं। हमसे यदि कोई भाषा के आधार पर जन गणना करने को कहे तो हम ९९ प्रतिशत के आधार पर हिन्दी भाषियों की गणना कर लेंगे, अन्य भाषाओं के आधार पर जन गणना उनकी वास्तविक स्थिति के आधार पर होगी।

जनपदीय आन्दोलन का वेग अप्रतिहत है। शेष फिर।

भवदीय
वृन्दावनदास

डा० केदारदत्त तत्राड़ी के नाम

(५७) **प्रकाश भवन, डोरी बाजार,**
मथुरा. २२-९-६९

प्रियवर डा० तत्राड़ी !

कृपा पत्र आज ही मिला। मैं कुछ अस्वस्थ था, कल ही आगरा के नर्सिंग होम से १० दिन बाद लौटा हूँ।

ऐसा प्रतीत होता है कि पं० बनारसीदास चतुर्वेदी से सम्बन्धित अभिनन्दन ग्रन्थ विषयक कोई सूचना आपके नाम न पहुँच पाई और न ही ब्रज भारती का नवीनतम अंक। मैं तो इसी भ्रान्ति में रहा कि सम्बन्धित परिपत्र आपको पहुँच गया होगा। अब आपको ब्रज भारती का नवीनतम अंक भेजा जा रहा है। इसको देखिये।

आप गोस्वामी राधाचरणजी महाराज पर ही अपना लेख जो ३, ४ पृष्ठ से अधिक न हो ३० ता० तक मेरे पास भेज दें। सामग्री का चयन विभिन्न स्तरों पर लगभग पूरा हो चुका है, पाण्डुलिपि शीघ्र ही प्रेस को दी जाने वाली है।

आप मथुरा में थे इस कारण आपको पत्र कदाचित श्री मुद्गल के द्वारा भेजा गया था। जो भी हो। आपने इस सम्बन्ध में मुझसे मिलने को भी कहा था परन्तु कदाचित परिस्थितिवश आप ऐसा न कर सके और मैं भी मथुरा वाले पत्रों के साथ आपको पत्रादि भेजकर निश्चिन्त हो गया। ब्रज भूमि खण्ड के लिए बड़े पक्के २० लेख प्राप्त हो गये हैं। शेष कुशल हैं। निबन्धों की पुस्तक आपको जब मथुरा आवेंगे भेंट की जायगी।

आपका

वृन्दावनदास

(५८)

प्रकाश भवन,

मथुरा. ४-१०-६९

मित्रवर डा० तत्राड़ीजी !

कृपा पत्र यथा समय मिल गया। आज चार तारीख है, आशा है शाम तक लेख प्राप्त हो जायगा। यदि न भेजा हो तो पत्र देखते साथ भेज देना। उसे ग्रन्थ में यथा सम्भव स्थान प्राप्त कराने का यत्न करूँगा। अन्यथा ब्रज भारती में तो उसके लिए स्थान सुरक्षित रहेगा ही।

मेरी पुस्तक आपको अवश्य प्राप्त होगी, दीपावली के अवसर पर आवेंगे तो उसी अवसर पर भेंट स्वरूप।

आपका

वृन्दावनदास

(५९)

प्रकाश भवन डोरी बाजार,

मथुरा. १०-१०-६९

प्रिय डा० तत्राड़ीजी !

आपका लेख प्राप्त हुआ। कल आपको ब्रजभारती भाद्रपद अंक भेजा था

पहुँचा होगा। यद्यपि मैं डा० बनारसीदास चतुर्वेदीजी के ग्रन्थ सम्बन्धी संकलित सामग्री का संपादन कर परसों ही यशपाल जी को देकर आया हूँ तथापि मैंने उनसे कह दिया था कि यदि कुछ और भी उत्तम रचनाऐं प्राप्त होंगी तो उन्हें भी ग्रन्थ में सम्मिलित करने को भेजा जायगा। अतः कुछ नवागन्तुक रचनाओं के साथ आपकी कृति को भी मैं उनके पास भेज रहा हूँ। मुझे विश्वास है कि ये सब रचनाऐं ग्रन्थ में अवश्य स्थान प्राप्त करेंगी।

आशा है आप सपरिवार आनन्दपूर्वक हैं।

आपका
वृन्दावनदास

(६०)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २९-७-७०

बन्धुवर डा० तत्राड़ी जी !

कृपा पत्र मिला। धन्यवाद ! कु० हनुमन्तसिंह पर कुमारी उर्मिला शर्मा शोध प्रबन्ध लिख रही हैं, मुझे सम्यक रूप से ज्ञात नहीं कि उनका प्रबन्ध अद्यतन पूरा हो गया अथवा नहीं। अन्य कोई व्यक्ति कदाचित उन पर शोध नहीं कर रहा है।

पी० एच० डी० के लिए ब्रज मण्डल के ३, ४ साहित्यकारों के नाम प्रस्तावित करते समय हमारी दृष्टि में तो वे ही नाम आते हैं जो कदाचित आपको भी जँच रहे हों (१) श्री प्रभुदयाल मीतल (२) श्री जवाहरलाल चतुर्वेदी मथुरा के तथा डा० हरवंशलाल शर्मा अलीगढ़ के। आगरा की विभूतियों में तो हम केवल स्व० डा० हरिशंकर जी शर्मा को ही रखेंगे। फिरोजाबाद के श्रद्धेय बनारसीदास जी चतुर्वेदी तथा ब्रज मण्डल में अनेक वर्ष कार्यरत रहे स्व० डा० वासुदेवशरण जी अग्रवाल के नाम भी उल्लेख्य हैं।

आशा है आप सानन्द हैं। मथुरा पधारें तब दर्शन दें।

आपका
वृन्दावनदास

(६१)

प्रकाश भवन,
मथुरा २४-२-७१

बन्धुवर डा० तत्राड़ी जी !

कृपा पत्र १७-२-७१ का प्राप्त हो गया, धन्यवाद ! आप आगामी मास

में मथुरा आ रहे हैं यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई। कृपा कर अपने आगमन और मथुरा निवास की तिथियाँ लिखें।

आपकी वांछित सामग्री आपको मथुरा में ही दे देंगे। आपसे छिपा भी क्या है? अभी उस कार्य में ऐसी कोई त्वरा नहीं है। आप सुविधानुसार लिख लें।

ब्रज भारती का नवीनतम (फाल्गुन) अंक आज ही भेजा गया है, शीघ्र पहुँचेगा।

आशा है आप स्वस्थ एवं सानन्द हैं। कृपा भाव रक्खें।

आपका

वृन्दावनदास

(६२)

बंगलौर

दिनांक २७–६-७१

प्रिय डा० तत्राड़ी जी!

आपकी अस्वस्थता का समाचार मुझे बम्बई चलने से पूर्व मिल गया था। मैं ता० १८ को बम्बई चला आया और वहाँ से आज यहाँ आ गया हूँ। अब मैं दशहरा मैसूर का देखकर तिरुपति के दर्शन करूँगा तथा ता० ६ अक्टूबर को बम्बई से चलकर ता० ७ को मथुरा पहुँच जाऊँगा। यदि आप दिवाली की छुट्टियों में मथुरा पधारेंगे तो आपके दर्शन मुझे वहाँ हो ही जावेंगे। मैं ७ ता० और उसके उपरान्त मथुरा ही रहूँगा आशा है अब आप पूर्ण रूपेण स्वस्थ हो गये होंगे।

आपका—

वृन्दावनदास

(६३)

प्रकाश भवन,

मथुरा. ११–११–७१

बन्धुवर डा० तत्राड़ी जी!

कृपा पत्र तथा लेख प्राप्त हुए। अनेकानेक धन्यवाद! आपके लेख को जैसा आप चाहते हैं वैसा ही स्थान प्राप्त होगा। आपने अति सुन्दर लेख लिखा है, उसकी उत्कृष्टता एवं भव्यता के प्रति शंका निराधार है। मैं अत्यन्त आभारी हूँ।

कृपा कर स्वास्थ्य की ओर विशेष ध्यान रखिये। मानसिक कार्य कम से कम और विश्राम अधिक करिये। छुट्टियों में किराये के पैसों का लोभ न कर अधिक मथुरा आइये, आपका स्वास्थ्य ठीक हो जायगा। बार-बार अस्वस्थता की बात सुनकर चित्त को दुःख होता है। हमारे आदरणीय बनारसीदासजी चतुर्वेदी का मत है कि बीमार होना पाप कर्म है। मैं जब बीमार हुआ था उन्होंने ऐसा ही लिखा था कोई श्लोक भी उद्‌धृत किया था जो इस समय याद नहीं आ रहा। कृपा भाव रक्खें।

पंडित गणेश चौबे के नाम

(६४)

प्रकाश भवन,
मथुरा १७-५-६७

प्रिय चौबेजी, सादर नमस्कार !

माननीय श्री बनारसीदास जी चतुर्वेदी ने मुझे आपके सम्बन्ध में लिखा है। हिन्दी प्रेमियों के प्रति तो हम श्रद्धावनत हैं। आपको नियमित रूप से ब्रज भारती भेजते रहेंगे। कदाचित आपने हमारी पत्रिका देखी होगी।

जनपदीय आन्दोलन के प्रति आप सजग हैं, यह जानकर हर्ष हुआ। हमने हिन्दी सम्बन्धित योजना चलायी है। जनपदीय आन्दोलन के माध्यम से हिन्दी के भण्डार को भरना है।

कृपा भाव रक्खें।

आपका
वृन्दावनदास

(६५)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ८-२-६८

मान्यवर चौबेजी, सादर प्रणाम !

कृपा पत्र मिला। यह शुभ सम्वाद है कि आप कवि रत्न सम्बन्धित त्रिदिवसीय समारोह में, जो १४, १५, १६ अप्रेल को आगरा में हो रहा है सम्मिलित होंगे। अन्तर्जनपदीय परिषद् की स्थापना तो इस अवसर पर कर ही देनी है। आप मुझे होता तो बनाना चाहते हैं। श्रद्धेय चतुर्वेदीजी भी ऐसा कई बार लिख चुके हैं परन्तु होता को यह नहीं मालूम कि यह होना कैसे है। आपको इस सम्बन्ध में प्रमुख भार उठाना होगा। आप सहृदय

मित्रों के आश्रय पर ही मैं यह महान् कार्य उठाने को उद्यत हो गया हूँ। एक त्रैमासिक पत्रिका भी निश्चित रूप से निकालनी है। आपने जिन भोजपुरी विद्व नों के नाम लिखे हैं, उनको निमंत्रण भेजे जायेंगे। जो भी आ जाँय सिर माथे हैं। मैंने सत्येन्द्र जी को लिख दिया है। श्री जगदीश चतुर्वेदी को भी लिखूँगा। परिषद् के निर्माण की घोषणा सम्मेलन के अवसर पर कर ही देनी है। वही उसके विधिवत् कार्यारंभ का शुभ मुहूर्त होगा। प्रस्तावक आप होंगे। मैंने आज से ही एक अलहदा फाइल बना ली है जिसमें आपके पत्र ही प्रमुख रूप से विद्यमान हैं। भोजपुरी जनपद की प्रति मेरे पास नहीं आयी, पुनः लिखकर भिजवाएँ।

आपका
वृन्दावनदास

(६६)

प्रकाश भवन डोरी बाजार,
मथुरा. १८–७–६८

प्रियवर चौबेजी सादर नमस्कार।

आपका कृपा पत्र मिला। आपका कोश निर्माण के विषय में दृष्टि बिन्दु बहुत ही उचित है। आप श्री कृष्णानंदजी के विचार से सहमत हैं, यह जानकर प्रसन्नता हुई। इससे भी अधिक हर्ष इस बात पर हुआ कि भोजपुरी का कोश निर्माण आप स्वयं अपने संरक्षण में लेने को उद्यत हैं। यदि आप कोश निर्माण करा दें तो छापने का दायित्व तो हम लेते हैं। मण्डल से ही या अन्यत्र, कोश अवश्य छपेगा। अनुमानतः भोजपुरी कोश कितने फार्म अथवा पृष्ठ का बैठेगा ? लिखिये। कृपा भाव रक्खें।

(६७)

अखिल भारती ब्रज साहित्य मंडल,
प्रधान कार्यालय, मथुरा.
दिनांक २४-९-६९

मान्यवर चौबेजी प्रणाम !

कृपा पत्र मिला। धन्यवाद ! मेरा पुराण सम्बन्धी लेख पसन्द आया, अनुग्रहीत हूँ। मैं इस छानबीन को बराबर कर रहा हूँ। अपने इतिहास को आदिकाल से पौराणिक सामग्री के वैज्ञानिक अध्ययन द्वारा ही सँजोना चाहता हूँ नवीनतम मान्यताएँ यह है कि पुराण हमारे आर्य इतिहास के अनुपम साक्ष्य प्रस्तुत करते हैं, उनके गर्भ में अपूर्व ऐतिहासिक सामग्री है। केवल आवश्यकता उस आँख की है जो उसे खोजकर निकाल ले।

चतुर्वेदीजी के ग्रन्थ का कार्य चल रहा है। आपका लेख संस्मरण खण्ड के सम्पादक को दे आया हूँ। उसे तो निस्संदेह ही स्थान प्राप्त होगा। कृपा भाव रक्खें।

आपका
वृन्दावनदास

(६८)

मथुरा (उत्तर प्रदेश)

मान्यवर चौवेजी प्रणाम!

कृपा पत्र मिला। धन्यवाद! श्री मोहनलाल शर्मा का पत्र मेरे पास भी आया है। वे लिखते हैं ब्रज वार्ता की एक प्रति उन्होंने आपको भेज दी है। यदि नहीं मिली हो तो उन्हें लिख दें वे फिर भेज देंगे। अच्छा हो वे रजिष्ट्री द्वारा प्रति को भेजें। (श्री बनारसी दास चतुर्वेदी) अभिनन्दन ग्रन्थ आपको प्राप्त हो गया, बड़ी प्रसन्नता हुई। हमने तो यशपालजी से तय कर लिया था कि ग्रन्थ की प्रति आपको अवश्य जायगी। एक तो यही अन्याय हो गया कि आपका सुन्दर लेख स्थान नहीं पा सका, दूसरी ज्यादती यह भी कैसे हो कि आप ग्रन्थ की प्रति से भी वंचित रहें। यह हमें असह्य है। वे सहमत हो गये।

शेष सब कुशल हैं।

आपका
वृन्दावनदास

(६९)

दिनांक १५-४-७०

मान्यवर गणेशजी,

कृपा पत्र मिला। धन्यवाद! आपसे यह जानकर कि स्व० अग्रवालजी के पुत्र डा० अग्रवाल के पत्रों को छापना चाहते थे, बड़ा आश्चर्य हुआ। चतुर्वेदीजी ने लिखा था कि वे पत्रों का उत्तर भी नहीं देते और यह काम (डा० अग्रवाल के पत्रों का संग्रह का) मुझे करना चाहिये। एतदर्थ मैंने संग्रह शुरू कर दिया है। कई विद्वानों ने पत्रों की प्रतिलिपियाँ कराकर भेज दी हैं। आप भी अपने पास वाले पत्रों की प्रतिलिपियाँ अवश्य भेजें। आपको लिखे पत्र जनपदीय विज्ञान की दृष्टि से निस्संदेह बड़े महत्वपूर्ण होंगे। उन्होंने जनपदीय ज्ञान को केवल चार-पाँच महानुभावों द्वारा ही फैलाया था और उनमें एक आप थे। सर्व श्री कृष्णानन्दजी, चतुर्वेदीजी .आदि अन्य विद्वान् इसी श्रेणी में आते हैं।

चतुर्वेदीजी पर लिखे अपने लेख की कापी आप मुझे अवश्य भेजें, मैं उसे ब्रज भारती में सर्वाधिक प्राथमिकता दूँगा। यशपालजी ने आपके लेख को न छापकर बड़ा अनर्थ किया है। वास्तव में जनपदीय आन्दोलन के सूत्र-धार के रूप में चतुर्वेदीजी पर एक स्वतंत्र लेख होना चाहिये था और मैं आपसे सहमत हूँ कि इसका अभाव खटकता है।

चैनिशोव के शोध प्रबन्ध सम्बन्धी आपकी जानकारी सही है।

आपका
वृन्दावनदास

(७०)

मथुरा २७-८-७०

बन्धुवर गणेशजी !

कृपा पत्र मिला। आपका निवास स्थान इतनी दूर है कि यहाँ की गति-विधियों में एकाएक सम्मिलित हो जाना आपको दुष्कर है, फिर भी आपकी निष्ठा तो धन्य है जो आप कभी-कभी ऐसा कर ही लेते हैं।

श्रद्धेय चतुर्वेदीजी, श्री जगदीश प्रसाद चतुर्वेदी, सर्वश्री अमृतलाल चतुर्वेदी डा० राजेश्वर चतुर्वेदी, डा० टीकमसिंह तोमर आदि पधारे थे। स्थानीय विद्वन्मंडली तो था ही। खासी गोष्ठी रही। लोगों में अन्तर्जनपदीय क्या बला है ? इसकी भी जानकारी न थी। वह जानकारी तो कम से कम अब हो गई। हमने कोश निर्माण की दिशा में किये हुए आप महानुभावों के कार्यों से उपस्थित लोगों को अवगत करा दिया। ब्रज भारती में तो अगले अंक में ही सब कुछ निकलेगा। यह अंक तो छप चुका, बहुत शीघ्र आपकी सेवा में पहुँचेगा। कुछ चेतना आई, कुछ वातावरण का निर्माण हुआ। और तो क्या होता, आजकल अनेक साहित्यिक और सांस्कृतिक योजनाएँ आर्थिक चट्टान से टकराकर लुड़कती-पुड़कती रहती हैं। उनको हिलाते जुलाते रहना चाहिये जिससे ध्वस्त न हो जाँय। कभी तो लहर आयेगी। शेष फिर।

आपका
वृन्दावनदास

(७१)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २५-१२-७०

बन्धुवर गणेशजी ! सादर नमस्कार।

योगी में आपका प्रेरणादायक जीवनवृत्त पढ़ा। बड़ी प्रसन्नता हुई। आपने एक सुदीर्घकाल तक राष्ट्रभाषा और लोक भाषाओं की सेवा की है।

लोक साहित्य के लिए आपका योगदान महत्वपूर्ण है। भोजपुरी तो आपकी चिर ऋणी रहेगी।

आप तो हमारे जनपदीय आन्दोलन के भी विशिष्ट कार्यकर्ता और नेता हैं। इसका कोई उल्लेख दृष्टिगोचर नहीं हुआ और न उस भोजपुरी कोश का जिसका आप लगभग निर्माण कर चुके हैं।

जन्म दिवस पर मेरी भी स्नेहपूर्ण बधाई स्वीकार करें। ब्रज भारती व आपके लेख का पुनर्मुद्रण मिले होंगे।

आपने अपने पिछले पत्र में लिखा था कि वार्षिकी की प्रति भेजी जा रही है। वह प्रति मुझे आज तक नहीं मिली है। क्या डाकखाने के दैत्य खा गये ? उसको मैं पढ़ना चाहता हूँ। शेष सब कुशल है।

आपका

वृन्दावनदास

(७२)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २७–२–७१

मान्यवर गणेशजी !

कृपा पत्र मिला। धन्यवाद ! रामरीझनजी बड़े अच्छे लेखक हैं। उनके नाम से मैं खूब परिचित था। अब आपने सम्पर्क स्थापित करा दिया। अनेक धन्यवाद ! मैंने आज अभी उनको एक पत्र, ब्रज भारती अंक ३ (जिसमें आपका लेख है) तथा नवीनतम अंक ४ सब डाक से भेज दिये हैं। ब्रज भारती का नवीनतम अंक (फाल्गुन अंक ४) आपको मिल गया होगा।

योगी मेरे पास नियमित रूप से आता है और मैं आपके लेख पढ़ लेता हूँ।

आपने हमारी निबन्धों वाली पुस्तक की दूसरी आवृति वाली प्रति देखी है या नहीं। यदि नहीं तो लिखें हम आपको उसकी एक प्रति भेज देंगे। एक प्रति श्री हरिश्चन्द्र प्रसाद और एक रामरीझनजी को भी भेजना चाहता हूँ।

श्रद्धेय चतुर्वेदीजी का संग्रह मुद्रित करा रहा हूँ। ४० पृष्ठ की मैंने भूमिका लिखी है। आप चार पत्र (जिन्हें सर्वोत्कृष्ट समझें) भेज दें।

आप मथुरा अवश्य आवें और कभी रसूलपुरी हरिश्चन्द्र प्रसाद आदि साहित्यिक मित्रों को लेकर आवें। बड़ा आनन्द रहेगा और मथुरा तो ब्रजराज की जन्म भूमि है।

श्री हरिश्चन्द्र प्रसाद ने एक लेख भेजा है और आत्मीयता से आपूरित पत्र भी। शेष कुशल हैं।

आपका
वृन्दावनदास

(७३)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २०-७-७१

मान्यवर गणेशजी,

कृपा पत्र यथा समय प्राप्त हो गया था। धन्यवाद! बड़ा आश्चर्य है कि रसूलपुरी जैसे सहृदय परोपकारी विद्वान पर कभी किसी ने कुछ लिखा ही नहीं। मैं पुनः लिखने को वाध्य हूँ कि आपका निबंध बड़ा बढ़िया रहा।

श्री रमण शांडिल्य वाली समीक्षा प्रकाशित हो गयी तथा पढ़ भी ली। बहुत ही सुन्दर है।

'धरती फोरे फोरे' आ गई है और प्रो० चन्दरवाकर का पत्र भी। आप उस मूल्यवान ग्रन्थ पर अपनी समीक्षा लिख भेजें। उसे हम आगामी अंक में अवश्य प्रकाशित कर देंगे।

आज विश्वनाथ प्रसाद जी चंदन प्रणीत विवाह गीत (संग्रह) (जो आपको समर्पित है) प्राप्त हुआ। इसकी समीक्षा स्वरूप भी ८-१० पंक्तियाँ आप ही लिखकर भेज दें।

भवदीय
वृन्दावनदास

(७४)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ७-११-७१

मान्यवर गणेशजी प्रणाम!

कृपा पत्र मिला। अनेकानेक धन्यवाद! बिहार में ब्रज भाषा और हिन्दी की सेवा की एक विशिष्ट परम्परा रही है। आप सदृश कर्त्तव्यनिष्ठ साहित्यिक बन्धु उस शुभ्र परम्परा का सम्यक् निर्वाह कर रहे हैं। बिहार के बन्धुओं में तो साहित्यिक सौहार्द्र भी अन्य स्थानों की अपेक्षा अधिक प्रतीत होता है।

ग्रन्थ के लिए जो स्नेह और सौहार्द्र परिलक्षित हो रहा है उसके सूत्रधार तो आप ही हैं। आपकी शुद्ध निरपेक्ष साहित्यिक सेवा के प्रति हम

सभी आपके मित्र नतमस्तक हैं। यह एक सुयोग है कि ब्रज भारती के आगामी मार्ग शीर्ष अंक में बिहार के ब्रज भाषा कवियों पर दो विशिष्ट विद्वानों के पृथक-पृथक लेख प्रकाशित हो रहे हैं। अनायास ही यह योग बन गया और इस विषय की जानकारी तब हुई जब कि दोनों लेख छप गये।

लोक भाषाओं पर सद्यःप्रकाशित पत्रिकाओं की चर्चा मैं संपादकीय पृष्ठों में एक विशेष भावना को लेकर करता हूँ। जनपदीय कार्यक्रम को आगे बढ़ाने का यह साधन हमें अवश्य उपयोग में लेना चाहिए। आशा है आप सानन्द हैं। कृपा भाव रक्खें।

भवदीय
वृन्दावनदास

(७५)

प्रकाश भवन, मथुरा.

मान्यवर गणेशजी,

कृपा पत्र मिला। धन्यवाद ! ब्रज भारती की एक प्रति श्री एस. सेन गुप्त को भेज रहा हूँ।

आपके इस सुझाव का कि आलोच्य पुस्तक के प्रकाशक का नाम भी देना चाहिये, मैं स्वागत करता हूँ। आगे इसका ध्यान रक्खा जायेगा।

आशा है आप स्वस्थ एवं सानन्द हैं। श्री रसूलपुरीजी ने उत्तर बिहार में जनपदीय आन्दोलन पर बड़ा महत्वपूर्ण लेख लिखा है। उनका प्रयास अनुकरणीय है। वास्तव में इस आन्दोलन का प्रचार हमारे पत्रकारों की उपेक्षा के कारण ही न हो पाया है। यदि हमारे पत्रकार बन्धु रसूलपुरीजी के मार्ग पर चलें तो इस आन्दोलन की समस्या ही हल हो जाय। इस आन्दोलन की सफलता तो इसके प्रचार पर ही निर्भर है। इस आन्दोलन की वृद्धि केवल जन जागरण पर ही अवलम्बित है। रसूलपुरीजी ने आन्दोलन का पूरा इतिहास ही अपने लेख में समाविष्ट कर दिया है। वे स्वयं लोक भाषाओं के पोषक और मर्मज्ञ हैं।

आपका
वृन्दावनदास

(७६)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २२-२-७३

वन्धुवर !

कृपा पत्र यथा समय मिल गया था। धन्यवाद ! भाई रसूलपुरीजी

की अस्वस्थता का समाचार पढ़कर बड़ी वेदना हुई। आशा है, डा० श्री निवासजी की चिकित्सा से उन्हें कुछ लाभ हो रहा होगा। मेरी शुभ कामनाएँ उनके साथ हैं। आशा है, आप स्वस्थ एवं सानन्द हैं।

आपका
वृन्दाबनदास

(७७)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २५-४-७३

मान्यवर गणेशजी !

कृपा पत्र मिला। मैं तो स्वयं पटना पहुँच गया परन्तु आप उससे दो दिन पहले उसे छोड़ चुके थे। अबकी बार अयोध्या में सपरिवार रामनवमी उत्सव मनाकर पशुपतिनाथ दर्शन का विचार हुआ। अतः भैरहवा से वायुयान द्वारा काठमाण्डू गये थे। लौटती बेर भैरहवा की उड़ान रद्द हो गई, अतः हम लोगों ने पटना की उड़ान का उपयोग कर लिया। ता० २० को हम लोग प्रातः पटना पहुँच गये थे। मैं श्रीराम पाण्डेय से सर्व प्रथम मिला और उन्हीं के साथ रसूलपुरीजी के निवास स्थान पर पहुँचा। इन दोनों महानुभावों से प्रथम बार ही मिलन हुआ था, अतः बड़ा ही हृदय स्पर्शी समागम था। रसूलपुरीजी पूर्ववत् चल रहे हैं। दूसरे दिन श्री नरेश पाण्डेय चकोर, श्रीराम पाण्डेय के सम्मिलित प्रयासों से शिक्षक संघ के भवन में साहित्यिक गोष्ठी हुई, उसमें जनपदीय आन्दोलन आदि पर बड़ी अच्छी चर्चा रही। रमण शांडिल्य भी आ गये थे। उनसे मिलकर बड़ी प्रसन्नता हुई। रमण शांडिल्य की हिन्दू राज्य पर लिखी समीक्षा उत्तर बिहार में प्रकाशित हो गई है, उसकी एक प्रति रसूलपुरीजी ने दे दी तथा यहाँ आने पर डाक द्वारा भी प्राप्त हो गई। अँजोर की प्रति अभी तक प्राप्त नहीं हुई। नर्मदेश्वरजी लिखते हैं कि उन्होंने आपको एक प्रति मुझे भेजने को दे दी है। आपने भेज दी होगी, मुझे अभी नहीं मिली है। नर्मदेश्वरजी से पटना में भेंट नहीं हुई। पाण्डेय कपिल बड़े सहृदय विद्वान हैं। उनसे मिलकर बड़ी प्रसन्नता हुई।

आपका
वृन्दावनदास

(७८)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ११-५-७३

बन्धुवर गणेशजी !

कृपा पत्र मिला। अँजोर का अंक आप द्वारा प्रेषित यथा समय मिल गया था।

ता० ६ को नागरी प्रचारिणी सभा आगरा में मानस चतुश्शती के अवसर पर मुख्यमंत्री श्री कमलापति त्रिपाठी का अभिनन्दन हुआ था। समारोह की अध्यक्षता मैंने की थी। मुख्यमंत्री जी से हिन्दी की समस्याओं पर वार्तालाप हुआ। जब मैंने अनेक हिन्दी सेवियों और हिन्दी सेवी संस्थाओं की उपेक्षा किये जाने का आरोप सरकार पर लगाया तो उन्होंने हिन्दी सेवियों की एक सभा लखनऊ बुलाने को कहा, जिसमें हिन्दी सेवी संस्थाओं को किस प्रकार उपयोगी एवं सक्रिय बनाया जाय इस पर विचार हो। त्रिपाठीजी लोक-भाषाओं के उन्नयन के पक्षपाती हैं। मैं चाहता हूँ कि विभिन्न लोक भाषाओं के कोशों के मुद्रण की बात उनसे चलाऊँ। भोजपुरी के कोश की क्या स्थिति है? क्या कोई भोजपुरी कोश नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी से निकला है? क्या रूस में भोजपुरी के कोश के सम्बन्ध में कुछ काम हुआ है? कृपाकर सम्बन्धित जानकारी दें। कृपा भाव रक्खें।

आपका
वृन्दावनदास

(७६)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २७ ७-७३

मान्यवर गणेशजी, नमस्कार !

कृपा पत्र १८-७-७३ का प्राप्त हुआ। अनेकानेक धन्यवाद ! रसूलपुरी जी के स्वास्थ्य विषयक समाचार से अवगत हुआ। मैं जब पटना गया था, उनके दर्शनों का लाभ उठाया था। मधुमेह और रक्तचाप ने उनके शरीर में अपना घर बना रक्खा है। उनको विश्राम की अतिशय आवश्यकता है। औषधि और सतत विश्राम उनको जीवनदायक सिद्ध होंगे।

आपके पिछले पत्र के अनुसार मैं श्री सेनगुप्त को ब्रज भारती भेज चुका हूँ तथा श्री मनुज को भी, क्योंकि आपने लिखा था कि उनकी जनपदीय आन्दोलन में बड़ी रुचि है।

मुझे सभी जनपदीय कार्यकर्त्ता अत्यन्त प्रिय हैं, आप तो इस कार्य की बिहार में ध्वजा को ऊँची किये हुए हैं। २६ मई के उत्तर बिहार में आपके अभिनन्दन का समाचार पढ़कर अत्यन्त आनन्द प्राप्त हुआ। अबकी बार संपादकीय में उस पर विशद टिप्पणी लिख चुका हूँ। कारण हमारा ध्येय जनपदीय साहित्य को सामान्य जगत के आगे लाने का है जिससे युवा पीढ़ी प्रेरणा प्राप्त करे तथा लोक भाषाओं पर किए हुए काम से साहित्य जगत में कुछ प्रकाश मिले।

मेरी जन्म तिथि भाद्रपद कृष्ण जन्माष्टमी है, जो इस बार २१ अगस्त को पड़ती है।

आशा है, आप स्वस्थ एवं सानन्द हैं।

आपका
वृन्दावनदास

(८०)

प्रकाश भवन,
मथुरा. १६-७-७४

प्रियवर चौबेजी,

कृपा पत्र मिला। इसके पहले वाला पत्र भी मिल गया है। श्रीराम-नारायण उपाध्याय के अभिनन्दन ग्रन्थ के लिए मैं अपना लेख भेज चुका हूँ।

लोक साहित्य के संकलन, संग्रह का कार्य ठप्प पड़ा है। यह मुझे विदित है। स्थानीय स्तर पर लोग यत्र-तत्र प्रयासरत तो हैं, परन्तु उनको सुविधायें प्राप्त नहीं हैं। संग्रह की हुई सामग्री अप्रकाशित रह जाती हैं, यह संग्राहक की सबसे बड़ी कुण्ठा है। सामान्य जनता तथा उसके धनीमानी वर्ग की साहित्यिक अनुष्ठानों के प्रति आर्थिक दृष्टि से घोर उदासीनता है। सरकार में ऐसे लोग बैठे हैं जो इन चीजों को हेय तथा अनुपयोगी समझते हैं। यह सबसे बड़ी विडम्बना है। फिर भी हमें चेष्टा करते रहना चाहिए। जो सहज में बन आवे उसे करते रहना चाहिये।

आशा है आप स्वस्थ एवं सानन्द होंगे।

आपका
वृन्दावनदास

(८१)

प्रकाश भवन,
मथुरा. १२-११-७४

बन्धुवर गणेशजी,

कल दिन बन्धुवर रामरौंझनजी रसूलपुरी प्रेषित स्वतन्त्रता दिवस उत्तर बिहार अंक की प्रति मिल गई। आपकी लिखी सुन्दर समीक्षा पढ़कर चित्त को बड़ा आनन्द प्राप्त हुआ। आप प्रत्येक ग्रन्थ का पूर्ण आलोड़नकर समीक्षा लिखने बैठते हैं तथा लेखक के प्रति स्नेह से अभिभूत होकर। जनपदीय ज्ञान और सुरुचि सम्पन्नता तो आपके घर की वस्तुएँ हैं। यही कारण है कि आपकी समीक्षा बावन तोले पाव रत्ती ठीक उतरती है। भाई रामनारायणजी

उपाध्याय रचित पुस्तक निमाड़ी का लोक साहित्य पर भी आपकी समीक्षा इतनी बहुलांगी और सूचनाप्रद थी कि हम उसे मार्गशीर्ष के अंक में प्रकाशित करने का लोभ संवरण न कर सके। मार्गशीर्ष का अंक आधा सा छप चुका है और मुद्रित सामग्री आपके लेख को कवर करती है।

आशा है, आप स्वस्थ एवं सानन्द हैं। रसूलपुरीजी अब कुछ ठीक मालूम पड़ते हैं। कारण पत्र उन्हीं के हाथ का लिखा हुआ था। मैं उनको भी पत्र लिख रहा हूँ।

दीपावली की बधाई और शुभ कामनाएँ।

आपका
वृन्दावनदास

डा० गणेशीलाल बुधौलिया के नाम

(८२)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ७-१२-६६

प्रिय बुधौलिया जी, सादर नमस्कार !

साहित्य महोपाध्याय श्री श्यामसुन्दर जी बादल से आपका परिचय प्राप्त हुआ। मैं चाहता हूँ कि उनकी अमूल्य निधि 'बुन्देली का फाग साहित्य' की समीक्षा आप लिखें। ....मेरा विचार है कि जनपदीय भाषाऐं भी जो अब तक ब्रज भाषा या हिन्दी वालों से उपेक्षित सी रहीं हैं, हमारे ध्यान का केन्द्र बिन्दु बनें। वास्तव में ये सब ब्रज भाषा की बहिनें हैं। मैं समझता हूँ कि हमारा उनके प्रति भी कुछ कर्त्तव्य है। ....ब्रज भारती भाद्रपद सं० २०२३ सेवा में भेज रहा हूँ। भविष्य में ब्रज भारती नियमित रूप से आपके पास पहुँचती रहेगी।

कृपा भाव रक्खें। ब्रज साहित्य मण्डल को आपके सहयोग की अपेक्षा है।

आपका
वृन्दावनदास

(८३)

प्रकाश भवन,
मथुरा. १४-२-६७

माननीय डाक्टर साहिब, सादर नमस्कार !

कृपा पत्र ९-२-६७ 'बुन्देली का फाग साहित्य' की समीक्षा सहित प्राप्त

हुआ। धन्यवाद ! डेढ़ महीने में उत्तर देने की बात को यदि किसी कमी में समझा जाय तो आपके प्रस्तुत पत्र की सरसता के बाहुल्य में वह ऐसी विलीन हो जाती है कि बहुत खोज करने से मस्तिष्क के किसी कौने में भी उसका पता नहीं चलता। आपके स्नेहसिक्त पत्र को पढ़कर चित्त को महदानन्द प्राप्त हुआ।...... ......समीक्षा बहुत ही सुन्दर लिखी है। वह फाल्गुन अंक में निसंदेह प्रकाशित की जा रही है।

बुन्देलखण्ड से भी पत्रिका निकलनी चाहिये। इस विचार से मैं पूर्ण-रूपेण सहमत हूँ। यदि इस विषय में मेरी कुछ सहायता अपेक्षित हो तो मैं उसके लिए भी उद्यत हूँ। पत्रिका निकालने के लिए आप सक्षम हैं.................. ....आप कुँवर तेजप्रतापसिंह जी से परिचित हैं। वे हमारे परम मित्र हैं। पत्रिका के विषय में हम उनके माध्यम से आपकी खासी सेवा कर सकते हैं।

कृपा भाव रक्खें।

आपका

बृन्दावनदास

(८४)

प्रकाश भवन,

मथुरा. ३-३-६८

मान्यवर बुधौलियाजी, सादर प्रणाम !

कृपा पत्र आपका दिनांक २१-२-६८ यथा समय मिल गया। धन्यवाद ! मुझे दुःख है कि आपसे आगरा में साक्षात्कार न हो सका। कविरत्न सत्य-नारायण अर्द्ध शताब्दी समारोह की कार्यकारिणी का अध्यक्ष होने के नाते मैं यदा कदा आगरा जाता हूँ परन्तु मैं सदैव सन्ध्या समय लौटकर मथुरा आ जाता हूँ। आगरा मथुरा से इतना निकट है कि कभी ऐसा अवसर नहीं आता कि मुझे वहाँ रात्रि को ठहरना पड़े।

मैं चाहता हूँ कि अन्तर्जनपदीय परिषद् को पुनर्जीवित कर उसे सक्रिय बनाया जाय। १४, १५, १६ अप्रेल को समारोह के अवसर पर परिषद् की एक बैठक कर लेंगे। आज आन्दोलनात्मक रवैया छोड़कर हिन्दी के लिए ठोस काम करने की महती आवश्यकता है। हमें आपका सक्रिय सहयोग अपेक्षित होगा। मेरी राय में निम्नलिखित कार्यक्रम इस सम्बन्ध में विचारणीय है।

(१) एक पत्रिका का प्रकाशन, निबन्ध, यात्रा विवरण, लोक शब्दों का उल्लेख उनकी विस्तृत व्याख्या आदि होना चाहिए।

(२) निबन्ध प्रतियोगिता, निबन्धों को पुरस्कृत करने की योजना।

(३) यात्रायें और उनका विवरण। सुन्दर विवरणों पर पुरस्कार।

(४) लोककथा, लोकगीत, वार्ता आदि।

आप कुछ अन्य सुझाव भेजें जिससे यह कार्य गतिवान और लोकप्रिय हो। हिन्दी को समृद्ध बनाने का यह एक शक्तिशाली माध्यम है।

आपका
वृन्दावनदास

(८५)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ४–११–६८

मान्यवर डा० बुधौलियाजी !

स्व० डा० हरिशंकर शर्मा पर एक स्मृति ग्रन्थ शीघ्र प्रकाशित होगा। कृपाकर उन पर संस्मरणात्मक अथवा ब्रजभाषा साहित्य की किसी विधा पर एक लेख शीघ्रातिशीघ्र भेज दें।

एक योजना श्रद्धेय पं० बनारसीदासजी चतुर्वेदी को भी निकट भविष्य में अभिनन्दन ग्रन्थ समर्पित करने की है।

आशा है आप उपरोक्त दो लेख शीघ्र भेजने की कृपा करेंगे।

आपका
वृन्दावनदास

(८६)

प्रकाश भवन,
मथुरा. १९–११–६८

प्रियवर डा० बुधौलिया जी !

कृपा पत्र मिला। धन्यवाद ! आपके दोनों लेख मिल गये। हमने उन्हें स्वीकृत सामग्री के साथ मुद्रणार्थ बाबू यशपाल जैन को भेज दिया है। ....ग्रन्थ का मुद्रण आरम्भ हो गया है। यशपालजी का कहना है कि ग्रन्थ समय से छपकर तैयार हो जायगा। देखिए क्या होता है। मैं प्रगति पर बराबर दृष्टि रखे हुए हूँ।

पं० परमानन्द जी का ग्रन्थ निकल गया, आपको बधाई। ग्रन्थ की प्रति भेजने को बादल जी ने लिखा था। वे भेज देंगे, आप और स्मरण करा देना। योग्य कार्य से सूचित करते रहें।

आपका
वृन्दावनदास

श्री गोविन्द अग्रवाल के नाम

(८७)

प्रकाश भवन, डोरी बाजार
मथुरा. ४–३–७२

प्रिय अग्रवाल जी !

कृपा पत्र तथा मरु श्री का अङ्क दोनों मिले। अनेक धन्यवाद ! लोक भाषाओं की कुछ पत्रिकायें केवल सम्बन्धित लोक भाषा के गद्य एवं पद्यात्मक लेखों से ही युक्त हैं। उन्होंने सुविचारित रूप से हिन्दी को अपदस्थ कर दिया है। मैं इस प्रवृत्ति को नितान्त संकुचित मानता हूँ। आपकी पत्रिका इसका अपवाद है। आपकी पत्रिका में हिन्दी और राजस्थानी दोनों में ही लेख निकले हैं। लोक भाषाओं का कार्य करते हुए हमें यह ध्यान रखना है, कहीं हमारे द्वारा किये हुए कार्य में हिन्दी से प्रतियोग की भावना तो नहीं है। हमारी तो मान्यता यह है कि लोक भाषाएँ हिन्दी के अंग प्रत्यंग हैं। हमें हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में शिरोधार्य करके ही अपनी-अपनी लोक भाषाओं के कार्य को हाथ में लेना हैं।

हम आपकी पत्रिका की ब्रजभारती में चर्चा करेंगे तथा आपको ब्रज भारती की प्रति भी नियमित रूप से भेजते रहेंगे।

डा० बनारसीदास जी चतुर्वेदी हमारे सम्माननीय है। उनकी हम पर अगाध कृपा है।

अखिल भारतीय ब्रज साहित्य मण्डल के १६ वें अधिवेशन के भाषण की एक प्रति संलग्न है। आशा है आप सानन्द हैं।

आपका
वृन्दावनदास

(८८)

प्रकाश भवन,
मथुरा. १२-१२-७४

प्रिय अग्रवाल जी !

आपका पत्र यथा समय मिल गया। मैं अपने अनुज की पत्नी के स्वर्गवास के कारण बम्बई गया हुआ था। ता० ९ को मथुरा वापिस आ गया हूँ। चूरू का इतिहास आप श्रद्धेय चतुर्वेदी जी को अवश्य भेजिये। वे उसको देखकर अत्यन्त प्रसन्न होंगे। आपने जनपदीय ग्रन्थों के उनके स्वप्न

को साकार किया है । बड़ा सुन्दर ग्रन्थ आपने निकाला है । हमने समीक्षा लिख ली है, ब्रजभारती के आगामी अङ्क में प्रकाशित होगी । चतुर्वेदीजी का पता इस प्रकार है ।

डा० बनारसीदास जी चतुर्वेदी
चौबों का मुहल्ला, फीरोजाबाद (आगरा)

आपका
वृन्दाबनदास

श्री गौरीशंकर द्विवेदी 'शंकर' के नाम

(८९)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ३–६–६९

मान्यवर द्विवेदी जी !

आपका "हस्तलिखित प्राचीन ग्रन्थ : श्री रामचन्द्राभरन" शीर्षक लेख प्राप्त हुआ । धन्यवाद ! ब्रज भारती के ज्येष्ठ अंक में आपकी मनसुखा वाली समीक्षा छप गई है । प्रस्तुत लेख आगामी अंक में छपेगा ।

इधर आपके संस्मरणात्मक लेख रसवन्ती, संगठन आदि में खूब पढ़ने को मिले । आप रेखाचित्र लिखने में सिद्धहस्त हैं । आपका प्रस्तुतीकरण बड़ा क्रमबद्ध और हृदयग्राही होता है ।

आपके लेख ब्रजभारती के पुराने अंकों में भी देखने को मिले । आपने ब्रजभाषा और हिन्दी की अनवरत सेवा की है । आशा है आप स्वस्थ एवं सानन्द हैं ।

आपका
वृन्दावनदास

(९०)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ६–७–६९

मान्यवर द्विवेदी जी, प्रणाम !

कृपा पत्र प्राप्त हुआ । धन्यवाद ! अबकी बार प्रेस वालों ने मिसल की बची प्रतियाँ नहीं दीं । उन अतिरिक्त फार्मों का उपयोग मैं बतौर reprints ही कर लेता था । सामान्यतया हम अर्थाभाव के कारण reprints नहीं छापते हैं ।

फिर भी एक प्रति पुनर्मुद्रण आपकी सेवा में भेज रहा हूँ तथा १ प्रति अंक की भी और डाक से भिजवा रहा हूँ।

स्व० डा० हरिशंकरजी शर्मा पर आपका भेजा हुआ लेख मिल गया। उसका निस्संदेह उपयोग किया जायगा। दूसरे विशेषाङ्क से आपका आशय श्रद्धेय जी बनारसीदास जी चतुर्वेदी के अभिनन्दन ग्रन्थ से है क्या ? उस ग्रन्थ में हृषीकेशजी पर लेख अनुपयुक्त रहेगा। हृषीकेशजी पर लिखे लेख को हम सहर्ष ब्रजभारती में स्थान देंगे। चतुर्वेदीजी के ग्रन्थ के लिए आप ब्रज भाषा साहित्य की किसी विधा पर अथवा संस्मरणात्मक कोई लेख शीघ्र भेजें।

शेष सर्वानन्द है।

भवदीय

वृन्दावनदास

(९१)

प्रकाश भवन,

१०-२-७२

मान्यवर द्विवेदीजी। प्रणाम !

कृपा पत्र दोनों यथा समय मिल गये। धन्यवाद ! अधिवेशन तो झाँसी में ही करना ठीक होगा, उरई और हमीरपुर के मुकाबिले वहीं उपयुक्त रहेगा। उरई और हमीरपुर के बन्धु हमारी भरपूर सहायता करेंगे। मैं तो सदैव सेवा और सहयोग को उद्यत हूँ ही।

अधिवेशन मई या जून में किया जाता है। आपकी राय में मई, जून या जुलाई में कौन सा महीना ठीक है ? मार्च में तो होना असम्भव है। समय बहुत थोड़ा है।

मधुसूदनजी इधर नहीं आये। उन्होंने मुझे लिखा तो था कि ६ ता० के लगभग आगरा पहुँचेंगे, परन्तु अभी तक उनकी कोई सूचना प्राप्त नहीं हुई है। आपका एक लेख फाल्गुन अंक में प्रकाशित हो रहा है। यह अंक एक सप्ताह में आपकी सेवा में पहुँचेगा।

आपका

वृन्दावनदास

(९२)

प्रकाश भवन,

मथुरा. १७-१-७४

आदरणीय द्विवेदी जी, प्रणाम !

कृपा पत्र तथा आचार्य पद्मसिंह जी पर लेख दोनों ही मिले। अनेकानेक धन्यवाद ! आपने जो शुभ कामनाएँ व्यक्त की हैं उनके लिए अत्यधिक आभारी

हूँ। मुझे जीवन में स्वर्गीय डा० वासुदेवशरण अग्रवाल, स्व० डा० हरिशंकर शर्मा, डा० बनारसीदास चतुर्वेदी तथा आप जैसे वयोवृद्ध साहित्य महारथियों का स्नेह एवं आशीर्वाद प्राप्त रहा है और यही मेरा महान् संबल है।

डा० वासुदेवशरण अग्रवाल के पत्र शीर्षक पुस्तक छप चुकी है। लगभग ३५० पृष्ठों में बैठेगी। आवरण तथा चित्रों की व्यवस्था हो रही है। तीन सप्ताह तो उसके निकलने में लग ही जावेंगे। आपके पत्र उसमें मुद्रित हो गये है। प्राक्कथन और भूमिका को लिखने बैठा तो उस महारथी के सम्बन्ध में प्राप्त सामग्री का आलोड़न अध्ययन करने के उपरान्त ५२ पृष्ठ लिख दिए जब कि शुरू में ३२ पृष्ठ ही उसके लिए छोड़े थे। अब ३२ पृष्ठ तो प्राक्कथन और भूमिका को दे दिये हैं और २० पृष्ठ के मसाले को एक विशेष लेख के रूप में परिवर्तित कर पुस्तक के अन्त में छाप दिया है।

सम्मेलन के कार्य के सम्बन्ध में आपके शुभ विचारों से अवगत हुआ। वैसे वे लोग मुझे कार्यालय अध्यक्ष तो मानते ही हैं, अधिवेशन के लिए अन्य व्यक्ति चुन लेते हैं। फिर भी आपकी जो भावना है उसे आप व्यक्तिगत रूप से श्री श्रीधर शास्त्री १९० बहादुर गंज इलाहाबाद–३ को पत्र के माध्यम से लिख भेजें। मेरा स्वयं कुछ लिखना उचित न होगा।

आपने साहित्य वारिधि की उपाधि के सम्बन्ध में जिन महानुभावों के नाम लिखे हैं वे मेरी राय में भी बहुत उपयुक्त हैं, इस सम्बन्ध में आप कृपा कर एक पत्र श्रीधर जी शास्त्री को अवश्य लिखें। यदि उचित समझें तो इन विषयों पर पत्र डा० द्वारका प्रसाद मीतल जी से भी लिखवा दें।

मैं आपके इस पुण्य कार्य में पूरा सहयोग दूँगा। मैं बराबर चेष्टारत हूँ। श्रीधरजी को बराबर लिखता रहता हूँ। मैं देखूँगा कि किसी प्रकार की शिथिलता न हो, क्योंकि अधिवेशन पूर्ण रूपेण भव्य और सफल होना चाहिये, इसी में कार्यकर्ताओं की प्रतिष्ठा है। हिन्दी का हित भी इसी में है।

अधिवेशन सम्बन्धी कुछ साहित्य जो मेरे पास उपलब्ध है पृथक डाक से भेज रहा हूँ।

मैंने सम्मेलन वालों को लिख दिया है कि डा० मीतल सीनियर हैं, उनको ही मान्यता दी जाय। किसी प्रकार उनके पद की अवहेलना न की जाय तथा उनके मान प्रतिष्ठा का पूरा ध्यान रखा जाय।

आपका लेख श्री रमेशचन्द्र जी दुबे, ए–९०, गाँधी नगर मुरादाबाद को

भेज दिया गया है। ग्रन्थ का मुद्रण उन्हीं की देखरेख में हो रहा है। वे अत्यन्त कुशल एवं निष्ठावान साहित्यसेवी हैं।

आपका
वृन्दावनदास

श्री तोताराम पंकज के नाम

(६३)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ३१-५-६८

प्रियवर पंकज जी, सस्नेह नमस्कार।

कृपा पत्र मिला। धन्यवाद! वास्तव में आगरा के साहित्यिक बन्धुओं के विषय में पूरी जानकारी पहले से न होने के कारण कुछ बाधा सी रही। आपने ठीक ही लिखा है कि यदि कुछ भाइयों का सहयोग और ले लिया जाता तो आगरा वालों की यह शिकायत कि उनसे कोई सम्पर्क नहीं किया गया न रहती। यह उत्तर कि समाचार पत्रों में काफी विज्ञप्ति हो चुकी पर्याप्त नहीं है, कारण प्रत्येक बन्धु का आत्म सम्मान यह तकाजा करता है कि उत्सव का निमन्त्रण तो उसे प्राप्त हो ही, व्यक्तिगत सम्पर्क भले ही न हो पावे। मेरी ऐसी धारणा है कि आगरा में निमन्त्रण पत्र अच्छी तरह वितरित नहीं हुए। जब बाहर के साहित्यिक बन्धुओं को लगभग ३०० की संख्या में भेजे गये थे और लगभग ७०-८० व्यक्तियों को तो मैंने निमन्त्रण पत्र के साथ हाथ का लिखा हुआ पत्र भी भेजा था। यदि आपका सक्रिय सहयोग उपलब्ध किया जाता तो ये सब कमियां कदापि न रहतीं और सम्मेलन और अधिक सफल होता।

श्रद्धेय चतुर्वेदी जी का अध्यक्षीय भाषण ब्रज भारती में छप गया है। अतिरिक्त प्रतियाँ निकलवा ली हैं। एक प्रति पत्र के साथ प्रेषित है।

ब्रज भारती अभी छप रही है। ज्येष्ठ अंक १५-२० दिन में छपकर तैयार होगा।

प्रकाशन के सम्बन्ध में अवश्य बातचीत करेंगे। पारस्परिक सहयोग से अवश्य लाभ होगा। गाड़ी तो चलानी ही है।

मेरे सम्पादन में ब्रज भारती नियमित रूप से निकल रही है। अब तक ११ अंक निकल चुके। वर्ष १९ के ३, २० के ४ और २१ के ४। इनमें से

कौन से अंक आपके पास नहीं हैं, लिखें मैं उनको भेज दूँगा। मैं चाहता हूँ आपके पास पूरा सैट रहे। भविष्य में तो पहुँचेंगे ही।

शेष कुशल हैं। कल सिकन्दराराऊ जा रहा हूँ। अब की बार आगरा आऊँगा तब आपसे अवश्य मिलूँगा। सधन्यवाद !

आपका
वृन्दावनदास

(६४)

प्रकाश भवन डोरी बाजार,
मथुरा. २०–१०–७०

बन्धुवर पंकज जी,

कृपा पत्र मिला। आपको आरोग्यता होने लगी, यह जानकर प्रसन्नता हुई। कार्यरत रहने वाले व्यक्ति को खाट पर पड़ जाना बड़ा अखरता है। वह बीमारी से इतना नहीं घबराता जितना अनिवार्य बन्धन से। स्वास्थ्य का पूरा ध्यान रखिये।

३, ४ दिन में मैं आगरा आऊँगा तब आपसे भेंट करूँगा। आशा है अब आप स्वास्थ्य का पूरा ध्यान रक्खेंगे।

शुभेच्छु
वृन्दावनदास

(६५)

प्रकाश भवन,
मथुरा. १४–५–७२

बन्धुवर पंकज जी,

साहित्यालोक का परवर्ती अंक भी यथा समय मिल गया। उसमें इससे पहले अंक पर आई हुई सम्मतियों का बड़ा सुन्दर संकलन है। आप गुणी हैं और मुझे प्रसन्नता है कि गुण के पारखी भी साहित्यिक जगत् में विद्यमान हैं।

आशा है आप स्वस्थ एवं सानंद हैं। कल बम्बई जा रहा हूँ वहाँ भतीजे का विवाह है, २५, २६ को लौटूँगा। आगरा आने पर आपके दर्शन करूँगा। शेष कुशल है।

आपका
वृन्दावनदास

(९६)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २८–६–७२

बन्धुवर पंकज जी,

कृपा पत्र मिला। धन्यवाद ! यह जानकर बड़ा दुःख हुआ कि आप दो महीने टाइफाइड में बीमार रहे। आशा है आप आरोग्य लाभ कर रहे हैं तथा स्वास्थ्य का पूरा ध्यान भी।

आपका
वृन्दावनदास

श्री नरेश पाण्डेय चकोर के नाम

(९७)

प्रकाश भवन,
मथुरा. १८–११–७३

बन्धुवर चकोर जी,

नवम्बर की अंग माधुरी की प्रति मिली। अंगिका भाषा के उन्नययन में आपका योगदान सराहनीय है। आप अपने मित्रों के सहयोग से भाषा की उन्नति में दत्तचित्त हैं।

आजकल लोकभाषाओं पर किये हुए काम से कतिपय शीर्षस्थ हिन्दी विद्वान् दुःखी हैं। वे इस कार्य को हिन्दी के हित में बाधक समझते हैं। वे शायद यह समझते हैं कि हिन्दी हित का ठेका उन्हीं ने ले रखा है। स्थिति यह है कि लोक भाषाओं के कार्यकर्ता तो राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी को शिरोधार्य करके ही लोक भाषाओं का कार्य करते हैं। शायद वे हिन्दी के प्रति उन तथा-कथित ठेकेदारों से कही अधिक आस्थावान हैं। जो भी हो, हमारी धारणा है कि अब समय आ गया है कि जनपदीय आन्दोलन की गति को अधिक तीव्र बनाया जाय। मैंने इस आन्दोलन की रूपरेखा पर एक लेख लिखा है जो कई पत्रों में निकल चुका है, उसकी एक प्रति आपको भेज रहा हूँ (वृत्तान्त का नवम्बर का अंक)। आप इस लेख को या इसका जो अंश उचित समझें अपनी पत्रिका में अपनी टिप्पणी सहित छापें। हमें लोक भाषाओं के प्रति द्रोह को समन्वय और सौहार्द्र की नीति से शान्त करना है। आशा है आप स्वस्थ एवं सानन्द हैं।

आपका
वृन्दावनदास

(६८)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ८-२-७४

बन्धुवर चकोरजी, प्रणाम !

आशा है आप निर्विघ्न यात्रा समाप्त कर आनन्द से घर पहुँच गये। मथुरा में आपके दर्शन कर बड़ी प्रसन्नता हुई। मुझे हर्ष है कि लोक भाषाओं के उन्नयन एवं संस्कार के विषय में मेरा और आपका दृष्टिकोण सर्वथा एक जैसा है। लोक भाषाओं पर काम करने से या उनकी सेवा करने में हिन्दी-हितों में बाधा पहुँचने की बात तो अचिंत्य है। हम तो लोकभाषाओं के माध्यम से हिन्दी का प्रचार प्रसार करना तथा उसके प्रति सौहार्द्र का वातावरण स्थापित करना चाहते हैं। जो लोग हिन्दी का विरोध करते हैं वे तो हमारे शत्रु हैं, हम उ हें राष्ट्र द्रोही समझते हैं।

श्री राजेन्द्र रंजन को लोक शास्त्र अंक भेजने और श्री कुलदीप नारायण राय झड़प तथा अनिल कुमार आंजनेय को आपका नाम अन्तर्जनपदीय की कार्यकारिणी में सम्मिलित करने को लिख दिया गया है। उन लोगों की स्वीकृति भी आ गई है आप अपनी पत्रिका निम्न पतों पर अवश्य भेजते रहें—

(१) श्री कुजदीप नारायण झड़प, ग्रा० पो०—लिलकर, जिला—बलिया।

(२) श्री अनिल कुमार राय आंजनेय, ग्राम—उजियार, पो०-कोरण्टाडीह, बलिया।

(३) श्री राजेन्द्र रंजन, के० एल० जैन इण्टर कालेज सासनी, जिला —अलीगढ़

जनपदीय आन्दोलन के जनक डा० वासुदेवशरण अग्रवाल शीर्षक अपने लेख की एक मुद्रित प्रति भेज रहा हूँ। जनपदीय नौका को खेते रहिए।

शुभेच्छु
वृन्दावनदास

(६६)

१५ आकाश दीप डोंगरसी रोड,
तीन बत्ती बम्बई-६
१५-२-७४

बन्धुवर चकोर जी,

अंग माधुरी का अंक तथा आपका पत्र दोनों मिले। धन्यवाद ! पत्रिका में हमारा आपका तथा शाडिल्यजी का चित्र बड़ा सुन्दर आया है, हमारे कथन

का उद्धरण भी आपने खूब दिया है। अनेक धन्यबाद ! वास्तव में आप एक लगनशील हिन्दी-प्रेमी हैं। जो लोग लोक भाषाओं का काम करते हैं वे सच्चे अर्थों में हिन्दी सेवी हैं। हिन्दी सेवा का एक अंग लोक भाषाओं पर काम करना भी है। हमें लोक जीवन और लोक संस्कृति का दर्शन लोक भाषाओं के सहारे ही करना है तथा अपनी अनुभूतियों से हिन्दी को सामर्थ्यवान बनाना है। चार कोस पर पानी बदले ८ कोस पर भाखा। ८, ८ कोस पर बदलने वाली भाषा और कुछ नहीं हिन्दी के ही विभिन्न रूप हैं। यदि समन्वय और सौहार्द्र की भावना से हम सभी लोक भाषाओं को साथ लेकर चलें तो हिन्दी का सा किसी भाषा का न तो कोष होगा और न हिन्दी जैसी किसी भाषा की अभिव्यक्ति।

डा० वासुदेव शरण अग्रवाल के पत्र शीर्षक पुस्तक तो छप चुकी परन्तु उसके डिजाइन, चित्र आदि अभी नहीं बन पाये है और मैं बम्बई आ गया हूँ। अब तो १५, २० दिन में मथुरा पहुँचने पर ही उस कार्य को पूरा करूँगा।

अंग माधुरी भागलपुर प्रमण्डल की लोक भाषा अंगिका की प्रमुख पत्रिका है। इसमें कविता, लेख, निबन्ध, कहानी आदि सभी कुछ अंगिका में ही लिखे गये हैं। सामग्री का चयन सुन्दर है।

शुभेच्छु
वृन्दावनदास

(१००)

प्रकाश भवन,
मथुरा. १०-७-७५

प्रिय चकोर जी !

कृपा पत्र मिला। ज्ञानमूर्ति आचार्य वासुदेव शरण की प्रति रजिस्टर्ड बुक पोस्ट से भेजी है।

विश्व हिन्दी सम्मेलन में लोक भाषाओं के संरक्षण की दिशा में कुछ नहीं होता प्रतीत होता है। लोक भाषायें तो हिन्दी की रीढ़ की हड्डियाँ हैं, उन्हें पुष्ट किये बिना हिन्दी की अभिव्यक्ति सामर्थ्य और शब्द संपदा में वृद्धि अचिंत्य है। जो हो ! समय सब करा लेगा। हममें आस्था और निष्ठा होनी चाहिये। आशा है आप स्वस्थ एवं आनन्द हैं।

आपका
वृन्दावनदास

(१०१)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २-२-७५

बन्धुवर चकोर जी, प्रणाम !

कृपा पत्र मिला। धन्यवाद ! आपने ठीक ही लिखा है कि हिन्दी को व्यापक बनाने के लिए जनपदीय भाषाओं के शब्दों को ग्रहण करना चाहिये। जनपदीय भाषाओं पर काम करने अथवा उनमें रुचि रखने से हिन्दी की शब्द संपदा और अभिव्यक्ति सामर्थ्य दोनों ही बढ़ेंगी। यह धारणा गलत है कि जनपदीय भाषाओं के साहित्यिक उन्नयन से हिन्दी का अहित होगा। प्रत्येक भाषा-भाषी चाहे वह शिक्षित हो अथवा अशिक्षित जन्म से ही दो भाषाएँ जानता है, (१) मातृ भाषा (२) सम्पर्क भाषा हिन्दी। मातृभाषाएँ लोक जीवन का अभिन्न अंग हैं उनको लोक जीवन से पृथक नहीं किया जा सकता। उनके प्रति दुर्भावना रखने से हमारा राष्ट्र कभी सबल और संगठित न होगा। जब विभिन्न मातृभाषाओं वाले लोग एक स्थान पर एकत्रित होते हैं तो एक दूसरे को समझने के लिए हिन्दी भाषा के प्रयोग के अतिरिक्त कोई विकल्प है ही नहीं। इस प्रकार हिन्दी भारतीय समाज का अविच्छिन्न अंग है यह भावना गलत है कि जनपदीय भाषाओं को बढ़ावा देने से हिन्दी भाषियों की संख्या में कमी आवेगी। भारतवासी शत प्रतिशत के हिन्दी भाषी हैं ऐसी मेरी मान्यता है। हिन्दी भारत की मूल भाषा है।

जनपदीय भाषाओं की परिधि अत्यन्त सीमित है। आशा हैं आप स्वस्थ एवं सुखी हैं। शांडिल्य जी को पत्र अवश्य भेजें। वे बहुत काम अब तक कर चुके हैं।

श्री पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय के नाम

(१०२)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ५-५-७२

मान्यवर पाण्डेय जी !

आपका कृपा पत्र मिला। धन्यवाद ! जनपदीय भाषाओं में भोजपुरी का प्रमुख स्थान है। उसके उद्धार, उन्नति एवं विकास के लिए जो आपने कदम उठाया है, वह अत्यन्त सराहनीय है। 'अँजोर' के अंक नियमित रूप से मिलते है। लोक भाषा की पत्रिका का इतना ऊँचा स्तर हो सका है यह आपकी

कर्मठता का प्रमाण है। इसके लिए बधाई स्वीकार करें। आशा है, आप स्वस्थ एवं सानन्द हैं।

आपका
वृन्दावनदास

(१०३)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ४-५-७२

मान्यवर पाण्डेय जी !

कृपा पत्र यथा समय मिल गया। धन्यवाद ! अंजोर अंक गणेश चौबेजी के मार्फत प्राप्त हो गया है। समीक्षा के लिए धन्यवाद ! आपने जो अंक भेजा था अबकी बार वह मुझे नही मिला। जो हो आप तो पत्रिका नियमित रूप से भेजते ही हैं और हम ब्रज भारती नियमित रूप में सेवार्पित करते हैं।

मैं ता० १९-२० अप्रेल को पटना में ही था। काठमाण्डू से वायुयान द्वारा ता० १६ को पटना आया था और २१ की प्रातः वहाँ से चल पड़ा। बन्धुवर श्रीराम जी पाण्डेय ने चेष्टा भी की, परन्तु आपके दर्शनों से वंचित रहा। एक साहित्य गोष्ठी भी ता० २० को आयोजित की गई थी। समय कम था और पूर्व सूचना के अभाव में बन्धुओं से भेंट भी अधिक न हो पाई। फिर सही। आशा है, स्वस्थ एवं सानन्द हैं।

आपका
वृन्दावनदास

डा० बच्चन पाठक सलिल के नाम

(१०४)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २८-१०-७५

मान्यवर डा० सलिल जी !

कृपा पत्र मिला। धन्यवाद ! आपके सुझावों से बन्धुवर रमण शांडिल्य को अवगत कर दूँगा। अन्तर जनपदीय परिषद् की विस्तृत रिपोर्ट, अध्यक्षीय भाषण आदि ब्रज भारती के भाद्रपद अंक में मुद्रित है। इस अंक की एक प्रति सेवा में प्रेषित है।

आपका
वृन्दाबनदास

श्री ब्रजमोहनलाल शर्मा के नाम

(१०५)

प्रकाश भवन,
मथुरा. १६-१-७१

प्रियवर ब्रजमोहनलाल जी !

पत्र आपका मिला। धन्यवाद ! जबाबी कार्ड क्यों भेजा ? आपके सामान्य पत्र का भी उत्तर देना मैं अपना कर्त्तव्य समझता हूँ।

राकेश जी के द्वारा ४) प्राप्त हो गये और आपको ब्रज भारती का एक वर्ष के लिए सदस्य बना लिया गया है। मार्ग शीर्ष २०२७ अंक ३ आपको भेजा जा चुका है।

आपकी रचना भी प्राप्त हो गई। सुविधानुसार मुद्रित करेंगे।

ब्रज के साहित्यकारों पर श्री मोहनलाल शर्मा एम० ए० साहित्यरत्न केन्द्रीय विद्यालय फीरोजपुर कैन्ट काम कर रहे हैं। उन्हें अपना सहयोग प्रदान करें। आप उनसे पत्र व्यवहार अवश्य करें।

आशा है आप सपरिवार सानन्द हैं।

आपका —
वृन्दावनदास

श्री ब्रजनन्दन गुप्त ब्रजेश के नाम

(१०६)

प्रकाश भवन,
मथुरा. १६-११-६८

प्रिय ब्रजेश जी !

कृपा पत्र आपका मिला। धन्यवाद ! आपकी हृदयग्राही कविता पढ़कर बड़ा आनन्द हुआ। मीरा का रेखा चित्र नामी आपकी रचना हमने अपने सहयोगी पत्रकार मित्र अखण्ड विजय ज्योति के सम्पादक को उनकी पत्रिका में प्रकाशनार्थ दे दी थी। उन्होंने उसे अभी छापा नहीं प्रतीत होता है। मैं उनसे पूछूँगा। कृपा कर उसकी एक प्रतिलिपि भेज दें। यथा सम्भव शीघ्र अपनी ही पत्रिका में छाप देंगे। हम उसकी सारगर्भिता को पहिले न समझ पाये परन्तु आपकी कविता पढ़कर अब उसे प्रकाशित करने का लोभ संवरण नहीं कर सकते। सधन्यवाद !

आपका
वृन्दावनदास

(१०७)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २–७–७०

प्रिय ब्रजेश जी !

कृपा पत्र मिला। बधाई और वह भी सरस पद्य में। अनेक धन्यवाद ! यहाँ ४ ता० को एक सम्मान गोष्ठी हो रही है। जनपद हिन्दी साहित्य सम्मेलन के कार्यकर्ताओं ने आयोजित की है। मैंने आपकी रचना उन्हें दे दी है वे उस दिन गोष्ठी में उसका उपयोग कर लेंगे।

'भारतीय संस्कृति के विविध परिदृश्य' पुस्तक तयार होने में अभी लगभग १५, २० दिन की देर है। तयार होने पर एक प्रति आपको अवश्य भेंट की जायगी। शेष कृपा

आपका
वृन्दावनदास

(१०८)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २८-१२ ७१

बन्धुवर !

कृपा पत्र मिला। धन्यवाद ! मान्यवर बादलजी पर लिखा आपका लेख ब्रज भारती के फाल्गुन अंक में प्रकाशित कर दिया जायगा।

आपकी पद्य रचनायें अभि० ग्रन्थ में अवश्य प्रकाशित होंगी परन्तु अभी उस ग्रन्थ के प्रकाशन में देर है।

आशा है आप स्वस्थ एवं सानन्द हैं।

आपका
वृन्दावनदास

(१०९)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ६-१०-७५

प्रिय ब्रजेश जी !

आपका पत्र तथा दो पृथक् पत्रक भी मिले। आपकी इच्छानुसार इनका समावेश कर दिया जायगा। प्रेस वाला अभी अपने अन्य कार्यों में व्यस्त है, एक महीने बाद काम हाथ में लेगा। शेष सब कुशल है।

आपका
वृन्दावनदास

(११०)

प्रकाश भवन,
मथुरा. १२-२-७७

बन्धुवर !

पत्र आपका मिला, साथ ही फागुन पर सुन्दर कविता भी। कविता बोधमयी है। ब्रज भारती पार्टी बन्दी का शिकार हो गई। लोग बनते हैं महत्वाकांक्षी परन्तु महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति के लिए अपेक्षित त्याग नहीं करना चाहते। ईर्ष्या द्वेष ने ब्रज भारती की बलि ले ली। वह निकट भविष्य में निकले इसमें मुझे सन्देह हैं। काम किसी से कुछ होता नहीं। लोग थोथी नेतागिरी का ही शौक.करते हैं।

आपका
वृन्दावनदास

डा० भगवान सहाय पचौरी के नाम

(१११)

अ० भा० ब्रज साहित्य मंडल
दिनांक २१-३-६९

प्रियवर पचौरी जी, प्रणाम !

आपके द्वारा प्रेषित लिफाफा मिल गया। आपके लेख के लिए स्मृति ग्रन्थ में स्थान सुरक्षित है। प्राचीन भारत के इतिहास सम्बन्धी दोनों लेख बड़े उपयोगी हैं, उनका अध्ययन कर रहा हूँ।

ब्रजभारती कृष्णापुरी को डाक से भेज दी गई थी। एक प्रति आपको अलीगढ़ के पते से भी भेजी जा रही है।

मैं २५ तारीख को १५ दिनों के लिए बम्बई जा रहा हूँ। वहाँ से वापिस आने पर ही आपके दर्शन होंगे।

भवदीय
वृन्दावनदास

(११२)

१५ आकाश दीप डोंगरसी रोड,
तीन बत्ती बम्बई—६
दिनांक ९-४-६९

प्रिय डाक्टर पचौरी जी, सादर नमस्कार !

आपका कृपा पत्र पुनर्प्रेषित होकर मुझे यहाँ प्राप्त हो गया। बहुत-बहुत

धन्यवाद ! समानशील मित्रों में पारस्परिक मिलने की इच्छा स्वाभाविक है। पारस्परिक सौहार्द्र और सद्भावना से यह इच्छा और भी बलवती हो जाती है। आपका साहित्य-प्रेम सदाशयता पर आधारित है किसी निजी स्वार्थ पर कदापि नहीं। यही कारण है कि आपको अलीगढ़ का नीरस जीवन खलता है।

मैं यहाँ ठहरा हूँ और अपनी पत्नी का इलाज करा रहा हूँ। दो तीन दिन में निश्चय हो सकेगा कि मैं कब मथुरा आऊँगा। घुटनों में विद्युत चिकित्सा तथा इंजेक्शन अभी शुरू हुए हैं। १२, १४ दिन तो अभी यहाँ हूँ ही।

कविवर अखैराम पर अपना लेख पूरा करके मुझे इस मास के अन्त तक अवश्य दे दें जिससे उसे ज्येष्ठांक में निकाल सकूँ। मई के प्रथम सप्ताह में अंक की पाण्डुलिपि प्रेस में दे दूँगा।

इतिहास के विषय पर आपने कुछ लेख मेरे अध्ययन के लिए एकत्रित किये है, यह जानकर बड़ा हर्ष हुआ।

मथुरा आने पर आपसे भेंट होगी ही। पहुँचने पर आपको पत्र लिखूँगा। सम्भव हुआ तो यहाँ ही से अपने पहुँचने की तिथि से अवगत करूँगा। कृपा भाव रखिये।

आपका
बृन्दाबनदास

(११३)

अ० भा० ब्रज साहित्य मंडल
दिनांक २३–५–६९

प्रियवर डाक्टर पचौरी जी !

यदि आप २५ तारीख रविवार को मथुरा हों तो मुझे अवश्य दर्शन दें। कुछ महत्वपूर्ण सरकारी पत्र व्यवहार का आपके परामर्श से समाधान करना है।

मैं सोमवार को शायद सपरिवार बद्री नारायण यात्रा पर ८, १० दिन के लिए जाऊँगा। २५ रविवार को घर पर ही हूँ।

ब्रजभारती छप रही है। कविबर अखैराम जी पर आपका लेख छप चुका हैं।

आपका
बृन्दावनदास

(११४)

प्रकाश भवन, डोरी बाजार,
मथुरा. ८-१०-६९

सुहृद्वर पचौरी जी !

ब्रज भारती के संपादन के प्रति आपने जो आत्मीयता और स्नेह से परिपूर्ण हार्दिक उद्गार प्रकट किये हैं उनके लिए अनुग्रहीत हूँ। इस अंक के विषय में कई ऐसी ही कृपा पूर्ण सम्मतियाँ प्राप्त हुई हैं। यह मित्रों का सौजन्य और स्नेह ही हैं, और तो क्या कहूँ।

विशेषाङ्क वाली बात अपने आपमें अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। भूमि का अधिग्रहण सम्पन्न होने पर इस प्रकार की योजनाओं को हाथ में लेना हैं परन्तु प्रत्येक दशा में इन योजनाओं की सफलता आप सदृश कर्मठ मनीषियों के अविचल सहयोग पर भी निर्भर होगी। आप जिस दिशा में चिन्तन कर रहे हैं कुछ अन्य मित्र भी तद्वत आग्रहशील हैं। किसी दिन बैठकर आगामी योजनाओं को क्रियान्वित करने पर विचार विमर्श करेंगे। अभी तक तो ढर्रे का काम ही चल रहा है परन्तु उसमें न्यूनता तो लानी ही है। जीवन की प्राणवत्ता भी तो इसी में है। मथुरा पधारें तो अवश्य दर्शन दें।

आपका
वृन्दावनदास

(११५)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २७-८-७४

मान्यवर पचौरी जी। प्रणाम !

आपके दो लेख मिले। धन्यवाद ! एक आप शायद दस्ती लाये थे और मेरी अनुपस्थिति में रख गये थे।

मेरी पुस्तक डा० वासुदेवशरण अग्रवाल के पत्र छप गई हैं, आपकी प्रति आप जब दर्शन देंगे तब मैं दे दूँगा। अन्यथा कोठी पर भेज दूँगा।

आपकी उपस्थिति से एटा का वातावरण साहित्यिक होता जा रहा है। मथुरा की हानि एटा का लाभ है। दोनों ही ब्रज मण्डल के जनपद हैं। आपत्ति की कोई बात नहीं है।

शुभेच्छु
वृन्दावनदास

श्री भगवानसिंह सेंगर के नाम

(११६)

प्रकाश भवन,
मथुरा. १०-३-७१

बन्धुवर सेंगर जी !

आपका सारगर्भित एवं महत्वपूर्ण पत्र यथा समय प्राप्त हो गया था, धन्यवाद ! जनपदीय ज्ञान को अग्रसारित करने में आपका पत्र निस्सन्देह सहायक सिद्ध होगा, हम इसका उपयोग करेंगे। आपने मेरे प्रति जो सद्-भावनाएँ व्यक्त कीं उनके लिए अनुग्रहीत हूँ। मैं ब्रज, बुन्देली, भोजपुरी, अवधी, राजस्थानी, मैथिली आदि उपभाषाओं में भेदभाव अथवा पारस्परिक स्पर्द्धा की कल्पना कभी नहीं करता। मेरी निश्चित धारणा यह भी है कि इन लोक भाषाओं की हिन्दी से भी कोई प्रतिद्वन्दिता नहीं है। जैसा आप लिखते भी हैं डाक्टर वासुदेवशरण जी का मत था कि इन लोक भाषाओं के शब्द भण्डार से हम हिन्दी के अभाव की पूर्ति कर सकते हैं और उसे समृद्ध बना सकते हैं। हिन्दी तो अब जन-जन के मानस सिंहासन पर राष्ट्र भाषा के रूप में प्रतिष्ठित हो चुकी है, उसके इस उच्चासन से अब उसे कोई शक्ति अपदस्थ नहीं कर सकती। आप मुझसे सहमत होंगे कि हिन्दी का वर्तमान परिष्कृत स्वरूप इन्हीं लोक भाषाओं के अधिकारी विद्वानों की तप पूत साधना की देन है इसलिए यह कल्पना कि कोई उपभाषा हिन्दी की प्रतियोगिता में कभी खड़ी होगी हास्या-स्पद है।

आशा है आप स्वस्थ एवं सानन्द हैं।

आपके विचार अत्युत्तम तथा आपकी पैठ पैनी है।

आपका
वृन्दावनदास

(११७)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ३०–१२–७२

बन्धुवर सेंगर जी !

कृपा पत्र मिला। धन्यवाद ! हम आपसे सहमत हैं कि व्यक्ति के नाम के सहारे हम लोक साहित्य और लोक संस्कृति के मूल्यांकन का अवसर पा जाते हैं। साहित्य का साहित्यकार से बड़ा घनिष्ठ सम्बन्ध है। साहित्यकार के मनोभावों की अभिव्यक्ति का नाम ही साहित्य है, स्थिति के इस संदर्भ में स्वयं साहित्यकार साहित्य से भी अधिक महत्वपूर्ण है।

द्विवेदीजी, (श्री गौरी शंकर द्विवेदी) की सेवाओं से मैं पूर्णतया परिचित हूँ। उन्होंने लगभग अर्ध शताब्दी तक हिन्दी के भण्डार को अपनी सेवाओं से समृद्ध किया है। वे सर्वथा वन्दनीय हैं, तथा उनका कृतित्व अभिनन्दनीय है। मैं उनके दीर्घायुष्य की कामना करता हूँ।

मैं भारती सम्पादक श्री धूसर जी को अपनी शुभाशंसा भेज चुका हूँ या नहीं यह भी मुझे स्मरण नहीं रहा। जो हो, मैं उनकी साधना की भी मुक्त कण्ठ से सराहना करता हूँ।

आशा है आप स्वस्थ एवं सानन्द हैं।

आपका
बृन्दावनदास

पुनश्च :
आपने भी बुन्देली पर बहुत काम किया है, यदि रामशंकर जी द्विवेदी आपके कृतित्व पर दो पृष्ठ का एक छोटा सा लेख भेज सकें तो उसे ब्रजभारती में छापने में हमें प्रसन्नता का अनुभव होगा।

(११८)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ६-४-७१

बन्धुवर सेंगर जी,

कृपा पत्र यथा समय मिल गया था। धन्यवाद! मैं २८ तारीख को इलाहाबाद अयोध्या की यात्रा पर गया हुआ था। हिन्दुस्तानी अकादमी तथा उत्तर प्रदेशीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन की स्थायी समिति की बैठकें थीं। प्रयाग से अयोध्या की रामनवमी के लिए सपत्नीक गया था। ता० ६ की प्रातः लौट कर आया हूँ।

उत्तर प्रदेशीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन का वार्षिक अधिवेशन २३, २४ मई को चतुर्वेदी जी के नगर फीरोजाबाद में हो रहा है। उसमें पधारिये। आपके पास विधिवत् सूचना पहुँचेगी।

अपने अन्य सत्प्रयासों में हमारे सहयोग के लिए आश्वस्त रहें। जो कुछ सेवा हमसे बन पड़ेगी, अवश्य करेंगे।

पं० गौरी शंकर जी और बुन्देल वैभव के प्रकाशक बाबू सुमित्रानन्दन गुप्त के पत्र मुझे भी प्राप्त हुए हैं। उन्हें हर प्रकार का सहयोग देना है। जो प्रयास वे कर रहे है उसकी बड़ी आवश्यकता थी अतः वह परम स्तुत्य है।

आशा है आप स्वस्थ एवं सानन्द हैं।

भवदीय
वृन्दावनदास

(११६)

प्रकाश भवन,
मथुरा. १६-५-७१

बन्धुवर !

आपका कृपा पत्र १०-५-७१ का हस्तगत हुआ। धन्यवाद ! आपकी अस्वस्थता का समाचार पढ़कर दुःख हुआ। आशा है अब आप आरोग्य लाभ कर रहे होंगे।

डा० बुधौलिया तथा द्विवेदी जी हमारे कृपालु मित्र हैं। अतः उनकी सहृदयता और आत्मीयता सदैव उन्हें हमारे पक्ष में ही बोलने को प्रेरित करती है। बाकी सब ईश्वर का नाम है।

आप अपना लेख अवश्य लिखें, उसे मुझे ही भेज दें। डा० भगवान सहाय पचौरी प्रभा निकेतन कृष्णापुरा मथुरा उस सम्बन्ध में सक्रिय हैं। आप उनसे पत्र व्यवहार कर लें अथवा मैं ही उनसे कह दूँगा, वे आपको लिख देंगे।

सन् १९६९ से पहली ब्रजभारती की प्रतियाँ हम आपको भेज देंगे। कृपाकर एक सप्ताह बाद जब आप दूसरा पत्र लिखें मुझे फिर याद दिलादें।

सम्मेलन का निमन्त्रण पत्र संलग्न है। कृपाकर पधारें। साहित्यिक सम्पर्कशीलता का अनुपम अवसर है।

आपका
वृन्दावनदास

(१२०)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ४-११-७१

बन्धुवर सेंगर जी !

कृपा पत्र मिला। धन्यवाद ! यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि मित्रवर कृष्णानन्द जी तथा राम शंकरजी द्विवेदीजी स्वस्थ हैं। मान्यवर कृष्णानन्दजी वर्तमान समय में लोक साहित्य के सर्वश्रेष्ठ मनीषियों में हैं। उन्होंने बहुत काम किया है और जो कुछ भी वह दे पाये हैं वह उच्च कोटि की वस्तु है।

आपका 'बुन्देली टहूको' वाला लेख हमने मार्ग शीर्ष अंक की पाण्डुलिपि में सम्मिलित कर लिया था। पत्रिका आधी छप चुकी है और उसमें आपका लेख भी छप चुका है। हम तो बुन्देली पर कुछ न कुछ प्रत्येक अंक में

दे ही देते हैं, अन्तर जनपदीय कार्य थोड़ा बहुत ब्रजभारती के माध्यम से ही चला रहे हैं। आपकी ओर के सर्वश्री कृष्णानन्द जी, गौरीशंकर जी, मित्र जी, डा० माहौर जी, रामशंकर जी द्विवेदी तथा आपका स्नेह, सौहार्द्र एवं सहयोग सदैव प्राप्त है।

आशा है आप स्वस्थ एवं सानन्द हैं।

आपका
वृन्दावनदास

(१२१)

प्रकाश भवन,
१४-१०-७१

बन्धुवर सेंगरजी, नमस्कार !

कृपा पत्र मिला। धन्यवाद ! बुन्देली के टहूके शीर्षक आपका लेख हम सम्भवत: मार्ग शीर्ष अंक में छाप रहे हैं। लोक भाषाओं के कार्यकर्ताओं को हम सच्चा हिन्दी सेवी मानते हैं, कारण लोक भाषाओं के परिष्कार से हिन्दी का हित होगा. अहित नहीं। लोक वाणियाँ अमर वाणियाँ हैं न जाने कब से ये हमारे जनपदों में बोली जाती हैं। लोग इन्हें समय की परिधि में बाँधना चाहते हैं। परन्तु यह ठीक नहीं।

आज लोक भाषाओं पर काम करने की ओर हमारे साहित्यिक बन्धुओं का ध्यान आकृष्ट हो रहा है। मैं इसे हिन्दी की प्रगति के लिए शुभ चिन्ह मानता हूँ।

डा० बनारसीदास चतुर्वेदी के पत्र शीर्षक पुस्तक छपे दो मास हो गये हैं।

आशा है आप स्वस्थ एवं सानन्द हैं।

आपका
वृन्दावनदास

(१२२)

प्रकाश भवन डोरी बाजार,
मथुरा. १०-२-७२

प्रिय सेंगर जी,

आपका ५-१-७२ का स्नेहपूर्ण पत्र अभी तक अनुत्तरित पत्रों की गड्डी में धरा हुआ मिला। शायद मैं इसका उत्तर दे चुका हूँ। आपने मेरी साहित्यिक

सेवाओं का उल्लेख किया एतदर्थ कृतज्ञ हूँ। मैं यह सब मन बहलाने को स्वांतः सुखाय करता हूँ। परोक्ष रूप से कुछ हिन्दी सेवा बन जाये तो अच्छा ही है।

आपके सभी सुझाव उत्तम हैं। जिससे जितना बने उसे उतना करते रहना चाहिए। कार्यकलापों में अनेक बाधाएँ और व्यवधान उपस्थित होते हैं। जो कुछ बन पड़े श्रेयस्कर है।

शेष सब कुशल है।

आपका
वृन्दावनदास

(१२३)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २७–४–७२

बन्धुवर सेंगर जी,

आपका कृपा पत्र यथासमय मिल गया था। व्यस्तता के कारण उत्तर न दे पाया था। श्री राम शंकर जी द्विवेदी कई बार अस्वस्थ हो चुके हैं। उनको स्वास्थ्य के प्रति अधिक सजग रहना चाहिए। मानसिक श्रम भी उन्हें कुछ दिनों के लिए छोड़ना होगा। अब कुछ ठीक हैं, पत्र मिला था।

हस्तलिखित ग्रन्थों का संग्रह एक दुःसाध्य कार्य है लोग अपनी चीज छोड़ने को उद्यत नहीं हैं, चाहें वह दीमक का खाद्य बन जाय। मैंने इस सम्बन्ध में कुछ योजनायें बनाई हैं जिनको अध्यक्षीय भाषण में संकेतित कर दिया है। कल भरतपुर अधिवेशन में जा रहा हूँ। वहाँ से लौटने पर आपको भाषण की प्रति भेजी जायगी।

आशा है आप स्वस्थ एवं सानन्द हैं।

डा० मलखानसिंह सिसौदिया के नाम

(१२४)

प्रकाश भवन,
मथुरा. १७-१-७१

मान्यवर सिसौदिया जी, प्रणाम!

श्रद्धेय बनारसीदास जी चतुर्वेदी का पत्र आया है, आपको लिखने के लिए कह रहे हैं। मैं तो स्वयं ही लिखने जा रहा था। कृपाकर 'ब्रज भारती' के लिए कुछ लिखिये। वैसे तो जितना उसका आकार है उससे तिगुनी सामग्री प्राप्त हो जाती है, किन्तु टक्केबन्द चीजें थोड़ी होती हैं मैं उनमें से ही चयन

करके दे देता हूँ। आप तो ब्रज क्षेत्र के रत्नों में से हैं। कृपाकर एटा का साहित्यिक कार्य अथवा जनपद की ब्रजभाषा साहित्य में उपलब्धियाँ अथवा आपके जनपद के कवि, लेखक साहित्यकारों के जीवन वृत्त, उनकी कृतियों की चर्चा, एटा का हिन्दी सेवा में योगदान किसी भी विषय को लेकर अवश्य लिखें।

आशा है आप सानन्द हैं।

आपका
वृन्दावनदास

(१२५)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २७-१-७१

मान्यवर सिसौदिया जी,

कृपा पत्र मिला। धन्यवाद! यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आप ७ फरवरी को मथुरा पधार रहे हैं। अवश्य आइये और मेरे यहाँ ही ठहरिए। आप कौनसे विद्यालय में आ रहे हैं।

श्रद्धेय चतुर्वेदी जी आपकी सदैव प्रशंसा करते रहते हैं और इसका कारण आपकी साहित्य सेवा एवं प्रभूत हिन्दी-प्रेम ही है। आप सुविधानुसार ब्रज भारती के लिए अवश्य कुछ लिखें।

आशा है आप सानन्द हैं।

आपका
वृन्दावनदास

(१२६)

प्रकाश भवन,
मथुरा. १०-२-७१

मान्यवर सिसौदिया जी, सादर नमस्कार!

कृपा पत्र मिला। धन्यवाद! वास्तव में दोष मेरा ही था, मैंने यह कहकर कि खाना खा रहा हूँ, आपके मन में यह भावना पैदा कर दी कि तब तक डॉ० पचौरी के यहाँ हो आवें, हालांकि मैं उस काम को ५ मिनट में ही समाप्त कर आपकी प्रतीक्षा में बैठ गया। आपसे कुछ साहित्यिक समस्याओं पर विचार-विमर्श करना था। अतः अब की यात्रा में आप बस स्टेण्ड से सीधे मकान पर पधार कर मेरे साथ ही भोजन करेंगे तथा उसी मध्य में आवश्यक वार्तालाप करके अपनी मीटिंग में चले जावेंगे। अपने आने की पूर्व तिथि से

मुझे सूचित करेंगे जिससे मैं अनिवार्यतः घर पर उपस्थित रहूँ और आपका समय व्यर्थ नष्ट न हो। यदि बस के आने के समय से मुझे अवगत करा दें तो मैं किसी भृत्य को भेज दूँ अथवा स्वयं बस स्टेण्ड पर आपको लिवा लाने के लिए भी उद्यत हो सकता हूँ।

हर हालत में अबकी बार आपको मेरे घर पर पधार कर मुझे अपने दर्शनों का सौभाग्य प्रदान करना है। कृपाभाव रखें।

आपका
बृन्दावनदास

(१२७)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ६-८-७१

मान्यवर डा० सिसोदिया जी,

मैं ता० २७ जुलाई को सपत्नीक लखनऊ अयोध्या यात्रा पर गया हुआ था। कल ही लौटा हूँ। डाक में आपका पत्र देखा। अनेक धन्यवाद! डाक्टरेट प्राप्त होने पर मेरी अनेक बधाइयाँ। आप अपने पाण्डित्य के कारण उसके सर्वथा अधिकारी हैं। पता नहीं आपके केरलीय मित्र मेरी अनुपस्थिति में मथुरा पधारे भी या नहीं। यदि वे अभी तक आगरा में हों और मथुरा आना चाहें तो उनका स्वागत है। उनके ठहरने की व्यवस्था तो हमारी धर्मशाला में ही कर दी जायगी तथा हमारे निवास स्थान पर भी उनका आतिथ्य सत्कार होगा। उनके विशिष्ट गुणों के कारण मैं तो उनसे भेंट करने को उत्सुक हो गया हूँ।

आशा है आपकी प्रयाग यात्रा सफल हुई होगी और प्रभात जी से भी आपकी भेंट हुई होगी। मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि प्रभात जी आपके पुराने मित्र हैं। 'डा० बनारसीदास चतुर्वेदी के पत्र' शीर्षक पुस्तक तैयार हो गई है। उसकी एक प्रति रजिस्टर्ड पोस्ट से आज आपकी सेवा में भेजी जा रही है।

योग्य सेवा से सूचित करें।

आपका
बृन्दावनदास

(१२८)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ७-१०-७१

मान्यवर डाक्टर साहब, प्रणाम!

आपका कृपा पत्र यहाँ यथा समय प्राप्त हो गया परन्तु मैं ता० १८

को ही सपत्नीक बम्बई चला गया था। वहाँ मेरे एक पुत्र और दो विवाहित पुत्रियों के परिवार हैं। वहाँ से मैं बंगलौर गया। बंगलौर में भी मेरी एक लड़की अपने परिवार सहित रहती है। बंगलौर से मैसूर दशहरा देखने गए। मैसूर से तिरुपति और तिरुपति से हौस्पेट होते हुए पुनः बम्बई आ गए। बम्बई से ता० ६ को रवाना होकर आज ही मथुरा आया हूँ।

आपकी अस्वस्थता का समाचार पढ़कर दुख हुआ। इस वर्ष फ्लू का प्रकोप रहा। तज्जन्य दुर्वलता तो होती ही है, मुझे भी इसका कटु अनुभव है। चतुर्वेदी जी कहते हैं कि बीमार पड़ना पाप है परन्तु मैं तो यह दृष्टिकोण अपनाने की धृष्टता नहीं कर सकता, कारण इस तथाकथित पाप कर्म पर मानवीय नियन्त्रण है कहाँ।

आप अपनी सामग्री डा० पचौरी जी को सुविधानुसार भेज दें। मैं आपका पत्र उनको दिखा दूँगा। कृपाभाव रखिये।

आपका
वृन्दावनदास

(१२६)

प्रकाश भवन,
मथुरा २७–१०–७१

मान्यवर सिसौदिया जी, प्रणाम !

कृपा पत्र मिला। धन्यवाद ! हम आपके लेख को ब्रज भारती के आगामी अङ्क में ही निश्चय प्रकाशित कर रहे हैं। आपका अद्यतन कोई लेख पत्रिका में प्रकाशित न हो सका है। अतः जब एक निबन्ध आपने भेजने की कृपा की है तो हम उसे सर्वोपरि प्राथमिकता दे रहे हैं।

एटा जनपद से सम्बद्ध सामग्री तो अपेक्षित है ही और उसका संग्रह आप कर ही रहे हैं।

आपसे सम्बन्धित लेख प्रकाशित करने की आवश्यकता केवल स्नेह और आत्मीयता के कारण नहीं समझी जानी चाहिए। जनपदीय कार्यकर्त्ताओं के कृतित्व का लेखा-जोखा इतिहास निर्माण की दृष्टि से अपना विशेष महत्व रखता है। उससे क्षेत्र में नवागन्तुकों को प्रेरणा मिलती है तथा उनको मार्ग दर्शन भी प्राप्त होता है। केवल पुराने थोड़े ही नामों की रटना रटते रहने से हमें गत्यवरोध का आभास न कराना चाहिए। हमें अपनी साहित्यिक धारा का प्रवाह दिखाना पड़ेगा।

सूर मेले में आपके दर्शन होंगे ही।

आपका
वृन्दावनदास

(१३०)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ७-११-७१

मान्यवर डा० सिसौदियाजी । प्रणाम !

आपका लेख 'सूर साहित्य में लोक तत्त्व' बड़ा ही सुन्दर था। हम उसे इसी अंक में छापने के लोभ को संवरण न कर सके और पूर्व निश्चित दो एक लेखों को हटाकर इस लेख को स्थान देने को बाध्य हो गए। आपने विषय का बड़ा सुन्दर प्रतिपादन किया है और अपने तर्कों से सिद्ध कर दिया है कि सूर अनिवार्यतः लोकतांत्रिक विचार धारा के कवि थे। उन्होंने अपनी कविता में देवत्व का आश्रय लेने की अपेक्षा लोकतत्व को ही उभारा है।

सूर स्मारक मण्डल द्वारा आयोजित त्रिदिवसीय कार्यक्रम अच्छा रहा। हमने ब्रजभारती में उस पर सम्पादकीय पृष्ठों के अन्तर्गत टिप्पणी लिखी है।

जिन लेखों की बाबत हमारी आपसे बातचीत हो चुकी है अथवा हम पहले पत्रों में लिख चुके हैं उन्हें सुविधानुसार भेजने की कृपा करें। कृपा भाव रखें।

शुभेच्छु
वृन्दावनदास

(१३१)

प्रकाश भवन,
मथुरा. १०-११-७१

मान्यवर डा० साहिब !

कृपा पत्र मिला, धन्यवाद ! मुझे बड़ी प्रसन्नता है कि 'शूली और शान्ति' की विस्तृत समीक्षा बन्धुवर डा० जयकिशन प्रसाद खण्डेलवाल लिखकर भेज देंगे। मैं उनसे खुद मँगा लूँगा। आपके व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर भी लेख आना ही चाहिए। बात दरअसल यह है कि जनपदीय आन्दोलन का वर्तमान नेतृत्व कुछ पुराना सा पड़ गया है। जिन बन्धुओं के ऊपर यह भार आने वाला है उन्हें प्रकाश में आना ही चाहिए। हमारा तो विशेष रूप से यह कर्त्तव्य हो जाता है कि जनपदीय क्षेत्र को उसके भावी साहित्यिक नेतृत्व का बोध करा दें, अन्यथा समय की गति से एक ऐसी रिक्तता आ जायेगी जिसका दायित्व वर्तमान कार्यकर्ताओं पर होगा और भावी पीढ़ी उन्हें इसके लिए कभी क्षमा न करेगी। आपने जनपदीय क्षेत्र में महनीय कार्य किया है और वह प्रकाश में आना ही चाहिए।

आपका 'सूर काव्य में लोक तत्व' शीर्षक लेख छप गया है। पुनर्मुद्रण पत्र के साथ प्रेषित है। पत्रिका को पूर्ण रूप से तैयार होने में अभी एक सप्ताह और लगेगा। आपका लेख बढ़िया है। इस पर मैं अपने विचार शायद पिछले पत्र में व्यक्त कर चुका हूँ। चूंकि प्रूफ मैं ही देखता हूँ, इसलिए मैं प्रत्येक लेख की एक-एक पंक्ति से परिचित हो जाता हूँ।

आशा है आप स्वस्थ एवं सानन्द हैं।

आपका
वृन्दावनदास

(१३२)

प्रकाश भवन,
मथुरा. १६–२–७२

मान्यवर सिसौदिया जी,

कृपा पत्र मिला। धन्यवाद! फरवरी के अन्त तक आप किसी समय मथुरा पधारेंगे, यह जानकर हर्ष हुआ। अवश्य आइये, ता० २८ की होली है। अतः कुछ पहले ही आवें। ता० २४ को शायद तोराग्राम जाना पड़े, कविरत्न सत्यनारायण का जन्म तिथि समारोह है। उसी दिन वापिस तो आना ही है।

कालिज की पत्रिका के लिए शुभ कामना सन्देश संलग्न है। श्री राम प्रकाश वाला लेख ब्रज भारती में मुद्रित हो गया है। पत्रिका २, ४ दिन में आपसे पास पहुँचेगी। शेष सब कुशल हैं।

आपका
वृन्दावनदास

(१३३)

प्रकाश भवन,
मथुरा. १५–३–७२

बन्धुवर डा० सिसौदिया जी,

कृपा पत्र मिला। आपकी धर्म पत्नी की भीषण रुग्णता का समाचार पढ़कर मानसिक पीड़ा हुई। ऐसी स्थिति में आपको उद्विग्नता हो जाना स्वाभाविक है। अब उनका क्या हाल है, यह मैं आपके पत्र से न समझ पाया।

ब्रज भारती की एक प्रति पृथक डाक से भेजी है। एक पुनर्मुद्रण भी जो उपलब्ध है भेजा जा रहा है।

मैं ता० ११ को मण्डल की स्थायी समिति की बैठक में दिल्ली जा रहा हूँ। उसी दिन वापिस आ जाऊँगा। फिर ता० १६ को एक सप्ताह के लिए लखनऊ अयोध्या, वाराणसी जाने का विचार है।

शेष सब कुशल हैं। आप इन दिनों व्यथित रहे इसका बहुत दुःख है।

भवदीय
वृन्दावनदास

(१३४)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २५–४–७३

मान्यवर डा० सिसौदिया जी, प्रणाम !

आपका पत्र यथा समय मिल गया था। मैं ता० ६ को मथुरा से सपरिवार लखनऊ, अयोध्या, नैपाल की यात्रा पर चल पड़ा था। अयोध्या में अपने पुस्तकालय भवन में पं० पद्मसिंह शर्मा और कवि सत्यनारायण जी की जयन्तियाँ ता० ९ को मनाईं। ता० १३ को Flight से काठमाण्डू पहुँचे, भैरहवा Airport से। ता० २० को By Air वहाँ से पटना आ गए पटना में जनपदीय कार्यकर्ताओं से भेंट हुई तथा जनपदीय आन्दोलन की खासी चर्चा रही। बिहार में लोग जनपदीय कार्यक्रम के प्रति सजग हैं।

आशा है सकुशल है। कृपा भाव रखें।

आपका
वृन्दाबनदास

(१३५)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २५-९-७३

मान्यवर डा० सिसोदिया जी,

कृपा पत्र दिनांक ११-९-७३ यथा समय मिला। मैं ता० १० से २० तक बुन्देलखण्ड की साहित्यिक यात्रा पर था। उरई में कविवर दयाल के ग्रन्थ का विमोचन और झाँसी में हिन्दी दिवस के आयोजन में मुख्य अतिथि की भूमिका निर्वाह, यात्रा के ये ही मुख्य उद्देश्य थे। वैसे सपत्नीक होने के कारण मैंने ओरछा और खजुराहो के दर्शन भी किये।

सासनी में अन्तरजनपदीय परिषद् सम्मेलन बुलाने का विचार है। वहाँ रंजन जी ने उपयुक्त वातावरण तैयार कर दिया है। उस पर आपके बहुमूल्य सहयोग की अपेक्षा है।

डा० पचौरी कहीं भी रहें, कुछ भी करें, मूलतः वे साहित्यिक हैं। उनसे आपको एटा जनपद में यथेष्ट सहयोग प्राप्त होगा। हमें तो बहुत दिनों से उनके दर्शनों का सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ है।

आपका स्वास्थ्य अब सुधार की ओर है यह जानकर सन्तोष हुआ। लेखन पठन तो चलता रहना स्वाभाविक है परन्तु श्रम जन्य वेग से बचने के लिए उसकी मात्रा कम से कम होनी चाहिए यह तो आप जानते ही हैं।

भरतपुर लेखक संघ के समाचार मैंने पत्रों में पढ़े थे। वहाँ आपका योगदान सराहनीय रहा। कविता संकलन 'अंगार, फूल और आँसू' को तो अब पूरा करने में सार है, कारण जिस काम को हाथ में लिया है उसको शनैः शनैः पूर्ण करना ही है।

कृपा भाव रखें। आपका शोधपूर्ण लेख मार्गशीर्ष की पत्रिका में प्रकाशनार्थ प्रेस भेज दिया गया है। डा० रामदत्त भारद्वाज का भी।

आपका
वृन्दावनदास

(१३६)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २९-१०-७३

मान्यवर सिसौदिया जी,

कृपा पत्र तथा दीपावली की शुभ कामनायें प्राप्त हुई। अनेकानेक धन्यवाद ! कालिज पत्रिका का अण्डमान अंक राज्यश्री प्रकाशन वालों के हस्ते प्राप्त हुआ। उसकी समीक्षा भी हमने करा दी है तथा वह आगामी अंक में ही प्रकाशित हो रही है। इसी अंक में आपका तथा डा० रामदत्त भारद्वाज के लेख छप रहे हैं। सोरों सामग्री की प्रदर्शिनी मथुरा में आयोजित हो चुकी है। उस पर भी सम्पादकीय में टिप्पणी आगामी अंक में ही आ रही है।

उत्तर प्रदेशीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अधिवेशन के विषय में मित्रों से सलाह करके लिखें। वैसे तो सोरों वाले भी अधिवेशन कराने के इच्छुक थे। सोरों और एटा तो एक ही बात है। आप श्री प्रेम नारायण गुप्त से बात कर लें। यदि थोड़ी सहायता और प्रोत्साहन आपके क्षेत्र से उन्हें प्राप्त हो जाय तो आपके यहाँ अधिवेशन हो सकता है। प्रत्येक दशा में स्वागताध्यक्ष आप ही होंगे, सभापति का प्रश्न पीछे हल करेंगे। हमने तो प्रभात जी से भी कह दिया था कि आप तो सम्मेलन के स्तम्भों में से हैं। यह पत्र आप श्री प्रेम नारायण गुप्त को पढ़वा दें।

आपका
वृन्दावनदास

(१३७)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २६-१२-७३

मान्यवर डा० सिसौदियाजी, नमस्कार !

कृपा पत्र मिला । यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आपका स्वास्थ्य सुधर रहा है ।

अधिवेशन झाँसी में हो रहा है, तीन और चार मार्च उसके लिए निश्चित हो गई है ।

डा० द्वारिका प्रसाद मीतल १५८ गाँधी रोड, झाँसी हमारे मित्र हैं, उन्हीं के सत्प्रयासों के फलस्वरूप यह सम्भव हुआ है । हम अपनी विगत झांसी यात्रा में उनसे बातचीत कर चुके थे ।

साहित्याचार्य पं० पद्मसिंह शर्मा तो विख्यात समालोचक एवं बिहारी के एकनिष्ठ प्रस्तोता थे । वे अपने समय के धुरन्धर ब्रज भाषा मर्मज्ञ थे । खेद है उनके ग्रन्थ अब अप्राप्य से हो गए हैं । श्रद्धेय बनारसीदास जी चतुर्वेदी ने उनके पत्रों का संग्रह आत्माराम एण्ड संस पुस्तक विक्रेता दिल्ली के माध्यम से छपाया था । चतुर्वेदी जी से उनके साहित्य की जानकारी भी मिल सकती है । आप अपनी कविताओं के संकलन को अवश्य छपावें चाहे किसी प्रकाशक के माध्यम से अथवा अपने स्वतंत्र प्रकाशन के रूप में । चूंकि कविता का विषय है प्रकाशक का माध्यम अधिक उपयुक्त रहेगा । साहित्य प्रकाशन के अध्यक्ष पं० यज्ञदत्त शर्मा आपकी पुस्तक 'शूली और शान्ति' के प्रशंसक थे । उनको लिखें, मेरा संदर्भ दें । वे विश्वसनीय प्रकाशक हैं । उनका पता है साहित्य प्रकाशन, नई सड़क, मालीवाड़ा दिल्ली । उनके उत्तर से मुझे सूचित करें । शेष सब कुशल हैं ।

आपका
वृन्दावनदास

श्री यशपाल जैन के नाम

(१३८)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २०-७-७०

बन्धुवर, सादर नमस्कार !

आशा है आप सपरिवार आनन्दपूर्वक हैं । स्व० डा० हरिशंकर जी शर्मा के स्मृति ग्रन्थ के मुद्रण एवं प्रकाशन की व्यवस्था विचाराधीन है । इस

अंक के प्रधान सम्पादक श्रद्धेय पं० बनारसीदास जी चतुर्वेदी हैं। कुछ कार्य तो सम्पन्न हो चुका है, शेष किये जाने को है। यदि इस ग्रन्थ की रचना एवं प्रकाशन में भी आप पूर्व ग्रन्थ की भाँति रुचि लें तो यह दुष्कर कार्य सुगम हो जाय और हिन्दी संसार को एक और अमूल्य निधि उपलब्ध हो सके। हमारी इच्छा है कि इस ग्रन्थ को भी ६०० पृष्ठों का रक्खा जाय तथा श्रद्धेय चतुर्वेदी जी के अतिरिक्त इसका भी एक संपादक मण्डल हो। प्रस्तावित समस्त कार्य-क्रम संपादक मण्डल में पूर्व की भाँति विभक्त कर दिया जाय और एक निश्चित अवधि के भीतर सामग्री उपलब्ध हो जाय। सम्पादक मण्डल में मैं और आप तो रहेंगे ही, २, ३ सज्जन आपके और चतुर्वेदी जी के परामर्श से और सम्मिलित कर लिए जाँय। ग्रन्थ के मुद्रण व्यय में ५०००) आपको दिये जाँय और उसकी एवज में मुद्रित होने पर २०० प्रतियाँ आप दें। लेखकों को एक-एक प्रति निशुल्क मिले। यदि आपकी सहमति हो तो हम इस योजना को श्रीयुत प्रकाशवीर जी शास्त्री से स्वीकृत करावें तथा धन की व्यवस्था करें। इस ग्रन्थ के लिये धन की व्यवस्था में विशेष परिश्रम करना पड़ेगा, कारण पहले ग्रन्थ की तरह इसके लिए दानदाता अभी तक दृष्टि में नहीं है तदापि यह निश्चित है कि धन राशि इकट्ठी हो जायगी और इसके कारण गतिरोध कदापि न होगा।

आपकी सहमति होने से योजना को कार्यान्वित करने के लिए आवश्यक कदम उठाये जायेंगे। कृपा भाव रक्खें।

आपका

वृन्दावनदास

(१३८)

प्रकाश भवन,

मथुरा. २६-१२-७०

बन्धुवर यशपाल जी, सादर नमस्कार !

दूसरे दिन मैं ८ बजकर १० मिनट पर धर्मशाला पहुँचा परन्तु आप जा चुके थे। मुझे दुःख इस बात का रहा कि जैनेन्द्रकुमार जी के दर्शन भी न कर सका। ब्रजवालजी कल मिले थे, उन्होंने कहा कि उनकी भी वही दशा हुई।

अब जनवरी के प्रथम सप्ताह में नई दिल्ली आना है, उस समय आपके और जैनेन्द्र कुमार जी के दर्शन अवश्य करूँगा।

चतुर्वेदी जी का पत्र संग्रह पूरा कर चुका। उनकी सहमति भी प्राप्त हो गई है। चूंकि पत्र शताधिक हैं अतः मैंने निश्चय किया है कि मैं इस संग्रह

में वे ही पत्र छापूँ जो मुझे प्राप्त हुए हैं। भूमिका ४० पृष्ठीय है। इस लम्बी चौड़ी भूमिका में आपका शुभ नाम भी कई स्थानों पर आया है, क्यों न आता, अ० ग्रन्थ के विषय में आपका योगदान निस्संदेह महान था। प्रेस वालों से बातचीत भी हो गई, सम्भवतः पाण्डुलिपि आज ही प्रेस में दे दूँगा। चतुर्वेदी जी के पत्रों के तो विभिन्न व्यक्तियों द्वारा कई संग्रह प्रकाशित होने चाहिये। हिन्दी में पत्र साहित्य की कमी भी है। यदि ये संग्रह प्रकाशित हो गये तो उस कमी की पूर्ति की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम होगा। अगर अग्रगामी मेरा संग्रह अन्य बन्धुओं को इस दिशा में प्रोत्साहित या उत्प्रेरित कर सका तो मैं अपने प्रयास को सार्थक समझूँगा।

आशा है आप सपरिवार सानन्द हैं।

आपका

वृन्दावनदास

(१४०)

प्रकाश भवन,

मथुरा. १४-६-७१

बन्धुवर,

आपका कृपा पत्र यथा समय मिल गया था। बधाई के लिए आपको अनेक धन्यबाद! वस्तुतः श्रद्धेय चतुर्वेदी जी, अक्षय जी, और आप सदृश माननीय बन्धुओं की उपस्थिति से सम्मेलन गौरवान्वित हुआ और उसके महत्व और शोभा में वृद्धि हुई। प्रदेश के प्रत्येक भाग से साहित्यिक बन्धुओं का अधिवेशन में भाग लेने के लिए फीरोजाबाद आना एक उल्लेखनीय बात थी।

दिल्ली पहुँचने पर आपके दर्शनों का सौभाग्य प्राप्त करूँगा। शेष सब कुशल है।

आपका

वृन्दावनदास

नोट—दिनांक २३, २४ मई १०७१ को फीरोजाबाद में उत्तर प्रदेशीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन का अधिवेशन बाबू वृन्दावनदास के सभापातित्व में सम्पन्न हुआ था। **—सम्पादक**

(१४१)

प्रकाश भवन,

मथुरा. ११-८-७१

बन्धुवर, यशपाल जी!

कृपा पत्र आपका मिला। धन्यवाद!

आपके द्वारा अभिव्यक्त भाव आपकी गहन आत्मीयता के द्योतक हैं।

जो तुच्छ सेवा मुझसे बन पड़ती है करता हूँ। महिमा और प्रताप तो श्रद्धेय चतुर्वेदी जी का ही है कि उनके व्यक्तित्व से सम्बन्धित जो भी कार्य हाथ में लिया जाता है वह न केवल आशातीत सफलता प्राप्त करता है अपितु हम लोगों को भी यशःप्रदाता बन जाता है। यह जानकर कि आपकी ८, १० पुस्तकें सम्पादन हेतु पड़ी हैं प्रसन्नता और दुःख दोनों हुए, प्रसन्नता तो इस बात की हुई कि आपने प्रभूत साहित्य का निर्माण किया और दुःख इसलिये हुआ कि अवकाशविहीनता के कारण आप उसे सम्पादित न कर सके और ऐसी दशा में उसके प्रकाशन का तो प्रश्न ही नहीं उठता। मेरी क्षुद्र राय में तो अब आपको इस कार्य के लिए सर्वाधिक प्राथमिकता देनी चाहिये और एक-एक करके इन पुस्तकों का सम्पादन हाथ में लेना चाहिये। आप स्वयं सुज्ञ हैं, गणेश को बुद्धि कौन दे ?

आशा है आप स्वस्थ एवं सानन्द हैं। मेरे योग्य कार्य से सदैव सूचित करते रहें।

आपका
वृन्दावनदास

(१४२)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ६-९-७५

बन्धुवर, सादर नमस्कार !

कृपा पत्र प्राप्त हुआ। अनेकानेक धन्यवाद ! अन्तर जनपदीय परिषद् का अधिवेशन बड़ी सफलतापूर्वक सानन्द समाप्त हो गया। आपकी बधाई के लिए हार्दिक धन्यवाद ! निस्सन्देह आप सदृश मित्रों की सद्भावनाएँ ही मेरे जीवन का महान् सम्बल रही हैं।

अधिवेशन का पूरा विवरण ब्रज भारती के भाद्रपद अङ्क में प्रकाशित होगा। यह अङ्क आपकी सेवा में लगभग ३ सप्ताह में पहुँचेगा।

आपका
वृन्दावनदास

श्री रमेश गुप्त के नाम

(१४३)

अ० भा० ब्रज साहित्य मंडल
मथुरा. १८-१०-६९

प्रियवर,

कृपा पत्र मिला। धन्यवाद ! गुप्त जी बडे भाई के पास कोंच

(जालौन) गये हैं यह विदित हुआ । पहिले तो शायद सीतापुर जिले में सिधौली नामक स्थान पर जाया करते थे । क्या बड़े भाई का वहाँ से स्थानान्तरण हो गया हैं ?

(१) ब्र० सा० मण्डल की स्थापना सन् १९४० ई० में हुई ।

(२) श्रद्धेय बनारसीदास जी चतुर्वेदी ने किसी समय क्षेत्रीय स्तर पर साहित्यिक मण्डलों की स्थापना का आन्दोलन चलाया था । उनका आशय था कि सांस्कृतिक आधारों पर पृथक्-पृथक् प्रान्तों का निर्माण भले ही न हो परन्तु मण्डल स्तर की साहित्यिक संस्थाऐं अवश्य बनें जो स्थानीय भाषाओं और संस्कृति आदि का उन्नयन कर सकें ।

(३) मण्डल के संस्थापकों में विद्वद्वर डा० वासुदेवशरण अग्रवाल, डा० सत्येन्द्र, सेठ कन्हैयालाल पोद्दार, बाबू गुलाबराय और पं० बनारसीदास चतुर्वेदी आदि ही थे ।

(४) ब्रजभारती के अतिरिक्त मण्डल के अनेक प्रकाशन उसकी साहित्य सेवा के परिचायक हैं । पोद्दार अभिनन्दन ग्रन्थ जो वास्तव में ब्रज साहित्य एवं संस्कृति का विश्वकोश ही है मण्डल की अपूर्व देन है । ब्रज का इतिहास (श्री कृष्णदत्त वाजपेयी लिखित) दो खण्डों में है । अनुपम कृति है । अनेक ग्रन्थ श्री प्रभुदयाल मीतल और डा० सत्येन्द्र लिखित मण्डल ने प्रकाशित किये हैं जो साहित्य की अमूल्य निधियाँ हैं । ब्रज की लोक कहानियाँ और ब्रज लोक संस्कृति डा० सत्येन्द्र ने लिखी हैं । लोक साहित्य का अच्छा परिचय देती हैं ।

(५) ब्रज भारती के प्रकाशन का यह छब्बीसवाँ वर्ष है । मैं सम्वत् २०२२ से निरन्तर इसका सम्पादक हूँ । मेरे सम्पादकत्व में सम्वत् २०२२ में तीन, २०२३ में ४, २०२४ में ४, २०२५ में ४ और सम्वत् २०२६ में २ अंक निकल चुके हैं । मैंने भाद्रपद सम्वत् २०२२ से सम्पादन शुरू किया है और तभी से बिना किसी व्यवधान के १७ अङ्क निकाल चुका हूँ । आगामी मार्गशीर्ष में १८ वाँ अङ्क निकलेगा ।

(६) ब्रज भारती के प्रथम सम्पादकों में श्री जवाहरलाल चतुर्वेदी, डा० सत्येन्द्र, श्रीकृष्णदत्त वाजपेयी और श्री प्रभुदयाल मीतल आदि हैं ।

(७) मण्डल से मेरा सम्बन्ध सन् १९६३ से है, मैं गाजियाबाद अधिवेशन में इसका अध्यक्ष चुना गया था । सन् १९६८ में मैं पुनः इसका अध्यक्ष निर्वाचित हुआ । अध्यक्षीय भाषण की एक प्रति भेज रहा हूँ । एक प्रति ग्वाल शताब्दी समारोह के अध्यक्षीय भाषण की भी भेज रहा हूँ ।

(८) इससे पूर्व अर्थात् १९६३ से भी पूर्व जब मण्डल में गतिरोध हो गया था तब मैं अन्य दो पंचों के साथ विवाद निवृत्त करने हेतु पंच नियत किया गया था। एक बार जब श्री वियोगी हरि समापतित्व करने पधारे थे मैं स्वागताध्यक्ष था।

(९) मण्डल के लिए भविष्य में एक महत्वाकांक्षी योजना को मैं अपने मस्तिष्क में सँजोये हुए हूँ। इसी कारण मैंने इस संस्था को जो पूर्णतया मर चुकी थी पुनर्जीवित किया है। इसके भूमि का अधिग्रहण का मामला सरकारी तौर पर फाइल हो चुका था। उसको फिर से उठाकर भूमि का अधिकार मण्डल को दिलाने की चेष्टा बराबर ८, ९ वर्ष से चल रही है। अब उसमें सब औपचारिकतायें पूर्ण हो चुकी हैं। ऐसी आशा है कि एक दो महीनों में ही मण्डल का भूमि पर अधिकार हो जावेगा। मैं चाहता हूँ कि उस स्थान का विकास एक महत्वपूर्ण साहित्यिक और सांस्कृतिक केन्द्र के रूप में हो, उसमें एक ऐसा शोध स्थान बने जहाँ दूर-दूर से शोधार्थी आवें और अपनी साधना में तल्लीन रहें। उसका पुस्तकालय विशाल हो जहाँ दुर्लभ पुस्तकों का संग्रह हो, हस्तलिखित ग्रन्थों का अधिकोष हो। सभा भवन, गोष्ठी भवन, ब्रज के नये पुराने साहित्यकारों की कृतियाँ और चित्र सभी कुछ वहाँ पर मौजूद हों। विद्वानों को रहने की सुविधा हो। ब्रज भाषा तथा हिन्दी साहित्य के प्रकाशन की व्यवस्था हो। एक मुद्रणालय भी हो। यदि कुछ उत्साही बन्धुओं का सहयोग प्राप्त हो गया तो यह कार्य कुछ कठिन नहीं है। मैं चाहता हूँ कि मण्डल की उन्नति हिन्दी साहित्य सम्मेलन और नागरी प्रचारिणी सभा वाराणसी के रेखा चिन्हों पर हो, इसको भी उसी प्रकार सरकारी साहाय्य और अनुदानादि प्राप्त हों जिससे इसमें अनेक विद्वान् प्रश्रय पाकर साहित्य की साधना करें। मनुष्य केवल सोचता है क्रियान्वित होना तो ईश्वराधीन ही है।

कोशों के निर्माण और प्रकाशन की योजना तो निश्चित हो चुकी है। पाण्डुलिपि जैसे ही हाथ में आवेगी उसकी आर्थिक व्यवस्था के लिए प्रयास किये जायेंगे। शेष फिर।

आपका
बृन्दावनदास

(१४४)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २०-७-७१

बन्धुवर गुप्त जी,

स्नेहाभिसिक्त पत्र आपका मिला। धन्यवाद ! आपकी तारीफ कर डाली

तो क्या हुआ, आप उसके सर्वथा पात्र हैं आपके पत्रों की प्रत्येक पंक्ति से मुझे शील और सौजन्य की धारा प्रवाहित होती दीखती है।

आप अपने पुस्तकालय पर लेख अवश्य लिखें। यह बात तो हमने बहुत पहले से आपसे कह रक्खी है। वास्तव में यह कार्य तो हमने आपको सुपुर्द किया था। आपको जो संकोच है वह त्याज्य है। मान्यवर बा० कृष्णानन्दजी केवल आपके पिता ही नहीं वे हिन्दी समाज के भी कुछ लगते हैं। आपके परिवार के अतिरिक्त उनका एक बहुत बड़ा कुटुम्ब है जिसके वे प्रिय ही नहीं वन्दनीय भी हैं। वह लेख यदि आपके नाम से ही निकलेगा तो हिन्दी वाले उसे प्रामाणिक समझेंगे। अनेक महापुरुषों के पुत्र उनके निजी सचिव रहे हैं आप तो अपने पूज्य पिताजी के पुस्तकालय पर केवल लेख ही लिखेंगे।

मैं तो साहित्यिक बन्धुओं के प्रेम जाल में फँस गया। बहुत मना करने पर भी ग्रन्थ वाला काम दिल्ली और मथुरा के कुछ भाइयों ने अपने हाथ में ले लिया है। हम भी "राजी हैं उसमें जिसमें तेरी रजा है" की उक्ति चरितार्थ कर रहे हैं। आप लोगों को जो जँचे सो करो।

मई २३, २४ को फीरोजाबाद में उत्तर प्रदेशीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन का अधिवेशन हो रहा है। उसकी सूचना आपको मिलेगी। आप उसमें पधारें। मान्यवर गुप्तजी को हमारा प्रणाम कहें।

आपका
वृन्दावनदास

श्री रमेशचन्द्र दुबे के नाम

(१४५)

प्रकाश भवन,
मथुरा. १०–६–७०

मान्यवर दुबेजी प्रणाम !

आपका कृपा पत्र यथा समय मिल गया था। उसमें तत्काल उत्तर देने के लिए कोई बात न थी अतः फाइल में लगा दिया था। आज अकस्मात् ध्यान आया कि उत्तर प्रदेशीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन के होने वाले चतुर्दश अधिवेशन की सूचना आपको भी देनी चाहिये। अतः कार्ड निकालकर घर का पता देखा और यह पत्र लिख रहा हूँ।

लगभग १५ दिन हुए मेरे पास सम्मेलन कार्यालय का पत्र आया था कि स्थायी समिति ने मेरा नाम उन विद्वानों की सूची में सम्मिलित किया है जिनको कि सम्मेलन की सर्वोत्तम उपाधि साहित्य वारिधि इस वर्ष प्रदान की

जाने वाली है। मुझसे स्वीकृति माँगी जिसे मुझे सधन्यवाद अर्पित करना ही था। मैंने उसी दिन श्रद्धेय चतुर्वेदी जी को पत्र लिखा। उन्होंने उत्तार में लिखा कि उनके पास वैसा ही पत्र पहुँचा है तथा अब तो ब्रज भूमि में दो-दो समुद्र हो गये यद्यपि उन्होंने लिखा कि वे तो साहित्य पोखरा हैं उनको उपाधि से क्या काम ? परन्तु फिर भी उन्होंने स्वीकृति दे दी थी। हमने तो उन्हें यही लिखा कि वास्तविक अधिकारी तो केवल वे ही है।

कल सम्मेलन का निमन्त्रण आया है, इसकी कई प्रतियाँ हैं। एक आपके पास भेज रहा हूँ। यदि सुविधा और अवकाश हो तो अवश्य पधारें। मुझसे आगरा मथुरा जनपद सम्मेलनों के कम से कम १० प्रतिनिधि लाने को कहा है। दोनों स्थानों से ५, ६ ही जा रहे हैं। आप अपने मित्रों सहित पहुँच सकें तो उत्तम रहेगा। शेष कृपा बनी रहे। पत्रिका वहाँ से जाकर भेजूंगा। छप रही है। मैं कल प्रातः जा रहा हूँ।

आपका
वृन्दावनदास

(१४६)

प्रकाश भवन,
मथुरा. १०-११-७०

मान्यवर दुवेजी प्रणाम !

ता० ८ को अमर उजाला में श्रद्धेय बनारसीदास जी चतुर्वेदी का और सैनिक में श्रीमान् का लेख मेरे सम्बन्ध में प्रकाशित हुआ। आपने आत्मीयता और स्नेह से अभिभूत होकर मेरे नगण्य काम को भी महत्व देकर उसे आलोकित कर दिया है। जिन बातों की ओर आपकी पैनी दृष्टि गई है उस ओर तो किसी का ध्यान जा भी नहीं सकता था। साहित्यकार के संस्पर्श से माँटी भी स्वर्ण हो जाती है। क्या मुरादाबाद में आपको अमर उजाला और सैनिक मिल जाते हैं। यदि नहीं तो कृपया लिखें मैं ८ तारीख के दोनों पत्र आपको भेज दूँगा।

पृथक लिफाफे में उस दिन का वितरित मुद्रित साहित्य भेज रहा हूँ।

कृपाकर श्रद्धेय बनारसीदास जी चतुर्वेदी के पत्र लेखन के महत्व पर १०, २० लाइन अवश्य लिखकर भेजें। मैंने निश्चय कर लिया है कि जाड़ों में उन तीनों पुस्तकों को जो अधूरी हैं पूरी करूँगा तथा उनका मुद्रण भी अवश्य करा दूँगा। आपका और डा० राजेश्वर प्रसाद चतुर्वेदी का लेख ब्रज भूमि खण्ड में था अतः आप दोनों ही उनके व्तक्तित्व पर लेख न लिख सके व्यक्तित्व पर लिखे अनेक लेखों में से हमने इस विषय पर विद्वानों का अभिमत

संकलित कर लिया है। इस संकलन को मैं भूमिका में समाविष्ट करूँगा। भूमिका लगभग ५० पृष्ठ की होगी।

आशा है आप स्वस्थ एवं सानन्द होंगे। उत्तर प्रदेशीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन का आगामी अधिवेशन मैं फिरोजाबाद में करने की सोच रहा हूँ। अगर बालकृष्ण जी राजी हो गये तो वहाँ ही ठीक रहेगा। यदि किसी कारण-वश ऐसा सम्भव न हुआ तो मुरादाबाद रखेंगे। मैंने डा० हरवंशलाल जी को जो उसके महामंत्री हैं कह भी दिया है।

शेष सब कृपा है।

आपका
वृन्दावनदास

(१४७)

प्रकाश भवन,
मथुरा.

मान्यवर दुबेजी, प्रणाम !

८, १० दिन से आपको पत्र लिखने का विचार कर रहा था। कहते हैं दिल का दिल साक्षी होता है। मैं सोचता ही रह गया और एक सरस एवं पीयूषवर्षी कविता के रूप में पहल आपके हाथ में ही रही। अनेक धन्यवाद ! आपके हृदयोद्‌गार मेरे जीवन के संबल हैं। पूज्य काका जी को पठन के हेतु देने के पूर्व राजेश्वर जी ने आपके शुभ नाम की घोषणा की तथा यह भी कहा कि इस कविता को श्री अमृतलाल जी ही पढ़कर सुनावें ऐसी श्री दुबेजी की इच्छा है। आपकी अमृतलाल जी की तथा पंकज जी की कविताओं के रसोद्रेक से उपस्थित बंधुजन आत्म विभोर हो गये। क्यों न होता ? बकौल किसी कवि के, वे हृदय की नोंक से लिखी गई थीं।

राजेश्वर जी ने कमाल कर दिया। इन सभी कविताओं को छपा डाला है। मैं बहुत शीघ्र सभी की एक-एक दो-दो प्रतियाँ सेवा में भेजूँगा। कल वहाँ सभी कुछ था, केवल आपकी कभी-कभी याद हृदय को कचोटती थी।

पं० बनारसीदास जी के पत्रों पर एक पुस्तक लिख रहा हूँ। पत्र संग्रह है। २००, २५० मेरे पास आये हुए पत्र और ४०, ५० पृष्ठ की भूमिका। कृपा कर चतुर्वेदी जी की पत्र लिखने की प्रवृत्ति और उनके पत्र साहित्य के महत्व पर १०, १५ लाइन का नोट आप मुझे जल्द से जल्द भेज

दें। मैं कतिपय विद्वानों का अभिमत भी भूमिका के अन्तर्गत दे रहा हूँ। शेष अगले पत्र में।

आशा है आप स्वस्थ एवं सपरिवार सानन्द है।

आपका—
वृन्दावनदास

(१४८)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २४-२-७१

ब्रज भारती का नवीनतम फाल्गुन अंक सेवा में प्रेषित है। बहुत दिन से आपकी ओर से कोई समाचार नहीं। श्रद्धेय बनारसीदास जी के पत्रों को छपा रहा हूँ। भूमिका ३२ पृष्ठ में आयी है, आपका लेख उसमें सम्मिलित हो गया है। पुस्तक के ७२ पृष्ठ छप चुके, लगभग २५० पृष्ठ की बैठेगी। आप चतुर्वेदी जी के दो पत्र हमें भेज दें। हमारी इच्छा है कि कुछ पत्र अपने इष्ट-मित्रों के भी दें। वैसे तो आपके शुभ नाम का उल्लेख चतुर्वेदी जी के अनेक पत्रों में आया है और बहुत से पत्रों में वे आपको प्रणाम भी लिखते हैं परन्तु प्राप्त पत्र का अलग ही एक महत्व है। अतः आपको प्राप्त हुए चतुर्वेदी जी के पत्रों में से २, ३ पत्र जिन्हें आप सर्वोत्कृष्ट समझें मुझे भेजने की कृपा करें, यों तो चतुर्वेदी जी के सभी पत्र उत्कृष्ट होते हैं। शेष सब कुशल है। कृपा भाव रखें। ता० १९ को आगरा के सेन्ट जौन्स कॉलेज हाल में डा० रामविलास शर्मा का नागरिक अभिनन्दन मेरी अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ था। सफल रहा। शर्मा जी को साहित्य अकादमी ने उनकी पुस्तक 'निराला की साहित्य साधना' पर ५०००) का पुरस्कार प्रदान किया है।

आपका
वृन्दावनदास

(१४९)

प्रकाश भवन,
मथुरा.२५-३-७१

मान्यवर दुबे जी, प्रणाम !

कृपा पत्र तथा पत्र मिले। मुरादाबाद तथा अलीगढ़ में जो कुछ हुआ वह निःसन्देह खेद जनक है। हमारे नेताओं ने ही जातियों में धर्मोन्माद भड़काया है और निरीह जनता को उसका खमियाजा उठाना पड़ रहा है। नेताओं को धुन केवल अपने वोट पक्के करने की है। परिणाम स्वरूप भले ही

निहत्थे भद्र लोगों की और उनकी बहिन-बेटियों की हत्या ही क्यों न हो जाय। लोग दबे पड़े थे वे अब बहुसंख्यक समाज से घुल-मिलकर चल रहे थे, कि यकायक चुनावी आँधी में उनको अपनी हितों की याद दिलाई गई और एक प्रकार से उच्छृङ्खल व्यवहार करने को प्रेरित किया गया। ये जघन्य कृत्य राजनीति के कलुषित वातावरण से उत्पन्न हुए हैं।

एक कुचाल और चली गई थी। हमारे नेताओं ने पहले बहुसंख्यक समाज के खास दलों को साम्प्रदायिक बता कर उनकी भर्त्सना की और उन्हें महिनों पहले से खूब बदनाम किया। इससे धर्मोन्मादी हैवानों के हौसले बढ़े और उन्होंने इस अवसर और स्थिति का पूरा लाभ उठाया।

जिस प्रकार अँग्रेज विभाजित करो और शासन करो की नीति पर चलता था उसी प्रकार का नाटक खेला गया है, मुझे तो लगता है कि अभी यह और चलेगा। इसमें केवल भले आदमियों के जान माल और बहु-बेटियाँ की असुरक्षा मुझे दिखाई दे रही है।

श्रद्धेय बनारसीदास जी के पत्रों का चयन पूरा हो चुका है और आधी से ज्यादा पुस्तक छप भी चुकी है। मेरे पत्र तो लगभग छप चुके हैं मैं ५० अन्य पत्र छापूँगा परन्तु करीब १०० पत्र मेरे पास आ चुके हैं और बहुत से ऐसे लोगों के हैं जिनको मैं वचन दे चुका हूँ। आपके दो पत्र अवश्य तथा रावत जी के सम्भव हुआ तो एक दो सम्मिलित करूँगा। रावत जी के पत्र अँग्रेजी में हैं।

शेष कृपा!

आपका
बृन्दावनदास

(१५०)

प्रकाश भवन,
मथुरा. १२-६-७१

मान्यवर दुबे जी, प्रणाम!

आपका ता० १९ मई का पत्र यथा समय मिल गया था। सम्मेलन तथा अन्य कार्यों में इतनी व्यस्तता रही कि बहुत से पत्रों का उत्तर भी न दे सका। आप विशेष कारणों वश अधिवेशन में सम्मिलित न हो सके यह विदित हुआ। सम्मेलन अत्यन्त सफल रहा। लगभग २०० साहित्यिक बन्धु राज्य के विभिन्न भागों से पधारे थे। आतिथ्य सरकार भी खूब रहा। अधिवेशन के कार्य कलापों की रिपोर्टिंग भी समाचार पत्रों में विस्तृत रूप से हुई श्रद्धेय चतुर्वेदी जी ने उसी अवसर पर डॉ० हरिशंकर जी शर्मा और डॉ० वासुदेव शरण अग्रवाल के चित्रों का अनावरण भी कराया। कवि सम्मेलन के अन्तर्गत

पं० सरदारसिंह मिश्र और ख्यालगो नैंकसाराम का नागरिक अभिनन्दन भी हुआ।

ब्रज भारती का ज्येष्ठ अङ्क और अध्यक्षीय भाषण की प्रति आपको प्राप्त हुए होंगे। श्रद्धेय अमृतलाल जी चतुर्वेदी, रामचरण जी हयारण मित्र, यशपाल जी जैन, अक्षय कुमार जी जैन आदि को साहित्य वारिधि की उपाधि प्रदान की गई। श्रद्धेय बनारसीदास चतुर्वेदी का सानिध्य सदैव प्रेरणा दायक सिद्ध हुआ स्वास्थ्य की वर्तमान स्थिति में उन्होंने अधिवेशन में अपना बहुत समय दिया। वे हर पत्र में आपको प्रणाम लिखा करते हैं। आशा है आप स्वस्थ एवं सानन्द हैं।

आपका

वृन्दावनदास

(१५१)

प्रकाश भवन,

मथुरा. २६-७-७१

मान्यवर दुबे जी, प्रणाम !

यह तो मैं जानता हूँ कि पत्र तो आपकी ओर से पहले भी कम आते थे। परन्तु उनकी कसर आपसी भेटों में निकल जाती थी। कभी आप पधारते और कभी हम भी आगरा पहुँच जाते। अतः पत्राचार अधिक आवश्यक भी नहीं था। परन्तु अब तो यह शून्यता बहुत खलने लगी है महीनों हो जाते हैं कोई समाचार नहीं। कभी-कभी दर्शनों की बड़ी तीव्र इच्छा होती है स्थान भी इतना दूर और वक्र हैं कि सुगमता से भेंट वार्ता की सम्भावना ही समाप्त हो गई है। अतः प्रार्थना है कि इस दुर्भाग्य पूर्ण शून्यता को कभी दो चार पंक्तियाँ लिखकर तोड़ दिया करें।

चतुर्वेदी जी के पत्रों का संग्रह तैयार है सम्भवतः कल आपको रजिस्टर्ड बुक पोस्ट से भेजूँगा। योग्य कार्य से सूचित करते रहे।

आपका

वृन्दावनदास

(१५२)

प्रकाश भवन,

मथुरा. ६-८-७१

मान्यवर दुबे जी, प्रणाम !

कृपा पत्र मिला। अनेक धन्यवाद ! आत्मीयता और प्रचर स्नेह के शुभ भावों से आपूरित आपके पत्र को पढ़कर मैं रसतृप्त और आत्म-विभोर

हो गया। आपके निश्छल, मधुर भावों की सहज अभिव्यक्ति पाण्डिय सुलभ शब्दावली पाकर एक ऐसी पवित्र मन्दाकिनी बन जाती है जिसमें अवगाहन कर हृदय को अपूर्व आह्लाद का अनुभव होता है। कुछ दिन कोई पत्र न लिख पाये तो क्या हुआ जब लिखने बैठे तो ऐसा हृदय स्पर्शी पत्र लिख दिया कि सौ बार पढ़ो तब भी तबियत न भरे। अच्छी तरह कसर निकाल दी यह कहावत भी आपने चरितार्थ कर दी।

पुस्तक मैं अभी थोड़े ही मित्रों को भेज पाया हूँ। जिन-जिन दयालु मित्रों को मिली है उन सब ही ने जिन सुन्दर स्नेहपूर्ण शब्दों में मुझे आशीर्वाद दिया है उससे मैं कृत-कृत्य हो गया हूँ। शायद जिस समय इस पुस्तक को छपाने के विचार का उदय हुआ वह एक अत्यन्त शुभ घड़ी थी। श्रद्धेय चतुर्वेदी जी के उज्ज्वल व्यक्तित्व से सम्बन्धित जो भी कार्य हाथ में लिया वह न केवल सम्यक् रूप से सम्पादित और सम्पन्न हुआ अपितु उसमें यश और स्नेह भी पुष्कल मात्रा में मिला। मैं तो इसे उनका ही पुण्य प्रताप मानता हूँ।

पं० सत्यनारायण कविरत्न के तोरा ग्राम में एक जूनियर हाई स्कूल खुल गया है। श्री देवकीनन्दन जी विभव ने उद्घाटन किया था। उनके एक निकटस्थ व्यक्ति मुझसे मिलकर आगे किसी उत्सव में सम्मिलित होने का वचन दे गये थे। आशा है आप स्वस्थ एवं सानन्द हैं। कृपा भाव रखें।

आपका
वृन्दावनदास

(१५३)

प्रकाश भवन
मथुरा. १-१-७२

मान्यवर दुबे जी, प्रणाम !

स्नेह और आत्मीयता के भावों से ओत-प्रोत सरस काव्य में लिखित आपकी शुभ कामनाएँ प्राप्त कर कृत-कृत्य हो गया हूँ। अनेक धन्यवाद ! नूतन वर्ष आपको भी सुख समृद्धि प्रदायक हो यही प्रभु से प्रार्थना है। आशा है आप पूर्ण रूपेण स्वस्थ एवं सानन्द हैं।

इतिहास की पुस्तक के ३२० पृष्ठ तो छप गये परन्तु अभी ५०, ६० पृष्ठ का मैटर छपने को शेष है।

श्रद्धेय पं० बनारसीदास जी चतुर्वेदी आजकल फिरोजाबाद में ही है।

आपका
वृन्दावनदास

(१५४)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २६-८-७२

मान्यवर दुबे जी, प्रणाम !

सम्मेलन कार्यालय से तार, पत्र आदि आ गये हैं मैं ता० ३० की प्रातः मुरादाबाद पहुँचूगा । यहाँ से २९ की रात्रि को बरेली एक्सप्रेस से चलूँगा और बरेली से प्रातः किसी प्रकार चलकर १० बजे तक मुरादाबाद पहुँच जाऊँगा ।

वहाँ का कार्य सब ठीक होगा । इस बहाने आपके दर्शनों का लाभ हो ही जायेगा ।

कृपा भाव रक्खें ।

आपका
वृन्दावनदास

(१५५)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ४-९-७२

मान्यवर दुबे जी, प्रणाम !

अधिवेशन के कार्य कलाप में आपका योगदान अपूर्व एवं अविस्मरणीय रहा । सभी प्रतिनिधि गण आपके सहयोग की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा कर रहे थे । त्वरा में आयोजित अधिवेशन कुछ अभावों से ग्रस्त था परन्तु आपकी उपस्थिति ने हमारे भारों को बहुत हलका कर दिया था ।

आज के अमर उजाला में सम्मेलन सम्बन्धी रिपोर्ट प्रकाशित हो गई है उसकी एक प्रति आपको प्रेषित है । मुझे नहीं मालूम उधर के अंचल में समुचित रिपोर्टिंग हुआ या नहीं । अमर उजाला के बरेली संस्करण ने क्या भूमिका अदा की यह भी अज्ञात है । आशा है आप स्वस्थ एवं सानन्द हैं ।

आपका
बृन्दावनदास

(१५६)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ४-१०-७२

मान्यवर दुबे जी, प्रणाम !

कृपा पत्र यथा समय प्राप्त हो गया अनेक धन्यवाद ! सम्मेलन का प्रचार अच्छा रहा यद्यपि मथुरा वाला अधिवेशन संख्यात्मक दृष्टि से हमारे से

बढ़कर था परन्तु कदाचित गुणात्मकता में हमारा ही श्रेष्ठ रहा तथा इसका प्रचार भी उससे कहीं अधिक रहा।

ब्रज भारती का भाद्रपद अंक मिल गया होगा। प्राचीन भारत में हिन्दू राज्य नामक मेरी पुस्तक छप गई है। उसकी एक प्रति सेवा में भेजी है। इस पर अपने विचार लिखें।

विदुर कुटी का साहित्य मेरे पास आ गया है उनकी स्मारिका के लिए कुछ लिखूँगा। विज्ञापन हम किस संस्था का दें ? हमारी संस्था तो स्वयं ही अभाव-ग्रस्त है। अधिग्रहण सम्बन्धी पत्र प्राप्त हो गया अधिनियम (Award) सुनाने के पूर्व ३८७००) और माँग रहे हैं न जाने ईश्वर कैसे पार लगावेगा। आशा है आप स्वस्थ एवं सानन्द हैं।

आपका
बृन्दावनदास

डा० राजेन्द्र रंजन के नाम

(१५७)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २०-१२-७०

प्रियवर रंजन जी !

पत्र आपका यथा समय प्राप्त हो गया था। धन्यवाद ! आजकल मैं चतुर्वेदी जी के पत्र संग्रह पर भूमिका लिख रहा हूँ। लगभग ४० पृष्ठ के बैठेगी। हिन्दी में पत्र साहित्य की बड़ी कमी है। चतुर्वेदी जी ने ६०-७० हजार पत्र तो लिखे ही होंगे और ऐसे भी सौभाग्यशाली बन्धु हैं जिनमें से प्रत्येक को उन्होंने जीवन में तीन-तीन सौ, चार-चार सौ पत्र लिखे हैं और वे पृथक-पृथक रूप से एक-एक संग्रह प्रकाशित करने को सक्षम हैं। मेरा संग्रह अग्रगामी होगा यदि यह उन बन्धुओं को आकर्षण उत्पन्न कर सके और उन्हें अपने-अपने संग्रह को प्रकाशित करने को प्रेरित कर सके तो मैं अपने प्रयास को धन्य मानूँगा। एक संग्रह में दो तीन सौ पत्रों से अधिक होना सम्भव नहीं।

आशा है आप सानन्द है। मथुरा कब तक आओगे ? ब्रज-भारती का अङ्क आपके घर पहुँच गया है।

आपका
बृन्दावनदास

(१५८)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २६-१२-७०

प्रियवर रंजन जी !

पत्र आपका मिला। धन्यवाद ! नथाराम जी पर मैं लेख लिखकर आपको भेज चुका हूँ। आपने ठीक लिखा कि एक-एक रात्रि में ही लेख तो मैंने कई-कई लिख भेजे हैं। प्रस्तुत लेख तथा साहित्य परिचय आगरा के लिए लेख ८, ८।। से ११।।, १२ की रात्रि कालीन बैठक में दोनों एक दिन लिखे गये थे। इसी प्रकार कृष्णानन्द गुप्त पर लेख भारती वालों के आग्रह पर भेजा था, परन्तु उस पर तो चरितनायक के सहित डा० बनारसीदास जी चतुर्वेदी प्रभृति श्रद्धेय बन्धुओं के अनेक पत्र आये हैं तथा मुझसे अपेक्षा की जा रही है कि मैं उस लेख को ब्रज भारती के आगामी अङ्क में पुनर्मुद्रित करूँ। श्री रामशंकर द्विवेदी उरई वालों ने पुस्तक में संस्मरणात्मक निबन्ध पढ़कर अनुरोध किया है कि मैं अधिक से अधिक संस्मरण लेख लिखकर उनको भी पुस्तकाबद्ध करूँ। परन्तु समय कम और काम अधिक।

शेष सब कुशल है। लेख पहुँच गया होगा।

शुभेच्छु
वृन्दावनदास

(१५९)

प्रकाश भवन,
मथुरा. १४-७-७१

प्रिय रंजन जी, सप्रेम नमस्कार !

आपका पत्र मिला। धन्यवाद ! ४ दिनों से नेत्र व्याधि से पीड़ित हूँ। कल कुछ आराम था सो इतिहास के दो फार्म के प्रूफ देख डाले। इससे फिर जोर पड़ गया और पलक सूज गया। अब विश्राम कर रहा हूँ और जब तक पूर्ण रूप से नीरोग नहीं हो जाऊँगा आँखों से कोई काम नहीं लूँगा। यह पत्र मैं बोलकर अपने पौत्र चि० ब्रजेश कुमार से लिखवा रहा हूँ। पत्रों की पुस्तक जिल्द बन्दी में है। करीब १५ दिन लग जायेंगे। इतिहास की पुस्तक छपना शुरू हो गया है। नाम रखा है 'प्राचीन भारत में हिन्दू राज्य'। दो फार्म छप चुके। ब्रज भारती के लेखों का सम्पादन करूँगा। क्या उस संग्रह का नाम ब्रज भारती सुधासार ठीक रहेगा। मुझे आँख ठीक होने पर लखनऊ, अयोध्या

जाना है। वहाँ से लौटकर व्रजभारती के भाद्रपद अङ्क को छपवाऊँगा। मैटर तो तैयार है ही। आशा है आप स्वस्थ एवं सानन्द हैं।

शुभेच्छु
वृन्दावनदास

(१६०)

प्रकाश भवन,
८-११-७१

बन्धुवर रंजन जी,

आपका पत्र तथा मनमोहक सुन्दर विशेषाङ्क। आप ढेर-बधाई के पात्र हैं। 'आशा' के इस अंक में आपकी साधना फलवती हुई है। मेरी धारणा है कि श्रद्धेय पं० बनारसीदास जी चतुर्वेदी की प्रेरणा से अद्यतन प्रकाशित समस्त विशेषाङ्कों में इस अंक का स्थान बहुत ऊँचा होगा।

वस्तुत: मैं आपको इस विषय का ज्ञाता मानता हूँ। जनपदीय आन्दोलन के कार्यकर्त्ता पुराने पड़ गये हैं. कुछ पहले ही खिसक गये हैं, मुझे विश्वास है कि किसी दिन आप ही इस ध्वजा को धारण करेंगे।

इसकी समीक्षा ब्रज भारती में अवश्य प्रकाशित होगी। मार्गशीर्ष अंक तो छप चुका। अन्तिम फार्म शायद परसों तक छप जाये।

शेष सब कुशल है। मथुरा कब तक आओगे ?

शुभेच्छु
वृन्दावनदास

(१६१)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ७-२-७२

बन्धुवर रंजन जी !

सरस्वती के दिसम्बर अंक में आपके अंक की बड़ी सुन्दर समीक्षा निकली है। निःसन्देह आप बधाई के पात्र हैं। आपसे भी अधिक आपके सुरुचि सम्पन्न प्रवन्धक महोदय और प्रधानाचार्य जी धन्यवादार्ह हैं।

मैंने आपके दिये सभी अंक यत्र-तत्र भेज दिये। अभी कई सज्जन माँग रहे हैं। श्रद्धेय चतुर्वेदी जी लोगों को मुझसे मँगाने के लिए कह देते हैं, यह उनकी कृपा है। पर मैं चीज कहाँ से लाऊँ ? आप कृपा कर ५ प्रतियाँ मुझे और दें जिससे मैं लोगों की माँग पूरी कर सकूँ।

जनपदीय अङ्कों पर पुरस्कार योजना का सुझाव बढ़िया है। कुछ और

काम होने दीजिये या कुछ समय बाद इस पर घोषणा कर ही देंगे। N.C.E. R.T. किस चिड़िया का नाम है मैं नहीं जानता।

शेष कुशल है।

आपका
वृन्दावनदास

(१६२)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ४-४-७२

बन्धुवर रंजन जी, नमस्कार !

आपके दो पत्र मिले। वादे-वादे जायते तत्वबोधः। आपकी शंकाएँ वही हैं जो चिन्तनशील व्यक्तियों के मस्तिष्क में सामान्यतया उत्पन्न होती हैं।

मेरी मान्यता है कि हमारी संस्कृति महान हैं तथा प्राचीनतम भी है। ऐसी बात नहीं कि विश्व में अन्य संस्कृतियों का जन्म ही नहीं हुआ। ईरानियन, बैबिलोनियन, मिश्र, रोमन और यूनानी संस्कृतियाँ भी विश्व के अनेक भागों में व्याप्त रहीं। देवी देवताओं की उपासनाओं से सम्बन्धित ये सभी संस्कृतियाँ हमारी सस्कृति के ही विभिन्न रूपों में अवस्थित थीं। परन्तु ये सब संस्कृतियाँ विलुप्त हो गईं और इनका नाम लेवा आज कोई नहीं अतः हमारे पूर्वजों (हम हिन्दुओं के पूर्वजों) की संस्कृति ही उस काल में पनपती रही जिसका कि सम्बन्ध हमारे इतिहास से है। जो संस्कृति अक्षुण्ण रही वह उन लोगों की ही थी जिनके वंशज आज हम हिन्दू कहलाते हैं। यदि वंशज हिन्दू हैं तो उनके पूर्वज भी हिन्दू ही हुए। कोई भी व्यक्ति अपना नाम बाल्यकाल में न रखकर बुढ़ापे में रख सकता है, अथवा कोई व्यक्ति किसी भी अनुकूल दूसरे नाम से अन्यों द्वारा सम्बोधित किया जा सकता है। इस सम्बोधन में कालक्रम बाधक नहीं हो सकता।

अब रही मुसलमानों और ईसाइयों के भी उन्हीं पूर्वजों के वंशज होने की बात। मुसलमान और ईसाई अपने को सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में कभी हिन्दुओं से आत्मसात् नहीं करते। वे दृढ़ता के साथ अपने को हिन्दू धर्म और संस्कृति से पृथक् मानते हैं। जब पूर्ण का एक भाग अपने को अलग समझे तथा अपना अलग ही नाम धारण करे तो शेषांश का भी तो नाम होगा, उसकी भी तो कोई संज्ञा होगी। मुसलमानों और ईसाइयों के अस्तित्व की पृथक्ता हिन्दुत्व की विद्यमानता घोषित करती है। मुसलमान और ईसाइयों का हिन्दुओं से अपने

आपको पृथक् समझना ही हिन्दुत्व के अस्तित्व का अनिवार्य और अवश्यम्भावी परिणाम है। स्थिति के इस संदर्भ में जब उस काल में मुसलमान और ईसाइयों का अस्तित्व ही न था तो पृथक्तावादी थे ही नहीं और परिणामतः सभी वे थे जो मुसलमान और ईसाई कदापि न थे अर्थात् हिन्दू थे।

प्राचीन भारत में अनेक विदेशी भारत पर आक्रामक के रूप में आये। शक, हूण, ईरानिगन, सीथियन आये और हिन्दुओं में घुल-मिल गये। फिर अरब और तुर्क आये परन्तु वे हिन्दुओं में कभी न मिले, यदि मिलना चाहते तो उनको कोई रोक नहीं थी। प्राचीन भारत का इतिहास केवल हिन्दुओं का इतिहास है। अन्य धर्मावलम्बी तो उस काल में आक्रान्ता के रूप में आये और उनसे उसी स्थिति में निपटा भी गया। मैंने प्राक्कथन में कुछ स्पष्टीकरण कर दिया है।

भारतीय तो सब हैं और सबको भारतीय होने का अधिकार भी है परन्तु कुछ लोग यह कहें कि हम तो मुसलमान या ईसाई हैं तो बाकी बचे लोग क्या कहें।

किसी भी देश का इतिहास उसके निवासियों की संस्कृति से भी सम्बन्ध रखता है। संस्कृति का मनुष्य से अविच्छिन्न सम्बन्ध है। उसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती।

पुस्तक छप चुकी। उसका नाम बहुत सोच-विचार के यह रक्खा गया है। मुझे उसमें सार्थकता दिखाई देती है। किमाधिकम्। आशा है आप स्वस्थ एवं सानन्द हैं। मथुरा कब आओगे ?

आपका

वृन्दावनदास

(१६३)

प्रकाश भवन

मथुरा. २०–७–७२

बन्धुवर रंजन जी !

कृपा पत्र मिला। धन्यवाद। आपने अपने पत्र में मौलिक प्रश्न उठाये हैं और वे वर्तमान भाषायी परिस्थिति एवं सन्दर्भों में महत्वपूर्ण भी हैं।

ब्रजभाषा सरस, मधुर होने के साथ-साथ प्राचीन भी है। एक समय था जब कि इसका समस्त उत्तर भारत में विशेष कर और शेष भारत में सामान्यतया महत्वपूर्ण स्थान था। परन्तु समय ने पलटा खाया और आज

उसके महत्वपूर्ण स्थान पर जिस पर कि वह किसी समय थी राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रतिष्ठित हो गई है आपके उठाये हुए प्रश्नों का हमें इसी सन्दर्भ में अध्ययन करना है।

सुमधुर ब्रजभाषा में जो लालित्य है, सरसता अथवा प्राणवत्ता है वह सर्वतोभावेन उसके काव्य में उभर कर आई है। मेरी क्षुद्रमति से काव्य सृजन में इसकी होड़ कोई भी भारतीय लोकभाषा तो क्या हिन्दी भी नहीं कर सकती। ब्रजभाषा का कवि भले ही अपनी भाषा को छोड़कर किसी अन्य लोक भाषा में काव्य सृजन न करे लेकिन ऐसे कवि सहस्त्रों ही हैं जो अपनी-अपनी लोकभाषा में श्रेष्ठ कविता लिखते हुए ब्रजभाषा को भी अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम बनाते हैं। ब्रजभाषा में अपने भावों को सरस अभिव्यक्ति प्रदान करने का लोभ वे संवरण कर ही नहीं सकते। इस भावपूर्ण, अनियन्त्रित सहज आकर्षण के परिप्रेक्ष्य में वे बन्धु जो ब्रजभाषा में कविता के सृजन का आग्रह करते हैं कुछ गलत कहते प्रतीत नहीं होते।

ब्रजभाषा में जो अपार साहित्य है और जिसकी मान्यता हिन्दी साहित्य की निधि के रूप में है उसका संरक्षण यदि हम न कर सके अथवा उस दिशा में त्रुटियाँ ही करते रहे तो हम ब्रजभाषा ही नहीं हिन्दी के हितों की उपेक्षा करने के भी दोषी होंगे। किसी भी वस्तु के संरक्षण के साथ उसका संवर्द्धन और उन्नयन भी जुड़ा हुआ है। संरक्षित का संवर्द्धन और उन्नयन की अविरल धाराओं से सिंचन उसको प्राणवान् बनाता है। जलाशय के संचित जल को यदि नये स्रोतों से प्रवाहमान न किया जाय तो एक भयंकर सड़ाँद पैदा होती है। स्थिति के इस सन्दर्भ में तथा ब्रजभाषा के सेवा-कार्य में गतिशीलता लाने की दृष्टि से ब्रजभाषा का संरक्षण संवर्द्धन और उन्नयन अनिवार्यतः अपेक्षित है। मेरी यह निश्चित धारणा है कि यह हिन्दी के भी हित में है कारण ब्रज-भाषा हिन्दी के ही सर्वाधिक सन्निकट है। प्रत्येक भाषा के साथ एक संस्कृति भी जुड़ी होती है। हिन्दी के साथ जिस महान् संस्कृति को आबद्ध करने की कल्पना की जा सकती है ब्रजभाषा उसकी किन्हीं अंशों में संवाहिका है। कैसा अटूट सम्बन्ध है?

इतना कहने के बाद अब मैं अपना विचार व्यक्त करने की दृष्टि से आपके पत्र की पहली चार पंक्तियों को उद्धृत करता हूँ। "कुछ विद्वानों की धारणा है कि ब्रजभाषा एक स्थानीय बोली मात्र है उसमें साहित्य सृजन करना अपने कृतित्व को एक संकुचित सीमा में बाँधकर रखना है। यह संकीर्णता छोड़कर ब्रज के साहित्यिक को हिन्दी में सृजन करना चाहिये।"

इन पंक्तियों में जिस सीमा का उल्लेख है उसको मैं मानता हूँ। सीमा का तो यह स्वभाव ही है कि वह संकुचित स्थिति को उत्पन्न करती है। सीमा संकोच की जननी है। परन्तु सीमाएँ बड़ी पवित्र भी होती हैं। उनसे शुभ्र मर्यादाऐं जुड़ी होती हैं। मेरे मत से ब्रजभाषा के साहित्य सृजन में संकीर्णता और संकोच की यह कल्पना सर्वथा त्याज्य है।

अब मैं आपके पत्र की अगली पाँच पंक्तियाँ लेता हूँ जो इस प्रकार हैं। "इनके विपरीत कुछ लोग कहते हैं कि ब्रजभाषा एक करोड़जन की भाषा है, उसमें नया साहित्य सृजन जनता के अधिक समीप होगा। ये लोग यह भी कहते हैं कि हमें अपना समस्त कार्य-व्यवहार ब्रजी में ही करना चाहिये। ये लोग गोष्ठियों, सभाओं में ब्रजभाषा बोलने पर ही जोर देते हैं। इस सम्बन्ध में आपकी क्या धारणा है ?"

ब्रजभाषा में साहित्य सृजन हो इसमें दो मत नहीं हो सकते। प्रत्येक भाषा का साहित्य समृद्ध हो इसमें क्या आपत्ति हो सकती है। आजकल लोक-भाषाओं के साहित्य-परिष्कार की एक लहर चल पड़ी है। ब्रजभाषा उससे अछूती नहीं रह सकती। सारे देश ने एक स्वर से हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार कर लिया है। हिन्दी राष्ट्रभाषा के रूप में फले,फूले और विकसित हो इसे सभी देशवासी जिनमें ब्रजभाषा-भाषी भी सम्मिलित हैं चाहते हैं। इसलिए हम सबको अपने कार्य-व्यवहार, सभा गोष्ठियों आदि में हिन्दी को ही व्यवहृत करना है। हिन्दी के स्थान पर ब्रजभाषा के व्यवहार का आग्रह एक प्रकार से हिन्दी के प्रति प्रतियोग की भावना का सूचक है जो कि गर्हित और अवांछनीय है। हिन्दी लोकभाषाओं की नवनीत रूपा है। हिन्दी का वर्तमान स्वरूप सभी लोकभाषाओं (जिनमें ब्रजभाषा भी सम्मिलित है) के कार्य-कर्ताओं की तपः पूत साधना का फल है। यदि कार्य-व्यवहार और सभा गोष्ठियों में ब्रजभाषा का ही व्यवहार करना था तो हिन्दी को राष्ट्रभाषा काहे को घोषित किया और इसके लिए क्यों मरे मिटे। राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी का कोई विकल्प नहीं। यह हमारी राष्ट्रीय एकता की कड़ी है अतः इसके प्रति प्रतियोग अथवा प्रतिस्पर्द्धा की भावना असह्य है।

अब आपके अन्य प्रश्नों का उत्तर इस प्रकार है।

पहला प्रश्न, "क्या आप सोचते हैं कि नवयुग की सूक्षतम मनोविश्लेषणात्मक वैज्ञानिक तथा समाज शास्त्रीय व्यंजनाऐं ब्रजभाषा में अभिव्यक्त की जा सकती हैं।" मेरा उत्तर है "नहीं" उपरोक्त सभी तथा अन्य प्रकार की व्यंजनाओं की अभिव्यक्ति के लिए हमने हिन्दी को ही चुना है और उसे इसके

लिए तैयार कर रहे हैं। आप आगरा के प्रसिद्ध डा० रामनारायण शर्मा को जानते ही होंगे। कल वे कह रहे थे कि अँग्रेजी चिकित्सा शास्त्र की अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति है, उसे आप हिन्दी के माध्यम से कभी प्राप्त नहीं कर सकते। वेदों के परिनिष्ठित ज्ञान का सन्देश तो संस्कृत भाषा ही दे सकती है। इसी प्रकार कानून तथा चिकित्सा का अगाध साहित्य अंग्रेजी में है जिसे उस सौन्दर्य, दक्षता और लोकप्रियता के साथ हिन्दी में कभी अवतरित नहीं किया जा सकता। प्रत्येक भाषा अपनी विशेषताएँ तथा अपना विशिष्ट साहित्य रखती है। हम अपनी भाषा में उन विशिष्टताओं को आत्मसात् करने में चेष्टारत रहें. प्रयास करते रहें बड़ी अच्छी बात है परन्तु अपने इन प्रयासों में हम उन भाषाओं की जिनसे हम स्वयं ही कुछ लेकर अपनी भाषा को समृद्ध करने की चेष्टा कर रहे हैं भर्त्सना नहीं कर सकते। ऐसा करना हमारी हीनता का द्योतक होगा।

दूसरा प्रश्न, 'क्या आप सोचते हैं कि ऐसे आधुनिकतम विषयों को अभिव्यक्त करने के लिए वर्तमान ब्रज शब्दावली से काम चल सकता है।" उत्तर, "नहीं, इसका उत्तर ऊपर आ चुका है। अभी ऐसे अनेक विषय हैं जिनकी अभिव्यक्ति के लिए अँग्रेजी के मुकाबले हिन्दी भी तैयार नहीं हो पाई है ब्रजभाषा से तो वह आशा दुराशा मात्र है।"

तीसरा प्रश्न, "क्या आप सोचते हैं कि संस्कृत या अँग्रेजी की शब्दावली को आत्मसात् करके ब्रजभाषा के स्वरूप और प्रकृति को सुरक्षित रक्खा जा सकता है।" उत्तर "कदापि नहीं, ऐसा करके तो हम उसे हिन्दी ही बना देंगे जो कि पहले से बनी हुई है। आवश्यकता इस बात की है कि ब्रजभाषा का स्वरूप भी न बिगड़े और उसके साहित्य का संरक्षण और संवर्द्धन भी होता रहे।

सारांश यह है कि हम ब्रजभाषा के कार्यकर्ता अपनी मातृभाषा के प्रति अपने कर्तव्य से कभी विमुख न हों। उसके साहित्य के संरक्षण, संवर्द्धन और उन्नयन में प्रयत्नशील रहें। हमें ब्रजभाषा का काम तो करना है परन्तु हिन्दी के प्रतियोग में अथवा उसके हितों का बलिदान करके कदापि नहीं। हमें सहयोग और समन्वय की भावना से भाषा की समस्याओं को हल करना है।

मैं इस पत्र को सासनी भेज रहा था परन्तु श्री भगवानदत्त जी से विदित हुआ कि आप आजकल मथुरा ही आये हुए हैं।. अतः घर पर भेज रहा हूँ। आपका स्वास्थ्य कैसा है?

आपका

वृन्दावनदास

(१६४)

प्रकाश भवन,
मथुरा. १-२-७३

प्रिय रंजन जी,

आपका कृपा पत्र मिला। धन्यवाद ! आपकी लौटाई हुई पुस्तकें यथा-विधि मिल गईं। विषवृक्ष आप ले आवेंगे आप लिख रहे हैं।

लोकशास्त्र पर लेख अवश्य शीघ्र ही लिखूँगा। यहाँ संस्थाओं के लोग मुझे उत्सवों में भाग लेने के लिए बहुत घेरते हैं और इसमें मेरा बहुत सा समय नष्ट हो जाता है। जने-जने का मन राखते वेश्या रह गई बाँझ एक अश्लील उक्ति है। लेकिन है बावन तोले पावरत्ती ठीक। आपसे कभी कोई गलती होने का प्रश्न ही नहीं। आप एक सौम्य और समझदार हिन्दी-सेवी हैं।

मैं चाहता हूँ कि चौदह तारीख के भोज में आप भी सम्मिलित हों। मेरे पिछले पत्र का उत्तर देना।

शेष सब कुशल है। प्रधानाचार्य जी को प्रणाम कहिये। उनका सौम्य व्यवहार मुझे सदैव स्मरण रहेगा।

आपका
वृन्दावनदास

(१६५)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २३-७-७३

बन्धुवर रंजन जी !

आपका १०-७-७३ का कृपापत्र यथा समय मिल गया था। मैं १ महीना १० दिन की अपनी बम्बई यात्रा के उपरान्त ता० २० जुलाई को मथुरा लौटा हूँ। वहाँ पर तीन विवाहित लड़कियों और दो पुत्रों के परिवार रहते हैं। अतः पारिवारिक बन्धनों के कारण वहाँ पहुँचने पर कुछ समय लग ही जाता है। जिसमें तो अबकी बार एक दौहित्र का विवाह भी था।

अन्तर जनपदीय परिषद् को प्रगति देने की सलाह अत्युत्तम है। जो कुछ बनता है ब्रज भारती के माध्यम से उसकी सेवा कर रहा हूँ, यदा-कदा लेख भी लिख देता हूँ। अपने तीन-चार अध्यक्षीय भाषणों में भी मैंने उसका पुष्कल उल्लेख किया है जिस पर अनेक समाचार पत्रों ने सन्तोष जनक टिप्पणियाँ दी हैं। योगी के सम्पादक श्री राम पाण्डे जी के सम्पादकीय को

तो हमने ब्रज भारती के ज्येष्ठ अङ्क में अविकल उद्धृत भी कर दिया है। आपने पढ़ा होगा।

श्रद्धेय बनारसीदास जी चतुर्वेदी ने आपको लिखे अपने पत्रों की प्रतिलिपि हमें भी भेजने की कृपा की है। उससे आपके द्वारा इस दिशा में किये हुए कार्य का बोध होता है।

आप मथुरा कब आवेंगे ?

आपका
वृन्दावनदास

(१६६)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ८–२–७४

बन्धुवर रंजन जी !

आपके कई पत्र एक के बाद एक आये और प्राप्त हो गये, धन्यवाद ! मैं परसों कार्यवशात् लखनऊ चला गया था, आज आ गया हूँ।

मण्डल भवन में लोक संग्रहालय स्थापित करने का आपका प्रस्ताव बहुत सुन्दर है, इसकी अवश्य चेष्टा करेंगे। सम्प्रति भवन पर अधिकार नहीं हो पाया है। कतिपय दुष्चक्री लोगों ने उस पर अनधिकृत रूप से कब्जा कर रक्खा है। वे तो पुलिस कार्यवाही से ही निकलेंगे जिसके लिये हम प्रयत्नशील हैं।

झाँसी वाला सम्मेलन अपना वाला ही है। अन्तरजनपदीय परिषद् की एक बैठक वहाँ भी कर लेंगे, मैं श्रीधर जी शास्त्री संयोजक को लिख रहा हूँ। आप झाँसी जरूर चलें, वहाँ पर लोगों को घेर बटोर कर जनपदीय आन्दोलन पर कुछ कर ही लेंगे। अधिवेशन ३, ४ मार्च को है।

आचार्य पं० पद्मसिंह शर्मा का स्मृति समारोह ६, ७ अप्रेल को हरिद्वार में हो रहा है श्री रमेशचन्द्र जी दुबे इसके कर्ताधर्ता है। मैने उन्हें लिखा है कि एक बैठक जनपदीय आन्दोलन पर विचार करने को भी कर लें। वे इस प्रस्ताव को कार्य समिति में जो १० फरवरी को होने वाली है रख रहे हैं। उनका उत्तर आने पर आपको तदनुसार सूचित करूँगा। श्री कुलदीपनारायण राय प्रभृति जनपदीय कार्यकर्ता बन्धुओं को भी मैं हरिद्वार के विषय में अवगत कर चुका हूँ, वे सहमत हैं। आप वहाँ भी चलें।

आपका ग्रन्थालोचन शीर्षक लेख फाल्गुन अंक में छप गया है। ज्ञान तरंगिणी की समीक्षा उसके अन्तर्गत है। आप अनिल कुमार राय जी आंजनेय ग्राम उजियार पो० कोरण्टाडीह जिला बलिया को लोकशास्त्र अङ्क की एक

प्रति अवश्य भेज दें। यदि आप न भेज सकें तो जब आवें तब लेते आवें, मैं भेज दूँगा। वे उसको प्राप्त करने के अधिकारी व्यक्ति हैं।

अमर उजाला में प्रकाशित जनपदीय आन्दोलन पर मेरा लेख आपको पसन्द आया यह जानकर प्रसन्नता हुई। आप तो जनपदीय शास्त्र एवं साहित्य के मर्मज्ञ हैं अतः आपकी पसन्द तो एक प्रकार का प्रमाण पत्र है जिसका मेरी दृष्टि में बड़ा मूल्य है। मैं आन्दोलन पर प्रकाशित सभी मतों का गम्भीर अध्ययन कर रहा हूँ तथा इस पर लिखते रहने का भी मैंने संकल्प कर लिया है। अनेक प्रकार से अब इस आन्दोलन को गतिशील बनाना ही है। सौभाग्य से इस समय आप, झड़प जी, आंजनेय जी, नरेश पाण्डेय चकोर, गणेश जी चौबे, रामनारायण जी उपाध्याय, जगदीश प्रसाद जी चतुर्वेदी, डा० सत्येन्द्र जी प्रभृति विद्वान् एव कर्मठ कार्यकर्ताओं का सक्रिय सहयोग हमें प्राप्त है, अतः कोई कारण नहीं कि यह आन्दोलन जोर न पकड़े। आवश्यकता केवल कार्यकर्ताओं को संगठित करने और उनके द्वारा व्यवस्थित कार्य करने की है। हमें अनेक बार बैठ कर परस्पर विचार विमर्श भी करना होगा।

'तटस्थ' के सम्पादक डा० कृष्णबिहारी जी सहल ने अनुरोध किया था कि "लोक साहित्य मर्मज्ञ डा० कन्हैयालाल सहल" शीर्षक से एक लेख तटस्थ को लिखकर भेजें। मैंने भेज दिया है, उसकी प्रतिलिपि आपको भेज रहा हूँ, आप इसे कन्या कालेज की पत्रिका अथवा अपनी पत्रिका आशा में छपवा दें। अमर उजाला में प्रकाशित लेख को कुछ और बढ़ा कर मैंने उसके कुछ पुनर्मुद्रण निकलवा लिये हैं एक पुनर्मुद्रण इस पत्र के साथ आपको भेज रहा हूँ तथा एक कन्या कालेज को। आप इसका भी मुद्रण करा सकते हैं।

लोक शास्त्र अंक पर सम्पादकीय में मैंने अपने विचार व्यक्त कर दिये हैं। प्रधानाध्यापक जी को बहुत शीघ्र पत्र लिखकर भेजूँगा।

शेष सब कुशल है, आप मथुरा कब तक आवेंगे ?

शुभेच्छु
वृन्दाबनदास

(१६७)

१५ आकाश दीप, डोंगरसी रोड, तीन बत्ती,
बम्बई—६. १५-२-७४

बन्धुवर रंजन जी,

हम ता० १२ को सन्ध्या के ७ बजे के बजाय रात्रि के २॥। बजे स्टेशन से चले। गाड़ी लेट थी। लेट होने के कारण भी सुनिये। डीलक्स गाड़ी

जो सुबह ८ बजे मथुरा से चलकर दिल्ली १०, १०॥ बजे पहुँचती है उस दिन रूँधी पर एक ऐक्सीडेण्ट के कारण भरतपुर में रुकी खड़ी रही और शाम को ६ बजे दिल्ली पहुँची। चूँकि वही गाड़ी वापिस आती है अतः १०॥ बजे रात्रि को गाड़ी चलने की आज्ञा दी गई अर्थात् गाड़ी की सफाई आदि के लिए ४॥ घण्टे नियत किये गये जब कि यह काम घण्टे दो घण्टे में भी हो सकता है। परन्तु हमारे देश में राष्ट्रीय चरित्र की बड़ी कमी है। कर्तव्यनिष्ठता तो कहीं निर्वासित कर दी गई है।

दिन में श्रद्धेय चतुर्वेदी जी की 'रेखाचित्र' नामक पुस्तक साद्यन्त पढ़ डाली। यह पुस्तक आपने पढ़ी है या नहीं ? यदि प्रांजल एवं मुहाविरेदार भाषा और प्रवाहमयी शैली का आनन्द लेना है तो चतुर्वेदी जी की इस पुस्तक को अवश्य पढ़िये। रेखाचित्र लिखने में चतुर्वेदी जी अपना सानी नहीं रखते। सम्पादक की समाधि और द्विवेदी जी का रेखाचित्र अत्युत्कृष्ट है।

चतुर्वेदी जी प्रतिभाशालिता का आधार परिक्रमशीलता को मानते हैं। वे कहते हैं कि प्रतिभाशाली वही व्यक्ति है जो नब्बे फीसदी परिश्रमशील है और दस फीसदी स्फूर्तिवान्। प्रतिभा सम्पन्नता परिश्रमशीलता का ही शुभ परिणाम है। बिना परिश्रम किये प्रतिभा आवेगी कहाँ से ?

आपको मेरा पत्र और लेख मिल गये होंगे। शायद वे आपकी अनुपस्थिति में पहुँचे हों और वे हमारे यहाँ से बजाय एक फरवरी के ४ या ५ को भेजे गये हों। मैं शायद उनकी मथुरा से रवानगी आपको गलत बता गया। आपको झाँसी जरूर पहुँचना है। मैंने वहाँ जनपदीय आन्दोलन सम्बन्धी विचार भी रखने को संयोजकों को लिख दिया है।

शुभेच्छु
वृन्दावनदास

(१६८)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ६–४–७४

बन्धुवर रंजन जी,

गो० माधवराय जी से पुष्टि पाथेय की एक प्रति आपके लिए भी प्राप्त हो गई है। उस ग्रन्थ की समीक्षा आपको करनी है।

सम्मेलन पत्रिका के नवीनतम अंक भाग ५९ संख्या ३ में 'हिन्दी में प्रकाशित लोक साहित्य की सूची' शीर्षक एक निबन्ध प्रकाशित हुआ है। यह निबन्ध ३० पृष्ठीय है और श्री रामनारायण उपाध्याय लिखित है। लेखक ने

सूची में ग्रन्थों, निबन्धों, पत्र-पत्रिकाओं आदि की नामावलियाँ दी हैं। यद्यपि उपाध्याय जी का प्रयास उत्कृष्ट एवं सराहनीय है मैं समझता हूँ उसमें इधर के क्षेत्र में प्रकाशित अनेक निबन्धों का कोई उल्लेख नहीं किया गया है। मेरी इच्छा है कि इस सूची के सन्दर्भ में छूटे हुए निबन्धों, ग्रन्थों और पत्र-पत्रिकाओं की एक सहायक सूची और बनवाई जाये और उसे सम्मेलन पत्रिका में प्रकाशनार्थ भेजी जाय, यदि पत्रिका न छापे तो हम उसे ब्रजभारती में प्रकाशित करेंगे। इस कार्य को आपसे अच्छा कोई नहीं कर सकेगा ऐसी मेरी धारणा है।

स्तम्भ ग्रन्थालोचन के लिए आपको जो कुछ भेजना हो एक सप्ताह में भेज देना। आपका मथुरा आगमन कब होगा ?

आपका
वृन्दावनदास

(१६६)

प्रकाश भवन,
मथुरा. १७-४-७४

बन्धुवर रंजन जी,

मैं आपकी इस बात से सहमत हूँ कि कम-से-कम २० साहित्यक बन्धुओं के मन में तो जनपदीय-आन्दोलन का महत्व समा ही जाये और वह सम्मेलन के फलस्वरूप आन्दोलन का मर्म समझकर उसको अग्रसारित करने का व्रत लेकर निकलें। आरम्भ में हमें गुण पर अधिक संख्या पर कम निर्भर करना है।

सम्मेलन मथुरा में अभी होना सम्भव नहीं है। हरिद्वार में आयोजन होगा ही, वहाँ ही इस मत के लोगों को इकट्ठा किया जाय। उनके नाम पहले तय कर लिये जाँय। आप मथुरा कब आ रहे हैं, अबकी बार इसकी रूपरेखा बना लेंगे तथा झड़प जी को तदनुसार अन्तिम रूप देते हुए लिख देंगे। मुझे आशा है कि २०, २५ सज्जन हरिद्वार में अवश्य इकट्ठे हो जायेंगे।

द्वारकेशलाल जी वाला ग्रन्थ हमने आपको आपके उन मित्र के हाथ भिजवा दिया जो हमें हमारी दो पुस्तकें दे गये थे।

आपका
वृन्दावनदास

(१७०)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ३०-४-७४

बन्धुवर रंजन जी,

आपके पत्र यथा समय मिलते रहे हैं। मेरी व्यस्तता तो आपकी दृष्टि में है ही। ग्रन्थालोचन स्तम्भ के लिए प्रेषित सामग्री मिल गई। उसका उपयोग किया जा रहा है।

भाई रमण शाण्डिल्य को आपके पत्र भेजे जा चुके हैं और उनकी पहुँच भी आ गई है। रमण जी मई और जून में अपने गाँव में रहेंगे। उनका पता यह है—श्री रमण शाण्डिल्य, गाँव—जवाही, डाकखाना—राधाउर, द्वारा—सुरसंड, जिला—सीतामढ़ी (बिहार)।

आप जो कुछ भेजें इसी पते पर।

हरिद्वार वाले समारोह की तिथि ३० मई नियत होने वाली है। उसी के आगे-पीछे वहीं अन्तर जनपदीय परिषद् की बैठक रखने का विचार है। मैं इस सम्बन्ध में झड़प जी, आंजनेय जी तथा दुबे जी से पत्र-व्यवहार कर रहा हूँ।

अन्तिम निश्चय होने पर आपको तत्क्षण सूचित करूँगा।

जनपदीय आन्दोलन का श्रीगणेश करना ही है। टूटी हुई कड़ी को जोड़ने का अवसर आ गया है। मैंने चतुर्वेदी जी से भी उनका परामर्श माँगा है। मथुरा कब आ रहे हैं?

शुभेच्छु
वृन्दावनदास

श्री राधेबिहारीलाल सक्सेना के नाम

(१७१)

प्रकाश भवन,
मथुरा. १५-५-६७

प्रिय सक्सेना जी!

आपके प्रचार मन्त्री श्री देवकीनन्दन जी कुम्हेरिया का निमन्त्रण पत्र आया था। यह परम हर्ष की बात है कि अबकी बार आप लोगों ने कवि सम्राट भक्त शिरोमणि सूरदास जी की जयन्ती बड़े समारोह पूर्वक मनाई। वास्तव में चन्द्र सरोवर एवम् पारासौली तो ऐसे स्थान है जिनका सौभाग्यवश आपको सानिध्य प्राप्त है और जहाँ यह उत्सव मनाया ही जाना चाहिये।

उस दिन स्थानीय उत्सवों में भाग लेने के कारण मैं वहाँ पहुँचने में, असमर्थ रहा इसका मुझे कुछ खेद ही रहा। सधन्यवाद !

आपका

वृन्दावनदास

(१७२)

प्रकाश भवन,

मथुरा. २-१-६७

प्रिय सक्सेना जी, नमस्कार !

कृपा पत्र तथा लेखादि मिले। धन्यवाद ! ब्रजभारती का मार्गशीर्ष (नवीनतम) अङ्क छप चुका है। बाइंडिंग में है। ४, ५ दिन में आपकी सेवा में पहुँचेगा। आपकी सामग्री का अगले अङ्क में अवश्य यथासाध्य उपयोग करेंगे।

हमारी हिन्दी सम्वर्धिनी योजना का सर्वत्र बड़ा स्वागत हुआ है, वह सत्वर लोकप्रियता प्राप्त कर रही है। राष्ट्रभाषा सन्देश ने तो उसे अविरल अपने अङ्क में उद्धृत किया था। कई विद्वानों ने शुभ कामनाएँ और कई ने उपयोगी लेख भेजे हैं। वे हमने मार्गशीर्ष के अङ्क में प्रकाशित भी किये हैं।

गोवर्धन साहित्य परिषद् की स्थापना करने का आपका कार्य स्तुत्य है। शुभकामनाओं के साथ।

आपका

वृन्दावनदास

(१७३)

प्रकाश भवन

मथुरा. १३-२-६८

प्रिय राकेश जी, सादर नमस्कार !

पत्र आपका मिला। डा० रमेशचन्द्र चतुर्वेदी सम्पादक ब्रज प्रदेश को लिख दिया है वे आपको अवश्य पत्र की कुछ प्रतियाँ भेज देंगे। आप उन्हें उनके आगरा के पते पर लेख भेज सकते हैं।

आपके इतिहास की भूमिका अवश्य लिख देंगे। इतिहास जब छप जाय तब उसकी एक प्रति मेरे पास भेज देना, मैं भूमिका लिख दूँगा।

जगदीश जी मुझसे आगरा मिलते रहते हैं। मैं वहाँ सत्यनारायण अर्धशताब्दी समारोह कार्य समिति की बैठकों में जाता रहता हूँ यह समारोह १४, १५, १६ अप्रेल को आगरा में होगा। विस्तृत कार्यक्रम समय पर सबको भेजा जायगा। शेष कुशल है।

आपका

वृन्दावनदास

(१७४)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २७–६–६८

प्रिय राकेश जी, नमस्कार !

आपका कृपा पत्र यथा समय मिल गया था। सिकन्दराराऊ का समारोह सफल रहा। राजेश जी की मेहनत सफल हो गई। कवियों ने उनके साथ भाईचारे के नाते अच्छा सहयोग किया। यदि ऐसी ही भावना चलती रही तो साहित्यिक कार्यों में निःसन्देह प्रगति होगी। ब्रज भारती में मैंने सम्पादकीय स्तम्भ में इस पर लिखा है। ब्रजभारती आपके पास शीघ्र पहुँचेगी।

पाण्डे जी मुझसे नहीं मिलें। मैं अपनी ओर से पत्र लिखना उचित नहीं समझता। वार्ता की प्रतिलिपि जब चाहें भेज देना या कभी इधर आओ तब लेते आना, जल्दी क्या है ? शेष कुशल है।

आपका—
वृन्दावनदास

श्री रामचरण हयारण मित्र के नाम

(१७५)

प्रकाश भवन,
मथुरा. १५-६-७५

बन्धुवर श्री हयारण जी,

कृपा पत्र तथा उदय और विकास का अनुक्रम मिला। अनेक धन्यवाद। आपके प्रकाशित और अप्रकाशित साहित्य की तालिका देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई। आपने सरस्वती के मन्दिर में बैठकर सतत साधना की है। एक कुशल माली की भाँति साहित्य उद्यान को पुष्पित और पल्लवित किया है।

चि० चन्द्रकान्त संकलन कार्य में रत हैं। मेरा उनको आशीर्वाद ! उनकी लगन और निष्ठा से साहित्यिक जगत के समक्ष एक सुन्दर वस्तु प्रस्तुत हो जायगी।

समस्त शुभकामनाओं के साथ।

आपका
वृन्दावनदास

(१७६)

प्रकाश भवन,
मथुरा. १९-६-७५

वन्धुवर मित्र जी,

आपका कृपा पत्र मिला। मैं आपके पहले पत्र का उत्तर भेज चुका हूँ, शायद वह अब तक मिल गया होगा। चि० चन्द्रकान्त बड़ा सफल प्रयास कर रहे हैं। आपकी साहित्य सेवा महनीय है और जिस प्रकार उसे क्रमबद्ध और वर्गीकृत किया जा रहा है वह पद्धति उत्कृष्ट है उसमें किसी हस्तक्षेप की आवश्यकता नहीं। आप इस कार्य को पूरा करा लीजिये। यह साहित्य की एक अपूर्व निधि बनेगी।

आशा है आप सानन्द हैं। रमण शाण्डिल्य जी ने मेरे छः सौ से अधिक पत्र इकट्ठे कर लिए हैं। वे बड़े उत्साही एवं कर्मठ साहित्यिक व्यक्ति हैं।

आपका
वृन्दावनदास

श्री राम नगीना राय के नाम

(१७७)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ५-७-७४

बन्धुवर राय साहब,

कृपा पत्र तथा पत्रिका दोनों ही मिले। अनेक धन्यवाद! आपने मेरे तथा मेरी हिन्दी सेवा के सम्बन्ध में जो हार्दिक उद्‌गार व्यक्त किए हैं उनके लिए आभारी हूँ।

बक्सर में पुस्तकालय के लिए स्थान क्या बाजार के रुख पर मिल जायगा? पुस्तकें तथा कुछ आरम्भिक व्यय भेज देने के उपरान्त भविष्य के लिए क्या ऐसे उत्साही व्यक्तियों की समिति का गठन हो सकता है जो उसे चलाने का भार वहन कर लें। अल्पकालीन सेवक, मकान का किराया तथा दैनिक समाचार पत्रों का व्यय स्थानीय समिति वहन कर लेगी क्या? आदि बातें ऐसी हैं जिनका संकेत मैं कर चुका हूँ। आप इस पृष्ठभूमि में अपने प्रस्ताव पर पुनः विचार करके लिखें।

आपकी और सर्वश्री झड़प जी एवं आंजनेय जी की कर्मठता एवं हिन्दी-सेवा के प्रति उत्कट भावना के हम प्रशंसक हैं। 'चतुर्मुख' का प्रकाशन आप

महानुभावों की हिन्दी-सेवा-भावना का ज्वलन्त उदाहरण है। आप तीनों ही हिन्दी जगत् की बधाई के पात्र हैं।

आपके साक्षात्कार होने से बड़ी ही प्रसन्नता हुई। मैं तो इसे समारोह की एक उपलब्धि मानता हूँ। पत्रिका की समीक्षा की जाएगी। लेख आप तीन सप्ताह की अवधि में भी भेज सकते हैं। शेष फिर।

आपका
वृन्दावनदास

श्री रामनारायण उपाध्याय के नाम

(१७८)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २६-३-६८

मान्यवर उपाध्याय जी, सादर नमस्कार !

समारोह सम्बन्धी प्रथम पत्रक सेवा में प्रेषित है। विस्तृत कार्यक्रम भी शीघ्र भेजा जायगा।

पहिले दिन की अध्यक्षता पं० बनारसीदास जी चतुर्वेदी करेंगे। उसी दिन अन्तर्जनपदीय परिषद् की स्थापना भी कर ली जायगी। आप कृपा कर इस अवसर पर अवश्य पधारें। आपके शुभागमन से हमें प्रोत्साहन एवं मार्ग-दर्शन प्राप्त होगा।

आपका
वृन्दावनदास

(१७९)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ९-९-६८

प्रिय उपाध्याय जी !

आपका पत्र यथा समय मिल गया। धन्यवाद ! इस पत्र के साथ मण्डल द्वारा प्रचारित दो परिपत्र भेजे हैं।

कोश-निर्माण का कार्य आपने आरम्भ कर दिया यह बहुत ठीक है। सर्वश्री कृष्णानन्द जी और गणेश जी भी क्रमशः बुन्देली और भोजपुरी पर कार्य कर रहे हैं। यदि यह काम सुचारु रूप से सम्पन्न हो गया तो यह हिन्दी-जगत की एक ऐतिहासिक घटना समझी जायगी। ईश्वर से यही प्रार्थना है कि

वह इस महान् कार्य के लिए आवश्यक साधन जुटा दे और हमारे मार्ग में बाधाएँ उपस्थित न हों।

आशा है आप सपरिवार प्रसन्नता पूर्वक हैं।

आपका
वृन्दावनदास

(१८०)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ९-१०-७१

बन्धुवर उपाध्याय जी, प्रणाम !

कृपापत्र मिला। निमाड़ी मेले का कार्यक्रम भी। आभारी हूँ। मैं १८ सितम्बर को बम्बई, बंगलौर, मैसूर, तिरुपति, हास्पैट की यात्रा से बम्बई होता हुआ परसों ता० ७ को ही मथुरा वापिस आया हूँ। बम्बई और बंगलौर में मेरे पुत्र-पुत्रियों के परिवार रहते हैं। उनसे तथा स्थानीय साहित्यिक बन्धुओं से मिलकर आनन्द प्राप्त हुआ। मैसूर का दशहरा देखा और तिरुपति में भगवान् वेंकटेश्वर के दर्शन किये। हास्पैट में विशाल तुङ्गभद्रा बाँध देखा।

"निमाड़ी" मेले का आयोजन एक अत्यन्त स्तुत्य कार्य है। मध्यप्रदेश के साहित्यिक बन्धुओं ने लोकभाषाओं पर मेलों का आयोजन कर समूचे देश के समक्ष एक उदाहरण प्रस्तुत किया है। इन मेलों से लोक भाषाओं का एक भव्य स्वरूप उभर कर आयेगा और हम लोक भाषाओं के संरक्षण, संवर्द्धन और उन्नयन की दिशा में अभूतपूर्व सफलता प्राप्त करेंगे। हमें अपने चित्त से यह भ्रान्ति दूर ही कर देनी है कि लोक भाषाओं के परिष्कार से अथवा लोक-भाषाओं पर काम करने से हिन्दी को कोई हानि पहुँचेगी प्रत्युत तथ्य तो यह है कि इस प्रकार के कार्यों से हिन्दी का हित संवर्द्धन ही होगा। जिस लोक-भाषा का जितना परिष्कार होगा वह हिन्दी के उतनी ही समीप आवेगी। लोकभाषाओं की उन्नति हिन्दी की उन्नति है।

आप लोग इस अवसर पर जो प्रदर्शिनी आदि का आयोजन कर रहे हैं और उसमें लोक कला, प्रकाशित अप्रकाशित साहित्य, पाण्डुलिपियाँ लोकवाद्य, वेष भूषा, आभूषण, दर्शनीय स्थानों के छाया चित्र आदि का प्रदर्शन कर रहे हैं उससे लोकभाषा का एक आकर्षक चित्रमय जगत उपस्थित होगा और वह निःसन्देह दर्शकों पर एक अद्भुत प्रभाव छोड़ेगा।

राज्य के सूचना एवं प्रसारण मन्त्री श्री बाल कवि वैरागी का सहयोग परम सराहनीय है। लोकभाषाओं के पुनरुत्थान में उनका योगदान बहुमूल्य है।

मैं आप सभी बन्धुओं को हृदय से बधाई अर्पित करता हूँ।

ब्रज भारती में प्रकाशित टिप्पणी पर सहमति प्रकट करते हुए आपने जो सुझाव दिये हैं उनसे मैं सहमत हूँ। मैं निःसन्देह एक योजना केन्द्रीय शिक्षा मन्त्रालय के सम्मुख प्रस्तुत करूँगा तथा लोक-भाषाओं के पुनरुत्थान की दिशा में आयोजित कार्यक्रम में आपका नाम सर्वोपरि रहेगा इसमें कोई सन्देह नहीं है। यदि केन्द्रीय मन्त्रालय लोकभाषाओं की समुन्नति में कुछ रुचि रखता है तो उसे आप हमसे परामर्श और सहयोग लेना ही पड़ेगा। जब अपेक्षित निधि दिल्ली में है और हमें काम करना है तो हमें उनका द्वार खट-खटाना ही पड़ेगा। आशा है आप स्वस्थ एवं सानन्द हैं।

शुभेच्छु
वृन्दावनदास

(१८१)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ५–१०–७२

बन्धुवर,

कृपापत्र अभी अभी प्राप्त हुआ। ब्रजभारती के सम्पादन पर आपकी शुभकामनाएँ मेरा सम्बल हैं।

अन्तर्जनपदीय परिषद् की एक बैठक दो वर्ष हुए मथुरा में हुई थी। आपका सुझाव कि फिर एक बैठक बुलाई जाय परम स्तुत्य है। इस बहाने भेंट हो जायगी। निकट भविष्य में ही इस विचार को कार्यान्वित करने की चेष्टा करेंगे।

उत्तर प्रदेशीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन का एक अधिवेशन झाँसी में करेंगे, उसमें आपको कष्ट देंगे। मेरे विचार से वहाँ आप आसानी से पहुँच सकेंगे।

निमाड़ी लोक साहित्य, संस्कृति एवं कोष सभी कुछ एक ही ग्रन्थ में छपवा रहे हैं यह जानकर परम प्रसन्नता हुई। लोक साहित्य के क्षेत्र में आपका योगदान महनीय है। ग्रन्थ तैयार होने पर अवश्य भेजें। मेरे

हृदय पर तो वैसे ही आपकी, गणेश जी की और जगदीश चतुर्वेदी जी की अमिट छाप है। १५ दिन बाद पुनः स्मरण करा दें आपको अपना एक और ग्रन्थ प्राचीन भारत में हिन्दू राज्य भेजूँगा।

शेष कुशल है।

आपका
वृन्दावनदास

(१८२)

प्रकाश भवन,
मथुरा. १-११-७२

मान्यवर उपाध्याय जी, प्रणाम !

कृपा पत्र मिला। अनेक धन्यवाद ! अबकी बार अध्यक्षीय भाषण पर अनेक साहित्यिक बन्धुओं ने अनेक पत्र आशीर्वाद स्वरूप भेजे हैं। यह उनका सौजन्य है।

श्रद्धेय चतुर्वेदी जी का पत्र संग्रह आपको बहुत रुचा यह जानकर हर्ष हुआ। वस्तुतः यह प्रति आपके पास और पहले पहुँच जानी चाहिए थी।

प्राचीन भारत में हिन्दू राज्य की एक प्रति रजिस्टर्ड बुक-पोस्ट से भेज रहा हूँ। यह मेरी तीन वर्ष की साधना का फल है।

लोक साहित्य पर अधिकाधिक काम किस प्रकार हो, जनपदीय आन्दोलन को किस प्रकार आगे बढ़ाया जाय इन सब समस्याओं पर आप जैसे मर्मज्ञों से ही विचार विमर्श कर चला जा सकता है। देखिए, अबकी बार ऐसा अवसर निकालना ही है कि १०, १५ बन्धु बैठें और एक योजना बनावें। मैं उस अवसर की तलाश में हूँ और तब आपको कष्ट दूँगा।

शेष सब कुशल है। आप अपनी पुस्तकें अवश्य भेजें। कृपाभाव रक्खें।

आपका
वृन्दावनदास

(१८३)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ८-९-७३

मान्यवर उपाध्याय जी,

कृपा पत्र मिला। ब्रज भारती के सम्बन्ध में आपने जो भाव व्यक्त किये उनके प्रति अनुग्रहीत हूँ। जनपदीय परिषद् की कुछ सेवा ब्रज भारती के माध्यम से बन पड़ी है। यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि सासनी में होने

वाले सम्मेलन में आप अवश्य सम्मिलित होने का विचार रखते हैं। उस सम्मेलन में श्रीगणेश चौबे और रमण शाण्डिल्य को भी बुलावेंगे। अबकी बार इस सम्मेलन के अधिवेशन के बाद परिषद् में क्रियाशीलता लानी है।

आपके निमाड़ी साहित्य पर ग्रन्थ के मुद्रण की बात सुनकर परम प्रसन्नता हुई। उसमें कोश भी दे दिया है यह बहुत अच्छा किया। छपने पर प्रति भेजें।

आपका
वृन्दावनदास

(१८४)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २१-९-७३

मान्यवर उपाध्याय जी,

कृपा पत्र दिनांक १७-९-७३ हस्तगत हुआ। अपनी पुस्तक प्राचीन भारत में हिन्दू राज्य के सम्बन्ध में आपके विचार पढ़कर अत्यधिक प्रसन्नता हुई। कुछ अन्य मित्रों ने भी इसे ऐसे ही रूप में ग्रहण किया है। ठीक ही है, प्रायः प्रत्ययमाधत्ते स्वगुणेषूत्तमादरः।

आशा है आप सानन्द हैं।

आपका
वृन्दावनदास

श्री रामरंजन रसूलपुरी के नाम

(१८५)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २७-२-७१

मान्यवर रसूलपुरी जी!

मित्रवर गणेश जी ने अपने पत्र में आपके शुभ नाम की चर्चा की है। मैं उनका एतर्थ आभारी हूँ। यद्यपि अद्यतन आपसे सम्पर्क पत्र-व्यवहार के माध्यम से स्थापित न हुआ था मैं आपके नाम से भली-भाँति परिचित हूँ तथा आपके सारगर्भित लेखों को यदा कदा पढ़ता भी रहता हूँ। 'ब्रज भारती' अब नियमित रूप से आपके पास पहुँचती रहेगी। यदि आप सदृश अधिकारी विद्वानों के पास पत्रिका न पहुँचे तो मेरी दृष्टि में उसके प्रकाशन की सार्थकता ही संदिग्ध है।

आज आपको पृथक डाक से अङ्क ३ (जिसमें गणेश जी का लेख है) तथा अङ्क ४ (नवीनतम अङ्क) भेजे जा रहे हैं।

'उत्तर बिहार' नियमित रूप से मिल रहा है। अनेकानेक धन्यवाद ! कृपा भाव रक्खें।

आपका
वृन्दावनदास

(१८६)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ३-६-७१

मान्यवर रसूलपुरी जी, प्रणाम !

आपके पत्र द्वारा स्वागत एवं अभिनन्दन प्राप्त कर कृतकृत्य हो गया। बड़ा भव्य लेख लिखा है आपने। मुझ जैसे साधारण कार्यकर्त्ता को जिन महिमामय शब्दों में आपने स्मरण किया है उससे आपकी कृपालुता और उदारता ही प्रकट होती है। वास्तव में हिन्दी के लिये मैं जो कुछ कर पाया हूँ वह आप सदृश सहृदय, कृपालु मित्रों के सहयोग का ही सुफल है।

सम्मेलन के आयोजन का बड़े सुन्दर ढंग से आपने चित्रण किया है, इससे अधिवेशन की झाँकी समुज्ज्वल होगी। कार्यकर्त्ताओं से भी इस प्रकार के प्रकाशन से प्रोत्साहन मिलेगा, वे भी समझ लेंगे कि अधिवेशन के अवसर पर किया हुआ उनका घोर श्रम अकारथ नहीं गया। कृपा कर नीचे लिखे पतों पर इस अङ्क की (वर्ष १८ अंक २०, १७ मई सन् १९७१) की प्रतियाँ भिजवा दें।

(१) श्री शिवशंकर त्रिपाठी एम० ए०, सहायक मन्त्री, उत्तर प्रदेशीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन, दारागंज, इलाहाबाद—६।

(२) डा० हरवंशलाल शर्मा, एम० ए०, पी-एच० डी०, दोधपुर, अलीगढ़।

(३) डा० बनारसीदास चतुर्वेदी, चोबे का मुहल्ला, फीरोजाबाद।

(४) श्री बालकृष्ण गुप्त, हनुमान गंज, फीरोजाबाद।

(५) डा० भगवान सहाय पचौरी, कृष्णापुरी, मथुरा।

(६) श्री प्रभुदयाल मीतल, साहित्य संस्थान डैम्पियर नगर, मथुरा।

(७) श्री कन्हैयालाल चंवरीक, ४८१७, मित्रा स्ट्रीट, रोशन रोड, दिल्ली—७।

(८) श्री जवाहरलाल चतुर्वेदी, कुआ वाली गली, मथुरा।

(६) श्री श्रीनारायण चतुर्वेदी, ५३, खुरशेद बाग, लखनऊ ।

(१०) श्री यशपाल जैन, ७/८ दरियागंज, दिल्ली ।

कृपा भाव रक्खें । ब्रजभारती का ज्येष्ठ अङ्क व एक प्रति सम्मेलन के अध्यक्षीय भाषण की आज सब ही को रवाना हो रही है । चतुर्वेदी जी के पत्रों की पुस्तक लगभग तैयार है । शीघ्र सेवा में पहुँचेगी ।

धृष्टता की क्षमा चाहता हुआ उपरोक्त १० प्रतियों के मूल्य स्वरूप २) का एक नोट संलग्न है । पत्र पर अप्रत्याशित भार न पड़े इस दृष्टि से ऐसा करने का विचार उत्पन्न हुआ ।

पुनः अनेक धन्यवाद !

आपका
वृन्दावनदास

(१८७)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २५-६-७१

मान्यवर श्री रसूलपुरी जी, प्रणाम !

आपका ता० २२ का कृपा पत्र अभी मिला । अनेक धन्यवाद ! साहित्यिकों के प्रति आपका स्नेह अप्रतिभ है । आप जिस आत्मीयता और सहृदयता से साहित्यिक बन्धुओं के कार्य-कलापों का मूल्यांकन करते रहे हैं उससे उन्हें सदैव बड़ी प्रेरणा मिलती है और इस कारण हिन्दी सेवा के क्षेत्र में आपका यह योगदान महनीय है ।

मुझे बड़ा दुःख है 'भारतीय संस्कृति के विविध परिदृश्य' की प्रति आपको अभी तक नहीं भेजी गई है । मैं यह समझे बैठा था कि वह मैं आपको भेज चुका हूँ । यह आज ही रजिस्टर्ड बुक-पोस्ट से सेवा में प्रेषित है ।

अपना मूल्यवान पत्र आप मुझे तो भेजते ही हैं । फिर यह समझ कर कि अन्यों को भी निःशुल्क पत्र भिजवाना खाने और लुटाने की मशहूर मसल को चरितार्थ करेगा आपको २) (दो रुपये) का नोट भिजवा दिया था, मेरी और कोई भावना नहीं थी, परन्तु साहित्यिक साधकों के प्रति आपका स्नेह तो अगाध है ।

हिन्दी में पत्र-साहित्य की विधा बड़ी कमजोर है । सात, आठ पत्र संग्रहों के अतिरिक्त और कुछ नहीं है जब कि बंगला में अकेले डा० रवीन्द्रनाथ टैगोर के पत्रों पर १४ ग्रन्थ हैं । मैंने डा० बनारसीदास चतुर्वेदी के पत्रों पर एक पुस्तक लिखी है, जो लगभग छप चुकी है । ऊपर का आवरण तथा कुछ

चित्रादि मुद्रणाधीन हैं। तैयार होने पर आपकी सेवा में भेजूँगा। आशा है अब पूर्ण रूपेण स्वस्थ होंगे। कृपा भाव रक्खें। मेरे योग्य कार्य से सदैव सूचित करें।

आपका
वृन्दावनदास

(१८८)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २६-६-७१

मान्यवर रसूलपुरी जी,

कल आपको एक पत्र लिखा था उसमें एक विशेष बात लिखने से रह गयी। आपने उत्तर प्रदेशीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन के १५ वें अधिवेशन के अध्यक्षीय भाषण को दो अशों में पूरा छापने की कृपा की थी। सम्पादकीय स्तम्भ में भी उस पर टिप्पणी लिखने की कृपा करें। मैं चाहता हूँ कि उस भाषण की पत्रों में चर्चा हो क्यों कि मेरी राय में उससे हिन्दी की कुछ सेवा होगी। मैंने "प्रादेशिक स्तर की हिन्दी-सेवी संस्थाएँ" एक लेख लिखा था, मैंने कदाचित उसकी एक प्रति 'उत्तर बिहार' में प्रकाशनार्थ आपको भेजी भी थी। न पहुँची हो तो कृपया लिखें दूसरी प्रति भेज दूँगा।

आशा है आप स्वस्थ एवं सानन्द हैं। कृपा भाव रक्खें। भाषण सभी पत्रों में खूब छपा था।

आपका
वृन्दावनदास

(१८९)

प्रकाश भवन,
मथुरा २६-६-७१

मान्यवर रसूलपुरी जी,

योगी में पं० गणेश चौबे का लेख पढ़कर हृदय गद्गद् हो गया। आपने लम्बे समय तक मा भारती की जो अन्यतम सेवाएँ की हैं सुहृदवर गणेश जी ने उनका बड़ा सही मूल्यांकन किया है। यों तो गणेश जी सदैव रेखाचित्र बड़े सुन्दर ढङ्ग से लिखते हैं, प्रस्तुत लेख ने आपके व्यक्तित्व की महिमा ने भव्य बना दिया है।

मैं आपको इस शुभ अवसर पर हार्दिक बधाई प्रस्तुत करता हूँ और ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि वह आपको नीरोग रक्खें जिससे आपकी

साहित्य-सेवा का नैरन्तर्य बना रहे। योगी सम्पादक, श्रीराम पाण्डेय जी का सहयोग सदैव हमें मिलता रहता है।

आशा है आप स्वस्थ एवं सानन्द हैं। कृपाभाव रक्खें।

आपका
वृन्दावनदास

(१६०)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ६-७-७१

मान्यवर रसूलपुरी जी,

श्री रमण शांडिल्य कृत मेरी पुस्तक की समीक्षा २८ जून के उत्तर बिहार में प्रकाशित हो गई है, इसके लिए आपको बहुत बहुत धन्यवाद। शाण्डिल्य जी ने पुस्तक के गहन अध्ययन के उपरान्त ही समीक्षा लिखी है इसलिए वह बड़ी भव्य बन गयी है। इस पुस्तक की अनेक समीक्षाएँ लिखी गई हैं परन्तु मेरी मान्यता है कि अद्यतन प्रकाशित सभी समीक्षाओं में शाण्डिल्य जी की समीक्षा सर्वश्रेष्ठ है। कृपा कर संलग्न सूची के अनुसार पाँच महानुभावों को २८ जून का अङ्क एक-एक प्रति भेजने का कष्ट करें।

'डा० बनारसीदास चतुर्वेदी के पत्र' शीर्षक पुस्तक छप चुकी है। आजकल प्रेसों में बेसिक रीडरों का स्कूली सीजन चल रहा है इसलिए जिल्द-बन्दी में गतिरोध उत्पन्न हो गया है। १०, १२ दिनों में जिल्द तैयार होने पर श्रीमान् की सेवा में एक प्रति भेजूँगा।

आशा है आप स्वस्थ एवं सानन्द हैं। कृपा भाव रक्खें।

आपका
वृन्दावनदास

पुनःश्च—आपका भेजा (लौटाया हुआ) २) का म० आ० यथा समय प्राप्त हो गया था। सूचनार्थ निवेदन है।

(१६१)

प्रकाश भवन,
मथुरा. १६-७-७१

मान्यवर रसूलपुरी जी,

आपका कृपा पत्र मिला। अनेक धन्यवाद। आपके भेजे 'उत्तर बिहार' के सब अङ्क भी मिल गये। आपने मेरे सम्बन्ध में जो कुछ लिखा है, उसे मैं आशीर्वाद के रूप में ग्रहण करता हूँ। आजकल हमारे प्रदेश में नेत्र व्याधि बड़े

जोरों से प्रचलित है और मैं भी एक सप्ताह से उसका कोप भाजन हो गया हूँ। यद्यपि कल से व्याधि का जोर कुछ कम हो गया है तथापि अभी पूर्ण आरोग्य नहीं हुआ है। अतः प्रस्तुत पत्र अपने पौत्र चि० ब्रजेश कुमार को बोलकर लिखा रहा हूँ। ब्रज भारती जेष्ठ अङ्क की दो प्रतियाँ पृथक बुक-पोस्ट से भेजी है। लगभग १० दिन के भीतर मैं अपनी पुस्तक 'डा० बनारसीदास चतुर्वेदी के पत्र' शीर्षक रजिस्टर्ड पोस्ट से भेजूँगा और उसके साथ ही अपना एक चित्र भेजकर आपकी आज्ञा का पालन करूँगा।

'योगी' और 'उत्तर बिहार' दोनों ही आदर्श साप्ताहिक पत्र हैं। दोनों पत्रों में ही समाचार का चयन या तो शुद्ध साहित्यिक आधार पर किया जाता है अथवा राष्ट्रभाषा के प्रचार-प्रसार की दृष्टि से। दोनों ही पत्र सम्पादन कला के अपूर्व निदर्शन हैं और फाइल के रूप में सुरक्षित रखने पर शोधार्थियों को परम मूल्यवान सिद्ध हो सकते हैं।

कृपा भाव बनाये रखें।

आपका
बृन्दावनदास
चकलम ब्रजेश कुमार

(१६२)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २७-७-७१

मान्यवर रसूलपुरी जी,

'डा० बनारसीदास चतुर्वेदी के पत्र' शीर्षक पुस्तक की एक प्रति आज आपको रजिस्टर्ड बुक-पोस्ट से भेजी जा रही है। उसके साथ चित्र भी भेज रहा हूँ। कृपया पहुँच लिखें। पुस्तक कैसी रही यह भी लिखें।

'ब्रज भारती' का भाद्रपद अंक मुद्रणाधीन है। बहुत शीघ्र उसकी प्रति आपकी सेवा में पहुँचेगी।

आशा है आप स्वस्थ और सानन्द हैं।

आपका
बृन्दावनदास

(१६३)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २०-८-७१

मान्यवर रसूलपुरी जी, प्रणाम !

सहज स्नेह से आपूरित आपका कृपा पत्र यथा समय प्राप्त

हो गया। अनेक धन्यवाद ! कार्याधिक्य जन्य श्रम और प्रतिकूल ऋतु के प्रभाव से ज्वर पीड़ित हो गया और आज कलम लेकर रोग का मुक्ति दिवस मनाने बैठा हूँ।

निःसन्देह बाढ़-वन्या और जलप्लावन से बिहार की क्षति भयंकर हुई है। ईश्वरीय इस प्रकोप से सम्बन्धित समाचार पत्रों में पढ़ता और आकाशवाणी से सुनता रहा। आपने भी पत्र में उसका मर्मस्पर्शी वर्णन किया है। सर्व शक्तिमान की यह असीम कृपा है कि आप सभी मित्र सुरक्षित हैं तथा अपने अनुपम धैर्य और सहिष्णुता से दुःख की इन घड़ियों को किसी प्रकार झेल रहे हैं।

यह तो आपकी विशाल हृदयता ही है कि आप दो एक पत्रों का उत्तर शीघ्र न दे सकने पर इतनी आत्म-भर्त्सना किये जा रहे हैं। वास्तव में प्रत्येक पत्र का तो उत्तर अभीप्सित भी नहीं होता। सामग्री प्रेषण और कतिपय पत्र भी ऐसे होते हैं जिनका उत्तर लिखा भी क्या जाय। हमें पत्रकार साहित्यिकों के समय-समय पर अहर्निश पड़ते हुए दबाव को भी दृष्टि में रखना है।

चतुर्वेदी जी वाली पुस्तक पर आपने बड़ी सुन्दर टिप्पणी लिखी है ता० २ अगस्त के अङ्क में तो भूमिका का अंश भी छाप दिया है। इस महान कृपा के लिए कोटिशः धन्यवाद ! भूमिका का दूसरा अंश ६ अगस्त के अङ्क में प्रकाशित हो गया है। मुझे तो ता० २ और ६ अगस्त के अङ्क मिल गये परन्तु जिन महानुभावों को इस प्रकार के अंक भेजे जाने के लिए मैंने पहले लिखा था उनको भी भेजे जा चुके या नहीं, यह मुझे विदित नहीं हुआ है।

ब्रज भारती से आप चाहें जब कोई लेख उद्धृत, मुद्रित, प्रकाशित कर सकते हैं। आपको सर्वाधिकार सुरक्षित है। भला हमारे लिए इससे अधिक गौरव की क्या बात हो सकती है ? इसमें आपको कभी पूछने की आवश्यकता नहीं है।

क्रपा भाव रक्खें। योग्य सेवा से सदैव सूचित करते रहें।

आपका
वृन्दावनदास

(१६४)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ३-२-७४

मान्यवर रसूलपुरी जी, प्रणाम !

आशा है आप स्वस्थ एवं सानन्द हैं। बहुत दिनों से आपका कोई

कृपा पत्र नहीं मिला, यद्यपि 'उत्तर बिहार' के माध्यम से आपके सौम्य दर्शन का आभास मिल जाता है। फिर व्यस्त पत्रकारों के पास पत्र लिखने का अवकाश ही कहाँ रहता है।

'आशा' का सासनी सर्वेक्षण अंक सेवा में भेज रहा हूँ। श्रद्धेय पं० बनारसीदास चतुर्वेदी प्रत्येक जनपद से एक ऐसे अंक को निकालने की कामना करते हैं, जिसमें उस जनपद का सर्वांगपूर्ण चित्र ही उपस्थित हो। 'आशा' का यह विशेषांक उनकी आकांक्षाओं का प्रतीक है। वस्तुतः यह एक आदर्श जनपदीय अंक है। इसकी समीक्षा कई पत्रों में प्रकाशित हो चुकी है। दिसम्बर मास की सरस्वती में भी श्रीयुत श्रीनारायण चतुर्वेदी ने इसकी उत्तम समीक्षा प्रकाशित की है।

अयोध्या में पुस्तकालय की स्थापना हो चुकी है। स्थानीय विद्वानों ने पुस्तकालय की स्थापना का अपूर्व स्वागत किया है। २१ तारीख को पुस्तकालय को एक बड़े अभाव की पूर्ति के रूप में स्वीकार किया गया है! २१ तारीख को पुस्तकालय के उद्घाटन का समारोह अत्यन्त सफल रहा। मैं आशा करता हूँ कि आप अपने मूल्यवान पत्र की एक प्रति उस पुस्तकालय को भी भेजते रहेंगे। पता इस प्रकार है—"श्री वृन्दावनदास पुस्तकालय एवं वाचनालय, नृसिंह मन्दिर, रामकोट, अयोध्या!" कृपाभाव रक्खें।

आपका

वृन्दावनदास

(१६५)

प्रकाश भवन,

मथुरा. ८–३–७२

मान्यवर रसूलपुरी जी, प्रणाम !

'उत्तर बिहार' की प्रति मिली। अन्तरजनपदीय आन्दोलन का बड़ा ही सुन्दर और विस्तृत इतिहास आपने अपने सम्पादकीय में दिया है। समीक्षक के साथ ऐतिहासिक दृष्टि का भी आपने प्रयोग किया है। मेरा विश्वास है कि प्रस्तुत लेख से बिहार में भी जनपदीय आन्दोलन की लहर व्याप्त होगी। उत्तर प्रदेश में तथा अन्यत्र किये हुए जनपदीय कार्यक्रम का इससे सुन्दर चित्र प्रस्तुत नहीं किया जा सकता।

कृपया लेख के लिए मेरी बधाई स्वीकार करें। मुझे विदित हुआ कि आप कुछ दिनों से अस्वस्थ थे। आशा है अब आप आरोग्य लाभ कर रहे होंगे।

सम्पादक का कार्य बड़ा गहन है। उद्वेग भी उत्पन्न करता है। कृपया कम से कम श्रम का अनुभव करें।

शुभेच्छु
वृन्दाबनदास

(१६६)

प्रकाश भवन,
मथुरा १२-३-७२

मान्यवर रसूलपुरी जी, प्रणाम !

कृपा पत्र दिनांक ७-३-७२ प्राप्त हुआ। अनेक धन्यवाद ! आपकी भीषण रुग्णता का समाचार पढ़कर मानसिक पीड़ा हुई। आपको विश्राम की बड़ी जरूरत है। आप सदृश परोपकारी व्यक्ति रोग ग्रस्त हो जाँय यह तो विधि की विडम्बना ही कही जायगी। कृपा कर अधिक से अधिक विश्राम लें। दुनिया के झगड़े तो चलते ही रहेंगे, नीरोग काया इस संसार में पहिली आवश्यकता है। आप स्वयं सुज्ञ हैं, अधिक क्या लिखूँ।

जनपदीय आन्दोलन पर आपके सम्पादकीय लेख की कहाँ तक प्रशंसा की जाय। यदि हमारे पत्रकार बन्धु इसी प्रकार अपने औचित्य का पालन करें तो इस आन्दोलन की सबसे बड़ी समस्या हल हो जाय। यदि सच कहा जाय तो पत्रकारों की उपेक्षा से ही इस आन्दोलन को क्षति पहुँची है। आपका लेख एक प्रकाश-स्तम्भ है जो पत्रकार बन्धुओं के कर्त्तव्य मार्ग को आलोकित करता है और भविष्य में करता रहेगा। आपने अपने पांडित्यपूर्ण लेख में आन्दोलन का समग्र इतिहास ही समाविष्ट कर दिया है। आपके महत्वपूर्ण विचारों से आन्दोलन को सफलता मिलेगी। हम जनपदीय कार्यकर्त्तागण आपके अत्यन्त आभारी हैं।

आपने पत्र न लिखने के लिए दोषारोपण की बात खूब कही। शायद मैं अपने भावों को व्यक्त करने के लिए उचित भाषा का प्रयोग न कर सका। मुझे याद नहीं मैंने क्या लिखा था परन्तु अब अपने विचार स्पष्टतया लिखना चाहता हूँ। मेरी धारणा है कि पत्र लिखने का एक व्यसन है और यह जरूरी नहीं कि यह प्रत्येक व्यक्ति में हो। दूसरी बात महत्वपूर्ण यह है कि साधारणतया पत्र इसलिए नहीं लिखे जाते कि उनका उत्तर प्राप्त किया ही जाय। यदि हमारा मन पत्र लिखने का है तो हम लिखें परन्तु यह आशा करना कि उसका उत्तर भी हमें मिले, पत्र लिखे जाने वाले के प्रति घोर अन्याय है। प्रत्येक व्यक्ति की स्थिति भिन्न है, वह वातावरण भी जिसमें कि उसे रहना

पड़ता है भिन्न है। फिर आप तो पत्र भी लिखते ही हैं, आपके प्रति किसी दोषारोपण की तो स्वप्न में भी कल्पना नहीं की जा सकती।

श्री उमाशंकर अभिनन्दन ग्रन्थ के परामर्शदाता मण्डल में आप मुझे भी सम्मिलित कर रहे हैं एदर्थ धन्यवाद ! आप अपनी किसी भी योजना में हमें कभी रख लें, हमें आपत्ति का कारण ही क्या हो सकता है ?

कृपा भाव रक्खें। योग्य सेवा से सदैव सूचित करते रहें।

आपका

वृन्दावनदास

(१६७)

प्रकाश भवन,

मथुरा. ७-४-७२

मान्यवर रसूलपुरी जी, प्रणाम !

कृपा पत्र यथा समय प्राप्त हो गया था। अनेक धन्यवाद ! आपके स्वास्थ्य सम्बन्धी सूचना योगी में छपी थी। फिर आपका पत्र भी सन्तोष-जनक आया, इसलिए मन में कुछ निश्चिन्त भावना सी उत्पन्न हो गई।

आप विश्राम कर रहे हैं यह बहुत अच्छा है। मित्रों के समीप हम पहुँच जाँय अथवा वे हमारे पास आ जाँय एक ही बात है। हम आपको एक मनोरंजक संस्मरण सुनाते हैं। एक बार दो समवयस्क मित्रों में विवाद चल रहा था, एक दूसरे के प्रति शिकायत कर रहा था,—"मैं तो तुम्हारे पास दस दफा आता हूँ, तुम कहकर एक बार भी पहुँचते नहीं हो।" मैंने बीच में बोल कर विवाद समाप्त करने की युक्ति बताना चाहा। मेरे फैसले को सुनकर उस पर अमल करने को दोनों उद्यत हो गये। मैंने शिकायत करने वाले मित्र से कहा—"इस विवाद को हल करने का एक मात्र उपाय यह है कि तुम ही अपने मित्र के पास चले जाया करो। ध्येय तो पारस्परिक मिलन है, कौन कितनी दफा आया और दूसरा क्यों नहीं पहुँचा आदि प्रश्न गौण हैं। मुख्य लक्ष्य की पूर्त्ति होनी चाहिये और वह इससे हो जाती है।" सब हँस पड़े। दोनों ने हमारे न्याय की कचहरी भर में शोहरत कर दी, कारण वे दोनों मथुरा कोर्ट के अच्छे वकील हैं।

अन्तर जनपदीय आन्दोलन के सम्बन्ध में आपने जो कुछ लिखा है बहुत ठीक है। आपके सहयोग और कर्तृत्व से इस आन्दोलन को बहुत बल मिलेगा। धीरे-धीरे सब ठीक हो जायगा। यह तो आप जानते ही हैं कि Rome was not built in a day.

बन्धुवर रामशंकर जी द्विवेदी, हजारी पुरा, उरई बार-बार अस्वस्थ हो जाते हैं। उनका आपसे भी घनिष्ठ परिचय प्रतीत होता है, क्योंकि आपके शुभ नाम की चर्चा वे बहुधा अपने पत्र में किया करते हैं। बड़े सात्विकी विचार के सहृदय साहित्यिक हैं। साहित्य के प्रति उन्हें सच्चा अनुराग है। मैं तो उनसे यही निवेदन करना चाहता हूँ कि अध्ययन-जन्य श्रम और उद्वेग को अधिक न पड़ने दें।

ब्रज-साहित्य मण्डल का १६ वां अधिवेशन भरतपुर (राजस्थान) में मेरी अध्यक्षता में ही २७ अप्रेल को हो रहा है। तत्-सम्बन्धी सभी सूचनाएँ आपको यथा समय प्रेषित होंगी।

इस समय लोकभाषाओं के परिष्कार का आन्दोलन खूब चल रहा है। मैं तो इससे भयभीत होता नहीं। मुझे तो यह शुभ चिह्न के रूप में दिखाई देता है, यद्यपि हमारे अनेक मित्र इससे बहुत शकित हैं।

कृपा भाव रक्खें। यहाँ सब कुशल है।

आपका
वृन्दावनदास

(१६८)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २१–१०–७२

मान्यवर रसूलपुरी जी, प्रणाम !

आशा है अब आप पूर्णरूपेण स्वस्थ हैं। गणेश जी ने लिखा था कि अब आप कार्यालय जाने लगे हैं, फिर भी जहाँ तक हो कम ही श्रम करें। मानसिक उद्वेग कम से कम होना चाहिए।

'प्राचीन भारत में हिन्दू राज्य' शीर्षक मेरी पुस्तक प्रकाशित हो गई है। यह मेरी तीन वर्ष की साधना का फल है। प्राक्कथन में मैंने जो कुछ लिखा है उस पर अवश्य विचार करें। एक प्रति आपकी सेवा में भेज रहा हूँ। उचित समझें तो इसकी समीक्षा अपने पत्र में प्रकाशित करा दें।

कृपा भाव रक्खें।

आपका
वृन्दावनदास

(१९९)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ८-१२-७३

मान्यवर रसूलपुरी जी, प्रणाम !

उत्तर बिहार का विशेषांक प्राप्त हुआ। अनेक धन्यवाद ! 'प्राचीन भारत में आर्य राजवंश' शीर्षक लेख उसमें प्रकाशित करने के लिए अत्यधिक आभारी हूँ। आप हमारे कृपालु एवं परम सम्माननीय मित्र हैं। हमारे प्रति आपकी आत्मीयता हमारा गौरव है। वास्तव में मेरा यह ग्रन्थ मेरी तीन वर्ष की कठिन साधना एवं परिश्रम का फल है। इन ग्रन्थ के लिखने का मेरा उद्देश्य प्राचीन भारतीय संस्कृति के अनुपम सौन्दर्य की झाँकी जन-जन तक पहुँचाने का था। जब कोई मेरे मित्र मेरे इस उद्देश्य की पूर्ति में सहायक होते हैं तो मेरा हृदय गद्गद् हो जाता है। आपके सम्पादकीय कौशल के तो हम कायल हैं। आप सदृश पण्डित प्रवर सम्पादक तो इस प्रकार के लेख इसमें अनेक बना सकेंगे।

आचार्य पं० पद्मसिंह शर्मा की शताब्दी हरिद्वार में मनाई जा रही है। तत्-सम्बन्धी विज्ञप्ति की कुछ प्रतियाँ इस पत्र के साथ संलग्न हैं। एक स्मृति ग्रन्थ भी प्रकाशित होगा। आचार्य जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व सम्बन्धी लेख, रचनाएँ स्वयं लिखें और मित्रों से लिखवा कर मुझे भेजने की कृपा करें। आयोजकों ने स्मृति ग्रन्थ के सम्पादन का गुरुतर भार मेरे ही निर्बल कंधों पर डाल दिया है।

आशा है आप सानन्द हैं। आपका स्वास्थ्य तो नाजुक ही है। हम तो अपनी पुरानी रट को न छोड़ेंगे और वह यही कि काम कम आराम ज्यादा। कृपा भाव रक्खें।

गणेश जी यदाकदा आपके स्वास्थ्य आदि की खबर देते रहते हैं।

आपका
वृन्दावनदास

(२००)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २१-२-७४

मान्यवर रसूलपुरी जी, प्रणाम !

कृपा पत्र तथा आचार्य पं० पद्मसिंह शर्मा पर बढ़िया लेख दोनों मिले। अनेक धन्यवाद ! मैंने लेख ग्रन्थ के सम्पादक श्री रमेशचन्द्र जी दुबे को

प्रकाशनार्थ भेज दिया है तथा उनको लिख भी दिया है कि यदि किसी कारण से वे इसे ग्रन्थ में सम्मिलित न कर सकें तो ब्रज भारती में प्रकाशनार्थ इसे मुझे ही वापिस भेज दें।

आपका स्वास्थ्य अब कुछ सुधरा हुआ है यह जानकर सन्तोष हुआ, अब इसे ठीक प्रकार से निभाना है। विश्राम तो हम आप लोग जो परिश्रम के आदी हैं कर ही नहीं सकते, फिर भी मेरा आशय शरीर पर बेग (तनाव) न पड़े ऐसी व्यवस्था करना है। जिस समय लेटे रहने को जी चाहे तो काम की धुन में उठ खड़ा होना, जब काम करते-करते मन ऊबे या आराम को जी चाहे तो काम को समाप्त करने की दृष्टि से लगे ही रहना भी वेग उत्पन्न करने के उदाहरण हैं। आप स्वयं सुज्ञ हैं। मैंने तो लिख ही दिया है, मोह माया बड़ी प्रबल है। अपनों की सुरक्षा कैसे रहे यही मन में समाया रहता है।

श्री कुलदीप नारायणराय बहुश्रुत एवं कर्मठ व्यक्ति हैं। जनप्रदीय आन्दोलन के लिए उनका जीवन समर्पित है। बिहार में वे जनपदीय यज्ञ के पुरोधा हैं। जो भी उनका आदेश होगा मैं अवश्य पालन करूँगा। मैं जनपदीय आन्दोलन पर कई लेख आपकी सेवा में एक-एक करके भेजूँगा आपने स्वयं इस सम्बन्ध में अनेक महत्त्वपूर्ण लेख लिख-लिखकर 'उत्तर बिहार' के माध्यम से जनपदीय अलख जगाया है। कृपा भाव रक्खें।

आपका

वृन्दावनदास

(२०१)

प्रकाश भवन,

मथुरा १६–८–७४

मान्यवर रसूलपुरी जी, प्रणाम !

मैं दिनांक २० जुलाई को सपत्नीक फ्रन्टियर मेल से बम्बई चला गया था और परसों अर्थात् १७ अगस्त को वहाँ से लौटा हूँ। वहाँ पर मेरे तीन पुत्रों में से दो और चार पुत्रियों में से तीन सपरिवार रहते हैं, इसी कारण से जब कभी बम्बई जाना होता है वहाँ अप्रत्याशित रूप से अधिक समय लग ही जाता है। बम्बई प्रवास में मेरी डाक तो नियमित रूप से बम्बई के पते पर पुनर्प्रेषित हो जाती है परन्तु समाचार पत्र, पुस्तकों के पैकेट आदि को मैंने घर पर ही रोके रखने का आदेश दे रक्खा है। फलतः पत्र तो मुझे बम्बई में मिलते रहे और साप्ताहिक, मासिक, पुस्तकें आदि घर पर एकत्रित होती रहीं। आज अभी मैंने 'उत्तर बिहार' के (इस अन्तराल में प्राप्त) २४ जून, १ जुलाई, ८ जुलाई और १५ जुलाई के अङ्कों को देखा है। ता० २४ जून

और १ जुलाई के अङ्कों में मेरे अभिनन्दन की योजना पर प्रकाश डाला गया है, ता० १५ के अङ्क में डा० वासुदेव शरण अग्रवाल के पत्रों की पुस्तक की चर्चा है। मेरे सम्बन्ध में इस विस्तृत कृपापूर्ण चर्चा के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। मेरी निगाह में तो आप सदृश मनीषी पत्रकार साहित्य सेवियों के संरक्षक स्वरूप हैं। संरक्षण प्राप्त कर साहित्यकार का मनोबल ऊँचा होता है और यह प्रतीति कि ऐसे पत्र भी विद्यमान हैं जहाँ उसके क्षुद्र कार्यों का सहृदयता से मूल्यांकन हो सकता है उसे अपने कार्य-कलापों को द्विगुणित उत्साह से करने को प्रेरित करती है। आपकी आत्मीयता से हमें अपनी हिन्दी सेवा के कार्यों में बड़ा बल मिला है।

दिनांक १५ जुलाई के अङ्क में छपे हुए विवरण से ज्ञात हुआ कि पुस्तक किसी अन्य कार्यकारी ने ले ली और वह आप तक पहुँचने के पूर्व कार्यालय से चोरी चली गयी। कोई आपत्ति की बात नहीं है, किसी साहित्य प्रेमी की नीयत डिग गई और उसने पुस्तक का अपहरण कर लिया। दुःख तो इस बात का है कि आप उस पुस्तक को देख भी न सके और इससे आपको वेदना हुई। दूसरा खेद इस बात का है कि मुझे इस काण्ड का आज पता लगा, अन्यथा मैं बहुत पहले ही आपको दूसरी प्रति भेज चुका होता। अस्तु, जो हुआ सो हुआ। अब मैं आपकी सेवा में दूसरी प्रति रजिस्टर्ड बुक-पोस्ट से ता० २० अगस्त को भेज रहा हूँ, यह प्रति आपको २२ या २३ ता० को मिल जावेगी, कृपया पोस्टमैन से कह दें कि रजिस्टरी आपको ही दी जावे। यह पत्र आपको शायद एकाध दिन पहले ही मिलेगा।

आपने अपने लेख में डा० कुमार विमल की साहित्यिक रचनाओं का बड़ा सुन्दर दिग्दर्शन कराया है। आपके मूल्यांकन से उनके कृतित्व की महिमा बढ़ गई है। डा० कुमार विमल वरेण्य विभूति हैं इसमें कोई सन्देह नहीं। हम पटना गये थे परन्तु उनसे साक्षात्कार न कर सके। मैं उनकी सेवा में भी एक प्रति 'डा० वासुदेवशरण अग्रवाल के पत्र' शीर्षक पुस्तक की भेजने का विचार कर रहा हूँ।

आशा है अब आपका स्वास्थ्य ठीक है और आप सानन्द हैं। श्रद्धेय बनारसीदास चतुर्वेदी का एक पत्र मुझे ५-७ दिन हुए तब मिला था उसमें लिखा था कि 'उत्तर बिहार' के सम्पादक महोदय को आपकी पुस्तक नहीं मिली है। मैं उस समय उस बात का अर्थ नहीं समझ पाया। अब १५ जुलाई वाला अङ्क पढ़कर स्थिति स्पष्ट हो गई है।

'पं० पद्मसिंह शर्मा स्मृति ग्रन्थ' आपको मिला या नहीं अविलम्ब सूचित करें। हम अवश्यमेव उसकी एक प्रति आपको भिजवाने की व्यवस्था करेंगे। कृपा भाव रक्खें।

आपका

वृन्दावनदास

डा० रामशंकर द्विवेदी के नाम

(२०२)

प्रकाश भवन,
मथुरा ३०-४-७०

मान्यवर द्विवेदी जी,

कृपा पत्र ता० २१-४-७० का यथा समय प्राप्त हो गया अनेक धन्यवाद। अहम्मन्यतावश जो सम्पादक विद्वानों के पत्रों का उत्तर तक नहीं देते उनके विषय में क्या कहा जाय। वे आत्म केन्द्रित हो गये हैं। सम्पर्कशीलता में उनका विश्वास नहीं है।

आपके पत्र में बुन्देलखण्ड के साहित्य एवं संस्कृति के उन्नयन-सम्बन्ध में कई महत्त्वपूर्ण सुझाव हैं। हम तो ब्रजभारती में आन्दोलन चलाने के लिए सदैव तत्पर हैं ही। यदि आपका प्रस्तुत पत्र आगामी अङ्क में प्रकाशित कर दिया जाय तो इससे खासी चर्चा हो जाएगी। परन्तु इसके लिए आपकी अनुमति की आवश्यकता है। आपकी स्वीकृति आने पर ज्येष्ठ के अङ्क में पत्र को छाप देंगे तथा सम्पादकीय में एक अच्छी टिप्पणी भी दे देंगे।

हम परिषद् पटना को ब्रज भारती भेजते हैं परन्तु परिषद् की पत्रिका विनिमय में हमें प्राप्त नहीं होती। परिषद्-पत्रिका में प्रकाशित आपका लेख (अग्रवाल जी के पत्रों पर) मेरे देखने में नहीं आया। कृपाकर उसकी एक प्रति मुझे अवश्य भेजिये!

वर्ष २३ के तीनों अङ्क शीघ्र भेजे जा रहे हैं। कृपा भाव बनाये रखें।

आपका

वृन्दावनदास

(२०३)

अ० भा० ब्रजसाहित्य मण्डल,
मथुरा. १-७-७०

मान्यवर द्विवेदी जी,

कृपा पत्र प्राप्त हुआ। धन्यवाद! बुन्देलखण्ड का साहित्यिक इतिहास

शीर्षक लेख भेज दें। अवश्य छापेंगे। यदि लेख लम्बा हो तो उसका संक्षिप्तीकरण कर दें। आप जानते ही हैं हमारे पास सीमित स्थान है।

पत्रिका प्रकाशन का विचार उत्तम है। इसके लिए तो स्थानीय एवं क्षेत्रीय मित्रों से सम्पर्क कर सहयोग प्राप्त करना होगा। बादल जी मथुरा पधारे थे। उनको लिखूँगा।

मित्र जी की पुस्तक की समीक्षा अवश्य लिखें। वह पुस्तक भी अभी हमारे देखने में नहीं आई है. यद्यपि श्रद्धेय बनारसीदास जी चतुर्वेदी ने लिखा था कि पुस्तक भिजवा रहे हैं। उसकी समीक्षा होनी चाहिए।

वासुदेवशरण जी पर आपका लिखा लेख जो परिषद् पत्रिका में प्रकाशित हो चुका है और जिसकी एक मुद्रित प्रति आपने हमें भेजी है उसे हम वासुदेवशरण जी के पत्रों पर प्रस्तावित ग्रन्थ में प्रकाशित करेंगे, एतदर्थ उसे संकलित सामग्री में रख लिया है। ब्रज भारती में उसे छापने की कोई तुक नहीं है।

आपका एक पत्र हम ब्रज भारती में छाप रहे हैं।

आपका
बृन्दावनदास

(२०४)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ३१-८-७०

बन्धुवर द्विवेदी जी,

कृपा पत्र यथा समय प्राप्त हो गया था। धन्यवाद! आपका लेख प्राप्त हो गया है, आगामी अंक में छापेंगे। इस अंक में आपका एक पत्र हमने छापा है। वह लेख महत्त्वपूर्ण है। ब्रज भारती का नवीनतम अंक आज आपको भेजा जा रहा है।

स्व० डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल के जितने पत्र आपके पास हों उनकी प्रतिलिपि कराकर भेजें। उन पर अपने विचार भी प्रकट करें। हमारे पास काफी पत्र एकत्रित हो चुके हैं, अब उनके छपाने की व्यवस्था करनी है। आपने पिछले पत्र में लिखा था कि आपने कोई लेख ५० पेज का उनके पत्रों पर लिखा था और वह परिषद् पत्रिका बिहार में छपा था। कृपाकर उसकी एक प्रति भेजिये, वह हमें प्रस्तुत पत्र संग्रह के सम्पादन कार्य में सहायक सिद्ध होगा।

हम परिषद् के कई विद्वानों और परिषद् के सम्पादक जी को भी ब्रज भारती पृथक् भेजते हैं परन्तु खेद है परिषद् पत्रिका हमें विनिमय में नहीं

भेजी जाती। हमने इस सम्बन्ध में उनको पत्र भी लिखा था परन्तु उनका कोई उत्तर प्राप्त नहीं हुआ। यह व्यवहार अत्यन्त शुष्क है, इससे तो यही निष्कर्ष निकालने को वाध्य होना पड़ता है कि अपनी पत्रिका भी ऐसे क्षेत्रों में क्यों भेजी जाय जहाँ से कोई सहयोग का स्वर ही प्रस्फुटित न हो। यद्यपि हमारा ऐसा विचार नहीं है। वे चाहे उत्तर न भी दें हम तो पत्रिका उनको भेजते ही रहेंगे।

३, ४ पृष्ठ का कोई भी लेख आप भेज सकते हैं। बड़े लेख छापने में असुविधा होती है। कारण, बहुत-सी सामग्री परिणामस्वरूप छूट जाती है।

शेष सब कुशल है।

आपका

वृन्दावनदास

(२०५)

ब्रजसाहित्य मण्डल,

मथुरा. १०-१०-७०

बन्धुवर द्विवेदी जी, प्रणाम !

परिषद् पत्रिका में प्रकाशित आपका लेख साद्यन्त पढ़ गया। खूब लिखा है। स्व० अग्रवाल जी के संख्यातीत पत्रों का आपने निचोड़ रख दिया है। आपके इस लेख से मुझे पुस्तक की प्रस्तावना लिखने में बड़ी सहायता मिलेगी। प्रस्तुत लेख को पढ़ कर ऐसा प्रतीत होता है मानो श्रद्धेय बनारसीदास जी चतुर्वेदी द्वारा प्रकाशित सम्मेलन पत्रिका के सभी लेखों (पत्रों) का सार पढ़ लिया। महत्त्वपूर्ण सभी अंशों पर आपने अपने विचार भी प्रस्तुत कर दिये हैं। हम अपने पत्र-संग्रह में आपके इस लेख को भी समाविष्ट कर लें तो कैसा रहे ?

परिषद्-पत्रिका वालों को मैंने पत्रिका भेजने को लिखा था परन्तु उन्होंने कोई उत्तर नहीं किया। शेष सब सकुशल हैं।

आपका

वृन्दावनदास

(२०६)

प्रकाश भवन,

मथुरा. १६–११–७०

बन्धुवर द्विवेदी जी, सप्रेम नमस्कार !

कृपा पत्र मिला। धन्यवाद ! श्री रमण जी का पत्र आया, ठीक ही है उन्होंने मुझसे आपका पता पूछा था। 'वे बड़े उत्साही कार्यकर्त्ता हैं।

मैं अपनी पुस्तक की एक प्रति रजिस्टर्ड बुक-पोस्ट से आपको प्रेषित कर रहा हूँ।

सामान्यतया मैं चतुर्वेदी जी के मेरे पास आये हुए पत्र ही छपाना चाहता हूँ, परन्तु यदि उत्कृष्ट १०, ५ पत्र आपके द्वारा भी प्राप्त होंगे तो उन्हें भी अवश्य सम्मिलित कर दूँगा।

आपके लेख का पुनर्मुद्रण जैसे ही प्राप्त हो मुझे भेजने की कृपा करें।

ब्रज भारती में मेरा क्या ? यह तो आप साहित्यिक बन्धुओं की ही हैं। आप शोध प्रबन्ध में दत्तचित्त रहें।

हमारी समस्त शुभकामनाऐं आपके साथ हैं। आप एक प्रतिभाशाली सुयोग्य अनुसंधित्सु हैं, आप अपने ध्येय में अवश्य सफल होंगे।

आपका
बृन्दावनदास

(२०७)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २७-१२-७०

बन्धुवर द्विवेदी जी, प्रणाम !

आपके दो सारगर्भित पत्र मिले। मुझे भी साहित्यिक बन्धुओं को पत्र लिखने में बड़ा आनन्द आता है परन्तु अभिशाप यह है कि मुझे दम मारने की फ़ुर्सत नहीं रहती। अनेक संस्थाओं से सम्बद्ध होने के कारण तथा एक लम्बे अर्से तक सामाजिक सम्पर्कशीलता रहने के कारण बहुत से ऐसे कामों पर भी समय का अपव्यय हो जाता है जिनके लिए मेरे मन में कोई रुचि वर्तमान नहीं है। फिर भी आजकल मेरा अधिकांश समय ब्रजभाषा और हिन्दी (जिन्हें मैं एक समझता हूँ) की सेवा के लिए ही अर्पित है।

मेरे विषय में आपके स्नेह पूर्ण मूल्याङ्कन को मैं अत्यन्त महत्त्वपूर्ण मानता हूँ। आपके उठाये हुए मुद्दों पर मैं अपने विचार व्यक्त करूँ ऐसी मेरी इच्छा होती है। अतः मैं ऐसा अवश्य करूँगा, आज के पत्र को इस श्रृङ्खला में अग्रगामी समझिये।

आपने मेरी अल्पाक्षर विशिष्ट शैली का उल्लेख किया है। इसके पीछे एक इतिहास है। बाल्यकाल से ही मैं चिन्तनशील रहा हूँ। मेरा मस्तिष्क समस्याओं में उलझा रहता है। चिन्तन जन्य तड़पन मुझे कुछ कहने को बाध्य करती है। दस वर्ष पहले अनेक दशकों तक मैं अँग्रेजी के दैनिक समाचार पत्रों में Latters to the editor स्तम्भ के अन्तर्गत अपने पत्र मुद्रणार्थ भेजता रहा। यह अविरल पत्र-धारा अनेक वर्षों तक प्रवाहित रही। सहस्रों पत्रों की

कतरनें मेरे पास सुरक्षित हैं। अखबार पढ़ा, जो विचार उत्पन्न हुए उसी समय उनको पत्र में अंकित किया, यदि विषयों की अनेकता और विभिन्नता के कारण कई पत्र लिखने की आवश्यकता हुई तो वैसा कर दिया और सम्पादक को भेज दिया। जब टाइप की अधिक सुविधा हुई तो पत्र या पत्रों की कई-कई प्रतियाँ कराकर कई पत्रों में प्रकाशनार्थ भेज दिया करता था।

साथ ही मैं हिन्दी में भी लिखता था परन्तु हिन्दी के लेख मासिक पत्रिकाओं के लिए होते थे अतः वे तो पत्रों से भिन्न प्रकार के होते थे परन्तु उनमें भी थोड़े में समग्रचिन्तन को समाविष्ट करने की प्रवृत्ति थी ही जिसकी आदत पत्रों को अधिक लिखने के कारण बनी।

साहित्यिक बन्धुओं के संस्मरण लिखने का भी मुझे शौक है। मेरी पुस्तक में तो थोड़े ही संस्मरणात्मक वृत्त प्रकाशित हुए हैं। हाल ही में भारती सम्पादक श्री पन्नालाल जी धूसर के आग्रह पर मैंने श्रीकृष्णानन्द गुप्त पर एक लेख भेजा था जो भारती के विशेषाङ्क में प्रकाशित हुआ। अनेक बन्धुओं ने उस लेख की बड़ी उदारतापूर्वक प्रशंसा की है और स्नेहाभिसिक्त होकर पत्र मुझे भेजे हैं। आपका आदेश कि मैं अधिकाधिक साहित्यिक बन्धुओं पर संस्मरणात्मक लेख लिखूँ और फिर उन्हें भी पुस्तकाबद्ध करा दूँ शिरोधार्य है। मैं आपसे सहमत हूँ कि आज साहित्यकारों के संस्मरणों का अभाव है और उसकी पूर्ति की जानी चाहिए।

स्व० अग्रवाल जी के लगभग ३०० पत्र मैं इकट्ठे कर चुका हूँ। आपका निबन्ध तो उस संग्रह का एक विशिष्ट अङ्ग होगा। मैंने उसे उस संग्रह के कलेवर में समाविष्ट कर दिया है।

जालौन जनपद की साहित्यिक प्रवृत्तियों पर आप शोध निबन्ध लिख चुके यह जानकर प्रसन्नता हुई। वास्तव में आप बुन्देलखण्ड के साहित्य और संस्कृति के मूल्यांकन और पुनरुत्थान में महत्वपूर्ण योगदान कर रहे हैं। श्री गौरीशंकर जी द्विवेदी ने भी बहुत काम किया है परन्तु अब वे वृद्ध हो चले हैं और इस उत्तराधिकार को तो आपको ही निबाहना है। बुन्देली साहित्य और संस्कृति के लिए अवश्य हम कुछ पृष्ठ ब्रजभारती में सुरक्षित रखेंगे। ब्रजभारती के आगामी फाल्गुन अङ्क में हम आपका लेख अवश्यमेव छाप रहे हैं।

परिषद् पत्रिका के सम्बन्ध में कुछ भ्रान्ति रही। वहाँ से कोई पत्र न आने से मैंने यह समझा कि कदाचित् मैंने उसके विषय में उपयुक्त व्यक्ति को नहीं लिखा परन्तु यदि मुझे उनके यहाँ के नियम की बात पहले पत्र के

उत्तर स्वरूप ही ज्ञात हो जाती तो मैं इतने पत्र जो मैंने लिखे कदापि न लिखता। मुझे बड़े संकोच का अनुभव हो रहा है, न मालूम उन्होंने मुझे क्या समझा होगा। अब जो हुआ सो हुआ। अब इस विषय में उन्हें कुछ न लिखें। ब्रज भारती तो उन्हें पूर्ववत् पहुँचती रहेगी। परिषद् पत्रिका का मैं ग्राहक बन जाऊँगा। मैंने परिषद् पत्रिका की प्राप्ति के लिए सहज स्वभाव से लिखा था कारण सभी महत्वपूर्ण पत्र-पत्रिकाएँ ब्रजभारती के विनिमय में आती है। मैं अपने किसी साहित्यिक बन्धु को धर्म संकट में डालकर पत्रिका प्राप्त करने का सर्वथा इच्छुक नहीं हूँ।

ब्रजभारती का मार्गशीर्ष अङ्क तो आपको मिल गया होगा। शेष अगले पत्र में !

शुभेच्छु
बृन्दावनदास

(२०८)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २७–१–७१

बन्धुवर द्विवेदी जी,

कृपा पत्र मिला। धन्यवाद ! बुन्देलखण्ड के साहित्यिक बन्धुओं से मुझे परम सहयोग प्राप्त हुआ है। इस क्षेत्र के साहित्यिकों में हिन्दी और ब्रजभाषा के प्रति जो रुचि और अनुराग मैंने पाये वे अन्यत्र नहीं। उनका हिन्दी-प्रेम अभिव्यक्ति के लिए छटपटाता है परन्तु उनके पास उपयुक्त माध्यम का अभाव है। इस गहरी अनुभूति के साथ ही मैं उनकी ओर आर्काषित हो जाता हूँ और फिर अपने कर्तव्य का पालन भी करना चाहता हूँ।

आप दत्तचित्त होकर अपनी थीसिस का काम पूरा करें। हम उसमें विघ्न उपस्थित करना नहीं चाहते। साहित्य-सेवा तो आपको करनी ही है, इधर-उधर ध्यान बँटने से उसमें व्यवधान होगा। जब वह कार्य हाथ में ले ही लिया है तो उसे पूरा कर डालिये। आपके द्वारा हिन्दी की अपूर्व सेवा होगी इससे मैं आश्वस्त हूँ।

यहाँ ब्रजभाषा कवि सम्मेलन (आकाशवाणी द्वारा आयोजित) २५ जनवरी को हुआ था। बन्धुवर रामचरण हयारण मित्र और सेवकेन्द्र त्रिपाठी पधारे थे। उन्होंने मेरे निवास स्थान पर पधारने और मेरे साथ भोजन करने की भी कृपा की थी। दोनों ही ब्रजभाषा के उत्कृष्ट पद्य रचनाकार हैं।

फाल्गुन अङ्क १०, १२ दिन में आपके पास पहुँचेगा। आशा है आप सानन्द हैं।

आपका
वृन्दावनदास

(२०९)

प्रकाश भवन,
मथुरा. १५-२-७१

बन्धुवर द्विवेदी जी,

स्नेहाभिसिक्त पत्र मिला। अनेक धन्यवाद! काव्यशास्त्र विनोदेन कालो गच्छति धीमताम् वाली उक्ति आप पर बावन तोले पाव रत्ती ठीक उतरती है। साहित्यानुशीलन में आपकी अगाध रुचि देखकर ही मैंने अपने पिछले पत्र में आपको आपके शोध-प्रबन्ध सम्बन्धी दायित्व के प्रति सचेत किया था। तीन-चार मास का समय कोई बात नहीं। उस कार्य को कर लेने के उपरान्त आप सहर्ष अपनी रुचि के अन्य साहित्यिक कार्य करने में आनन्द का अनुभव करेंगे।

मुझे आपसे बड़ी आशाएँ हैं, मेरी धारणा है कि आपका साहित्यानुराग ब्रज-साहित्य मण्डल के लिए वरदान सिद्ध होगा। समय आने दीजिये मैं ही आपकी रुचि का आपको ढेरों काम बता दूँगा।

प्रेरक साधक के निर्माण के समग हमें आपके विषय में पता ही न था अन्यथा वे सभी आवश्यक बातें जो वास्तव में रह गईं कदापि न रहतीं। यदि उन कमियों की जिनकी ओर आपने इंगित किया है पूर्ति हो जाती तो निःसन्देह ग्रन्थ अद्वितीय बनता।

अब आप पहले पी-एच० डी० बनिये।

शुभेच्छु
वृन्दावनदास

(२१०)

प्रकाश भवन,
मथुरा ,२८-२-७१

बन्धुवर द्विवेदी जी, प्रणाम!

कृपा पत्र तथा चतुर्वेदी जी का महत्वपूर्ण पत्र दोनों मिले। धन्यवाद! चतुर्वेदी जी के पत्र का उपयोग करूँगा। आपके प्रेषित पहले पत्रों में से भी चयन करके कुछ लूँगा। उनके पत्रों के मुद्रण का कार्य आजकल चल रहा है। ग्रन्थ का कलेवर भीषण रूप से बढ़ता दिखाई दे रहा है। चतुर्वेदी जी के पत्रों का मेरे पास वन-सा बिखर रहा है और प्रस्तावित २०० पृष्ठीय ग्रन्थ में

उनका समा जाना एक असम्भव कार्य है, अतः सोचा है कि ग्रन्थ को ३०० पृष्ठ का करूँ लेकिन इससे बढ़ाना ग्रन्थ की ग्राह्यता को समाप्त कर देने के सदृश होगा। बड़े ग्रन्थों को लोग न खरीद पाते हैं और यदि खरीद भी लें तो पूरा पढ़ नहीं पाते या पढ़ना नहीं चाहते। मुख्यतया मैं उन्हीं पत्रों को छाप रहा हूँ जिनको मिलने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ है परन्तु आप सदृश कतिपय सुहृदों के कुछ पत्रों को भी निश्चित रूप से स्थान दे रहा हूँ।

आप अपने थीसिस में दत्तचित्त हैं यह जानकर हर्ष हुआ। उसे तो मंजिले मकसूद तक पहुँचाना ही है।

मेरी इच्छा थी कि ब्रज-भारती का पूरा सैट भी आपकी संस्था में रहे। आपके पास ब्रज-भारती के अङ्क कितने हैं? मेरे सम्पादकत्व में ब्रज-भारती के अद्यतन २३ अङ्क निकल चुके हैं। सम्वत् २०२२ के तीन और संवत् २०२३–२७ के बीस। आप कुछ समय से तो ब्रज-भारती नियमित रूप से प्राप्त करते ही रहे हैं, प्राप्त करने के पूर्व के कितने और कौन से अङ्क आपके पास उपलब्ध नहीं हैं लिखें मैं उन्हें अविलम्ब आपको भेज देना चाहता हूँ। आपके निजी पुस्तकालय में ब्रज-भारती का पूरा संग्रह अवश्य रहना चाहिए। ये अङ्क आपको निःशुल्क सादर भेंट होंगे तथा भविष्य में आपसे ब्रज-भारती का कोई चन्दा कदापि न लिया जायेगा। आप तो मण्डल के परम हितैषियों में भी अग्रगण्य हैं, अतः आप Comolementary Copies प्राप्त करने के सम्मानित अधिकारी हैं।

चतुर्वेदी जी से परसों दिल्ली में भेंट हुई थी आपकी बावत भी कह रहे थे। ब्रज-भारती का नवीन अङ्क उनकी छोटी मेज पर रक्खा था वस्तुतः वे उसे ही देख रहे थे। चतुर्वेदी जी का व्यक्तित्व महान है, उन्होंने हिन्दी जनों में सौहार्द और आत्मीयता-प्रसारण का बड़ा अद्‌भुत कार्य किया है। उनका स्वप्न में भी कभी कोई निजी स्वार्थ नहीं है। उनका जीवन निःसन्देह 'पर-जन हिताय' है। उन्हें इस बात का किंचित् आभास भी नहीं कि वे अपनी अविरल पत्र-धारा से हिन्दी उद्यान का सतत सिंचन कर रहे हैं। विश्राम कक्ष में बैठे-बैठे ही वे हिन्दी को एक स्वस्थ और निर्मल नेतृत्व प्रदान कर रहे हैं।

आशा है आप स्वस्थ एवं सानन्द हैं।

आपका

वृन्दावनदास

(२११)

प्रकाश भवन,
मथुरा. १५–३–७१

बन्धुवर द्विवेदी जी, प्रणाम !

कृपा पत्र ८-३-७१ का यथा समय मिल गया। धन्यवाद ! ब्रज-भारती में प्रकाशित आपके लेख पर श्री गौरीशंकर द्विवेदी ने साधुवाद किया सो ठीक है। आपके लेख पर हमें कई अन्य प्रशंसा सूचक पत्र मिले हैं। ब्रजभाषा साहित्य के सम्बन्ध में आपके सुझावों पर स्थानीय साहित्यिक बन्धुओं में भी अच्छी प्रतिक्रिया हुई है। एक महाशय तो हमें ब्रज-भारती में प्रकाशित लेखों की अनुक्रमणिका भी दे गये हैं। उन्होंने लेखकों के नामों के अकारादिक्रम के आधार मेरे सम्पादकत्व में प्रकाशित सब अंकों के लेखों की सूची बनायी है। उसे ब्रज भारती में ही प्रकाशित कर दिया जायगा।

आप अपने थीसिस का कार्य विधिवत् कर रहे हैं यह जानकर प्रसन्नता हुई। When the wind is blowing favourably sail on ! sail on.

श्री बनारसीदास जी के पत्रों का मुद्रण-कार्य विधिवत् चल रहा है। १६२ पृष्ठ छप चुके हैं लगभग ३०० पृष्ठ की पुस्तक होगी। मेरा अनुभव यह है कि बड़े ग्रन्थ का मुद्रण उसी प्रकार श्रम साध्य है जिस प्रकार एक भवन का निर्माण।

श्रद्धेय चतुर्वेदी जी ने जो पत्र आपको लिखा था और जिसकी प्रति-लिपि मुझे आपने भेजी थी वह अत्युत्कृष्ट है, अतः उसे मैं अपने ग्रन्थ में प्रकाशित कर रहा हूँ तथा आपके कुछ अन्य पत्र भी।

आपका
वृन्दावनदास

(२१२)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ६–६–७१

बन्धुवर द्विवेदी जी, प्रणाम !

कृपा पत्र मिला। धन्यवाद ! बिस्तर पर लेटे हुए भी इतने लम्बे पत्र लिखने की सलाह मैं कभी न दूँगा। पत्र भी क्या है, आपने इतनी सूचनाएँ माँगी हैं कि इन पर सोचने और लिखने में स्वस्थ व्यक्ति भी श्रम के वेग को न रोक सकेगा जिसमें आप तो अभी अस्वस्थ ही चल रहे हैं। फिर भी आपके मनोरंजनार्थ संक्षिप्त रूप से लिखता हूँ।

(१) डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल पर पत्रों का संग्रह निरन्तर चल रहा है। सत्येन्द्र जी से पत्रों की प्रतिलिपियाँ आ गईं। रायकृष्णदास और डॉक्टर मोतीचन्द्र को लिखे पत्रों का कोई उत्तर ही न आया। डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त ने लिखा है कि वे किसी को अपना संग्रह न देंगे। वे चाहेंगे तो खुद ही उसे कभी छपाएँगे। आ० शिवपूजन सहाय जी के पुत्रों से मेरा सम्पर्क नहीं है। फिर भी उन्हें लिखूँगा।

(२) आपकी भेजी हुई समीक्षा की चार कापी टंकित करा ली हैं। १ प्रति अमर उजाला आगरा एक सैनिक आगरा को भेज दी गई, शेष दोनों प्रतियों को भी अन्य पत्रों को शीघ्र भेज दूँगा। जिस पत्र में भी मुद्रित होगी उसकी एक प्रति आपको अवश्य भेज दूँगा।

शुभेच्छु
वृन्दावनदास

(२१३)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ९-९-७१

बन्धुवर द्विवेदी जी, प्रणाम !

कृपा पत्र आपके आज दो मिले। धन्यवाद ! आपके पिछले प्रत्येक पत्र का बाकायदा उत्तर दे चुका हूँ। मेरे पत्र पहुँचे होंगे। आपकी समीक्षा चार पत्रों को भेजी जा चुकी है। मेरा तो अनुमान है कि वह उन चारों में निकलेगी। आपको मुद्रित प्रति अवश्य भिजवा दूँगा। आप एक सुयोग्य साहित्यिक हैं। पारखी का काम केवल रत्न को पहचानने का है।

स्व० अग्रवाल जी के पत्र मैं छापूँगा। एक बार वाराणसी जाना पड़ेगा उनकी धर्म पत्नी और पुत्रों से मिलने। अभी तो मैं अपना इतिहास ग्रन्थ छपाने में व्यस्त हूँ। One thing at a time.

ब्रज-भारती के अन्तिम पृष्ठ पर आपकी स्मार्त निराला की समीक्षा आज छपने दे दी है। ब्रज भारती ५, ६ दिन में पहुँचेगी। अबकी बार प्रेसाध्यक्ष ने उसे कुछ झमेले में डाल दिया।

आशा है आप अब शीघ्र आरोग्य लाभ की दिशा में अग्रसर हो रहे हैं।

आपका
वृन्दावनदास

(२१४)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ८-११-७१

बन्धुवर द्विवेदी जी, प्रणाम !

कृपा पत्र मिला। धन्यवाद ! यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि आप पूर्ण रूपेण स्वस्थ हैं। मानसिक श्रम जहाँ तक बने कम ही कीजिये।

झाँसी के साहित्यिक वातावरण का आपने जो उल्लेख किया उससे यही प्रतीत होता है कि हमारे बन्धुगण आत्म-केन्द्रित हो गये हैं। वैसे एकाकी प्रयास भी स्तुत्य है परन्तु समाज के हित में महान कार्य तो तभी सम्भव होगा जब समानशील परस्पर पूरक व्यक्ति उसमें सामूहिक रूप से प्रयत्नवान् हों।

लेख और छत्र साल पत्रिका आपने सोमवार को भेजने के लिए लिखा सो आज भेज ही चुके होंगे।

शायद ता० २१ की सन्ध्या को मुझे अपने भाँजे की बरात में झाँसी पहुँचना पड़े। क्या आप वहाँ आ सकते हैं ? यदि ऐसा हो सके तो विवाह में सम्मिलित हों, २२ ता० को बरात है, कार्यक्रम फिर भेज दूँगा।

रंजन जी ने अपनी पत्रिका 'आशा' का जनपदीय अङ्क बड़ा अच्छा निकाला है। मैं उनको लिख रहा हूँ कि एक प्रति आपको अवश्य भेज दी जाय। बा० कृष्णानन्द जी से भेंट होने पर हमारा प्रणाम कहिये।

आपका
वृन्दावनदास

(२१५)

प्रकाश भवन,
मथुरा. १८-११-७१

बन्धुवर द्विवेदी जी, प्रणाम !

कृपा पत्र मिला। धन्यवाद ! आपने अपने लेख के माध्यम से एक शैली निर्धारित की है। इस तरह के आकलन पूर्ण रूप से नये नहीं हैं। हमने और भी पढ़े हैं। यह बात निःसन्देह सत्य है कि इस प्रकार का प्रयास अत्यल्प ही होता है, यह सब श्रम साध्य जो है।

'लोक संगम' का बुन्देली अङ्क प्राप्त हो गया। बड़ा सुन्दर है। धन्यवाद ! आगामी अंक में इस पर कुछ लिखूँगा। रंजन जी को मैंने १०, १२ स्थानों पर पत्रिका भेजने को लिख तो दिया था परन्तु उनका कोई उत्तर ही नहीं आया। शायद पराश्रित होने के कारण वे पत्रिका की प्रतियाँ न भेज पावें। खैर, देख लेंगे आपको तो भिजवाएँगे ही।

आप २२ को दस बजे बाद श्री गौरीशंकर जी द्विवेदी के यहाँ ही मिलें, हम लगभग ११, १२ बजे वहाँ पहुँचेंगे और वहीं आपसे भेंट हो जायगी।

रजिस्ट्री से विवरणिका प्राप्त हो गई। उसे देखकर आपको उसके विषय में लिखूँगा।

बरात सेठ विधीचन्द्र अग्रवाल राम श्याम बस ओनर्स झाँसी के यहाँ जाएगी। बरात के ठहरने का स्थान नारायण धर्मशाला है। २२ ता० को ही हमें सब साहित्यिकों से भेंट करनी है। २३ की सुबह बरात का प्रस्थान हो जायेगा। शेष सब कुशल है।

आपका
वृन्दावनदास

(२१६)

प्रकाश भवन,
मथुरा २६-११-७१

बन्धुवर द्विवेदी जी, प्रणाम !

आप झाँसी खूब आये। बड़ा आनन्द रहा। झाँसी के सभी बन्धुओं के दर्शनों का लाभ रहा। संध्या समय बड़ी सफल गोष्ठी रही। ता० २३ के जागरण में विस्तृत विवरण छप गया है। उसी दिन संध्या समय बरात में सम्मिलित होने के पूर्व मैं बन्धुवर कृष्णानन्द जी के दर्शनार्थ गया। स्नेह से लिपट गये और मेरे साथ-साथ घण्टों बरात में चलते रहे। मेरे प्रति उनका भाव अत्यन्त कोमल, स्निग्ध और कृपालु है। मैं इसे भली-भाँति जानता हूँ। वस्तुत: वे मेरे कारण ही रुक गये अन्यथा उसी दिन मध्याह्नोत्तर चार बजे जा रहे थे।

आप रात्रि को घर पहुँच गये होंगे। कोई कष्ट तो न हुआ। द्विवेदी जी (पं० गौरीशंकर द्विवेदी) दिन भर तथा रात्रि के ९ बजे तक मेरे साथ रहे। झाँसी में जनपदीय सम्मेलन स्थापित होगा तथा यदि सम्भव हुआ तो आगामी वार्षिक अधिवेशन भी झाँसी में ही बुलाएँगे।

स्वास्थ्य का ध्यान रखें। शेष कुशल है।

आपका
वृन्दावनदास

(२१७)

प्रकाश भवन
मथुरा. २०-१२-७१

बन्धुवर द्विवेदी जी, प्रणाम !

कृपा पत्र मिला। धन्यवाद ! अन्तरजनपदीय कार्य का क्षेत्र बड़ा विशाल है। उस पर लिखने वाले लोग भी बहुत कम हैं। श्री मोहनलाल जी

उपाध्याय निर्मोही सम्पादक 'वीणा' ११ रवीन्द्रनाथ टैगोर मार्ग, दक्षिण तुकोगंज इन्दौर अपनी पत्रिका वीणा के माध्यम से लोकभाषाओं के संवर्धन का कार्य बड़ी खूबी से कर रहे हैं। इस कार्य के लिए ऐसी कई पत्रिकाएँ हों तो ही यह कार्य सम्भव है। वैसे बिहार के साहित्यिक जगत में आजकल काम अच्छा चल रहा है। आप अपना शोधकार्य पूरा कर लीजिये। तदुपरान्त आप इस क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण काम कर सकेंगे ऐसा मेरा विश्वास है।

श्रद्धेय चतुर्वेदी जी का विचार अत्युत्तम है। यदि भारत के प्रत्येक अँचल में किए हुए जनपदीय कार्यों पर विवरणात्मक वृत्त उपलब्ध हो सकें और हम उन्हें प्रकाशित कर सकें तो निःसन्देह यह बड़ा काम होगा।

आशा है आप सानन्द हैं।

आपका
वृन्दावनदास

(२१८)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २-११-७२

वन्धुवर द्विवेदी जी, प्रणाम !

कृपापत्र यथा समय प्राप्त हो गया था। आप निःसंकोच श्री रमेशचन्द्र शर्मा अध्यक्ष पुरातत्व संग्रहालय, मथुरा से पत्र-व्यवहार करें, हमारा सन्दर्भ दे दें। वे आपको वाँछित सूचनाएँ देंगे। वे पुरातत्त्व के तो प्रकाण्ड विद्वान् हैं ही, बड़े सहृदय हैं और साथ-साथ बड़े कर्मठ। यदि प्रशासन में ऐसे अधिकारी हमें अधिक संख्या में मिल जायँ तो यह दुःखी जनता खिल उठे और धन्य हो जाय।

इतिहास के विषय में आपकी मान्यता बावन तोले पाव रत्ती ठीक है। मैं तो अपनी कह गया हूँ, चाहता था हिन्दू गौरव को जनता के समक्ष जैसा कुछ बने प्रस्तुत कर दूँ। मैंने ग्रन्थ को प्रमाणों और उद्धरणों से बोझिल न बनाकर स्थापित तथ्यों को व्यापक मान्यता दे दी है और वर्ण्य विषय का सरल प्रस्तुतीकरण कर दिया है। आप यथावकाश समीक्षा लिखें, अभी तो शोधकार्य पर ही लगे रहें, वह काम पहला है और अनिवार्य रूप से करना ही है।

स्व० अग्रवाल जी के पत्रों का काम भी शीघ्र हाथ में लेना है। शेष सब कुशल है। स्वास्थ्य का बराबर ध्यान रखिये। अधिक मानसिक श्रम से बचें। दीपावली की अग्रिम बधाई।

आपका
वृन्दावनदास

(२१९)

प्रकाश भवन,

मथुरा. २७-८-७४

प्रियवर द्विवेदी जी, प्रणाम !

कृपापत्र मिला। डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल के पत्र शीर्षक पुस्तक छप गई है। एक प्रति रजिस्टर्ड बुक-पोस्ट से प्रेषित है। कृपया पहुँच लिखें। आपका लेख उसमें समाहित है।

आपका शोध-प्रबन्ध स्वीकृत हो गया यह समाचार बड़ा सुखद है। तब तो आप डाक्टर हो ही गये। बहुत बहुत बधाई।

आशा है अब आप बिल्कुल स्वस्थ हैं। ब्रज भारती पूर्ववत् चल रही है, आपको नियमित रूप से मिल रही है इसमें मुझे सन्देह नहीं है। एक बहुत बड़े काम से आप छुट्टी पा गये हैं यह बड़ी प्रसन्नता का विषय है।

शुभाकांक्षी

बृन्दावनदास

डा० रामस्वरूप आर्य के नाम

(२२०)

प्रकाश भवन,

मथुरा. १३-४-६८

प्रिय आर्य जी, नमस्कार !

कृपा पत्र मिला ! आप 'छन्द शास्त्र के आचार्य पं० हरिशंकर शर्मा" शीर्षक लेख अवश्य लिखें। पण्डित जी पर आगामी अङ्क तो नहीं अगला कोई अङ्क निकलेगा। सामग्री का चयन हो रहा है। आप अवश्य लिखें और शीघ्र भेज दें।

भवदीय

वृन्दावनदास

(२२१)

प्रकाश भवन,

मथुरा. १३-४-६८

प्रिय आर्य महोदय !

कृपा पत्र मिला। आपको हस्तलिखित ग्रन्थ ब्रजवानी विनोद कवि गोपालराय कृत मिला, यह जानकर प्रसन्नता हुई। आप निःसंदेह इन पर लेख लिखें और ब्रजभारती में प्रकाशनार्थ हमें भेज दें। इसमें हमको कोई आपत्ति नहीं है।

ब्रजभाषा साहित्य के प्रकाशन की व्यवस्था कर रहे हैं, देखिए कहाँ तक सफलता मिलती है। आगरा के उत्सवों में प्रकाशित स्मारिकाओं में महाकवि ग्वाल से सम्बन्धित सामग्री तो भेज रहे हैं, कविरत्न की स्मारिका के लिए पं० रमेशचन्द्र दुबे ११ बी, डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट कम्पाउण्ड, आगरा को लिखें। निमन्त्रण पत्र के लिए धन्यवाद ! मेरी ओर से अनेक बधाई।

आपका

वृन्दावनदास

(२२२)

प्रकाश भवन,

मथुरा. २१-३-६९

प्रिय आर्य जी,

कृपापत्र मिला। धन्यवाद ! आपके पते में आवश्यक संशोधन कर लिया गया है। भविष्य में संशोधित पते पर ही ब्रज-भारती एवं पत्र आदि भेजे जायेंगे।

गोपालराय की कृति पर अपना लेख चाहें जब भेज दें। उसके लिए पत्रिका में स्थान सुरक्षित होगा।

ग्रन्थालोचन के लिए प्रस्तुत पुस्तकें अब आपको भी समीक्षार्थ भेज दिया करेंगे। आशा है आप सानन्द हैं ! आपके पास आगरा से कर्मयोग सिद्धान्त और अध्यात्म ज्योति भिजवा रहा हूँ उनकी समीक्षा ब्रज-भारती के लिए लिख कर मुझे भेज दें।

शुभेच्छु

वृन्दावनदास

(२२३)

प्रकाश भवन,

मथुरा १२-९-७०

प्रिय आर्य जी,

कृपा पत्र मिला। धन्यवाद ! डा० अग्रवाल के पत्र जो आपके पास हों उनकी प्रतिलिपि कराकर अवश्य मेरे पास भेज दें। उनके मुद्रण की योजना तैयार की जा रही है।

भारतीय संस्कृति के विविध परिदृश्य की दूसरी आवृति लगभग तैयार हैं। एक सप्ताह में आपको एक प्रति भेजेंगे।

श्रीकृष्णानन्द गुप्त के पुस्तकालय पर यदि कोई सम्पन्न लेख भेजेंगे तो हम उसे अवश्य छाप देंगे। आशा है आप सपरिवार आनन्दपूर्वक हैं।

आपका

वृन्दावनदास

(२२४)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २७–१–७१

बन्धुवर आर्य जी,

कृपा पत्र मिला। धन्यवाद ! आपने जिन अशुद्धियों की ओर संकेत किया है वास्तव में वे भयावह हैं। यदि लेखक बन्धु अपने लिखे को दुबारा पढ़ लिया करें तो इस प्रकार की त्रुटियाँ कदापि न रहें। कार्याधिक्य के कारण में भी पूरा ध्यान नहीं दे पाता हूँ। फिर भी इनकी ओर मेरा ध्यान आकर्षित करने के लिए आप धन्यवादार्ह हैं।

कुछ पुस्तकें समीक्षा के लिए शीघ्र भेजूँगा परन्तु कृपा कर उनकी समीक्षा शीघ्र ही लिखकर भेज दें। शेष कुशल है।

शुभाकांक्षी
बृन्दावनदास

(२२५)

प्रकाश भवन,
मथुरा. १८-३-७१

बन्धुवर आर्य जी,

कृपा पत्र १३-३-७१ का प्राप्त हुआ। धन्यवाद ! पत्र-साहित्य के सम्बन्ध में आपने जो सूचना दी उससे अवगत हुआ। इसका कुछ अंश मेरे लिए नवीन है। परन्तु मेरी भूमिका तो लिखी जा चुकी और छप भी चुकी। चतुर्वेदी जी के पत्रों पर ग्रन्थ लगभग ३०० पृष्ठीय होगा। ११२ पृष्ठ छप चुके। अभि० ग्र० के लिए मैं श्री उमाशंकर जी निःशेष को लिख रहा हूँ।

शेष सब कुशल है।

आपका
बृन्दावनदास

(२२६)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २९–८–७१

बन्धुवर,

श्री आनन्द शंकर माधवन जी ने आपको अपना साहित्य भेज दिया है। उनका पत्र मेरे पास आ गया है। उस पर विस्तृत समीक्षा लिखिये। आनन्द शंकर जी का साहित्य एक शैली देता है जो बड़ी ही आकर्षक, मनोरंजक और विचारोत्पादक है। वह एक चिन्तन देता है और उसमें संसार को सद्विचार देने

की क्षमता है। उनकी पुस्तकें पठनीय और मननीय हैं। आप बढ़िया सी समीक्षा लिखकर भेजें। ब्रज-भारती में शीघ्र प्रकाशित कर दी जायगी।

शुभेच्छु
वृन्दावनदास

(२२७)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ७-१०-७१

बन्धुवर डा० आर्य जी,

कृपा पत्र तथा श्रद्धेय चतुर्वेदी जी को लिखे पत्र की प्रतिलिपि मिली। अनेक धन्यवाद! ब्रज-भारती के १६ वें वर्ष का प्रथमांक मिल गया है। पृथक् डाक से भेजा जा रहा है। आपके पास फाइल तो पूरी होनी ही चाहिए।

आपकी समीक्षाएँ आगामी अङ्क में निश्चित रूप से प्रकाशित हो रही हैं। श्री माधवन जी के ग्रन्थों पर अवश्य लिखने की कृपा करें। उनका चिन्तन बड़ा उच्चस्तरीय है।

सन्दर्भ ग्रन्थ के लिए लेख दो चार दिन में ही भेज रहा हूँ। डॉ० बनारसीदास चतुर्वेदी को लिखे पत्र में मेरे प्रति जो भाव आपने व्यक्त किए हैं, उनके लिए आभारी हूँ।

मथुरा के डॉ० रमेशचन्द्र कुलश्रेष्ठ नेत्र विशेषज्ञ एक सुयोग्य डॉक्टर हैं। आप उन्हें मेरा सन्दर्भ देकर चिरंजीव की बीमारी का विवरण लिखें तथा उनसे टाइम ले लें। वे बहुत ही प्रवीण हैं। सम्मति तो प्राप्त होगी ही। एक पत्र डॉ० कपूर रमन आई हॉस्पिटल डीग दर्वाजा मथुरा को भी लिखें। वे भी बड़े दक्ष हैं। कम से कम राय तो मिलेगी ही। इनको भी मेरा सन्दर्भ दे सकते हैं। शेष सब कुशल है।

चतुर्वेदी जी का कोई उत्तर आपको मिला या नहीं। मैं बम्बई, बंगलौर, मैसूर, तिरूपति हौस्पैट की १८ दिवसीय यात्रा पर सपत्नीक गया हुआ था। परसों सुबह आया हूँ।

आपका
वृन्दावनदास

3 (२२८)

प्रकाश भवन,
मथुरा. १७-१०-७१

बन्धुवर डा० आर्य जी, सादर नमस्कार!

आपका कृपापत्र लेख सहित प्राप्त हुआ। अनेकानेक धन्यवाद! आपका लेख अत्यन्त विद्वत्तापूर्ण एवं शोध-परक है। आपने गहन अध्ययनशीलता और

एक अनसन्धित्सु की पैनी दृष्टि से लेख लिखा है। मेरा वश चले तो आपको इसी लेख पर डी० लिट् की उपाधि दे डालूँ। आपके लेख की प्राप्ति के समय डॉ० नारायणदत्त शर्मा बैठे हुए थे। उन्होंने भी लेख को पढ़कर उसकी मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की।

आपने दूसरे पत्र में जो सुझाव दिए हैं उनको कार्यान्वित करने से ग्रन्थ की उपयोगिता में वृद्धि होगी। मैंने आपके दोनों पत्र सम्पादक मण्डल के विचारार्थ सुरक्षित कर दिए हैं।

आशा है आप स्वस्थ एवं सानन्द हैं।

आपकी इच्छानुसार यात्रा के अनुभवों पर ब्रज-भारती के सम्पादकीय स्तम्भों में प्रकाश डालूँगा।

वर्तनी सम्बन्धी यद्यपि दो मत हैं तथापि अधिकांशतः विद्वज्जन आपके दृष्टिकोण से सहमत हैं। अब मैं भी उसी के अनुसार चलूँगा। धन्यवाद !

आपका
वृन्दावनदास

(२२६)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २८-१२-७१

बन्धुवर डा० आर्य जी, प्रणाम !

आशा है आप स्वस्थ एवं सानन्द हैं। यह तो आपको विदित ही है कि श्रद्धेय डॉ० बनारसीदास चतुर्वेदी जनपदीय आन्दोलन के पुरोधा हैं। उन्होंने अनेक विद्यालयों से उनकी पत्रिकाओं के विशेषाङ्क जनपदीय अङ्कों के रूप में निकलवा दिये हैं। हम आपको एक पत्रिका 'आशा' का विशेषांक भेज रहे हैं। यह पठनीय है।

आपने आनन्दशंकर माधवन जी के साहित्य पर कुछ लिखा या नहीं। यदि न लिखा हो तो कृपा कर अवश्य लिखें। हम उनसे वचनबद्ध हैं तथा हमारी दृष्टि में उनका साहित्य अधिकाधिक प्रचार प्राप्त करने योग्य है। उनकी शैली प्रवाहमयी है। हमारा तरुणवर्ग यदि उनके साहित्य का अनुशीलन करेगा तो निःसन्देह उसे प्रेरणा प्राप्त होगी।

शेष सब कुशल है।

आपका
वृन्दावनदास

(२३०)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २१-८-७२

बन्धुवर डा० आर्य जी,

अपनी दस दिवसीय यात्रा से लौटकर पत्रों के ढेर में आपके कृपापत्र को भी देखा। मुझे लगता है मैं इसका उत्तर दे चुका हूँ। फिर भी आपको पत्र लिखने में तो आनन्दानुभूति होती है। आत्मीयता का यही तो लक्षण है।

आपका लेख ग्रन्थ में सम्मानपूर्ण स्थान प्राप्त करेगा, वह सुरक्षित है। नामकरण पर आपका सुझाव सम्पादक मण्डल को प्रस्तुत कर दिया जायगा। मुझे तो वह बहुत ठीक लगा।

बी० एस-ए० के स्थान पर यदि संस्थापक के नाम पर बाबू शिवनाथ अग्रवाल ही रहे तो क्या बुराई है। यह प्रथा जो प्रचलित है, निन्द्य है। मैं इस विषय में आन्दोलन करूँगा, सभी विद्यालयों को इसी प्रकार सम्बोधित किया जाता है। नामों का अँग्रेजी पद्धति के अनुसार संक्षिप्तीकरण कर दिया गया है। इस पद्धति को बदलना ही चाहिए।

आशा है आप स्वस्थ एवं सानन्द हैं।

आपका
वृन्दावनदास

(२३१)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २५-४-७३

बन्धुवर डा० आर्य जी,

कृपा पत्र मिला। मैं सपरिवार पशुपतिनाथ जी के दर्शन हेतु काठमाण्डू गया था। कल प्रातः ही लौटकर आया हूँ। रास्ते में पटना में साहित्यिक गोष्ठियों का आनन्द रहा।

श्रीमती ऊषा जैन का लेख शीघ्र छापेंगे। माधवनकृत अनामन्त्रित मेहमान की समीक्षा जो आपने ५ पृष्ठों में लिखी है उसे भेज दीजिये हम उसे ज्यों की त्यों छाप देंगे। हम माधवन जी से वचनबद्ध हो चुके हैं।

आशा है आप सानन्द हैं।

आपका
वृन्दावनदास

(२३२)

२०२ नीलाम्बर ३७ पैडर रोड,
बम्बई. २२-६-७३

बन्धुवर आर्य जी,

आपका पत्र पुनर्प्रेषित होकर यहाँ आ गया। मैं भी आजकल बम्बई में ही हूँ और जुलाई के प्रथम सप्ताह में मथुरा लौटूँगा। आपकी समीक्षा यथाशीघ्र व्रज-भारती में प्रकाशित कर देंगे। माधवन जी को लिख रहा हूँ।

व्रजभारती को समय से निकालने की चेष्टा तो मैं करता ही हूँ, परन्तु व्यवधान भी काफी आता रहता है।

आचार्य पं० पद्मसिंह शर्मा की शताब्दी पर आपके सहयोग से ही कुछ आयोजन करना सम्भव होगा।

आपने लिखा कि हिन्दी को विश्व की प्रचलित भाषाओं में बोलने वालों की दृष्टि से तीसरा स्थान प्राप्त है यह जानकर और भी खुशी हुई। डा० हरिशंकर शर्मा जी ने उसे चौथा स्थान दिया था और उसी आधार पर मैंने लिख दिया था। आपकी बात प्रामाणिक मालूम होती है। फ्रेंच भी बहुप्रचलित है, क्या उसका स्थान चौथा है?

सरकार से मण्डल को कुछ नहीं के बराबर मिला है। इस विषय में कुछ न कहा जाय वही अच्छा है। आशा है आप स्वस्थ एवं सानन्द हैं।

आपका
वृन्दावनदास

(२३३)

प्रकाश भवन,
मथुरा. १-८-७३

बन्धुवर आर्य जी,

आपके सभी पत्र मिल गये। धन्यवाद! मैं ता० २० को बम्बई से लौट आया हूँ। 'आमन्त्रित मेहमान' शीर्षक आपका लेख मुद्रणार्थ प्रेषित कर दिया है। विभिन्न भाषाओं के बोलने वालों की संख्या-तालिका भी सम्पादकीय में आपके नाम से उद्धृत कर दी है।

पं० पद्मसिंह शर्मा की जयन्ती अवश्य मनावें, वे व्रजभाषा के आचार्य थे। व्रजभाषा उनकी परम ऋणी है। सिंघल साहब (श्री हरिश्चन्द्र सिंघल) रसज्ञ साहित्यकार हैं तथा उनका हृदय सदैव स्नेह और आत्मीयता से ओत-प्रोत रहता है। आशा है आप स्वस्थ एवं सानन्द हैं।

आपका
वृन्दावनदास

(२३४)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ११-११-७३

वन्धुवर डा० आर्य जी,

कृपा पत्र यथा समय प्राप्त हो गया था। धन्यवाद ! आचार्य पं० पद्मसिंह जी शर्मा के पुस्तकालय के सम्बन्ध में ब्रज-भारती के सम्पादकीय में टिप्पणी लिख दी है। डा० रामविलास जी सूची बनवा रहे हैं यह जानकर हर्ष हुआ। मैं अबकी बार जब उनसे किसी समारोह में मिलूँगा तब उनसे आग्रह पूर्वक निवेदन कर दूँगा कि वे उस कार्य को शीघ्र सम्पन्न करा दें।

स्मृति ग्रन्थ का साइज १८×२२ बहुत ठीक रहेगा। उस साइज में ग्रन्थ का मुद्रण मथुरा में भी सम्भव होगा। आप उसके लिए निधि इकट्ठी कर लें। यदि वहाँ छपना सम्भव हो तो प्रूफ संशोधन की दृष्टि से अधिक उपयुक्त रहेगा।

श्री रमेशचन्द्र दुबे हरिद्वार में समारोह के आयोजन को उपयुक्त समझते हैं। मैं भी उनसे सहमत हूँ। श्रद्धेय बनारसीदास जी चतुर्वेदी को भी मैंने लिखा है। यदि आपकी समिति को असुविधा हो तो बिजनौर ही रखें। हमें प्रत्येक प्रकार से ठीक है।

आपका
वृन्दावनदास

(२३५)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २६-११-७३

वन्धुवर डा० आर्य जी,

कृपा पत्र मिला। मेरे पास परसों दोपहर की डाक से मान्यवर श्री रमेशचन्द्र दुबे द्वारा प्रेषित एक बण्डल पहुँचा है। इसमें २५०, २५० दोनों प्रकार की विज्ञप्तियाँ हैं जिनकी एक-एक प्रति आपकी सेवा में भेज रहा हूँ। दुबे जी ने मुझे एक पत्र भी भेजा है। जिसमें उन्होंने स्मृति ग्रन्थ के लिए लेखादि संग्रह करने का अनुरोध मुझसे किया है। ऐसा प्रतीत होता है आपका दुबे जी से अद्यतन कोई विशेष सम्पर्क हो ही नहीं पाया है। दुबे जी उच्चकोटि के साहित्यकार और प्रभावशाली व्यक्ति हैं। वे कुशल संगठनकर्त्ता भी हैं। वे आचार्य जी की शताब्दी समारोह को सम्पन्न करा सकेंगे इसमें मुझे तनिक भी सन्देह नहीं है। मेरे विचार से आपके लिए तो अब सर्वोत्तम मार्ग यही है कि

आप उनके द्वारा आयोजित समारोह में सक्रिय सहयोग प्रदान करें। स्मारिका के सम्बन्ध में जो भी सामग्री आपके पास संगृहीत है उसे सुरक्षित करते हुए उसमें वृद्धि करें, उसकी तालिका बनाकर उससे मुझे अवगत करें। इधर मैं सामग्री का संग्रह कर रहा हूँ, उधर दुबे जी स्वयं करेंगे तथा आप द्वारा संगृहीत सामग्री उस सबमें मिलकर एक उत्तम संग्रह बन जावेगा। यह समन्वित प्रयास बड़ा ही सुन्दर होगा।

बिजनौर और मुरादाबाद में तो दूरी बहुत कम है। आप एक बार दुबे जी से मिल आइये। उनका पता है—श्री रमेशचन्द्र दुबे ए ९०, गांधी नगर मुरादाबाद। आशा हैं आप स्वस्थ एवं सानन्द हैं। आपके यहाँ की समिति की क्या स्थिति है। आपका पत्र आने से स्थिति स्पष्ट होगी।

आपका
वृन्दावनदास

(२३६)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ३०–१–७४

बन्धुवर आर्य जी,

कृपा पत्र मिला। धन्यवाद ! श्री दुबे जी की आज्ञानुसार मैंने साहित्यिक बन्धुओं को पत्र लिख-लिख कर स्वर्गीय शर्मा जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर लेख माँगे थे। शर्मा जी का पुण्य प्रताप कि मेरे प्राङ्गण में लेखों की मूसलाधार वृष्टि हो गई। मैंने, जैसे-जैसे लेख आते गये उन्हें रजिष्ट्रियों और भारी-भरकम लिफाफों में रखकर दुबे जी को भेज दिया था।

आप, यदि दुबे जी कहें तो उनका सम्पादन कर दें। चाहे काट-छाँट करके लेख का आप संक्षिप्तीकरण कर दें परन्तु प्रत्येक लेखक की रचना को स्थान अवश्य मिलना चाहिये। जो सामग्री वर्तमान स्मारिका से बच रहेगी उसका उपयोग आपके द्वारा आयोजित शताब्दी समारोह से सम्बद्ध ग्रन्थ में कर लिया जायगा।

श्रद्धेय चतुर्वेदी जी जैसे कहते हैं वैसे ही आप ग्रन्थ को भले ही ढाल दें पर प्राप्त रचनाओं को स्थान अवश्यमेव मिलना चाहिए। मेरे पास आये हुए सभी लेख उत्तम साहित्यिक सामग्री का प्रस्तुतीकरण कर रहे हैं। उनका संक्षिप्तीकरण भले ही कर दिया जाय परन्तु वर्जन कदापि न होना चाहिये।

आजकल बिहार तथा पूर्वी उत्तर प्रदेश में जनपदीय आन्दोलन की एक लहर चल पड़ी है। जनपदीय कार्यकर्त्ता बड़े मनोयोग से काम कर रहे हैं। उन्होंने जनपदीय परिषद् का पुनर्गठन भी कर लिया है। मेरी इच्छा है कि

१३, १४ अप्रेल के अवसर पर हरिद्वार में अन्तर जनपदीय परिषद् की एक बैठक भी कर ली जाय। साहित्यिक कार्यकर्त्ताओं के अपूर्व मिलन का अवसर प्राप्त होगा। आप उनसे भेंट करके परम प्रसन्न होंगे।

शेष सब कुशल है।

आपका
वृन्दावनदास

(२३७)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ३१-१-७४

बन्धुवर डा० आर्य जी,

एक पत्र आपको दे चुका हूँ। मेरे पास तो लेख आते ही जा रहे हैं। यह बड़ी प्रसन्नता की बात है कि आप भी दो वर्ष बाद जन्म शताब्दी मनाएँगे। उस अवसर पर स्मृति ग्रन्थ में वह सब सामग्री ले ली जाय जिसका कि उपयोग प्रस्तुत ग्रन्थ में न हो सके।

आपने संशोधन कर दिया तथा काट-छाँटकर लेखों का आकार छोटा कर दिया, यह बहुत अच्छा हुआ। वृहदाकार लेख अन्य लेखों का बलिदान करके ही उपयोग में लाये जा सकते हैं। हमारे पूर्वज तो सूत्र शैली में विश्वास करते थे पर हम उनके वंशज अनर्गल पाण्डित्य प्रदर्शन को लेखन का मुख्य ध्येय मानने लगे हैं।

आपसे १३, १४ अप्रेल को हरिद्वार में भेंट होगी ही! इस अवसर पर अन्तरजनपदीय परिषद् की बैठक का आयोजन करने का भी विचार है। आपका वासुदेवशरण जी सम्बन्धी लेख हमने पुस्तक में दे दिया है।

आशा है आप स्वस्थ्य एवं सानन्द हैं।

आपका
वृन्दावनदास

(२३८)

प्रकाश भवन,
मथुरा. १७-४-७४

बन्धुवर डा० आर्य जी, प्रणाम!

कृपा पत्र मिला। धन्यवाद! लगभग १५ दिन पूर्व भी आपका एक पत्र मिला था। अत्यधिक व्यस्त रहने तथा यात्राओं के परिणामस्वरूप मथुरा से बाहर होने के कारण पत्रोत्तर न दे सका था। तुलसी मानस सन्दर्भ ग्रन्थ

की एक प्रति भी प्राप्त हो गई है। उस पर कुछ पंक्तियाँ व्रज-भारती के आगामी अङ्क में अवश्य लिखूँगा। बहुत अच्छा निकला है।

श्री रमण शाण्डिल्य ने लोकभाषाओं के साहित्य का गहन अध्ययन किया है। उन्होंने लोक-भाषाओं के साहित्य पर विपुल लेखन-कार्य भी किया है। अब उनके मन में मेरे पत्रों के संग्रह की बात समा गई हैं। मैंने उनका उत्साह भंग करना उचित न समझा। मैं उनकी कार्य-क्षमता से भली-भाँति परिचित हूँ। आप अपने पास सुरक्षित पत्रों को मूल रूप से या प्रतिलिपि कराकर अवश्य बिना किसी शङ्का के भेज दें। शाण्डिल्य जी अपने कौशल से उनका पूर्ण सदुपयोग करेंगे।

श्री रमेशचन्द्र जी दुबे स्वयं आचार्य कोटि की विद्वत्ता रखते हुए एक कुशल संयोजक एवं संगठनकर्त्ता भी हैं। उनके अनुष्ठानों में अपना क्षुद्र सहयोग देकर मैं अपने आपको सदैव सौभाग्यशाली समझता हूँ। उनका पद उनके ऊपर कार्य-भार का स्वयं प्रमाण है, फिर भी अकर्मण्यता, शिथिलता और हिन्दी कार्य के प्रति सम्बन्धित व्यक्तियों की भीषण उदासीनता के इस दुःखदायी युग में वे धैर्य-पूर्वक अपनी हिन्दी-सेवा-साधना का काम निकाल ही लेते हैं। समारोह सम्बन्धी सभी कार्यों को वे धैर्य के साथ सम्पन्न कर रहे हैं। मुझे आशा है कि परिणाम अच्छा ही निकलेगा। आप मुद्रण कार्य में कुछ सहयोग दे सकें तो अच्छा है। क्या बिजनौर में उसकी आंशिक व्यवस्था नहीं हो सकती? आर्थिक पक्ष तो दुबे जी देख लेंगे।

बलिया की सामग्री में कुछ बढ़िया अंश और जोड़ना है। आपका लेख तो उसमें नहीं होगा? एक लेख उन्हें भी भेजें। पता—श्री कुलदीप नारायण राय झड़प पो० लिलकर जि० बलिया।

अबकी बार समारोह की तिथियाँ दुबे जी से परामर्श करके निश्चित कराइये। तिथियों में फिर परिवर्तन न हो। सूचना सभी को एक बार काफी समय पूर्व और एक बार ऐन वक्त पर अवश्य भेज दी जाय। बहुत से उत्सव, सूचना प्रेषण में गड़बड़ी के कारण असफल हो जाते हैं तथा लोग उनमें पहुँच नहीं पाते। निमन्त्रण न मिलने की शिकायत पीछे-पीछे तक सुननी पड़ती है।

शेष फिर। आशा है आप स्वस्थ एवं सानन्द हैं।

आपका
वृन्दावनदास

डा० राजेश्वर प्रसाद चतुर्वेदी के नाम

(२३९)

(बाबूजी दर्जनों संस्थाओं के पदाधिकारी हैं और प्रत्येक के प्रति क्रियात्मक रुचि रखते हैं और तन-मन धन से प्रत्येक की सेवा करते हैं। आप प्रत्येक कार्य के प्रति कितने सजग रहते हैं, इसको बताने के लिए उनका यह पत्र पर्याप्त है— (राजेश्वर प्रसाद)

प्रकाश भवन,
मथुरा. १-४-७३

बन्धुवर डा० राजेश्वर जी,

कृपा पत्र मिला। मैंने अपने बहनोई लाला श्रीनाथदास से हरिद्वार में आपके ठहरने की बाबत बातचीत की थी। उन्होंने मोदी भवन बहुत उपयुक्त बताया। कुछ चार्ज भी नहीं है। वह गङ्गा किनारे हैं। आप क्या एक बार पहले वहाँ उपयुक्त स्थान देखकर वापिस आवेंगे और फिर किसी निश्चित तिथि को जावेंगे अथवा १० को चले ही जावेंगे। आपका पत्र आने पर चिट्ठी का प्रबन्ध करने की चेष्टा करेंगे।

भवदीय
वृन्दावनदास

(२४०)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २१-१२-७०

बन्धुवर डा० राजेश्वर जी,

उस दिन जल्दी में अपने वयोवृद्ध मित्र श्री अमृतलाल जी के काव्य का रसास्वादन न कर सके। लखनऊ निवासी मालवीय जी ने तो उसका आनन्द लिया ही था।

मैं कुछ दिनों से श्रद्धेय बनारसीदास जी के पत्रों पर काम कर रहा था। मैंने उनके पत्र संकलित कर लिये हैं, वही जिन्हें उन्होंने मुझे भेजने की कृपा की है। उत्तम शताधिक पत्र हैं। इन पर मैंने ४० पृष्ठों की भूमिका लिखी है। आप सोचते तो होंगे कि इतने पृष्ठों में क्या लिख मारा परन्तु डा० पचौरी ने उसे सरसरी नजर से देखकर कहा था, "इस रिसर्च पर मैं आपको डाक्टरेट देता हूँ।" श्रद्धेय चतुर्वेदी जी तो प्रातः ४ बजे उठकर अध्ययन, लेखन का कार्य करते हैं परन्तु मेरा समय रात्रि के ८, ८॥ से १२, १२॥ तक है। डा० पचौरी ने कहा कि साहित्यिक निशाचर होते हैं, कारण उनके अध्ययन लेखन

का समय भी वही है जो मेरा है। हिन्दी में पत्र-साहित्य की बड़ी कमी है। केवल ८, ७ संग्रह ही छपे मालुम होते हैं। अगर चतुर्वेदी जी के पत्रों का अग्रगामी यह प्रकाशन कुछ अन्य संग्रहकर्त्ताओं को अपने संग्रह प्रकाशित करने को उत्प्रेरित या आकर्षित कर सका तो मैं अपने प्रयास को धन्य समझूँगा। यह मैंने इसलिए लिखा कि चतुर्वेदी जी ने अपने जीवन में लगभग एक लाख पत्र लिखे होंगे और बहुत से भाग्यशाली ऐसे साहित्यिक बन्धु वर्तमान हैं जिनमें से प्रत्येक को उन्होंने तीन-तीन सौ चार-चार सौ पत्र लिखे होंगे।

काकाजी का एकाध संग्रह और निकलना चाहिए। अपनी उत्कृष्ट कविताऐं छाँटकर वे आपको दें। अभी तो वे प्रूफ देख सकते हैं, ब्रजभाषा में अनेक शब्द ऐसे प्रयुक्त होते हैं जिसमें शुद्धाशुद्धता का निर्णय करना धुरन्धर विद्वान् को भी कठिन हो जाता है। आपकी तो मैं कहता नहीं, मुझे तो यह कठिनाई आती है। ब्रज-भारती के प्रूफ पढ़ते समय ऐसे अवसर दो-चार शब्दों के प्रयोग पर आ ही जाते हैं।

यद्यपि मेरी आपकी बात हो गई थी तथापि मैंने उसे ब्रज-भारती में स्थान देकर आपको जाल में फँसा लिया है। क्या करूँ इसी प्रकार चेष्टा करके केवल ८, १० छोटे-छोटे ब्रजभाषा (काव्य और गद्य दोनों) ग्रन्थ निकलवा सका हूँ। मैं स्वयं न ब्रजभाषा में लिखने का अभ्यासी हूँ और कविता तो कर ही नहीं सकता, हालांकि ब्रज-साहित्य मण्डल का अनधिकारी अध्यक्ष बना हुआ हूँ।

जाड़ों की ऋतु ही ऐसी होती है जब रात्रि को काम हो सकता है, गर्मी बरसात में रात्रि को काम असम्भव है। दिन तो बीसियों उलझनों में में समाप्त हो ही जाता है। अतः मैंने निश्चय किया है कि चतुर्वेदी जी का पत्र-संग्रह, अपना इतिहास ग्रन्थ, डा० अग्रवाल के पत्र इन तीनों पुस्तकों को पूरा कर प्रेस में दे दूँगा इसी वर्ष और इसी क्रम से ये छप भी जायेंगी।

कदाचित् आपका डा० जयकिशन प्रसाद खण्डेलवाल से परिचय नहीं है, वे तो बड़े अच्छे लेखक हैं। हम भी भूल गये आपसे पहले कहना, अन्यथा वे ८ नवम्बर वाले समारोह में अवश्य आते। भविष्य में उन्हें बुलाना कभी न भूलें। उनका पता है—६/२४० बेलन गंज, आगरा। वे अनेक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों के प्रणेता हैं। उनकी कई पुस्तकों के आठ-आठ, दस-दस संस्करण हो चुके हैं कारण वे पाठ्य-क्रम में सम्मिलित हैं।

आपका
वृन्दावनदास

(२४१)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ६-११-७०

बन्धुवर,

मैं इन जाड़ों में अपने तीनों ग्रन्थों को पूरा कर दूँगा। (१) इतिहास (२) चतुर्वेदी जी के पत्र (३) वासुदेवशरण जी के पत्र। चतुर्वेदी जी ने २००, २५० पत्र मेरे पास हैं उन पर लगभग ५० पृष्ठ की भूमिका होगी जो त्वरा लेखन के हिसाब से तो लिख ली गई है। पुनर्वाचन करके शुद्ध साफ लिखना शेष है। उसमें चतुर्वेदी जी की पत्र लिखने की प्रवृत्ति और उनके पत्र-साहित्य के महत्व पर कुछ विद्वानों का अभिमत भी मैं समाविष्ट कर रहा हूँ। अभि० ग्रन्थ में वह मसाला मिल गया है, आप भी १५, २० लाइन का नोट शीघ्र भेज दें आपका शुभ नाम भी पुस्तक में रहना ही चाहिए। मैंने दुबे जी से भी इसी प्रकार का नोट माँगा है। पूज्य काका जी की तो कोई कविता लिखा लेंगे।

विनीत
वृन्दावनदास

(२४२)

(बाबूजी का जीवन-दर्शन सहनशीलता और समन्वयशीलता का जीवन-दर्शन है। एक बार एक अप्रिय घटना के प्रति मैंने कुछ क्षोभ सा व्यक्त किया तो बाबूजी ने मुझे एक पत्र लिखा। उसका आवश्यक अंश इस प्रकार है—राजेश्वरप्रसाद चतुर्वेदी)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २५-५-७१

बन्धुवर,

सार्वजनिक जीवन में बहुत से कड़वे घूँट पीने पड़ते हैं और बहुत सी बातों को सहन करना पड़ता है। विचारों के वैभिन्य में कोई उत्तम बात बन जाय तो ठीक है। निरन्तर सहनशील और समन्वयवादी दृष्टिकोण रखते हुए कभी कोई उत्साहवर्धक फल दिखाई पड़ता है अन्यथा मन को तो भार ही ढोना पड़ता है।

(उनकी कार्य-व्यवस्थितता का प्रमाण ये पत्रांश हैं)।

—राजेश्वरप्रसाद चतुर्वेदी

१९-११-७०

"इस बीच में इतने पत्र इकट्ठे हो गये हैं कि कहा नहीं जा सकता। तीन दिन से १५ उत्तर प्रतिदिन लिख रहा हूँ। अभी इतनी ही डाक और शेष है। ११ ठिकानों से लेख की माँग है और सभी त्वरा में हैं। सुबह ७ से ९ बजे तक और फिर भ्रमण, भोजन और शयनोपरान्त मध्याह्नान्तर ३ बजे से रात्रि के ११ बजे तक लेखन कार्य चल रहा है। पत्र-लेखन में शायद श्रद्धेय बनारसीदास जी का परछांया पड़ गया प्रतीत होता है। वे तो झेल गये मेरा क्या होगा यही सोच है ?

होलीपुरा की आपके साथ तीर्थ यात्रा करनी है। शम्भुनाथ जी से तिथि निश्चित करिये। चतुर्वेदी जी अनेक पत्रों में आदेश दे चुके हैं। स्वर्गीय राधेलाल जी के अङ्क का क्या हुआ ? उस श्राद्ध-कर्म को तो आपको करना ही है।"

तथा— २४-२-७१

"आपके द्वारा आयोजित समारोह में सम्मिलित होकर मैंने अपने कर्तव्य का पालन किया था और वह ऐसा कार्य कदापि नहीं जिसके लिए आप आभार प्रदर्शित करें। श्रद्धेय बनारसीदास जी द्वारा आपको लिखे पत्रों में पाँच हम अवश्य अपने संग्रह में देंगे, कृपया उन्हें अपने पास तैयार रक्खें, मैं दो-चार दिन में आगरा आऊँगा तब उन्हें ले लूँगा।

फीरोजाबाद तो चलना ही है, मैं चाहता था कि चतुर्वेदी जी भी उस समय वहाँ हों। मैंने उनसे पूछा है कि वे कब तक फीरोजाबाद पहुँच रहे हैं।

आपका

बृन्दावनदास

(२४३)

(बाबूजी कुशलता पूर्वक काम करने के साथ दूसरों से भी अत्यन्त कुशलता के साथ काम कराते भी हैं, यथा— (राजेश्वर चतुर्वेदी)

प्रकाश भवन,

मथुरा. २८-४-७१

बन्धुवर डा० राजेश्वर जी,

"कार्यालय से पत्र आया है, कि काकाजी का परिचय पत्र तथा चित्र अभी तक नहीं पहुँचा है। कृपया उसे शीघ्रतिशीघ्र भिजवाइये अन्यथा किस प्रकार कार्य को वक्त तक पूरा किया जा सकेगा। अब यह बहुत ही आवश्यक है।

आप एक संक्षिप्त विवरण आगरा जनपद शाखा का भी भेज दें, वह वार्षिक रिपोर्ट में समाविष्ट होगा। इसके लिए पहले भी पत्र आया था परन्तु मैं आपको लिखना भूल गया था। जन-सम्मेलन का कार्य-विवरण संक्षेप में भेज दें, उसमें गोष्ठियों और प्रकाशनादि का उल्लेख कर दें, साहित्य वारिधि वाले उत्सव का भी। यह सब कुछ एक पृष्ठ का बनाकर कल ही चलता कर दें।

काका जी का चित्र अवश्य भेजें। यह सब भेज कर मुझे भी पत्र द्वारा पूर्ति से अवगत कर दें।

विनीत
वृन्दावनदास

(२४४)

(देश के प्रति बाबूजी के हृदय में बहुत दर्द हैं। बंगला देश के युद्ध-काल के समय लिखे गए उनके एक पत्र की पंक्तियाँ उनकी इस पीड़ा को मुखर करती है—राजेश्वर चतुर्वेदी)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ६–७–७१

बन्धुवर डा० राजेश्वर जी,

हमारी सरकार मानवता के आधारों पर पाकिस्तान से बात करने को तैयार है। क्या उस देश से जिसने ५ लाख नर-नारियों की अमानुषिक रूप से हत्या कर दी हो, ६५ लाख निरीह प्राणियों को भारत की ओर खदेड़ दिया हो, जो हमारे पत्रकारों, २५० भारतीय राष्ट्रियों और समूचे हाई कमीशन के सदस्यों को इस कारण रोके हुए हो कि हमने बँगला देश के प्रति आस्था घोषित करने वाले कुछ कर्मचारियों को गोलियों से भूने जाने के लिए पाकिस्तान नहीं भेजा है। उसमें मानवता है कहाँ ? वह देश और उसके क्रूर सैनिक तो मानवता के अभिशाप हैं। भगवान सबको सुबुद्धि दे। बड़ा बुरा समय आ गया है।"

विनीत
वृन्दावनदास

(२४५)

(इस समस्त विभूति के साथ विनम्रता भी उनके बाँट में आई है। एक बार उनके विषय में कुछ लिखने की इच्छा से मैंने उनसे निवेदन किया कि वह समाज एवं साहित्य के प्रति की गई अपनी सेवाओं का व्यौरा भेजने की कृपा करें। आपने जो उत्तर दिया, वह उनके जीवन्त सौजन्य का स्वयं प्रमाण है—राजेश्वर चतुर्वेदी)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ३-६-७१

बन्धुवर डा० राजेश्वर जी,

साहित्य सेवा, समाज सेवा आदि के विषय में जानकारी मैं क्या दूँ, वह है ही क्या, और जो कुछ है उससे आप भली-भाँति परिचित हैं। श्रद्धेय बनारसीदास चतुर्वेदी और डा० सत्येन्द्र की जो कुछ राय है वह मेरी पुस्तक की दूसरी आवृत्ति जो आपके पास है उसमें भी है। आपने नूरमुहम्मद के जलसे में जल्दी में लिखा हुआ जो कुछ कहा था वह क्या कम था। फिर भी दो चार वर्ष हुए किसी डाइरैक्टरी से मांग आई थी और उसे एक लेखा जोखा भेजा था उसकी टङ्कित प्रति पड़ी थी वह इस पत्र के साथ भेज रहा हूँ।"

शुभेच्छु
वृन्दावनदास

(सम्भवत: बाबूजी सदृश श्रेष्ठ व्यक्तियों को ही लक्ष्य करके किसी ने यह कथन किया है कि—नमन्ति फलनो वृक्षाः नमन्ति गुणनोजनः।

— राजेश्वर चतुर्वेदी)

डॉ० लक्ष्मीनारायण दुबे के नाम

(२४६)

प्रकाश भवन
मथुरा. ३-६-७३

बन्धुवर डा०दुबे जी,

आपकी आज्ञानुसार मैंने वांछित पत्र श्री एस० एन० मुशरान मन्त्री पृथक आगम एवं पंजीयन मध्य प्रदेश भोपाल को प्रेषित कर दिया था। श्री मुशरान ने सूचित किया है कि इस सम्बन्ध में शिक्षा विभाग द्वारा प्रस्ताव आने पर ही वित्त विभाग में विचार किया जायगा। अब आप इस सम्बन्ध में उचित कार्यवाही करें।

आपका
वृन्दावनदास

(२४७)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २१-२-७३

बन्धुवर डा० दुबे जी,

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग नई दिल्ली १ तथा माननीय नूरुल हसन शिक्षा मन्त्री भारत सरकार को अपेक्षित पत्र लिख दिये हैं। मुझे विश्वास है

कि श्री माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय काव्य के प्रवाचक-पद हेतु अपेक्षित निधि अवश्य स्थापित कर दी जाएगी। मैंने पत्र में उन सभी तथ्यों की ओर अधिकारियों का ध्यान आकर्षित कर दिया है जिनका कि आपने संकेत किया था। इस विषय में मण्डल की ओर से ज्ञापन सफल सिद्ध होगा ऐसी मेरी धारणा है।

आपका

वृन्दावनदास

सा० म० श्याम सुन्दर बादल के नाम

(२४८)

प्रकाश भवन,

मथुरा. ८-१२-७१

मान्यवर बादल जी, प्रणाम !

मैं तो २१, २२ नवम्बर को अपने भाँजे के विवाहोपलक्ष में झाँसी गया था। वहाँ के साहित्यिक बन्धुओं से मिलकर बड़ी प्रसन्नता हुई। वहाँ एक गोष्ठी सम्पन्न हुई तथा उत्तर प्रदेशीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन की झाँसी-शाखा की स्थापना का निर्णय भी लिया गया। यात्रा सफल रही। उरई से श्री रामशंकर द्विवेदी भी पधारे थे।

आप तो आजकल कार्य मुक्त होकर अवकाश पर चल रहे हैं। क्यों न हमीरपुर में भी जनपद-हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की स्थापना करें।

आपका

वृन्दावनदास

टिप्पणी :—इसी पत्र की प्रेरणा का परिणाम है, जो यहाँ "हमीरपुर जनपद-हि० सा० सम्मेलन" की स्थापना की गई है और उसका कार्यालय महोबा में है। इसके मन्त्री श्री चन्द्रशेखर जी तिवारी एम० ए० हैं, जो इसका संचालन बड़ी लगन से कर रहे हैं। —श्याम सु० बा०

(२४९)

प्रकाश भवन,

मथुरा ४–५–७२

मान्यवर बादल जी, प्रणाम !

कृपा पत्र मिला। धन्यवाद ! निधुवन-निकुंज शीर्षक पुस्तिका की जानकारी मुझे नहीं है। 'बैजू बावरा' के सम्बन्ध में लिखी हुई आपकी कहानी किंवदन्ती मात्र है। फिर भी हम आपके पत्र को लेकर श्री प्रभुदयाल जी मीतल के पास गए। उनको भी न 'निधुवन निकुंज' की ही कोई जानकारी है

और न उस कथा की जिसको आपने बैजू-बावरा के सम्बन्ध में लिखा है। उन्होंने कहा कि बैजू बावरा और गोपाल शीर्षक एक ही पुस्तक अब तक निकली है जिसको उन्होंने स्वयं लिखा है और जो साहित्य-संस्थान मथुरा द्वारा प्रकाशित है। यह पुस्तक आपके कार्य के लिए उपयोगी सिद्ध होगी। यह आपको वहाँ कहीं पुस्तकालय में मिल जाएगी, यदि न मिले तो आप मीतल जी से मँगा लें और यदि उनसे न मँगावें तो लिखें हम उनसे लेकर आपको एक प्रति भेज देंगे।

आशा है आप स्वस्थ एवं सानन्द हैं।

आपका
वृन्दावनदास

(२५०)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ६-१-७३

मान्यवर बादल जी, प्रणाम !

कृपा पत्र तथा शुभ-कामनाओं के लिए धन्यवाद ! नूतन वर्ष आपको सुख-समृद्धि प्रदायक हो यही कामना है। 'ब्रज-भारती' पर आपका मत पढ़कर बड़ी प्रसन्नता हुई। 'ब्रजेश' जी पर लिखा आपका लेख अबकी बार छापेंगे।

अभि० ग्रन्थ का मुद्रण शीघ्र ही होने वाला है। आशा है आप स्वस्थ एवं सानन्द हैं।

आपका
वृन्दावनदास

(२५१)

२०२, नीलाम्बर ३७ पैडर रोड,
बम्बई. २१-६-७३

मान्यवर बादल जी, प्रणाम !

आपका पत्र पुनर्प्रेषित होकर यहाँ आ गया। धन्यवाद ! बम्बई में मेरी चार विवाहित पुत्रियों में से तीन और तीन विवाहित पुत्रों में से दो सपरिवार रहते हैं। अतः साल-छः महीने में जब कभी हम दोनों यहाँ आते हैं तो कुछ समय लग ही जाता है, जिसमें अबकी बार तो यहाँ दौहित्र का विवाह भी है। इस महीने के अन्त तक मथुरा पहुँचूँगा।

निःसन्देह 'बैजू और गोपाल' शीर्षक पुस्तक मीतल जी ने बड़े परिश्रम और खोज के उपरान्त लिखी है। मेरी मीतल जी से बात भी हुई थी, वे

आपके कथावस्तु को प्रामाणिक सन्दर्भ नहीं मानते। ब्रजभारती की उपयोगिता और उसके माध्यम से की जा रही हिन्दी सेवा के सम्बन्ध में आपने जो विचार व्यक्त किए उनके लिए आभारी हूँ।

आपका स्नेह और आपकी आत्मीयता मेरे सम्बल हैं। मथुरा पहुँचकर आपको 'प्राचीन भारत में हिन्दू राज्य' की प्रति रजिस्टर्ड बुक-पोस्ट से भेजूँगा। उसे 'ब्रजेश' जी को भी पढ़ने को दे दें। यह पुस्तक अब निःशेष हो चुकी है। न मालूम कैसे इसे महती लोक प्रियता प्राप्त हो गई और प्रकाशक ने इसके दाम रही सही कापियों के लिए दुगने कर दिए हैं। मेरे पास भी अब न के बराबर हैं, अतः ब्रजेश जी को केवल आपकी प्रति को २, ४ दिन के लिए पढ़कर सन्तोष करना पड़ेगा।

आशा है आप स्वस्थ और सानन्द हैं।

आपका
वृन्दावनदास

(२५२)

प्रकाश भवन
मथुरा. ३-१०-७३

मान्यवर बादल जी, प्रणाम !

कृपा पत्र यथा समय मिल गया था। आपने अबकी बार बड़ी बीमारी पाई। यह तो स्पष्ट ही हैं कि आप स्वास्थ सम्बन्धी नियमों का पालन करते हैं, परन्तु रोग कह कर नहीं आता। अब आपका स्वास्थ्य सुधर रहा है यह जानकर प्रसन्नता हुई।

बुन्देलखण्ड की साहित्यिक-यात्रा में बड़ा आनन्द प्राप्त हुआ। मेरे साथ पत्नी व एक मिश्रानी (पाक-सेविका) भी थी। मान्यवर द्विवेदी जी ने हमें झाँसी के प्राचीन मन्दिरों की झाँकी कराई। वे कृपा करके हमारे साथ ओरछा भी गए थे। ओरछा भी प्राचीन स्थल है। डा० द्वारिका प्रसाद मीतल जो बुन्देलखण्ड स्नातकोत्तर महाविद्यालय में हिन्दी-विभाग के अध्यक्ष हैं, बड़े सहृदय व्यक्ति हैं। वे हमें छात्रों को सम्बोधित करने अपने कालेज में लिवा ले गए। धूसर जी ने हिन्दी-दिवस-सम्बन्धी आयोजन झाँसी में किया था। उरई में रामदयालु जी के ग्रन्थ का विमोचन किया गया था। उरई के अयोध्याप्रसाद जी कुमुद बड़े उत्साही कार्यकर्ता हैं। उनके द्वारा हिन्दी-सेवा होगी ऐसा मेरा विश्वास है।

मेरा एक बार राठ चलने का विचार तो हुआ परन्तु कई दिन हो

गए थे और मथुरा वापिस आना था इस कारण आपके दर्शनों से वंचित रहा। फिर कभी देखा जायगा। कृपा भाव रक्खें।

आपका
वृन्दावनदास

टिप्पणी :—इन पत्रों में साहित्यकारों के प्रति उनकी आत्मीयता की स्पष्ट झलक दिखाई पड़ेगी। उनका मुझ पर जो स्नेह है उससे कभी मुक्ति नहीं पा सकता। परमेश्वर उन्हें राष्ट्र-भाषा की समुन्नति के लिए स्वस्थ एवं दीर्घजीवी करे, यही परम पिता से प्रार्थना है।

—(श्याम सुन्दर बादल)

(२५३)

प्रकाश भवन,
मथुरा. १५-२-७४

मान्यवर बादल जी, प्रणाम !

आपका कृपा पत्र कविता सहित यथा समय प्राप्त हो गया था। कविता मैंने श्री दुबे जी को स्मृति-ग्रन्थ में सम्मिलित किए जाने के हेतु भेज दी है।

३, ४ मार्च को झाँसी में आपके दर्शन होंगे ही। होली का अवसर है, अतः महोबा यात्रा तो इस अवसर पर होना कठिन हैं।

मैं आज कल बम्बई आ गया हूँ ता० १२ को चलकर। लगभग दो सप्ताह यहाँ ठहरूँगा। सम्भव है यहाँ ही से झाँसी पहुँचूँ।

आशा है अब आपका स्वास्थ्य ठीक होगा। कृपा भाव रक्खें।

आपका
वृन्दावनदास

(२५४)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २८-२-७४

मान्यवर बादल जी, प्रणाम !

कृपा पत्र यथा समय पुनर्प्रेषित होकर बम्बई आ गया था। मैं यहाँ ता: १२ फरवरी से ही हूँ। अब कल १ मार्च को यहाँ से चलकर झाँसी पहुँच रहा हूँ। आप अब पहिले की अपेक्षा स्वस्थ हैं यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई। आप झाँसी पधार रहे हैं अतः अब तो दर्शन होंगे ही और वहाँ ही वार्तालाप का आनन्द प्राप्त होगा। आशा है अबकी बार सम्मेलन का अधिवेशन धूम-धाम से सम्पन्न होगा।

आपका
वृन्दावनदास

डा० स्वर्ण किरण के नाम

(२५५)

प्रकाश भवन,
मथुरा. १८-१२-७२

बन्धुवर डा० स्वर्णकिरण जी, प्रणाम !

श्री त्रिलोकीनाथ ब्रजवाल से आपकी कुशल क्षेम का समाचार जानकर प्रसन्नता हुई। आपका लेख (मैथिलीशरण गुप्त) बहुत दिन से सुरक्षित था, पत्रिका के आकार के अनुरूप न होने के कारण प्रकाशित न हो सका। हमारी 'ब्रजभारती' पत्रिका ४८ पृष्ठीय है, इसमें अधिक से अधिक ५ ६ पृष्ठ का लेख चल सकता है। बहुत बड़ा लेख तो पुस्तकाकार होने योग्य होता है और कम से कम छोटी पत्रिका में तो चल ही नहीं सकता। लेख महत्वपूर्ण एवं सार-गर्भित है। हमने शुरू का अंश मार्गशीर्ष अंश में छाप दिया है पुर्नमुद्रण भेज रहा हूँ। पत्रिका भी एक सप्ताह में पहुँचेगी। पुनर्मुद्रण पत्रिका का ही भाग है। पृथक रूप से छपाने की व्यवस्था नहीं है।

आपको प्रेषित पूर्व दो तीन अङ्क लौट आये। पते में हमने सोहसराय जिला पटना लिख दिया था। ब्रजवाल जी ने कहा था कि सोहसराय नालन्दा जिले में है। शायद पते में जिला गलत होने से ही दो तीन अङ्क लौटकर आये थे।

साहित्याचार्य पं० पद्मसिंह शर्मा की शताब्दी, हरिद्वार में मनाई जा रही है, उस अवसर पर एक स्मृति ग्रन्थ भी प्रकाशित होगा। कृपा कर अपना लेख मुझे भेजें। मैं ही ग्रन्थ के लिए लेखों का संग्रह कर रहा हूँ।

आशा है, आप स्वस्थ एवं सानन्द हैं।

आपका
वृन्दावनदास

डा० सियाराम तिवारी के नाम

(२५६)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २४-१०-७१

बन्धुवर डा० तिवारी जी,

कृपा पत्र मिला। धन्यवाद ! बड़े हर्ष की बात है कि जनपदीय भाषाओं के विषय में आपकी रुचि है। मैंने उ० प्र० हिन्दी साहित्य सम्मेलन के

अध्यक्षीय भाषण में इस विषय पर प्रकाश डाला था। अपने उस भाषण की प्रति आपकी सेवा में पृथक् डाक से भेज रहा हूँ। इस विषय पर आप ब्रज-भारती के लिए कभी कोई छोटा सा लेख लिख सकते हैं।

ब्रज वन्धु विनोद के लिए पत्रक आप अवश्य भर कर भेज दें। आप उसके अधिकारी हैं। मैं अभी श्री मोहनलाल शर्मा को लिख रहा हूँ। वे आपको मुद्रित पत्रक की एक प्रति सीधी भेज देंगे। ब्रज-भारती अब आपके पास नियमित रूप से पहुँचती रहेगी।

आशा है आप स्वस्थ एवं सानन्द हैं।

क्या आपको घर के पते पर पत्र लिखा करें। ब्रज-भारती आदि किस पते पर भेजें स्पष्ट लिखें।

आपका
वृन्दावनदास

(२५७)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ५-११-७१

बन्धुवर डा० तिवारी जी, प्रणाम !

कृपा पत्र मिला। धन्यवाद ! जैसा आपने लिखा है पटने से भेजी हुई 'वज्जिका भाषा और साहित्य' की प्रति हमें अभी तक नहीं मिली। हाँ, रजिस्टर्ड बुक-पोस्ट से प्रेषित हलधरदास कृत सुदामा चरित्र की एक प्रति अभी मिली। आपकी ८५ पृष्ठ की भूमिका को पढ़ने की बड़ी उत्सुकता है। ऐसा प्रतीत होता हैं कि वह सूचनाओं का एक बृहत् भाण्डागार है। निःसन्देह उसके अध्ययन से ज्ञान-वर्द्धन होगा। ब्रज-भारती के आगामी अङ्क में इसकी समीक्षा की जायगी।

वज्जिका साहित्य परिषद् की ओर से प्रकाशित वज्जिका भाषा के सनेस शीर्षक पत्र के कई अङ्क उस पत्र के सम्पादक श्री निर्मल मिलिन्द ने भेजे हैं। उन पर टिप्पणी करते हुए हमने सम्पादकीय में आपके निबन्ध का भी उल्लेख कर दिया है। मार्गशीर्ष अङ्क की प्रति लगभग १५ दिन में आपके पास पहुँचेगी। फिर भी अपने निबन्ध की एक प्रति अवश्य भिजवाएँ।

मैंने ब्रजबन्धु विनोद का पत्रक भेजने को आज फिर लिखा है।

कृपा भाव रक्खें।

आपका
वृन्दावनदास

(२५८)

प्रकाश भवन,
मथुरा. १३–४–७२

मान्यवर डा० तिवारी जी, प्रणाम !

मेरी पुस्तक 'भारतीय संस्कृति के विविध परिदृश्य' पर आपके उदार विचारों के लिए आभारी हूँ। उस पुस्तक में मेरे जीवन के चालीस वर्षों में लिखे कुछ ऐसे लेखों का सग्रह है जो अनेक साहित्यिक पत्रों और मासिक पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं।

मेरी पुस्तक 'प्राचीन भारत में हिन्दू राज्य' के ३२० पृष्ठ छप चुके, शायद ५०, ६० पृष्ठ और भी अपेक्षित हों। भूमिका भी अभी और सम्मिलित की जाएगी। पुस्तक तैयार होने पर एक प्रति आपकी सेवा में प्रेषित होगी।

शेष कुशल है। आशा है आप स्वस्थ एवं सानन्द हैं। नूतन वर्ष का आपको अभिवादन।

आपका
बृन्दावनदास

(२५९)

प्रकाश भवन,
मथुरा. १०-१०-७२

बन्धुवर डा० तिवारी जी, प्रणाम !

कृपा पत्र मिला। धन्यवाद ! उत्तर प्रदेशीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्षीय भाषण के सम्बन्ध में आपका मत पढ़कर प्रसन्नता हुई। अनेक मित्रों के इसी प्रकार के सद्भावना सूचक पत्र आये हैं। मैंने उस भाषण में गम्भीर चिन्तन के बाद हिन्दी की समस्याओं का प्रस्तुतीकरण किया था तथा इस बात का भी ध्यान रक्खा था कि उससे पहले वर्ष में फीरोजाबाद अधिवेशन में दिए भाषण की किसी भी प्रकार से पुनरावृत्ति न हो।

निशंक जी को कह दूँगा।

आपका
वृन्दावनदास

(२६०)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २-४-७३

बन्धुवर डा० तिवारी जी,

प्रकर की प्रति मिली। आपने मेरी पुस्तक डा० बनारसीदास चतुर्वेदी के पत्र की बड़ी सुन्दर समीक्षा की है एतदर्थ आपको अनेक धन्यवाद।

आशा है आप स्वस्थ एवं सानन्द हैं। आपका बहुत दिन से कोई पत्र नहीं मिला। फाल्गुन की ब्रजभारती आपको प्राप्त हो गई होगी।

आपका

वृन्दावनदास

(२६१)

प्रकाश भवन,

मथुरा १०-४-७४

बन्धुवर डा० तिवारी जी, प्रणाम !

आपका कृपा पत्र यथा समय मिल गया था, अनेक धन्यवाद ! अन्तर-जनपदीय परिषद् की बैठकों में आमन्त्रित कराने तथा आवश्यक सूचनाएँ भिजवाने हेतु आपने जिन महानुभावों के नाम लिखे हैं उन्हें मैं श्री कुलदीप नारायण राय महामन्त्री अन्तरजनपदीय परिषद् को भिजवा रहा हूँ। वैशाली जनपद की भाषा वज्जिका का बड़ा गौरवशाली अतीत रहा है। मैं आपके परिषद् के सुखद भविष्य की कामना करता हूँ। परिषद् के लिए किये गये सभी कार्य-कलापों में आपको सफलता मिले। 'शानदार था भूत भविष्यत् भी महान है, यदि सम्हालें उसे आप जो वर्तमान है।'' हरिद्वार में कुम्भ मेले की भीड़ के कारण समारोह स्थगित कर दिया गया है, शायद मई के दूसरे सप्ताह में आयोजित होगा। शेष सब कुशल है।

आपका

वृन्दावनदास

श्री हरिश्चन्द्र प्रसाद के नाम

(२६२)

प्रकाश भवन,

मथुरा. ६-२-७१

बन्धुवर,

आपके शुभ नाम की चर्चा प्रियवर गणेश जी ने मुझसे की है। आपके लेखादि पढ़कर मैं प्रभावित हुआ हूँ आप अनेक भाषाओं के ज्ञाता तथा हिन्दी और भोजपुरी के अन्यतम सेवक हैं। आप हमें ब्रजभाषा सम्बन्धी सूची भेजें, हम उसे ब्रज-भारती में छापेंगे। ब्रजभाषा-कवियों के सम्बन्धी सूचनाएँ, उनके जीवन-वृत्त और कृतियों आदि पर यदि आप कोई निबन्ध भेजेंगे तो हम सहर्ष उन्हें 'ब्रज-भारती' में स्थान देंगे।

'ब्रज-भारती' की एक प्रति सेवा में प्रेषित है।

आपका

वृन्दावनदास

(२६३)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २४-२-७१

बन्धुवर प्रसाद जी,

कृपा पत्र तथा लेख प्राप्त हुए। धन्यवाद! आप व्रजभाषा प्रेमी और साहित्य मर्मज्ञ हैं, अतः आपसे सम्बन्ध स्थापित कर मैं अपने को सौभाग्यशाली मानता हूँ। श्री गणेश चौबे जी ने आपकी बड़ी प्रशंसा की थी और वह उचित ही था।

लेख निःसन्देह ब्रज-भारती में स्थान प्राप्त करेगा। आप लेख अपनी पूर्ण सुविधा के अनुसार ही लिखें। हमारी पत्रिका भी तो त्रैमासिक है और जितना उसका आकार है उससे कम से कम दुगने लेख हमारे पास पत्रिका के मुद्रण से पहले ही आ जाते है, अतः हमें कोई त्वरा नहीं है। हाँ, शोधपूर्ण सामग्री का तो हमें सदैव ही स्वागत करना है।

ब्रज-भारती का नवीनतम फाल्गुन अङ्क सेवा में प्रेषित है। अब तक ब्रज-भारती के दो अङ्क आपको मिल गये। इनसे पूर्व २१ अङ्क मेरे सम्पादकत्व में निकले हैं। यद्यपि प्रत्येक अङ्क का मूल्य १)रु० है तथापि यदि आप केवल १०)५० मनिआर्डर से भेज देंगे तो हम २१ अङ्क आपको रजिस्टर्ड बुक-पोस्ट से भेज देंगे।

हमारा ध्येय आप सदृश विद्वानों तक ब्रजभाषा साहित्य को पहुँचाने का है। इससे शोध और अनुशीलन को प्रोत्साहन मिलता है।

यदि आपने ब्रज-भारती की प्रतियाँ मँगवाई तो उन्हीं के साथ मैं अपनी निबन्धों की पुस्तक "भारतीय संस्कृति के विविध परिदृश्य" भी भेंट स्वरूप भेज दूँगा। यदि न मँगवाई तो भी मैं पुस्तक तो आपको आपका उत्तर आने पर रजिस्टर्ड बुक-पोस्ट से भेजूँगा ही। आशा है आप सानन्द हैं।

आपका
वृन्दावनदास

(२६४)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २५-३-७१

बन्धुवर श्री हरिश्चन्द्र प्रसाद जी,

आपका सन्देश धनादेश के माध्यम से मिल गया। आज रजिस्टर्ड बुक-पोस्ट से २१ अङ्क ब्रज-भारती के तथा एक प्रति 'भारतीय संस्कृति के विविध परिदृश्य' शीर्षक अपनी पुस्तक भेज रहा हूँ।

भविष्य में ब्रज-भारती आपको निःशुल्क पहुँचती रहेगी।

पुत्री के शुभ विवाह पर मेरी मङ्गलकामनाऐं। परमपिता युगल दम्पत्ति को दीर्घायु, सुख, समृद्धि प्रदान करें। उनको मेरा शुभाशीर्वाद। आपको अनेक बधाइयाँ।

आज कल श्रद्धेय डा० बनारसीदास जी चतुर्वेदी के पत्रों को छपाने में व्यस्त हूँ। ३०० पृष्ठ की पुस्तक होगी जिसमें ३२ पृष्ठीय मेरी भूमिका है। अप्रैल के अन्त तक छप जाएगी। तब एक प्रति आपकी सेवा में पहुँचेगी।

शेष सब कुशल है।

आपका
वृन्दावनदास

(२६५)

प्रकाश भवन,
मथुरा. १४-६-७१

बन्धुवर,

आपका कृपा पत्र यथा समय प्राप्त हो गया था, अनेक धन्यवाद! उत्तर प्रदेशीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन के प्रति की गयी मेरी सेवाओं की सराहना के लिए आपका अत्यन्त आभारी हूँ। ब्रज-भारती का ज्येष्ठ अङ्क और अध्यक्षीय भाषण की एक प्रति दोनों भेजे जा चुके हैं।

डा० बनारसीदास जी चतुर्वेदी के पत्रों वाली पुस्तक तो छप चुकी, परन्तु उसके आवरण चित्रों आदि के मुद्रण तथा जिल्द बँधने में कुछ विलम्ब लगेगा, परन्तु मैं सचेष्ट हूँ यथासम्भव शीघ्र वह कार्य भी पूरा होगा।

आशा है आप स्वस्थ एवं सानन्द हैं।

आपका
वृन्दावनदास

(२६६)

प्रकाश भवन,
मथुरा. १७-९-७१

बन्धुवर,

कृपा पत्र यथा समय मिल गया। धन्यवाद! १५, १६, १७ अक्टूबर वाले लोक संस्कृति सम्मेलन का निमन्त्रण प्राप्त नहीं हुआ है। यदि मिलेगा तो मैं भी आने का प्रयास करूँगा और फिर आपके दर्शन होंगे ही।

'डा० बनारसीदास चतुर्वेदी के पत्र' शीर्षक पुस्तक आपकी सेवा में भेजी जा रही है। इसका साहित्यिक क्षेत्र में अपूर्व स्वागत हुआ है।

आशा है आप स्वस्थ एवं सानन्द हैं। भाद्रपद अङ्क परसों आपकी सेवा में गया है, पहुँचा होगा।

आपका
वृन्दावनदास

(२६७)

प्रकाश भवन,
मथुरा. १८-१२-७१

बन्धुवर प्रसाद जी,

कृपा पत्र यथा समय मिल गया था। ब्रज-भारती का मार्गशीर्ष अङ्क भेजा जा चुका है, पहुँचा होगा। 'A Bibliography of folktore of Bihar' व आपके मित्र की पुस्तक 'प्रेरणा' मिलीं। दोनों की चर्चा सम्पादकीय स्तम्भों में कर दूँगा।

मित्रवर गणेश जी की 'Bihar in folklore Study' अभी प्राप्त नहीं हुई है। उन्होंने भी पूछा है। शायद प्रकाशक ने नहीं भेजी है।

अभिनन्दन ग्रन्थ के प्रकाशन में अभी देर है। जनपदीय बोलियों के कोश में आप स्थानीय खेलों के नाम तथा उनमें प्रयुक्त शब्दावली जोड़ना चाहते हैं, यह आपका प्रयास स्तुत्य है। मैं इसकी भी चर्चा सम्पादकीय में कर दूँगा।

आशा है, आप स्वस्थ एवं सानन्द हैं। कृपा भाव रक्खें।

आपका
वृन्दावनदास

(२६८)

प्रकाश भवन,
मथुरा. १७-७-७२

बन्धुवर,

कृपा पत्र यथा समय मिल गया था। व्यस्तता के कारण उत्तर प्रेषित न कर सका था। कल ब्रज साहित्य मण्डल के अधिवेशन में भरतपुर जा रहा हूँ। लौटने पर आपको भाषण की प्रति भेजूँगा।

ब्रज के खेलों की शब्दावली के लिए आप श्री प्रभुदयाल मीतल अध्यक्ष, साहित्य संस्थान, मथुरा को लिखें। डॉ० राजेश्वरप्रसाद चतुर्वेदी, शीतला गली, आगरा और श्री बालमुकुन्द चतुर्वेदी, मानक चौक, मथुरा ये दो सज्जन भी आपकी सहायता कर सकते हैं। एक नाम और श्री जयकुमार मुद्गल, अध्यक्ष,

हिन्दी विभाग, बाबू शिवनाथ अग्रवाल कॉलेज मथुरा। और सब ठीक है। श्री गणेश चौबे जी से हमारा प्रणाम कहिये।

आपका
वृन्दावनदास

(२६६)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २५–४–७३

बन्धुवर हरिश्चन्द्र प्रसाद जी,

कृपा पत्र मिला। अनेक धन्यवाद! 'ब्रज-भारती' के फाल्गुन अङ्क पर आपकी सम्मति के लिए अनुग्रहीत हूँ। साहित्यिकों की सद्भावना मेरे जीवन का महान सम्बल है।

'प्राचीन भारत में हिन्दू राज्य' की एक प्रति रजिस्टर्ड बुक-पोस्ट से सेवार्पित है। कृपया अपनी विस्तृत सम्मति लिखें।

आशा है आप स्वस्थ एवं सानन्द हैं। मैं ता० २०, २१ को पटना में था। सपरिवार पशुपतिनाथ की यात्रा से वापिस लौटते समय २ दिन को पटना उतर गया था। आपकी और चौबे जी की बड़ी याद आई। वहाँ के कार्य-कर्ताओं सर्वश्री श्रीराम जी, नरेश जी, परमानन्द जी आदि ने गोष्ठी आदि आयोजित की थी। बिहार में जनपदीय कार्य प्रगतिशीलता की ओर है। आप लोग बधाई के पात्र हैं।

आपका
वृन्दावनदास

(२७०)

प्रकाश भवन,
मथुरा. १५-५-७३

बन्धुवर प्रसाद जी,

कृपा पत्र मिला। धन्यवाद! आपने 'प्राचीन भारत में हिन्दू राज्य' मेरी पुस्तक को पढ़कर जो भाव व्यक्त किए हैं उनके लिए आभारी हूँ। आप अवश्य उसकी एक समीक्षा लिखें तथा योगी, उत्तर बिहार तथा पटना के अन्य पत्रों में प्रकाशित करावें। एक प्रति मुझे भेजेंगे तो मैं उसे इधर के पत्रों में प्रकाशित करा दूँगा।

कुछ मित्रों ने पुस्तक में उपलब्ध सूचनाओं और सामग्री को शोधपूर्ण और मौलिक समझकर ग्रहण किया है तथा उनकी राय है कि इस पुस्तक का

हिन्दीत्तर भाषाओं में अनुवाद होना चाहिए। मैं नहीं जानता यह कहाँ तक सम्भव है। वैसे रूस में लगभग ५०० भारतीय कवियों और लेखकों की कृतियों का रूसी अनुवाद हो चुका है। खूबी यह है कि ये पुस्तकें जितनी छपती हैं हाथों हाथ बिक जाती हैं। रूस में और इसी प्रकार थोड़े परिमाण में अन्य देशों में भी भारतीय साहित्य, इतिहास, दर्शन आदि के प्रति महती जिज्ञासा है और बड़ी रुचि है। यह हिन्दी वालों के लिए परम सन्तोष का विषय है कि उनकी प्रिय राष्ट्रभाषा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर लोकप्रियता अर्जित कर रही है। विश्व के तेतीस विश्वविद्यालयों में हिन्दी का पठन-पाठन जारी है।

आशा है, आप स्वस्थ एवं सानन्द हैं।

आपका
वृन्दावनदास

श्री हरिश्चन्द्र सिंघल 'निरंकुश' के नाम

(२७१)

प्रकाश भवन
मथुरा. २७-६-६८

मान्यवर, सादर नमस्कार !

भाई जुगलकिशोर जी से ज्ञात हुआ है कि आप आजकल १५ दिन के अवकाश पर बरेली विश्राम कर रहे हैं। आशा है आप प्रसन्न एवं स्वस्थ होंगे।

ब्रज-भारती में आपका लेख प्रकाशित हो गया है। अङ्क की एक प्रति डाक से सेवा में भेजी है। कृपा कर और भी कुछ पत्रिका के लिए लिखें जिससे आगामी अङ्क में उसका उपयोग कर लिया जाय।

ब्रज-साहित्य मण्डल का अधिवेशन २९, ३० को गाजियाबाद हो रहा है। मैं २९ को वहाँ जा रहा हूँ। १ जुलाई को वापस लौटूँगा। सम्मेलन विषयक कार्यवाही आपको वहाँ से लौटने पर भेजेंगे।

अनेक सद्भावनाओं के साथ।

आपका
वृन्दावनदास

आपके लेख का एक Reprint इस पत्र के साथ प्रेषित है। ता० २५ को लखनऊ में पं० श्रीनारायण जी चतुर्वेदी से भेंट हुई थी। वे १ अगस्त को मथुरा आ रहे हैं। आपकी कुशल क्षेम पूछ रहे थे तथा उन्होंने हमारी Duty आपसे मिलाने की लगाई है। वे तीन दिन ठहरेंगे। —वृन्दावनदास

(२७२)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ११–७–६८

मान्यवर सिंहल साहिब, सादर नमस्कार !

आपका पत्र यथा समय प्राप्त हो गया था। जुगल किशोर जी द्वारा ज्ञात हुआ था कि आप ता० ८ को मथुरा आ रहे हैं, इसी कारण पत्र न लिखा था। परन्तु अब मालूम हुआ कि आप १६ तक आवेंगे अतः पत्र लिखना ही उचित समझा।

ब्रज-साहित्य मण्डल का अधिवेशन बहुत आनन्दपूर्वक निर्विघ्न सम्पन्न हो गया। तत्सम्बन्धी सामग्री बुक-पोस्ट से भेजी है। अधिवेशन का उद्घाटन डा० राम सुभगसिंह जी, संचार मन्त्री केन्द्रीय सरकार ने किया था। एक विराट कवि सम्मेलन तथा दूसरे दिन वृन्दावन की मण्डली द्वारा रासलीला अधिवेशन के विशेष अङ्ग थे।

आशा है आप सपरिवार कुशलता पूर्वक हैं। मथुरा पधारने पर आपके दर्शनों का लाभ करेंगे।

आपका
वृन्दावनदास

(२७३)

प्रकाश भवन,
मथुरा. १४-९-७०

मान्यवर सिंहल साहिब,

कृपा पत्र तथा लेख मिले। धन्यवाद ! बच्चन जी का स्वर्गवास सचमुच एक महान साहित्यिक दुर्घटना है। उनके शोक सम्मान में एक सभा हमने धर्मशाला में आयोजित की थी। उसमें भावभीनी मार्मिक श्रद्धांजलिया अर्पित की गई थी। उन्होंने पहिली बीमारी से मुक्ति पाकर कुछ विश्राम नहीं किया। शरीर में घुन तो लग ही चुका था टूट गये। आपका लेख कल के सैनिक में प्रकाशित हो गया है, फिर भी इसको हम ब्रज-भारती के आगामी अङ्क में अवश्य छापेंगे।

भूमि अधिग्रहण का मामला ज्यों का त्यों पड़ा है। करीब १० दिन हुए पावर्स आई हैं, लेकिन अभी उत्तर नहीं गया है। द्वार खटखटा रहे हैं, देखिये क्या होता है।

मेरे ऊपर लिखने का आग्रह आपका बहुत समय से चल रहा है यह मैं जानता हूँ। यद्यपि मैं अपने को इस योग्य नहीं समझता हूँ तथापि आपके स्नेहपूर्ण औदार्य के आगे विवश हूँ। इस सम्बन्ध में मुझे क्या करणीय है आज्ञा करें।

अभिनन्दन ग्रन्थ के सम्बन्ध में मित्रों का आग्रह तो पूर्ववत् चल ही रहा है। मुझे उसमें संकोच की भावना रहती है फिर भी कुछ समय उपरान्त जब वह कार्य हाथ में लिया जागगा आपका सहयोग अनिवार्य रूप से अपेक्षित होगा। आप सदृश कृपालु मित्र तो हमारे साहित्यिक जीवन के सम्बल हैं।

गोविन्द नगर का मामला मेरे ध्यान में है। अनुकूल वायु चलने में अभी कुछ देर है।

आशा है आप सपरिवार आनन्दपूर्वक हैं। ब्रजभारती के नवीनतम अङ्क की एक प्रति आज डांक से भेज रहा हूँ। कदाचित इससे पहिला अंक (ज्येष्ठ अंक) सम्वत २०२७ तो आपके पास होगा ही। यदि न हो तो फौरन लिखे उसकी एक प्रति भी भेज दूँगा। ब्रजभारती की पूरी फाइल तो आपके पास रहनी ही चाहिये।

कृपा भाव रक्खें। यदा कदा कुशल पत्र देते रहने की कृपा करें।

आपका
वृन्दावनदास

(२७४)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २६-१२-७१

मान्यवर सिंहल साहिब, नमस्कार !

आशा है आप स्वस्थ एवं सानन्द हैं। यह तो आपको विदित ही है कि श्रद्धेय डा० बनारसीदास जी चतुर्वेदी के प्रयत्नों से कई कालेजों ने अपनी पत्रिकाओं के विशेषांक सोद्देश्य निकाले हैं। कोई विशेषांक किसी दिवंगत साहित्यकार के साहित्यिक श्राद्ध के रूप में प्रकट हुआ तो कोई किसी प्रसिद्ध क्रान्तिकारी का जीवन वृत्त लेकर ही निकाला गया। कुछ विशेषांक जनपदीय वैभव को उद्घाटित करने को निकले। इस प्रकार के प्रकाशनों से हमारे जनपदीय आन्दोलन को बड़ा बल मिल रहा है। यह अङ्क जो आपको भेजा जा रहा है अब तक प्रकाशित सभी विशेषांकों में सर्वश्रेष्ठ है। चतुर्वेदी जी ने जनपदीय आन्दोलन पर एक विचारोद्दीपक लेख इस अंक को दिया है। अंक की एक प्रति आपको आज रजिस्टर्ड बुक-पोस्ट से भेज रहा हूँ। कृपाकर इस

पर अपनी बहुमूल्य सम्मति (भले ही ८, १० पंक्तियों में ही हो) श्री राजेन्द्र रंजन के० एस० जैन इण्टर कालेज सासनी (अलीगढ़) को भेज दें। इससे उन्हें सम्बल प्राप्त होगा। कृपा भाव रक्खें।

आपका
वृन्दावनदास

(२७५)

प्रकाश भवन,
मथुरा १६-१२-७२

मान्यवर सिंहल साहिब,

कृपा पत्र तथा पुस्तक की भव्य समीक्षा मिली। मैं इसकी कई प्रतिलिपियाँ कराकर एकाधिक पत्रों में प्रकाशित कराने का प्रयत्न करूँगा। बिहार के पत्रों में तो समीक्षाएँ सम्पादकों ने कर दी है। बहुत-बहुत धन्यवाद ! आपके पत्र में लिखी अन्य बातों पर भी ध्यान दे रहा हूँ। कृपा भाव रक्खें।

आपका
वृन्दावनदास

(२७६)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ३-३-७३

मान्यवर सिंहल साहिब,

प्राचीन भारत में हिन्दू राज्य की समीक्षा अमर उजाला, योगी, उत्तर बिहार में छप चुकी है। अमर उजाला की एक प्रति सेवार्पित हो चुकी है। ब्रजभारती में भी छप गई है, पुनर्मुद्रण भेजता हूँ। पत्रिका की प्रति यथा संभव शीघ्र पहुँचेगी, अभी टाइटिल छपना शेष है। आशा है आप स्वस्थ एवं सानन्द हैं। होली की अग्रिम बधाई।

आपका
वृन्दावनदास

(२७७)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ४-५-७३

मान्यवर सिंहल साहब,

आपका कृपा पत्र यथा समय प्राप्त हो गया था परन्तु मैं लखनऊ, अयोध्या, काठमाण्डू, पटना आदि की १८ दिवसीय यात्रा से सपरिवार तारीख २५ को लौटा हूँ। कल श्री जुगल किशोर चतुर्वेदी वकील जो आजकल मण्डल के

प्रधान मन्त्री है, एक खुशखबरी लाये, कहने लगे सिंहल साहब पिथौरागढ़ के जिलाधीश हो गये हैं। मैंने उन्हें बधाई दे दी और उन्होंने मुझे और अब मेरा नम्बर आपको बधाई देने का आ गया।

बरेली पर लिखा हुआ आपका लेख श्री डोरीलाल को भेज दिया है। मैंने उनको पत्र भी लिख दिया है ! आशा है वे आपसे पत्र-व्यवहार करेंगे।

सूरदास के भ्रमरगीत सम्बन्धी लेख ब्रज-भारती में प्रकाशनार्थ मैंने रख लिया है। ज्येष्ठ अङ्क तो छप रहा है। भाद्रपद अङ्क में इसके प्रकाशन की बात सोचेंगे। ४८ पृष्ठ की पत्रिका में ५, ६ पृष्ठ से अधिक एक लेख को स्थान देने से ब्रजवासी दुःखी हो जाते हैं और चिल्लपों मचाने लगते हैं। देखेंगे, सब ठीक हो जायगा।

गोविन्द नगर गम्भीर घपले में है। कल सेक्रेटरी बदल गया, कामकाज ठप्प है, बोर्ड में झगड़ा, देखिये क्या होता है।

चि० दीपक को बम्बई में Offset Printing Press खुलवा दिया है, वह जब से आया है वहीं है बल्कि उसके पिता चि० गोविन्दबाबू भी अधिकतर वहाँ ही रहते हैं कारण प्रेस में लागत ज्यादा आ गई है उसे Profiable basis पर लाना है और अकेले दीपक के वश की बात नहीं।

व्यंग लेख श्री अक्षय कुमार जैन को भेज रहा हूँ, परन्तु हस्ब मामूल उनसे उत्तर की आशा नहीं है। शुरू में तो वे पत्रों का जवाब त्वरित देते थे परन्तु जब हम सिफारिशी पत्र लिखने लगे तो हमारे व्यक्तित्व का ह्रास हो गया और हमारे समस्त पत्र निरुत्तर रहते हैं। मित्रों के आग्रह पर लिख तो देते हैं लेकिन काम नहीं के बराबर होता है वस्तुस्थिति से आपको अवगत कर देना उचित समझा।

आकाशवाणी वालों से भेट होने पर आपके सम्बन्ध में अवश्य कहूँगा। अपना पत्र मुझे अवश्य लिखते रहे।

आपका
वृन्दावनदास

(२७८)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २२-१-७५

प्रियवर निरंकुश जी, प्रणाम !

मैं अपने अनुज की पौत्री के विवाह में सम्मिलित होने तथा स्वजनों से मिलने भेटने सपत्नीक ता० १४ जनवरी को मथुरा से चलकर ता० १५ को

बम्बई आ गया हूँ। ता० २७ के लिए आरक्षण हो गया है, २८ को प्रातः मथुरा पहुँच जाऊँगा। आपका दिनांक ११-१-७५ का पत्र मेरी अन्य डाक के साथ पुनः प्रेषित होकर आज ही मुझे यहाँ मिला है।

मथुरा तीन लोक से न्यारी तो है ही परन्तु जिस विषय को लेकर आपने उस पर यह आरोप लगाया है वह सही नहीं है। हम तो आपके पते के अभाव में बड़े ही दुःखी थे। व्रज-भारती नियम से ए० डी० एम० प्लानिंग चमोली (गढ़वाल) को भेजे जा रहे थे, शायद वहाँ के साहित्य प्रेमी प्लानिंग आफीसर ने उसे आपको पुनर्प्रेषित करने की कृपा नहीं की यद्यपि पत्रिका आपके नाम से भेजी जाती रही है। पहले बरेली से आपका एक पत्र आया था और उसका हम उत्तर दे चुके थे। लेकिन वह बात बड़ी पुरानी है, हमने उसके बाद आपका कोई भी पत्र नहीं पाया, सर्वश्री कमल, जुगल आदि भी पूछे जाने पर मना ही करते रहे। इस बीच में डा० वासुदेवशरण अग्रवाल के पत्र शीर्षक एक पुस्तक हमने निकाली है। शायद वह आपके पास नहीं पहुँची, इसका तो आपके पत्र अथवा मथुरा पहुँच कर वहाँ के रिकार्ड में ही पता चलेगा कि वह पुस्तक आपको भेजी गई या नहीं। मुझे सन्देह तो था कि आप अब तक चमोली से कहीं दूसरे स्थान पर अवश्य चले गये होंगे।

व्रज-भारती नियमित रूप से निकल रही है। मथुरा पहुँचने पर आपको अन्तिम दो तीन प्रतियाँ अवश्य भेजूँगा। अगला अङ्क फाल्गुन में निकलेगा।

मण्डल की भूमि का अधिग्रहण तो हो चुका, परन्तु एक पूरा साल हो चुका वहाँ की भूमि के उपयोग के विषय में कुछ भी नहीं हुआ। कुछ गुण्डे उस भवन में घुसे बैठे हैं, किसी भी योजना के अभाव में उनसे छुट्टी पाना भी दुर्लभ हो रहा है। लोगों में उत्साह की बड़ी कमी हैं। मैं उस घड़ी की प्रतीक्षा में हूँ जब वहाँ कोई उपयोगी कार्य का श्री गणेश हो।

गोविन्दनगर की प्रबन्ध समिति की दो वर्ष से कोई बैठक नहीं हुई, गतिरोध चल रहा है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पूर्व सरकारी, अर्द्धसरकारी संस्थाओं में इस प्रकार के गतिरोध, गोलमाल अचिन्त्य थे परन्तु दो दशकों से तो यह अब सामान्य बात बनकर रह गई है। मेरी आत्मा को इस प्रकार के वातावरण से बड़ी पीड़ा होती है, कोई देखने सुनने वाला नहीं है। यदि दो वर्ग लड़ते हैं तो दोनों के ही पक्षधर मिल जाते हैं और परिणाम यह होता है कि स्थिति यथावत् बनी रहती है। जिन लोगों पर इसका कुप्रभाव पड़ता है उन्हें सिवाय दुःख पाने या कोसने के अतिरिक्त कोई विकल्प नहीं है।

अब हम लखनऊ के आपके पते को नोट करके इसी पर डाक भेजते रहेंगे कृपाकर परिवर्तन की दशा में अवश्य पूर्व सूचित करें।

स्नेहभाव बनाये रहे। हाँ एक बात और! आपने नाराजी की बात लिखी सो यह तो कल्पनातीत है। सभी हिन्दी सेवियों को मैं परिवारी जनों के सदृश मानता हूँ। उनकी हिन्दी सेवा के कारण मेरे मन में इनके प्रति अपार स्नेह है। हिन्दी-सेवा को मैं सर्वाधिक पुण्य कार्य मानता हूँ। ऐसी दशा में मित्रजनों के प्रति आक्रोश की भावना तो मेरी कल्पना के बाहर है, आपसे तो आत्म सम्बन्ध हो गये हैं, तथा आपने हम लोगों की हिन्दी सेवा के मिशन में जो उल्लेखनीय सहयोग किया है वह तो सदैव स्मरणीय रहेगा। आप तो हमारे घर के व्यक्ति हैं और आपके प्रति तो हमारी निजी श्रद्धा और अपार स्नेह हैं।

शुभाकांक्षी
वृन्दावनदास

सूर-साहित्य सन्दर्भ नामक एक महान ग्रन्थ निकलने वाला है। उसमें प्रकाशनार्थ हमने आपका लेख 'सूर से सयानों कौन' दे दिया है। बड़ा होने के कारण हम उसे अद्यतन ब्रज-भारती में न छाप सके, अब वह उस बड़े ग्रन्थ में स्थान प्राप्त कर रहा है। तुलसी सन्दर्भ नामक एक महान ग्रन्थ और निकला है, उसे भी आपको भिजवाऊँगा।

(२७६)

प्रकाश भवन,
मथुरा. १३-२-७५

बन्धुवर निरंकुश जी,

कृपा पत्र मिला। पढ़कर अत्यानन्द प्राप्त हुआ। मैं समझ रहा था कि डा० वासुदेवशरण अग्रवाल के पत्र शीर्षक पुस्तक मैं आपको भेज चुका हूँ। आपके पत्र से विदित हुआ कि वह अद्यतन नहीं पहुँची है। अतः अभी रजिस्टर्ड बुक-पोस्ट से प्रेषित की जा रही है।

ब्रज-भारती के अंक तो मैं भेज चुका हूँ, क्या अभी नहीं पहुँचे? कृपा कर वस्तुस्थिति से तुरन्त अवगत करें। भविष्य के लिए मैंने अपनी डायरी में आपका वर्तमान पता नोट कर लिया है। लगभग एक सप्ताह हुआ पत्रिका के अंक इसी पते पर भिजवाये गये थे। क्या उनके प्रेषण में भी वैसी ही भूल हो गई, कृपया तुरन्त लिखें।

निःसन्देह रुहेलखण्ड मण्डल के कुछ जनपद ब्रजक्षेत्र के अन्तर्गत आते हैं। बरेली में ब्रज-साहित्य मण्डल का एक केन्द्र स्थापित कर दीजिये। मथुरा के

प्रधान कार्यालय से सम्बद्धता का शुल्क ५)रु० वार्षिक है, प्रथम वर्ष का तो हम ही जमा कर देंगे। १०, २० समान शील मित्र बन्धु एकत्रित होकर प्रस्ताव पारित कर केन्द्र की स्थापना कर दें, पदाधिकारी चुन लें तथा एक प्रतिनिधि प्रधान संस्था के लिए मनोनीत कर दें। स्थापना के उपरान्त भाषण, गोष्ठी निबन्ध आदि विषयक बैठकें करते रहे। जो कुछ किया जाय उसकी विज्ञप्ति तो दैनिक पत्र में भेज ही देनी चाहिए जिससे संस्था के प्रति आकर्षण बढ़े और वह लोकप्रिय बने।

हमारे कुछ बन्धु ब्रजभाषा अथवा अन्य किसी लोकभाषा का किसी को काम करते देखते है तो कुपित हो जाते हैं, उन्हें इस प्रकार के कार्य में हिन्दी का अहित दृष्टिगोचर होता है। शायद आप मुझसे सहमत होंगे कि लोकभाषाओं के साहित्य को संरक्षित और संवर्द्धित करने से हिन्दी का हित होता है, अहित कदापि नहीं। इन भाषाओं की परिधि अत्यन्त सीमित है, यह हिन्दी के विकल्प रूप में कभी खड़ी हो ही नहीं सकती। मैं बम्बई महिनों रहा हूँ। वहाँ लोग सजातीयों से अपनी मातृभाषा में ही बोलते हैं परन्तु जब गुजराती मराठी से तमिलवासी राजस्थानी से अथवा विभिन्न भाषा भाषी लोग एक दूसरे से बात करते हैं तो हिन्दी के अतिरिक्त चाहे वह कितनी ही टूटी-फूटी हो कोई विकल्प ही नहीं है। इस देश में राष्ट्रभाषा और सम्पर्क भाषा के रूप में केवल हिन्दी ही हो सकती है। एक बात और, लोक भाषाएँ हमारी मातृभाषाएँ हैं इनका लोक जीवन से अविच्छिन्न सम्बन्ध है। ये अमरवाणियाँ अनादि काल से चली आ रही हैं। इनको अपदस्थ नहीं किया जा सकता, ये जीवन के अङ्ग बन गई हैं। इनके प्रति द्रोहभाव दिखलाना हास्यास्पद है।

बहुधा लोग कह देते हैं कि गणना में यदि लोग लोक भाषाओं को अपनी-अपनी भाषा लिखा देंगे तो हिन्दी के लिये रह ही क्या जायगा। इस शङ्का के निवारणार्थ हमारा तर्क यह है कि हिन्दी प्रत्येक भारतवासी की भाषा है। प्रत्येक भारतवासी चाहे शिक्षित हो अथवा अशिक्षित दो भाषायें जानता है (१) मातृभाषा (२) हिन्दी/स्थिति के इस सन्दर्भ में गड़बड़ का कोई प्रश्न ही नहीं है। हिन्दी की गणना क्या होगी। वह तो प्रत्येक भारतवासी के जीवन का अपरिहार्य अङ्ग है. ९९ प्रतिशत भारतवासी हिन्दी समझ बोल लेते हैं। आशा है आप स्वस्थ एवं सानन्द हैं।

आपका
वृन्दावनदास

(२८०)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २०-३-७५

प्रियवर निरंकुश जी,

कृपा पत्र मिला। बहुत-बहुत धन्यवाद ! सूर से बड़ो सयानौ कौन शीर्षक आपका एक दीर्घकाय लेख हमारे पास बहुत समय से रक्खा था, हमने उसे किसी उपयुक्त प्रकाशन के लिये सुरक्षित कर लिया था। सूर सन्दर्भ ग्रन्थ की चर्चा सामने आते ही हमने उसे उस ग्रन्थ में प्रकाशनार्थ डा० गिरिराजशरण अग्रवाल, बिजनौर वालों के पास बहुत दिन हुए भेज दिया था, उनकी प्राप्ति स्वीकृति भी आ चुकी है। आप उनको एक लेख और भेजें, आप ब्रज-साहित्य के मर्मज्ञ विद्वान् हैं।

बन्धुवर रमण शाण्डिल्य बड़े ही उत्साही एवं कर्मठ कार्यकर्ता हैं। उन्होंने पुष्कल लेखन कार्य किया है। वे लोक-साहित्य के मर्मज्ञ अध्येता हैं। उनके समीक्षा एवं लोक-साहित्य विषयक लेख पाण्डित्य पूर्ण होते हैं। वे मेरे पत्रों का संग्रह करके उनको प्रकाशित करा रहे हैं। वे इस ग्रन्थ के सम्पादक हैं। लगभग ५५० पत्र तो वे एकत्रित कर ही चुके। आप उन्हें कुछ पत्रों की प्रतिलिपि अवश्य भेज दें। इस ग्रन्थ में आपका शुभ नाम अवश्यमेव रहना चाहिए।

शेष फिर। स्नेह भाव बनाये रहें।

आपका
वृन्दावनदास

(२८१)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २६-३-७५

मान्यवर निरंकुश जी, नमस्कार !

कृपा पत्र मिला। होली की आपको होलिकोत्तर बधाई।

अभिनन्दन ग्रन्थ छप चुका है, उसके आरम्भिक पृष्ठ, चित्र आदि अभी छपने शेष हैं। आपका लेख अविकल छप चुका है। अभी २, २॥ महिने का काम शेष है, बाइंडिंग आदि भी होना है। ७५० पृष्ठीय ग्रन्थ है। किन-किन वर्षों में क्या किया तथा किन-किन संस्थाओं से सम्बन्धित रहे आदि पर तो काफी लिखा जा चुका है तथा उन पदों की गणना तो महत्वपूर्ण भी नहीं है। आप तो मौलिक चिन्तन के स्वामी हैं कुछ संस्मरणात्मक लिखकर उनसे पीछा छुड़ाइये। स्नेह भाव बनाये रहें।

आपका
वृन्दावनदास

(२८२)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ७-४-७५

प्रियवर निरंकुश जी, सप्रेम नमस्कार !

आपका ४ अप्रेल का पत्र आज मिला। अनेक धन्यवाद ! सूर पर आपने जो लेख डा० गिरिराज शरण को भेजा है वह उनकी प्रस्तावित पुस्तक में अवश्य छपेगा। यदि वे आपके लेख को भी स्थान न देंगे तो पुस्तक की रचना ही कैसे कर पावेंगे। आपका पहला लेख भी अत्यन्त सुन्दर था, हम उसको ब्रज-भारती में देने के बड़े इच्छुक होते हुए भी न छाप सके। वह लेख अपने विशाल आकार के कारण एक बड़ी १००, १५० पृष्ठीय पत्रिका या किसी बृहदाकार निबन्ध संग्रह के ही उपयुक्त था। ४८ पृष्ठीय ब्रज-भारती में १४ पृष्ठीय आपके उस लेख को हम समाविष्ट करने में विफल रहे, परन्तु सूर सन्दर्भ ग्रन्थ के तो वह सर्वथा उपयुक्त है कारण वह ग्रन्थ तो जैसा डा० गिरिराजशरण कहते थे लगभग एक हजार पृष्ठीय होगा।

पोद्दार अभि० ग्रन्थ व गोविन्दनगर वाली आपकी दोनों बातें मेरे ध्यान में है। कृपया थोड़े दिन और प्रतीक्षा करें। काम तो होगा ही।

इधर हमारी कुछ डाँक अस्त-व्यस्त हुई है, कई पत्र जो मिलने चाहिऐ थे नहीं मिले हैं। शायद उन्हीं लुप्त पत्रों में दिल्ली की अग्रवाल सभा का निमन्त्रण भी होगा। हम यह समझे बैठे हैं कि निमन्त्रण ही नहीं आया। अग्रवाल साहित्यकारों पर एक ग्रन्थ तो निकलना चाहिये, आपका सुझाव मौलिक है। आप इस यज्ञ के होता बनें। मैं इस पर विचार करूँगा तथा उन सज्जनों के नाम आपको दूँगा जो इस कार्य में हमारे सहायक हो सकते हैं।

हमारे समाज में अनेक कुरीतियाँ अब भी अपनी जड़ जमाये हुए हैं। दहेज की प्रथा बड़ी वीभत्स है। यों तो इस कुप्रथा का दुष्प्रभाव अमीर गरीब सब पर समान रूप से पड़ता है और अपने-अपने बिसात् के मुताबिक सभी इसकी मार से व्याकुल हैं परन्तु धनाढ्यों की स्थिति मध्यम वर्ग के लोगों से सर्वथा भिन्न है। धनाढ्य लोगों के हाथ में तो दहेज एक खिलौना है जिससे वे मनमाना खेल खेलते हैं। उन्हें तो खर्च करके खेल खेलना है, लाख रुपया खर्च करना है तो सम्बन्ध यदि अ से न होगा तो ब से हो जायगा। मुश्किल तो उन लोगों की है जिनके पास साधन तो स्वल्प हैं और उनकी पुत्री को हम अपनी पुत्रवधू बनाने के लिये उनकी शक्ति से बाहर धन माँगते हैं। हम उन हुण्डियों को भुनाना चाहते हैं। मैंने कई भाईयों को इसी बाधा के कारण

बड़ा ही दुःखी होते देखा है, अनेक लड़कियाँ तीस-तीस वर्ष की अवस्था प्राप्त करके भी अविवाहित हैं। दहेज की प्रथा सर्वथा बन्द होनी चाहिए जिससे सामान्य जनता को त्राण मिले। धनी लोग अपने धन से होली खेलें, हमें क्या आपत्ति है ?

अनर्गल बहुमूल्य वस्त्राभूषणों का संग्रह यद्यपि धनी लोगों में ही अधिक है, इसका बढ़ता चलन चिन्ता-जनक है। यह बड़ी ही दूषित प्रवृत्ति है और भारतीय संस्कृति के सर्वथा प्रतिकूल भी। हम किसी सार्वजनिक संस्था को अथवा किसी प्रकार के परोपकार में तो कानी कौड़ी भी न देंगे और अपनी बहु-बेटियों के सन्दूकों को कीमती रंग-बिरंगी सैकड़ों साड़ियों से सदा भरा रक्खेंगे।

लड़के लड़कियों को तीस-तीस वर्ष तक अविवाहित रखने की प्रथा भी त्याज्य है, इससे समाज में अनेक बुराइयाँ प्रविष्ट हो चुकी हैं।

वर्तमान काल में अर्थपिशाचता का साम्राज्य है। वैश्य समुदाय इसका सबसे बड़ा दोषी है। आज का व्यक्ति आबाल-युवा-वृद्ध अर्थ-लोलुप हो गया है और स्वार्थ-परता की भावना चरम सीमा पर है। अर्थ-पिशाचता ने हमारे पारिवारिक सम्बन्धों की जड़ें भी हिला दी हैं। अग्रवाल समाज स्वयं को दोषी न रखकर इस दिशा में मार्ग-दर्शक का रोल अदा कर सकता है, उसकी आर्थिक स्वस्थता के कारण उसे इस दिशा में नेतृत्व प्रदान करने की क्षमता प्राप्त है। आप अवश्य कुछ करें, अग्रोहा की स्थिति का मैं अध्ययन कर रहा हूँ। इस पर मैं किसी दूसरे पत्र में अपने विचार व्यक्त करूँगा। आशा है आप सानन्द हैं।

आपका

वृन्दावनदास

(२८३)

प्रकाश भवन,

मथुरा. ३०–४–७५

परम स्नेही श्री निरंकुश जी, सप्रेम नमस्कार !

कितनी रुचि लेते हैं आप साहित्यानुशीलन में ? मुझे बड़ी ही प्रसन्नता है कि आपने पुस्तक का कोना-कोना छान डाला। आप सदृश विद्यानुरागी कम ही दृष्टिगोचर होते हैं। चित्र में उजाला और छाया दोनों ही हों तभी वह सुन्दर की गणना में आता है। समीक्षाएँ अधिकाँश प्रमाण-पत्र का रूप होती है और बहुलांश में आपकी भी ऐसी ही है, कारण आत्मीयता कहाँ जाएगी ? फिर भी जिन कमियों की ओर आपने संकेत किया है उन्हें मैं मानता हूँ और

स्वीकार करता हूँ। पुस्तक को पढ़कर उस पर अपने विचार लेखक को लिख भेजने की आपकी प्रवृत्ति की मैं दाद देता हूँ, निःसन्देह इससे लेखक प्रफुल्लित होता है, उसकी आत्मा को तृप्ति मिलती है।

कुछ बहुमूल्य सामग्री का अभाव मुझे भी खटकता रहा और वह भी ग्रन्थ निर्माण करते हुए शुरू से जिन-जिन महापुरुषों का आपने नामोल्लेख किया है सम्भवतः उनकी जानकारी आपको ज्ञानमूर्ति आचार्य वासुदेवशरण नामक पुस्तक के पारायण से प्राप्त हुई, यह पुस्तक मेरी पुस्तक के प्रकाशन के छः मास बाद प्रकट हुई। मुझे भी इसे पढ़कर अनुभव हुआ था कि इन तीनों महानुभावों को लिखे हुए पत्र यदि संग्रह में उपलब्ध होते तो अच्छा था। परन्तु मूल पत्र तो उन तीनों महारथियों के निवास स्थानों पर होंगे जो दिवङ्गत हो चुके है। मुझे कुछ ऐसा अनुभव हुआ है कि दिवंगत महापुरुषों से उत्तराधिकार में वंशजों को सम्पत्ति के अतिरिक्त एक घटिया चीज भी मिली है और वह है अपने पूर्व पुरुष की कीर्ति के प्रति उपेक्षा का भाव/जीवन की जाज्वल्यमान कीर्ति की मरणोपरान्त यह कैसी भीषण प्रतिक्रिया है। श्रद्धेय बनारसीदास जी चतुर्वेदी लिखते-लिखते हार गये परन्तु न तो गुप्त बन्धुओं (स्व० मैथिलीशरण गुप्त और सियाराम शरण गुप्त) के पत्र ही छपे और न श्रीप्रकाश जी का स्मृति ग्रन्थ। किसी ने चिट्ठियों का जवाब भी न दिया। विचार सम्पादक श्री अजय कुमार मिश्र और उनके पूज्य पिता श्री कृष्णकुमार मिश्र ने तो श्री प्रकाश जी पर बढ़िया लेख भी "विचार" में छापे और स्मृति ग्रन्थ की आवश्यकता पर निरन्तर बल दिया परन्तु सब व्यर्थ सिद्ध हुआ। 'ज्ञानमूर्ति आचार्य वासुदेव शरण' में तो अग्रवाल जी द्वारा प्रेषित पत्रों के उत्तर ही हैं, मूल प्रेषित पत्र तो उसमें भी नही है। चतुर्वेदी जी ने और उनके आदेश से मैंने अनेक बार अग्रवाल जी के परिवारी जनों को पत्रों के लिये लिखा लेकिन उनके द्वारा तो मुझे एक भी पत्र प्राप्त नहीं हुआ।

पत्रों को प्रकाशित करने की प्रणाली नये ढङ्ग से श्रद्धेय बनारसीदास जी चतुर्वेदी ने ही अपनाई है। उन्होंने पं० पद्मसिंह शर्मा के पत्र शीर्षक पुस्तक का सम्पादन किया है। मैंने उसी पद्धति का अनुकरण किया है। आने जाने वाले दोनों पत्रों को प्रकाशित करने के मैं पक्ष में नहीं हूँ। एक तो इससे पुस्तक वृहदाकार होने का भय है दूसरे अभीष्ट तो उस महान व्यक्ति को समझने का है जिसके पत्रों को हम प्रकाशित करते हैं, तीसरी बात यह भी है कि प्रकाशित पत्र से यह अनुमान लगा लेना संभाव्य है कि यदि यह उत्तर स्वरूप है तो प्रश्न का क्या रूप होगा।

अब रही अपने निबन्ध को पुस्तक में स्थान देने की बात। मैंने पुस्तक का प्राक्कथन और उसकी भूमिका बम्बई में हैंगिग गार्डन में बैठकर लिखी थी। आत्म-विभोर होकर लिखता चला गया। जो मैटर बना वह उन ३२ पृष्ठों से अधिक था जो पुस्तक को छापते समय प्राक्कथन और भूमिका के लिए छोड़ दिये गये थे और ३३ वें पृष्ठ से पुस्तक को छापना शुरू कर दिया था। यह लेख भूमिका का वही अवशिष्ट भाग है। मैं इस भाग को पाठक तक पहुँचाने के लोभ का संवरण न कर सका। भूमिका का अवशिष्ट भाग लिखना उचित न समझा और उसे किंचित ठीक-ठाक करके एक स्वतन्त्र लेख का रूप देकर पुस्तक में ही समाविष्ट कर दिया। उस लेख को पुस्तक में स्थान देने की यही सच्ची कहानी है।

आपने अग्रवाल जी के उस पत्र की ओर संकेत किया है जो उन्होंने अपने सम्बन्धी श्रीकृष्ण सहाय गर्ग को लिखा है। निःसन्देह अग्रवाल जी परम सौम्य थे, उनका सौम्य व्यवहार उनके क्रिया-कलापों में पग-पग पर लक्षित होता था। अमरत्व प्राप्ति असम्भव है इसे खूब जानते हुए अग्रवाल जी ने जोड़ी चिरंजीवी होने की मंगल कामना की है। ऐसा करने में उन्होंने एक सुदीर्घकालीन परंपरा का ही निर्वाह किया है। आत्मीयों और स्वजनों के प्रति 'जीवेत शरदः शतम्' की परम्परा ठेठ वैदिक काल से चली आयी है और अग्रवाल जी उसमें अपवाद कैसे होते ? परन्तु आपका साहित्यिक निष्कर्ष भी बढ़िया है और ध्यान देने योग्य है।

आजकल "श्री वृन्दावनदास पुस्तकालय, वाचनालय एवं संग्रहालय" शीर्षक एक निबन्धित संस्था के भवन-निर्माण कार्य में अत्यन्त व्यस्त रहता हूँ। दो महिने में यह कार्य पूरा हो जायगा ऐसी आशा है। अपने विशाल संग्रह को भविष्य के लिये सुरक्षित कर देना चाहता हूँ जिससे हिन्दी-प्रेमियों की कुछ सेवा बन सके। इस सम्बन्ध में आपको फिर लिखूँगा।

प्रस्तुत पत्र के रूप में आपने मेरी पुस्तक की बड़ी ही भव्य समीक्षा की है अतः मेरा विनम्र आभार स्वीकार करें। स्नेह भाव बनाये रक्खें।

आपका
वृन्दावनदास

(२८४)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ५-६-७५

वन्धुवर निरंकुश जी, प्रणाम !

पत्रों की प्रतिलिपियों सहित आपका कृपा पत्र मिला। पत्रों को यथा-स्थान भेजा जा रहा है।

आपका स्वास्थ्य अब पूर्णरूपेण ठीक होगा। डाक टिकटों के अभाव ने अमुद्रित कार्डों का उपयोग करने पर विवश कर दिया है। कैसी विडम्बना है। शेष फिर।

आपका
वृन्दावनदास

डा० महेन्द्र सागर प्रचण्डिया के नाम

(२८५)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २८-५-७७

मान्यवर प्रचण्डिया जी, प्रणाम !

आपका स्नेह सिक्त दीपावली सन्देश प्राप्त हुआ। बहुत-बहुत धन्यवाद ! नूतन वर्ष आपको अपार सुख समृद्धि प्रदायक हो यही परमेश से प्रार्थना है। आपने माँ भारती की अर्चना में जो सुवासित पुष्प चढ़ाये हैं उनसे हम सबको बड़ा सन्तोष है। मातृभाषा की सेवा में रत सभी बन्धुगण अप्रतिहत गति से अपने कार्यों में अग्रसर हों यही हमारी शुभकामना है। योग्य सेवा से सदैव सूचित करते रहें।

आपका
वृन्दावनदास

श्री रामकृष्ण शर्मा के नाम

(२८६)

प्रकाश भवन,
मथुरा. १५–३–७३

प्रिय शर्मा जी,

मानस में पुराख्यान तत्त्व की प्रति हमें प्राप्त हो गई है। अतः रजिस्टर्ड बुक-पोस्ट से भेजी है। ब्रज-भारती का नवीनतम प्रकाशित फाल्गुन अङ्क भी इसके साथ ही भेज रहे हैं। आशा है आप स्वस्थ एवं सानन्द हैं।

आपका
वृन्दावनदास

(२८७)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २०–३–७३

प्रिय शर्मा जी,

पत्र मिला 'धौंधी आसकरन सम्बन्धी' आपका लेख ज्येष्ठ के अङ्क के लिये चयन कर लिया गया है। शेष सब कुशल।

आपका
वृन्दावनदास

(२८८)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ९-७-७५

प्रियवर शर्मा जी,

आपका बधाई सन्देश प्राप्त हुआ। बहुत-बहुत धन्यवाद! कभी मथुरा आओ सद्यः स्थापित पुस्तकालय को देखना। पुस्तकालय की निबन्धन पुस्तिका ब्रज-भारती के भाद्रपद अङ्क के साथ आपके पास पहुँचेगी। यह अङ्क लगभग तीन सप्ताह बाद पहुँचेगा। इसी में अखिल भारतीय अन्तरजनपदीय परिषद् के अधिवेशन का विवरण होगा।

आपका
वृन्दावनदास

(२८९)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ५-५-७९

प्रिय शर्मा जी,

आपका लेख "पद्माकर ने गंगा लहरी कहाँ लिखी"—ब्रजभारती वर्ष २८ अङ्क ३ मार्गशीर्ष संवत् २०३१ में प्रकाशित हुआ था। पत्रिका की एक प्रति आपको भेजी जा रही है। आशा है आप सानन्द हैं।

आपका
वृन्दावनदास

डा० वि० ए० चेर्निशोव के नाम

(२९०)

प्रकाश भवन,
मथुरा. १९-५-६७

आदरणीय चेर्निशोव महोदय, सादर प्रणाम!

पं० बनारसीदास चतुर्वेदी की प्रेरणा से आपकी सेवा में एक पत्र भेजने में मुझे बड़ी प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। ब्रजभाषा हिन्दी के साहित्य की भाषा है। हिन्दी ब्रजभाषा की दुहिता है। मेरी दृष्टि में ब्रजभाषा और हिन्दी में प्रतिद्वन्दिता का कोई प्रश्न ही नहीं उठता। ऐसी कौन सी माता होगी जो अपनी पुत्री की उन्नति देखकर प्रसन्न न हो। ब्रजभाषा अब भी जनपदीय भाषा के रूप में फल-फूल रही है। ब्रजप्रान्त के लोग अपने पारिवारिक जीवन में ब्रजभाषा का ही प्रयोग करते हैं। ग्रामीण जनता तो ठेठ ब्रजभाषा का ही

व्यवहार करती है। नगरों में शिष्टजन वार्तालाप हिन्दी में करते हैं, भाषण भी हिन्दी में दिए जाते हैं, विद्यालयों में पढ़ाई भी हिन्दी के माध्यम से की जाती है। ब्रजभाषा काव्य इतना सरस है कि वह बहुत ही लोकप्रिय है। ब्रज-प्रदेश में बहुधा विभिन्न साहित्यिक और सांस्कृतिक संस्थाएँ साहित्य-गोष्ठियों का आयोजन करती रहती हैं। इन गोष्ठियों में जो काव्य रसधारा प्रवाहित होती है उससे जनमानस रससिक्त हो जाता है। ब्रजभाषा में काव्य का निर्माण अब भी बड़े विशाल पैमाने पर होता रहता है। खेद केवल यही है कि बहुत सा उत्तम काव्य संग्रह अर्थाभाव के कारण प्रकाशित नहीं हो पाता है। फिर भी साहित्यिक संस्थाएँ उसको मुद्रित और प्रकाशित करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान करती रहती हैं।

ब्रज-साहित्य मण्डल ब्रजप्रदेश की एक प्रातिनिधिक महत्वपूर्ण संस्था है। आजकल मैं इसका अध्यक्ष हूँ। इसकी एक त्रैमासिक पत्रिका भी प्रकाशित होती है जिसका नाम ब्रजभारती है।

ब्रजप्रान्त के निर्माण के विषय में निवेदन है कि साहित्यिक, भाषायी तथा सांस्कृतिक आधारों पर तो ब्रजप्रान्त के निर्माण में किसी को आपत्ति हो भी क्या सकती है। परन्तु सत्तात्मक आन्दोलन वांछित अपील कर पाने में असमर्थ रहता है। आदरणीय श्री बनारसीदास जी चतुर्वेदी ब्रजप्रान्त के साहित्यिकों को सतत प्रेरणा देते रहते हैं। उनका ध्येय साहित्यिक और सांस्कृतिक आधारों पर ब्रजप्रान्त के निर्माण का है। उपेक्षित कवियों और साहित्यिकों को प्रकाश में लाने का भी वे यत्न करते रहते हैं।

आज जनपदीय आन्दोलन को गतिशील बनाने की बड़ी आवश्यकता है। यदि हमने इसमें सफलता प्राप्त की तो इससे हिन्दी का महान् हितसाधन होगा, हिन्दी के भण्डार की वृद्धि होगी।

हिन्दी एक सरल और सुबोध भाषा है। वह बड़ी सरस है। उसका साहित्य पूरा है। वह विश्व में उतना ही प्रचलित होने का अधिकार और योग्यता रखती है जितना कि अँग्रेजी। विदेशों में हिन्दी भवनों की स्थापना होनी चाहिए उनमें हिन्दी साहित्य का पुस्तकालय तथा रात्रि कक्षाओं में हिन्दी का पठन-पाठन होना चाहिए।

आपका

वृन्दावनदास

(२६२)

ब्रज-साहित्य मण्डल,
मथुरा. १८-८-६७

प्रिय चेर्निशोव महोदय,

कृपापत्र दिनांक ५-८-६७ प्राप्त हुआ। ब्रज-भारती ज्येष्ठ अङ्क सम्वत् २०२४ मैंने आपकी सेवा में भेजा था। वह समुद्र के मार्ग से भेजा था। ५५ पैसे के टिकट लगे थे। ऐसा मालुम होता है वह आपको नहीं मिला। मैं निश्चय ही आपको कुछ साहित्य भेजने की व्यवस्था कर रहा हूँ। मेरे एक मित्र ने कहा था कि Aussian Embassy की डाँक के साथ आपको पुस्तकें आदि भेजी जा सकती हैं। मैंने Aussian Embassy को New Delhi लिखा है। उनका उत्तर आने पर या तो उनके माध्यम से भेजूँगा अन्यथा किसी अन्य एजेन्सी वायु या समुद्र। चाहे जितना व्यय पड़े आपको साहित्य अवश्य भेजा जायगा।

आधुनिक काल में ब्रजभाषा के निम्नाङ्कित कवि हैं सेवक (सम्वत् १८७२—१९३८), महाराज रघुराजसिंह रीवाँ (सं० १८८०—१९३६), सरदार कवि (सं० १९०२—१९४०), बावा रघुनाथदास रामसनेही (संवत् १९११ में विश्राम सागर की रचना की), ललित किशोरी तथा ललित माधुरी (कविता काल सं० १९१३ से १९३० तक), राजा लक्ष्मणसिंह (सं० १८८३—१९५३), वेनीद्विज (जन्मकाल सम्वत् १९००), गोविन्द गिल्लाभाई (जन्म १९०५ सम्वत्), हनुमान (संवत् १८६८—१९३६), भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (सं० १९०७—१९४२), प० अम्बिकादत्त व्यास (सं० १९१५—१९५७), पं० नवनीत चतुर्वेदी (सं० १९१५—१९८९), बाबू राधाकृष्णदास (जन्म सम्वत् १९२२), पं० प्रतापनारायण मिश्र (सं० १९१३—१९५१), उपाध्याय बद्रीनारायण प्रेमधन (सं० १९१२—१९८०), ठाकुर जगमोहनसिंह (संवत् १९१४ से १९५५), लाला सीताराम बी० ए० (सं० १९१५ से १९९३), पं० अयोध्यासिंह उपाध्याय (जन्म सं० १९२२), पं० श्रीधर पाठक (सम्वत् १९१६ से १९८५) बाबू जगन्नाथदास रत्नाकर (सं० १९२३—१९८९), राय देवीप्रसाद पूर्ण (सं० १९२५—१९७१), पं० सत्यनारायण कविरत्न (सं० १९४१—१९७५), श्री वियोगी हरि (सं० १९५३ से अब भी मौजूद हैं)। इनके अतिरिक्त ग्वाल कवि, लाल बलवीर, चौबे उरदाम, दत्त पाठक, लोकनाथ मिश्र, हरदेव आदि और भी हो गये हैं।

'ब्रज-साहित्य का इतिहास" अभी दो मास ही हुए डा० सत्येन्द्र ने लिखा है और वह भारती भण्डार इलाहाबाद से प्रकाशित हुआ है। "ब्रज का सांस्कृतिक इतिहास" श्री प्रभुदयाल मीतल ने लिखा है और वह राजकमल प्रकाशन दरियागंज दिल्ली से प्रकाशित हुआ है। दोनों का मूल्य लगभग ३०), ३०) है। ब्रज का इतिहास' ब्रज-साहित्य मण्डल द्वारा प्रकाशित हुआ है। यह दो भागों में है। यह हम आपको भेजेंगे। "ब्रज-भारती" ब्रज-साहित्य मण्डल की त्रैमासिक मुख पत्रिका है। मैं ब्रज-साहित्य मण्डल का अध्यक्ष हूँ और इस पत्रिका का सम्पादक भी। वैसे तो ब्रजभारती २० वर्ष से निकलती है परन्तु बीच में बन्द हो गई थी। अब मेरे सम्पादकत्व में ८ अङ्क नियमित रूप से निकले हैं ये आठों मैं आपको भेजना चाहता हूँ।

मथुरा की ब्रज-साहित्य सम्बन्धी संस्थाएँ निम्नलिखित हैं। (१) ब्रज-साहित्य मण्डल (२) ब्रज कला केन्द्र (३) ब्रज कवि मण्डल। परन्तु प्राचीन साहित्यिक संस्था तो ब्रज-साहित्य मण्डल ही है।

आधुनिक ब्रजभाषा कवि पं० गोविन्द चतुर्वेदी, रामलला, दीनानाथ सुमनेश, कैलाशचन्द्र कृष्ण हैं बालमुकुन्द चतुर्वेदी भी हैं। ये सब मथुरा के हैं। आगरा में पं० अमृतलाल चतुर्वेदी और हृषीकेष जी हैं। डा० हरिशंकर शर्मा और पं० गोपालप्रसाद व्यास भी अच्छे ब्रजभाषा कवि हैं। वैसे तो छोटे-मोटे कवि बहुत है और रचनाएँ भी साधारण अच्छी करते हैं लेकिन अभी इन लोगों की रचनाएँ प्रकाशित नहीं हुई हैं। यहाँ की सरकार इस विषय में कृपणता दिखाती है। यदि वह मुक्त हस्त से अनुदान दे तो बहुत सा उत्कृष्ट प्रकाशन कराया जा सकता है। मैं इस विषय में प्रयत्नशील हूँ और मुझे आशा है कि मैं सरकार या जनता के समृद्ध लोगों से इस कार्य के लिए धन की व्यवस्था करूँगा ब्रज-भारती पर बहुत सा व्यय मैं स्वयं वहन कर रहा हूँ।

आप बड़ी सुन्दर हिन्दी लिखते हैं। आपका पत्र पढ़कर हृदय गद्गद् हो गया। आप जैसी हिन्दी लिखते हैं वैसा हिन्दी वाला क्या लिखेगा। हिन्दी बड़ी सरल और सुबोध भाषा है। अपने इन गुणों के कारण यह विश्वव्यापिनी भाषा होनी चाहिए। मेरा सदैव यह सुख स्वप्न रहा है। आप अपना शोध कार्य पूर्ण कर हिन्दी-सेवा का व्रत लें और हिन्दी की अमर वाणी रूस के घर-घर में पहुँचा दें।

धृष्टता के लिए क्षमा चाहता हुआ एक निवेदन करूँगा। 'आभारा' के स्थान पर 'आभारी' होना चाहिये इसमें लिंगभेद नहीं है। पुरुष और स्त्री

दोनों 'आभारी' शब्द का प्रयोग कर सकते हैं क्रिया पर प्रभाव पड़ेगा पुरुष कहेगा आभारी रहूँगा और स्त्री कहेगी आभारी रहूँगी। क्षमा करें।

आपका
वृन्दावनदास

(२६२)

ब्रज-साहित्य मण्डल,
मथुरा. २६–८–६७

माननीय चेर्निशोव महोदय,

आपने अपने ५-८-६७ के पत्र में लिखा है कि ब्रजभारती पत्रिका की दो तीन प्रतियाँ भेजें। आपके पत्र की भावना से प्रकट होता है कि आपने अब तक ब्रज-भारती देखी भी नहीं है। मैंने अपना रैकर्ड देखा तो विदित हुआ कि आपको एअरमेल से ता० ३-६-६७ को पत्रिका भेजी गई है, उस पर दो रुपये पैंतालीस पैसे के टिकट लगे हैं। क्या यह पत्रिका आपको नहीं मिली ? अगर ऐसा है तो बड़े दुःख की बात है। फिर ३०-६-६७ को एक अङ्क ब्रज-भारती का ३० पैसे का टिकट लगाकर समुद्र मार्ग से भेजा गया है वह आपको मिला या नहीं। आज एक रुपया पेंतीस पैसे के टिकट लगाकर समुद्र मार्ग से एक पैकट में ब्रज-भारती के ५ अङ्क भेजे हैं। कृपा कर ब्रज-भारती की पहुँच लिखियेगा। आशा है तीनों बार की भेजी हुई पत्रिकाएँ आपको मिल गई होंगी।

आज कल हम महाकवि ग्वाल की जयन्ती मनाने की व्यवस्था में व्यस्त हैं। ये ब्रजभाषा के महान् कवि थे। इनका जन्म सम्वत् १८५६ में वृन्दावन में हुआ था और निधन सम्वत् १६२५ में। अतः हम इनकी शताब्दी मना रहे हैं। ये बड़ी सरस कविता लिखते थे। उनकी एक कविता का उदाहरण इस प्रकार है।

जिसका जितना साल भर में खर्च होय,
चाहिये तो दूना पर सवाया कमा रहै।
हूर या परी सी नूर नाजिनी सहूर वाली,
हाजिर हमेश रहै, तौ दिल हू थमा रहै ॥
ग्वाल कवि साहब कमाल इल्म सौहबत में,
याद में गुसैयाँ की हरदम विरमा रहै।
खाने को हमा रहै, ना काहू की तमा रहै,
जो गाँठ में जमा रहैं, तो खातिर जमा रहै ॥

दिया है खुदा ने खूब खुशी करौ ग्वाल कवि,
खाओ पीओ देओ लेओ, यही रह जाना है।
राजा, राव, उमराव केते बादसाह भये,
कहाँ तें कहाँ कों गये, लग्यौ न ठिकाना है॥
ऐसी जिन्दगानी के भरोसे पै गुमान करौ,
देस देस घूमि घूमि मन बहलाना है।
आयै परवाना, पर चलै न बहाना इहाँ,
नेकी कर जाना फेरि आना है न जाना है॥

हिन्दी की कई बोलियाँ हैं राजस्थानी, अवधी, बुन्देली, भोजपुरी, व्रजभाषा आदि।

इस पत्र में मैं भोजपुरी पर English में लिखित ग्रन्थों और निबन्धों की सूची प्रस्तुत करता हूँ, शायद इससे आपको कुछ लाभ हो।

(1) Some Bihari folk songs by G. A. Grearson.
इसमें कुछ भोजपुरी गीत भी सम्मिलित हैं।

(2) The Song of Alha's marriage.
इसमें आल्हा के विवाह वाले खण्ड का भोजपुरी रूप अँग्रेजी अनुवाद के साथ प्रकाशित है।

(:) Selected Specimen of Bihari language.
उदयनारायण तिवारी !

(1) A dialect Bhojpuri.

(2) Piriya—A curious festival of Bhojpuri women
गिरीन्द्रनाथ दत्त।

Notes on vernacular dialects spoken in the district of Saran.

Venis J.

Notes of the Bhojpuri dialect of Hindi as spoken in western Bihar.

श्रीधर मिश्र।

Kunwar Singh in folk Songs.

इस सम्बन्ध में आप अधिक जानकारी के लिए पं० गणेश चौबे पोस्ट ऑफिस बँगरी Via पिपरा कोठी जिला चम्पारन से सम्पर्क स्थापित करें।

राजस्थानी के विषय में अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए आप राजस्थान भासा प्रचार सभा मीराँ मार्ग बनी पार्क जयपुर (राजस्थान) से

सम्पर्क स्थापित करें। यह सभा राजस्थानी नाम की एक पत्रिका भी निकालती है। आप इसके सम्पादक श्री रावत सारस्वत को पत्र लिखिये, वे आपको वांछित जानकारी उपलब्ध करावेंगे।

ब्रजभाषा के विषय में हम आपको पहिले पत्र में लिख चुके हैं।

शेष फिर।

आपका
बृन्दावनदास

(२६३)

ब्रजसाहित्य मण्डल,
मथुरा. २१–१०–६७

श्रीमान् चेर्निशोव महोदय, नमस्कार !

आशा है आप अत्यन्त प्रसन्न व स्वस्थ होंगे। रूसी दूतावास के सूचना विभाग में एक अधिकारी श्री वीरेन्द्र त्रिपाठी हैं। उनका परिचय श्री बनारसीदास जी चतुर्वेदी ने कराया था। वे रूसी भाइयों को भारतीय मित्रों की पुस्तकें यदा कदा भिजवा देते हैं। मैं उन्हें कल निम्नलिखित पुस्तकें दे आया हुँ उन्होंने वचन दिया है कि वे बुधवार तक उन पुस्तकों को आपके समीप भिजवा देंगे। (१) ब्रज का इतिहास भाग १ (२) ब्रज का इतिहास भाग २ (३) द्रौपदीदुकूल (४) ब्रज की लोक कहानियाँ (५) श्रीकृष्ण जन्म स्थान का इतिहास (६) गद्य सौरभ तथा ब्रजभारती का नवीनतम अङ्क भी है। आशा है कि ये समस्त पुस्तकें आपके पास शीघ्र पहुँचेंगी। इनकी पहुँच लिखें, यदि ये सही-सलामत पहुँच गईं तो भविष्य में यह क्रम चलता रहेगा और मैं और भी पुस्तकें आपको भेजता रहूँगा।

अद्यतन भारत में हिन्दी में बड़ा शोध कार्य हो रहा है। स्वातन्त्र्योत्तर काल अर्थात् १८, १९ वर्ष की इस छोटी अवधि में लगभग २००० शोध विषय पंजीकृत हो चुके हैं और इन पर लिखे हुए ६०० प्रबन्धों पर उपाधि वितरण हो चुका है। लगभग १५०० शोध विषयों पर कार्य चल रहा है। भारत की अन्य १४ भाषाओं में जितना शोध कार्य हुआ है हिन्दी में उसके बीस गुने से भी अधिक हो गया है। स्वातन्त्र्योत्तर काल में हिन्दी के प्रति लोगों का उत्साह अदम्य है। इससे हिन्दी के महान् सामर्थ्य और विपुल क्षेत्र का भी बोध होता है।

यद्यपि यह तो निश्चित है कि उपाधि सापेक्ष साहित्य में पिष्ट पेषण, पुनरावृत्ति आदि महादोष भी प्रवेश कर गये हैं और इस कारण से उपाधि निरपेक्ष साहित्य किन्हीं अंशों में गुणवत्ता की दृष्टि से अधिक ऊँचा है। हमारा

सुझाव भारतीयों के लिए यह है कि वे विदेशी साहित्य की विधाओं पर हिन्दी में शोध-प्रबन्ध लिखें। इससे हम अन्तर्राष्ट्रीय जगत में एक दूसरे के अधिक निकट आवेंगे, हिन्दी की लोकप्रियता बढ़ेगी तथा हिन्दी का साहित्य और भी समृद्ध होगा।

ब्रज-साहित्य का इतिहास डा० सत्येन्द्र ने लिखा हैं और वह भारती भण्डार इलाहाबाद यू० पी० (भारत) से प्रकाशित है। श्री कृष्णदत्त बाजपेयी लिखित ब्रज का इतिहास तो हमने आपको भेजा ही है, इसके दूसरे खण्ड में साहित्य का विवेचन किया है। मौस्को में हिन्दी भवन की स्थापना कराइये और वहाँ एक हिन्दी का अच्छा पुस्तकालय भी होना चाहिए। हिन्दी अँग्रेजी के समान ही सुगम सुबोध और सरल भाषा है, यह भी अँग्रेजी के समान ही लोकप्रिय हो सकती है बशर्ते इसके भक्त इसके लिए प्रयास करें।

आपकी हिन्दी के प्रति अपूर्व सेवा और साधना है। आप बड़ी सुन्दर हिन्दी लिखते हैं। निःसन्देह आप हिन्दी के विद्वान् हैं।

मेरे योग्य सेवा से सदैव सूचित करते रहिये। कृपाभाव रखिये।

आपका
वृन्दावनदास

(२६४)

प्रकाश भवन,
मथुरा. १८-१-६८

प्रिय श्री चेर्निशोव महोदय,

आपका ता० २७-११-६७ का कृपा पत्र मुझे यथा समय मिल गया था। उत्तर में बिलम्ब का कारण यह था कि मुझे आपके पास पुस्तकें न पहुँचने की जानकारी होने पर मैंने श्री वीरेन्द्र त्रिपाठी को पत्र लिखा और उनके पत्र की प्रतीक्षा कर रहा था। श्री त्रिपाठी का उत्तर २ दिन हुए अभी आया है। उन्होंने लिखा है कि वे पुस्तकें मिसेज लोकरे द्वारा ले जाई गईं थी। श्रीमती लोकरे अब भी मास्को में ही हैं। मुझे विश्वास है कि वे पुस्तकें आपको अवश्य मिल गई होंगी, कृपया पहुँच अवश्य लिखें।

मैंने कल आपको ब्रज-भारती का नवीनतम अङ्क (मार्गशीर्ष अङ्क ३ सम्वत् २०२४) भेजा है। आशा है वह भी शीघ्र पहुँचेगा। पहिली पुस्तकों और इस अङ्क की पहुँच आने पर आपको अन्य साहित्यिक सामग्री भेजी जावेगी।

अभी कुछ दिन हुए राजभाषा विधेयक को लेकर बड़ा विवाद उठ खड़ा हुआ था। दक्षिण के कुछ भागों में हिन्दी विरोधी आन्दोलन चलने लगा तथा उत्तर में अँग्रेजी विरोधी। वस्तुतः यह दुर्भाग्यपूर्ण है। हिन्दी तो अनिवार्यतः समूचे देश की एकमात्र सम्पर्क भाषा है। भारतीय संस्कृति की स्रोत संस्कृत भाषा के हिन्दी वहुत निकट है। अतः हिन्दी भारतीय संस्कृति की प्रतीक है। वह प्रत्येक भारतवासी की तो भाषा है ही। वह सरल है सुबोध है उसमें वे सब गुण विद्यमान हैं जो अँग्रेजी में हैं। अतः वह अन्तर्राष्ट्रीय भाषा होने योग्य है। विश्व में सर्वाधिक प्रचलित भाषाओं में हिन्दी का स्थान चौथा है। वह दिन दूर नहीं जब हिन्दी की लोकप्रियता और बढ़ेगी।

ब्रज-भारती के फाल्गुन अङ्क में जो लगभग एक मास में छप जावेगा मैं आपकी अपील अवश्य छाप दूँगा तथा अपनी पहिली पुस्तकों की पहुँच आने पर आपको अन्य सामग्री भी भेजूँगा। मैं आज श्री मधुसूदन चतुर्वेदी को अभी लिख रहा हूँ कि वे अपने यहाँ से प्रकाशित ब्रजभाषा साहित्य आपको भेज दें।

आशा है आप प्रसन्न एवं स्वस्थ हैं। मेरे योग्य सेवा लिखें।

आपका
वृन्दावनदास

(२६५)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ११-४-६८

प्रिय डा० चेर्निशोव महोदय !

आपका दिनांक १०।३।६८ का कृपा पत्र यथासमय मिल गया था। धन्यवाद ! पत्र को पढ़कर बहुत दुःख हुआ। मैं तो श्री वीरेन्द्र त्रिपाठी के भरोसे पर रहा मैं नहीं समझता था कि इसमें इतना धोखा होगा। यदि आपको अब भी पुस्तकें नहीं मिलीं तो मैं समझता हूँ वे पुस्तकें उन्होंने भेजी ही नहीं। मैंने उन्हें लिखा था कि श्रीमती लोकरे नाम की कोई महिला तो वहाँ पहुँची नहीं तो उस पत्र का उन्होंने उत्तर ही नहीं दिया है।

अब हम आपको किसी की मार्फत नहीं स्वयं ही एअरमेल अथवा समुद्री डाँक से साहित्य भेजेंगे। आजकल मैं ब्रज कोकिल कविरत्न सत्यनारायण अर्द्ध शताब्दी समारोह में व्यस्त हूँ। इस अवसर पर कुं० हनुमन्तसिंह जन्म शताब्दी समारोह और महाकवि ग्वाल शताब्दी समारोह भी होंगे। महाकवि ग्वाल रीतिकाल के अन्तिम आचार्य थे। उन्होंने बड़ा सुन्दर काव्य रचा था। उनके

बनाये हुए हजारों छन्द लोगों को कण्ठस्थ है। कुछ नमूने आपके मनोरंजन के लिए लिखता हूँ।

जिसका जितना साल भर में खर्च होय,
चाहिये तो दूना, पर सवाया तो कमा रहै।
हूर या परी सी नूर नाजिनी सहूर वाली,
हाजिर हमेस रहै तो दिल हू थमा रहै॥
'ग्वालकवि' साहब कमाल इल्म सोहवत में,
याद में गुसैयाँ की हरदम विरमा रहै।
खाने को हमा रहै ना काहू की तमा रहै,
जो गाँठ में जमा रहै तौ खातिर जमा रहै॥
चाहिये जरूर इनसानियत मानस को,
नौवत बजे पै भेर बजिवौ कहा।
जात और अजात कहा हिन्दू औ मुसलमान,
जातें कियौ नेह फेरि तासों भजिवौ कहा॥
ग्वाल कवि जाके लिएँ सीस पै बुराई लई,
लाज हू गवाई कहौ फेरि लजवौ कहा।
या तौ रंग काहू के न रंगिये सुजान प्यारे,
रँगे तौ रँगेई रहौ, फेरि तजिवौ कहा॥
दिया है खुदा ने खूब खुशी करौ ग्वालकवि,
खाओ पीओ देओ लेओ, यही रह जाना है।
राजा, राव, उमराव केते बादसाह भये,
कहाँ तें कहाँ कों गये, लग्यौ न ठिकाना है॥
ऐसी जिन्दगानी के भरोसे पै गुमान करौ,
देस देस घूमि घूमि मन बहलाना है।
आयै परवाना पर चलै न बहाना इहाँ,
नेकी करि जाना फेरि आना है न जाना है॥

ग्वाल ने नायिका भेद, ऋतु वर्णन आदि विषयक छन्द भी उत्कृष्ट लिखे हैं।

इनके बनाये ग्रन्थ अधिकतर अप्रकाशित हैं। हम बहुत शीघ्र आपको साहित्य और ब्रज भारती भेजेंगे।

आपका
वृन्दावनदास

(२९६)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २९-४-६८

प्रिय डा० चेर्निशोव,

आपका १४-४-६८ का कृपा पत्र यथा समय प्राप्त हो गया था। धन्यवाद ! आपके अबकी बार के पत्र से स्थिति स्पष्ट हो गई और हमको यह ज्ञात हो गया कि आपके पास कौनसी सामग्री पहुँची और कौनसी भेजी गई परन्तु वह न पहुँच पाई। सम्वत् २०२४ का भाद्रपद अङ्क हमने एअरमेल से भेजा था लेकिन चपरासी को टिकट लगाकर डाँकखाने में डालने को दिया था। मालुम होता है उस चपरासी ने पैसे जेब में रक्खे और अङ्क बीच में ही रख लिया। अन्य पुस्तकें तो वीरेन्द्र त्रिपाठी की गड़बड़ में मारी ही गई। अस्तु ! आज मैंने नीचे लिखी किताबें रजिस्टर्ड पैकट से By Sea भेजी हैं। पैकट पर ५ रुपये ४० पैसे के टिकट लगे हैं तथा रसीद मेरे पास है। पुस्तकों के नाम इस प्रकार हैं।

१—ब्रजभारती भाद्रपद अङ्क संवत् २०२४।

२— „ फाल्गुन अङ्क „

३— „ चैत्र वैशाख ज्येष्ठ अंक सं० २००८ यह पुराना अङ्क भेजा है।

४—ग्वाल स्मृति अँक।

५—स्वागताध्यक्ष (हमारा) भाषण कु० हनुमन्तसिंह समारोह पर।

६—अध्यक्षीय भाषण (हमारा) महाकवि ग्वाल शताब्दी समारोह पर दिया हुआ।

७—ब्रज की लोक कहानियाँ।

८—काव्य नवनीत।

९—देशभक्त होरेशस।

१०—ब्रजभाषा गद्य सौरभ।

११—द्रौपदी दुकूल।

१२—ब्रज का इतिहास प्रथम भाग।

१३—ब्रजलोक संस्कृति।

१४—श्रीकृष्ण जन्म स्थान का इतिहास।

जैसे ही ये पुस्तकें पहुँचें इनकी पहुँच अवश्य देना। प्राप्ति स्वीकृति से भेजने का उत्साह बढ़ता है। आपकी प्राप्ति स्वीकृति आने पर फिर साहित्य भेजेंगे।

आशा है आप कुशलता पूर्वक हैं। मैंने मधुसूदन जी को पत्र लिखा था। उनका पत्र मेरे पास आया है कि उन्होंने आपको साहित्य भेज दिया है। श्री गणेश चौबे ने आपको भोजपुरी साहित्य भिजवाया होगा। अगर भोजपुरी साहित्य न पहुँचा हो तो आप मुझे लिखें मैं उसकी भी व्यवस्था करूँगा। मैं और भी कुछ सम्पादकों को लिख रहा हूँ कि वे आपको साहित्य भेजें।

कृपा कर हिन्दी का खूब प्रचार कीजिये। हिन्दी भाषा सरल है, सुबोध है उसमें वे सब गुण विद्यमान हैं जो अँग्रजी में है। फिर कोई कारण नहीं कि वह विश्व-व्यापी लोकप्रियता न प्राप्त करे। कमी हम कार्यकर्ताओं की है। हिन्दी की रात्रि कक्षाएँ कुछ संस्थाओं द्वारा चलायी जानी चाहिये जिससे जो व्यक्ति हिन्दी सीखने में रुचि रखते हैं वे ऐसा कर सकें।

मेरे योग्य सेवा से सदैव सूचित करते रहें।

आपका
वृन्दावनदास

(२९७)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २९-११-६८

प्रिय डा० चेर्निशोव जी नमस्कार !

कृपा पत्र प्राप्त हुआ। धन्यवाद ! मैं इन दिनों कई मीटिङ्गों में बाहर गया हुआ था अतः आपको पत्र का उत्तर न लिख सका। क्षमा करें। प्राध्यापिका सजानोवा ने मुझे कोई पत्र नहीं लिखा है। मुझे ज्ञात नहीं कि वे भारत आई भी हैं या नहीं। यदि वे मुझे पत्र लिखकर सूचित करेंगी तो मैं अवश्य उनसे जाकर मिल आऊँगा। वे मथुरा पधारें तो मेरा आतिथ्य स्वीकार करें। व्रजःसाहित्य की शोध में मैं उन्हें जो सहायता मुझसे बन पड़ेगी अवश्य करूँगा।

व्रज-भारती के वर्ष २२ के दो अङ्क तथा अपने निबन्धों के संग्रह की पुस्तक जिसका नाम "भारतीय संस्कृति के विविध परिदृश्य" हैं मैं आपकी सेवा में रजिस्टर्ड बुक-पोस्ट से समुद्री मार्ग से भेज रहा हूँ। मैं हिन्दी में ३५, ४० वर्षों से लिखता रहा हूँ। मेरे मित्रों की राय हुई कि मैं अपने उत्कृष्ट लेखों को पुस्तकाबद्ध कर दूँ। एक साहसी प्रकाशक भी मिल गया। उसने पुस्तक का नामकरण तथा टाइटिल के सम्बन्ध में अच्छे सुझाव भी दिये। मैंने पुस्तक ११०० छपवाई थी, उसमें से ७०० तो बिक भी गईं। प्रकाशक ने पुस्तक के

बेचने में बड़ा उत्साह दिखाया। मुझे अपनी पुस्तक की लोकप्रियता पर आश्चर्य है।

मैं भारत का इतिहास भी लिख रहा हूँ। उसका बहुत कुछ अंश लेखों के रूप में पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित भी हो चुका है। कुछ महीनों में ही मैं उस पुस्तक को भी पूरी कर लूँगा तथा फिर उसके भी छापने की योजना बनाऊँगा।

आप भारत वर्ष अवश्य पधारें। आपसे व्यक्तिगत सम्पर्क स्थापित कर महान् हर्ष होगा।

श्री बनारसीदास चतुर्वेदी अच्छी तरह हैं। उनके भतीजे (Nephew) आजकल मथुरा में ही परिवार नियोजन में डाक्टर हैं।

आजकल आप किस विषय पर शोध कर रहे हैं। नागरी प्रचारिणी सभा की खोज रिपोर्टों में बड़ी शोध सामग्री प्रस्तुत है। मुझे विश्वास है कि आपके प्रतिष्ठान में खोज रिपोर्टें उपलब्ध होंगी यदि न हों तो आप उन्हें अवश्य मँगवा लें। १५०), २००) में सब आ जायेंगी। उनमें बहुमूल्य सामग्री निहित है।

श्री प्रभुदयाल मीतल ने पहिले तो ब्रज का सांस्कृतिक इतिहास लिखा था, उसका मूल्य ३०) था। अब उन्होंने ब्रज के धर्म सम्प्रदायों का इतिहास नामक पुस्तक और प्रकाशित की है। वह भी प्रामाणिक ग्रन्थ है जिसमें असीम शोध सामग्री एकत्रित है। इस ग्रन्थ का मूल्य ३५) है। यह मैंने आपके सूचनार्थ निवेदन किया है। आशा है आप स्वस्थ एवं प्रसन्न हैं।

आपका
बृन्दावनदास

(२६८)

प्रकाश भवन,
मथुरा. १६-१-६६

प्रिय डाक्टर साहब,

नूतन वर्ष का आपको सादर अभिनन्दन! आपका सन्देश भी यथा समय प्राप्त हो गया था। अनेक धन्यवाद!

हमने ३०-११-६८ को आपको एक रजिस्टर्ड पार्सल पुस्तकों का भेजा था, आशा है वह पहुँचा होगा। कृपया पहुँच अवश्य लिखें। जो भी साहित्य हम भेजते हैं वह यदि पहुँच जाय और उसकी प्राप्ति स्वीकृति हमारे

पास आ जाय तो हमें और भी साहित्य भेजने को उत्साह बना रहता है। हमारी पुस्तक "भारतीय संस्कृति के विविध परिदृश्य" भी हमने भेजी हैं वह जब आप पढ़ लें उस पर थोड़ी समीक्षा अवश्य लिखें हम उसे ब्रजभारती में प्रकाशित कर देंगे।

श्रीमती साजानोवा भारत तो आ ही चुकी हैं। आपका पत्र लाईं थी और मुझे भी उन्होंने मेरे निवास स्थान पर दर्शन दिये थे। मैंने तो उनसे यही निवेदन किया था कि हिन्दी के प्रति आपका सराहनीय अनुराग देखकर मैं यह कहने का साहस करता हूँ कि हिन्दी को विश्व व्यापी भाषा बनाइये। हिन्दी में एक अन्तर्राष्ट्रीय भाषा होने के सब गुण विद्यमान हैं, कमी है केवल उसके भक्तों की। उन्हें बड़े धैर्य और संयम से हिन्दी की ध्वजा को उठाना चाहिये और हिन्दी को एक सशक्त अन्तर्राष्ट्रीय भाषा बनाने में अपना योगदान देना चाहिए। मुझे प्रसन्नता है कि श्रीमती साजनोवा मेरे प्रस्ताव से सहमत थी और उनका यही मत था कि हिन्दी में अपूर्व क्षमता है और वह शीघ्र ही और उन्नति करेगी। श्रीमती साजनोवा का हिन्दी-प्रेम अत्यन्त स्तुत्य है और इसके लिए उनकी जितनी प्रशंसा की जाय अल्प है।

कृपा भाव रक्खें। हमारे योग्य सेवा से सदैव सूचित करते रहें।

आपका
वृन्दावनदास

(२९९)

प्रकाश भवन,
मथुरा २९-९-६९

प्रिय डा० चेर्निशोव जी, सादर नमस्कार!

आपका कृपा पत्र यथा समय मिल गया था। ब्रजभारती के नये संस्करण की प्रतीक्षा में पत्र न लिख सका। सोचता था कि नई पत्रिका भेजकर ही आपको लिखूँगा। आज मैंने बुक-पोस्ट By Sea से ब्रज-भारती फाल्गुन अङ्क ४, ब्रजभारती ज्येष्ठ अङ्क १ तथा ब्रजभारती भाद्रपद अंक २ भेजे हैं। आशा है आपको यथा समय प्राप्त होंगे।

भारतीय संस्कृति के विविध परिदृश्य शीर्षक मेरी पुस्तक पढ़ ली हो तो उस पर समीक्षा लिखें, उसे हम आपके नाम से ही ब्रजभारती या अन्य किसी पत्र में छपवा देंगे और जिस पत्र में वह प्रकाशित होगी वह पत्र भी अवश्य आपकी सेवा में भेजा जायगा।

आपका "हिन्दी भाषी प्रदेश की बोलियों में रचित समसामयिक साहित्य" शीर्षक प्रबन्ध लिखा जा चुका होगा, यदि हाँ, तो उसकी एक प्रति अवश्य

भेजें, हम उसकी समीक्षा ब्रज-भारती में निश्चय ही करेंगे। भारतीय विद्वानों को आपकी कृति का स्वरूप-ज्ञान होना ही चाहिये।

यदि आपको अवकाश हो तो कुछ महत्त्वपूर्ण हिन्दी साहित्य ग्रन्थ आपको भेजें।

मेरी बड़ी इच्छा है कि रूसी और भारतीय हिन्दी विद्वानों का सम्पर्क बढ़े, पारस्परिक प्रेम और सौहार्द के लिए यह भी आवश्यक है कि हिन्दी के रूसी विद्वानों का प्रतिनिधि मण्डल भारत आवे और भारतीय हिन्दी विद्वान् रूस जाँय। इसके लिए अपने इन्स्टीट्यूट अथवा अन्य किसी स्तर पर रूसी सरकार से बात चलाइये। आपकी स्वीकृति होगी तो हम भी ब्रज-साहित्य मण्डल की ओर से भारत सरकार को टटोलेंगे। आज के युग में पारस्परिक आदान-प्रदान से बड़ा लाभ होता है। हम लोग एक ही परिवार के सदस्य हैं और एक परिवार के सदस्यों को कभी तो आपस में मिलना ही चाहिए।

श्रद्धेय बनारसीदास चतुर्वेदी को उनकी अनुपम सेवाओं के उपलक्ष में हम लोग उनकी जन्मतिथि २४ दिसम्बर को एक अभिनन्दन ग्रन्थ समर्पित कर रहे हैं। अभिनन्दन ग्रन्थ के प्रकाशित होने पर एक प्रति आपको अवश्य भेजेंगे। उस ग्रन्थ में ६ खण्ड हैं उनमें एक खण्ड जन्मदात्री ! ब्रजभूमि खण्ड है, उसका सम्पादक मैं स्वयं ही हूँ। इस खण्ड के लिए बड़े उत्कृष्ट लेख आये हैं। एक सप्ताह के भीतर पाण्डुलिपि प्रेस को चली जाएगी।कृपाभाव रखें।

आपका

वृन्दावनदास

(३००)

प्रकाश भवन,

मथुरा. १८–४–७०

प्रिय डा० साहब,

कृपा पत्र मिला। अनेक धन्यवाद ! ५०० पृष्ठों से भी अधिक आकार में रचित समसामयिक साहित्य पर आपका शोध प्रबन्ध लिखा जा चुका यह जानकर परम प्रसन्नता हुई। प्रकाशित होते ही भेजने को लिखा यह आपका स्नेह है। पुस्तक प्राप्त होने पर निःसन्देह उत्तम समीक्षा की जावेगी। इसी प्रकार "हिन्दी के साधारण वाक्य का विन्यास" तथा "बोलियाँ तथा साहित्यिक हिन्दी" शीर्षक पुस्तकों के प्राप्त होने पर न केवल ब्रज-भारती अपितु अनेक अच्छे भारतीय पत्रों में समीक्षा प्रकाशित करावेंगे। इस कार्य में त्रुटि न होने देंगे।

आप जैसे हिन्दी के परम विद्वान् की रचनाओं से हिन्दी संसार धन्य हो गया। आपकी रचनाओं के प्रति हिन्दी जगत में जानकारी और उत्साह उत्पन्न करना हम जैसे हिन्दी के सेवकों व कार्य-कर्त्ताओं का धर्म हो जाता है। आपकी उपरोक्त तीनों कृतियों की जानकारी प्राप्त कर मुझे जो प्रसन्नता हुई वह वर्णनातीत है। वस्तुतः विदेशों और अहिन्दी भाषी क्षेत्रों में हिन्दी-सेवा का आपने एक उदाहरण प्रस्तुत किया है जो अप्रतिम है और जिसके कारण हिन्दी संसार आपका चिरऋणी रहेगा। मैं ब्रज-भारती के आगामी ज्येष्ठ अङ्क में आपकी कृतियों पर तथा आपकी हिन्दी सेवा और ज्ञान पर सम्पादकीय स्तम्भ में विस्तार से लिखना चाहता हूँ। आपका कृतित्व हिन्दी जगत में उजागर तो होना ही चाहिये। मैं आज आपको निम्नलिखित सामग्री भेज रहा हूँ।

ब्रज-भारती मार्गशीर्ष अङ्क सम्वत् २०२६
,, फाल्गुन अङ्क ,, ,,
,, मार्गशीर्ष अङ्क ,, २०२५
मनुस्मृति (ब्रजभाषा काव्य)
गालिब अमृत (ब्रजभाषा काव्य)
कूबरी (ब्रजभाषा खण्ड काव्य)
मनसुखा (ब्रजभाषा का उपन्यास)
तू मौन खड़ा क्या सोच रहा

ब्रजभाषा की उपरोक्त पुस्तकें नवीनतम प्रकाशन हैं। पूछरी को लौठा नामक उपन्यास बहुत शीघ्र भेजूँगा। पत्रोत्तर में विलम्ब हो गया। क्षमा करें। ब्रज-साहित्य मण्डल, उसकी पत्रिका ब्रज-भारती तथा अनेक सार्वजनिक संस्थाओं से सम्बद्ध होने के कारण कभी-कभी अतिशय व्यस्तता हो जाती है और उसमें वे कार्य जिनको करना हमको सबसे अधिक प्रिय है अक्सर रह जाते हैं। श्रद्धेय बनारसीदास जी चतुर्वेदी के सम्मान में अभिनन्दन ग्रन्थ समर्पण की योजना अत्यन्त सफल रही। आयोजन भी उस तपस्वी साहित्यकार की गरिमा और प्रतिष्ठा के अनुरूप ही हुआ। ग्रन्थ का प्रकाशन हो चुका है, बहुत शीघ्र आपको ग्रन्थ की एक प्रति भेजूँगा।

उपरोक्त ग्रन्थ में ब्रजभूमि (साहित्य और संस्कृति) खण्ड का सम्पादक मैं ही हूँ। ग्रन्थ बड़ी सजधज से निकला है। ब्रजभूमि खण्ड की विद्वानों ने बड़ी प्रशंसा की है। इस ग्रन्थ के निर्माण में जो विलक्षण सफलता प्राप्त हुई उसका श्रेय उन विद्वान् लेखकों को है जिन्होंने अपने महत्वपूर्ण लेखों द्वारा न केवल ग्रन्थ के कलेवर अपितु उसकी आत्मा का भी निर्माण किया है। चतुर्वेदी जी के

व्यक्तित्व पर तो उनके मित्रों ने स्नेह की गंगा ही प्रवाहित कर दी है। ऐसा प्रतीत होता है कि उपकृत समाज अवसर की प्रतीक्षा कर रहा था और उसके प्राप्त होते ही खिल उठा। ग्रन्थ को पढ़कर आप प्रसन्न होंगे। मैं बहुत शीघ्र उसकी एक प्रति आपको भेजने की व्यवस्था कर रहा हूँ। आशा है आप स्वस्थ एवं सानन्द हैं। अपनी विद्वत्तापूर्ण कृतियों पर पुनः मेरी हार्दिक बधाई स्वीकार करें।

आपका

वृन्दावनदास

(३०१)

प्रकाश भवन,

मथुरा. ७-८-७०

बन्धुवर चेर्निशोव महोदय,

कृपा पत्र दिनांक १३-७-७० का यथा समय प्राप्त हुआ। अनेक धन्यवाद! आपने जो मेरे विषय में कृपापूर्ण उद्‌गार प्रगट किये हैं उनके लिए आभारी हूँ। हिन्दी कार्य मुझे परम प्रिय है और इसको मैंने अपने शेष जीवन का ध्येय बना लिया है। परन्तु वास्तविक श्रेय तो आप सदृश महानुभावों को हैं जिन्होंने हिन्दी को अपने अध्ययन का विषय बना कर उसे गौरवान्वित किया। आप सदृश हिन्दी प्रेमियों ने हिन्दी की ध्वजा को योरपीय महाद्वीप के महान् देशों में फहराया है। मुझे पूर्ण आशा है हिन्दी अब उत्तरोत्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर होगी और विश्वराष्ट्र संघ की भी भाषा के रूप में शीघ्र ही मान्यता प्राप्त करेगी।

आज ही रजिस्टर्ड बुक-पोस्ट से श्री बनारसीदास चतुर्वेदी अभिनन्दन ग्रन्थ तथा ज्येष्ठ की ब्रज-भारती की दो प्रतियाँ भेज रहा हूँ। ब्रज-भारती के इस अंक में हमने सम्पादकीय स्तम्भ में आपकी हिन्दी सेवाओं का उल्लेख किया है। हम अगले भाद्रपद अंक में भी ऐसा ही करेंगे। वास्तव में आपका काम बड़ा ठोस है। ज्येष्ठ अंक मैंने Sea mail से पृथक् रूप से भेजा था पहुँचा होगा।

आपकी प्रेषित दोनों सुन्दर पुस्तकें हिन्दी के साधारण वाक्य विन्यास तथा स्थानीय बोलियाँ और साहित्यिक हिन्दी दोनों यथा समय मिल गई थीं। धन्यवाद! इनका उल्लेख भाद्रपद अंक में कर रहा हूँ। रूसी भाषा न जानने से मुझे कठिनाई प्रतीत हो रही है फिर भी रोमन और हिन्दी के वाक्यांशों से मैं ग्रन्थों की मूल धारा और उनके मुख्य उद्देश्यों से तो परिचित हो ही गया हूँ। आपने विषय का सम्यक् अध्ययन करके ही पुस्तकों को लिखा है तथा इन

पुस्तकों के आलोड़न से यह भली-भाँति विदित हो गया है कि आप बोलियों के भी उतने ही प्रकाण्ड ज्ञाता हैं जितने कि हिन्दी के। आपकी अभिव्यक्ति बड़ी सुन्दर, सहज स्वाभाविक और सशक्त है। मेरी बधाई स्वीकार करें। मेरी धारणा है कि बोलियाँ हिन्दी के विराट स्वरूप के अङ्ग प्रत्यङ्ग हैं। ये हमारे साहित्य के अक्षय भण्डार हैं। बोलियों का संरक्षण, संवर्द्धन और उन्नयन हिन्दी के हित की बात है अहित की नहीं। हमारे बहुत से भाई बोलियों में काम करने की बात को हिन्दी के प्रतियोग के रूप में मानते हैं, यह उनका भ्रम है। बोलियाँ (ब्रज, अवधी, मैथिली, राजस्थानी, कुमाउँनी) आदि हिन्दी की छोटी बहिनें हैं। इनमें से कोई हिन्दी को अपदस्थ कर उसका स्थान ग्रहण कदापि नहीं कर सकती। हिन्दी तो इन बोलियों के महान् लेखकों और कवियों की शताब्दियों की तपःपूत साधना का फल है। हिन्दी की प्रत्येक उपभाषा (बोली) हिन्दी का अङ्ग बनकर ही रहेगी, उससे हिन्दी की प्रतिद्वन्दिता का तो कोई प्रश्न ही नहीं है।

हिन्दी की सेवा करने में समर्थ रहने के लिए परमपिता परमात्मा आपका स्वास्थ्य बहुत-बहुत ठीक रक्खे और आप शतायु हों यही उससे विनम्र प्रार्थना है।

आपका

वृन्दावनदास

(३०२)

प्रकाश भवन

मथुरा. २४–८–७१

बन्धुवर डा० चेर्निशोव महोदय, प्रणाम !

आपका २४-७-७१ का कृपा पत्र यथा समय प्राप्त हो गया। अनेक धन्यवाद ! डा० बनारसीदास चतुर्वेदी के पत्र शीर्षक मेरा ग्रन्थ छप गया है। मैंने कल रजिस्टर्ड बुक-पोस्ट से आपको निम्नलिखित सामग्री भेजी है, पहुँच लिखना जी।

(१) डा० बनारसीदास चतुर्वेदी के पत्र (२) पूछरी कौ लौठा (३) ब्रज-भारती ज्येष्ठ अंक (४) उत्तर प्रदेशीय हिन्दी-साहित्य सम्मेलन का अध्यक्षीय भाषण।

आशा है इससे पहले ब्रजभारती के अंक आपके पास हैं। मेरे ख्याल से आपके पास वर्ष २२, २३, २४ के पूरे चारों चारों अंक हो गये होंगे यदि कोई न हों तो कौन कौन से नहीं हैं लिखना मैं उन सबको भेज दूँगा, आगामी अंक भी जैसे निकलेंगे भेजे जावेंगे।

आप हिन्दी की बड़ी सेवा कर रहे हैं। आपके शोध ग्रन्थ सभी महत्त्व-पूर्ण हैं। मुझे बड़ी प्रसन्नता है कि आपने श्री रामचरण हयारण मित्र की पुस्तक बुन्देलखण्ड की संस्कृति और साहित्य पर एक समीक्षा लिखी है। श्री मित्र को मैं पत्र लिख रहा हूँ तथा आपका अभिवादन भी उनको कहूँगा। आपके द्वारा लिखी हुई समीक्षा की बावत भी उनको लिखूँगा। वे हमारे मित्र हैं। अबकी बार उत्तर प्रदेशीय हिन्दी-साहित्य सम्मेलन ने हमारी अध्यक्षता में ही उनको साहित्य वारिधि की उपाधि से सम्मानित किया था। वे सस्वर कविता पाठ करते हैं जो इतना मधुर होता है कि श्रोता मन्त्रमुग्ध हो जाते हैं।

डा० बनारसीदास जी चतुर्वेदी से बराबर पत्र-व्यवहार चलता रहता है। आपकी बावत कल ही हमने उन्हें लिखा था। वे भी आपको बराबर अपने पत्रों में स्मरण करते रहते हैं। उन्होंने हमको लिखा था कि पत्रों वाली पुस्तक आपको और डा० वारान्निकोव को अविलम्ब भेजी जाय। हम तो वैसे ही भेज रहे थे।

आशा है आप स्वस्थ एवं सानन्द हैं। आधुनिक साहित्यिक हिन्दी की प्रणाली तथा मानक (वाक्य विन्यास के क्षेत्र में) शीर्षक विषय बड़ा महत्वपूर्ण है। इस पर शोध प्रबन्ध निःसन्देह उत्तम बनेगा।

मेरा इतिहास ग्रन्थ (प्राचीन भारत में हिन्दू राज्य) छप रहा है; ११२ पृष्ठ तो छप चुके। मैंने पौराणिक काल से ही इतिहास का समारम्भ किया है और उसे १००० ए. डी. तक ले गया हूँ। नवीनतम मान्यताएँ ये हैं कि पुराणों में बहुमूल्य ऐतिहासिक सामग्री विद्यमान है। मेरे आधार लोकमान्य तिलक और मिश्रबन्धु हैं, उनसे आगे भी जो शोध हुई है उसका भी मैंने समावेश कर दिया है।

चतुर्वेदी जी के पत्रों वाली पुस्तक को विद्वानों ने बड़ी आत्मीयता, सहृदयता और प्रेम से ग्रहण किया है। उन्होंने इसके लिए मेरे तुच्छ कार्य की भी बड़ी सराहना की है, एतदर्थ मैं उनका बहुत कृतज्ञ हूँ।

इतिहास की पुस्तक छपने पर आपकी सेवा में भेजी जाएगी और भी जो पुस्तकें समय-समय पर आपकी शोध के लिए उपयोगी समझूँगा आपको भेजता रहूँगा।

कृपाभाव रखना। पुस्तकों के पहुँचने पर सूचित कीजिये।

आपका
वृन्दावनदास

(३०३)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २२–१०–७२

बन्धुवर डा० चेर्निशोव प्रणाम !

अबकी बार आपको बहुत दिन में पत्र लिख रहा हूँ। अत्यधिक व्यस्तता ही इसका कारण रही। इस बीच में भरतपुर में ब्रज-साहित्य मण्डल का और मुरादाबाद में हिन्दी-साहित्य सम्मेलन के अधिवेशन हुए। मैं इन दोनों संस्थाओं का अध्यक्ष हूँ। दोनों अधिवेशनों में दिये गये अध्यक्षीय भाषणों की प्रति सेवा में भेज रहा हूँ। इस बीच में मेरी पुस्तक प्राचीन भारत में हिन्दू राज्य भी प्रकाशित हो गई है, अतः निम्नलिखित सामग्री रजिस्टर्ड बुक-पोस्ट से भेजी है।

(१) ब्रजभारती का संवत् २०२७ का भाद्रपद अङ्क (२) ब्रजभारती का सं० २०२८ का फाल्गुन अङ्क (३) प्राचीन भारत में हिन्दू राज्य (४) उत्तर प्रदेशीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन के फीरोजाबाद अधिवेशन का भाषण (५) इसी संस्था के मुरादाबाद अधिवेशन का भाषण (६) ब्रज-साहित्य मण्डल के भरतपुर अधिवेशन का भाषण (८) साहित्यालोक की एक प्रति।

कुछ दिन हुए आपको ब्रजभारती सं० २०२९ का ज्येष्ठ अङ्क और भाद्रपद अङ्क भेजे जा चुके हैं, पहुँचे होंगे। पृथक्-पृथक् डाँक से भेजे हैं।

आपने जनपदीय भाषाओं पर जो कार्य किया है वह भारत के साहित्यिक बन्धुओं को प्रेरणादायक है। आपके शोध प्रबन्ध रूसी भाषा में है, हमें तो वही पल्ले पड़ता है जो आपने हिन्दी अथवा उसका रोमन लिपिकरण प्रस्तुत किया है, उसी के मनन अध्ययन से हम आपके शोध प्रबन्धों के महत्व का मूल्यांकन करते हैं। क्या ही अच्छा हो यदि आपके लोक भाषाओं के वाक्य विन्यासों पर लिखे शोध प्रबन्ध हिन्दी में भी प्रकाशित हों। आपके एक शोध-प्रबन्ध का हिन्दी में प्रकाशन का दायित्व तो हम लेते हैं। आपका एक शोध-प्रबन्ध हमें मिला है, आपने उसका नाम हिन्दी में नहीं लिखा, पीछे पृष्ठ पर दो शोध-प्रबन्धों का नाम हिन्दी में लिखा है जो इस प्रकार है "हिन्दुस्तानी की बम्बई बोली की कुछ विशेषताएँ, साहित्यिक हिन्दी के वाक्य विन्यास में बोलचाल के कुछ तत्व। न मालुम इन्हीं में से यह शोध-प्रबन्ध पहला ही है क्या ? आपके शोध-प्रबन्ध बड़ी सुन्दर शैली में लिखे गये हैं, आपने गागर में सागर भर दिया है, आपके लेख में पुनरावृत्ति पुनराकलन और पिष्ट पेषण आदि के दोषों का अभाव है और इसी कारण आपके शोध-प्रबन्धों का आकार युक्त होता है,

वृहदाकार होने से बहुधा ग्रन्थ में अनर्गल बातों का समावेश हो जाता है और लोग उसे वृथा पुष्ट पोथा की संज्ञा दे देते हैं। आपके ग्रन्थों की सुन्दरता से आकृष्ट होकर हमें ६६ वें वर्ष में भी रूसी भाषा सीखने की इच्छा होती है, परन्तु आपके एकाध शोध-प्रबन्ध को हिन्दी में प्रकाशित होते देखने की हमारी बड़ी लालसा है।

डा० बनारसीदास जी चतुर्वेदी स्वस्थ हैं, उन्होंने आपके एक पत्र की प्रतिलिपि हमें भेजी है उसे हम ब्रज-भारती में प्रकाशित करेंगे।

ब्रज-भारती के सम्पादकीय में हम विभिन्न लोक-भाषाओं की पत्रिकाओं पर टिप्पणियाँ लिखते हैं, भाषणों में भी लोकभाषाओं की चर्चा करते हैं तथा उनके कार्यकर्ताओं को हिन्दी के प्रति सौहार्द स्थापित करने को निरन्तर सम्बोधित करते रहते हैं, आजकल हम जनपदीय आन्दोलन ब्रजभारती के माध्यम से ही चला रहे हैं।

डा० सैरे ब्रियाकोव पधारे थे। उनसे भेंट हुई उन्होंने हमें आपके कृतित्व का विवरण नहीं दिया, हम बातों ही बातों में उनसे उस सम्बन्ध में पूछना ताछना भी भूल गये।

दूसरे रूसी विद्वान् नहीं मिल पाये। या तो वे आये ही नहीं और यदि आये हों तो कदाचित् बाहर रहने के कार मैं न मिला होऊँगा।

आपका एक निबन्ध भी रजिस्टर्ड बुक-पोस्ट से आया है। मैं मार्गशीर्ष की ब्रजभारती में एक नोट आपकी सेवा पर दे रहा हूँ, पत्रिका मार्गशीर्ष में ही आपके पास पहुँचेगी। शेष फिर, कृपा भाव रक्खें। मार्गशीर्ष की ब्रजभारती में उत्तर प्रदेशीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन पर दो लेख हैं, उन्हें अवश्य पढ़ें।

आपका

वृन्दावनदास

(३०४)

प्रकाश भवन,

मथुरा. २-४-७३

बन्धुवर डा० चेर्निशोव जी,

आपका कृपा पत्र यथा समय प्राप्त हो गया था, अनेकानेक धन्यवाद! आशा है अब आपका स्वास्थ्य पूर्णरूपेण ठीक है। आपका अनुसन्धान कार्य भी अत्यंत परिश्रमसाध्य है और तज्जन्य तनाव एवं थकान स्वाभाविक है। मेरी विनम्र सलाह है आप श्रम के साथ-साथ विश्राम भी काफी मात्रा में लिया करें।

लोकभाषाओं के वाक्य विन्यासों तथा तत्सम्बन्धी अनेक तुलनात्मक अध्ययन आपने रूसी भाषा में ही लिखे हैं। वे इतने महत्वपूर्ण हैं कि उन ग्रन्थों में से कुछ का हिन्दीकरण अवश्य होना चाहिये। यदि उनमें से एकाध ग्रन्थ को आप हिन्दी में अनुवादित कर दें तो हम उनके प्रकाशन की व्यवस्था कर सकते हैं। आपके गवेषणापूर्ण ग्रन्थों से हिन्दी वालों को प्रेरणा प्राप्त होगी।

ब्रज-साहित्य मण्डल के १६ वें अधिवेशन की सूचना विदेशी साहित्य' नाम की पत्रिका में प्रकाशित हुई होगी। यदि ऐसा हो गया है तो उस पत्रिका की एक प्रति मुझे भेजने की कृपा करें। 29th International congress of Orientalists पैरिस में १६ से २२ जुलाई तक हो रही है। मेरे पास Air France का पत्र आया है। वे मुझसे पूछ रहे हैं कि मेरा विचार उस अधिवेशन में सम्मिलित होने का है या नहीं। मैं कांग्रेस के उस अधिवेशन में अवश्य सम्मिलित होना चाहता हूँ। इससे मुझे आपके दर्शनों का सौभाग्य भी प्राप्त होगा। यहाँ कुछ मित्र और भी जिनको पौर्वात्य संस्कृति का ज्ञान है उस अधिवेशन में सम्मिलित होना चाहते हैं। अभी हमारे पास कांग्रेस के प्रवर्तकों का अधिकारिक निमन्त्रण प्राप्त नही हुआ है। इस सम्बन्ध में वास्तविक स्थिति से सूचित करें। मुझे विश्वास है आपको तत्सम्बन्धी जानकारी अवश्य होगी।

हिन्दी या ब्रजभाषा की कोई विशेष चीज आपको अपेक्षित हो तो निःसंकोच लिखें। वैसे मैं निकट भविष्य में आपको कुछ उत्तम सामग्री भेजने का विचार कर रहा हूँ।

आशा है आपको मेरी पुस्तक प्राचीन भारत में हिन्दू राज्य पसन्द आई होगी, वह मेरे तीन साल के परिश्रम का फल है। वह इतिहास ग्रन्थ है और भारत के अतीत से सम्बन्धित है।

आपने लोक गीतों पर भी कुछ काम किया था ? अथवा आपको लोक गीतों पर सद्यः प्रकाशित शोध-प्रबन्धों की आवश्यकता है ? आपसे जानकारी प्राप्त होने पर मैं कुछ उत्तम ग्रन्थ आपको भेंट करूँगा।

आशा है आप अब पूर्ण रूपेण स्वस्थ होंगे। देर से पत्र लिखने को क्षमा करें। अबकी बार आपका पत्र आने पर आपको फौरन लिखूँगा।

यहाँ सब क्षेम कुशल है।

आपका

वृन्दावनदास

(३०५)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ३१–१०–७२

बन्धुवर डा० चेर्निशोव जी,

एक पत्र आपको पहले दे चुका हूँ। अब मैं आपको निम्नांकित सामग्री भेज रहा हूँ। (१) प्रेम पियूष (२) श्री गीत गोविन्द (३) अध्यात्म भागवत (४) वंशी (५) अभिनन्दिनी (६) पूछरी कौ लौठा (७) निवेदन अनुमोदन (८) ब्रज के रसिया (९) ब्रज सखुन तुर्रा (१०) गोविन्द विनोद (११) श्रीमद्-भगवत्गीता (१२) श्याम तरंगिणी (१३) बत्तीस साहित्यकार (१४) सोलह साहित्यकार (१५) सुकवि प्रथम अंक (१६) सुकवि द्वितीय अंक (१७) ब्रज-भारती ज्येष्ठ अंक (१८) ब्रजभारती भाद्रपद अंक।

सुकवि विनोद कविता का मासिक पत्र निकलना शुरू हुआ है। इसको श्रद्धेय श्रीनारायण चतुर्वेदी का वरद हस्त प्राप्त है। ८, ९, १०, ११ वीं पुस्तकें स्थानीय नत्थीलाल चौरसिया उपनाम नत्थी रचित सरस काव्य पुस्तकें हैं। विशेषकर इन चारों पुस्तकों पर आप अपनी प्रतिक्रिया लिखें। कवि को आपका मत जानने की उत्कण्ठा है।

आशा है अब आपका स्वास्थ्य ठीक होगा।

डा० बनारसीदास चतुर्वेदी पर जो लेख आपने Soviet land में लिखा उसे हिन्दी में सोवियत भूमि में भी प्रकाशित कराने की कृपा करें।

मान्यवर चतुर्वेदी जी ने मुझे लिखा है कि हिन्दी जगत में गोर्की इन्स्टीट्यूट, गोर्की पार्क, गोर्की का पत्र-व्यवहार, आत्रेवस्की का रूस में बच्चों के लिए कार्य, लेखकों के विश्राम घर आदि पर लेख छपने ही चाहिये। यदि चित्र तथा सामग्री मिल जाय तो श्रद्धेय चतुर्वेदी जी भी इन पर लेख लिखकर समाचार पत्रों में भेज सकते हैं। परन्तु हमारे मत से इस प्रकार के लेख हिन्दी जगत में आपकी लेखनी से ही प्रकाश में आवें तो अत्युत्तम होगा, वे लेख प्रामाणिक भी होंगे।

क्या आपको शोध ग्रन्थों की आवश्यकता है। हम चाहते हैं हम हिन्दी के शोध प्रबन्ध भी आपको भेंट स्वरूप भेजें।

आपके पास हमारे दो भाषण जो क्रमशः फीरोजाबाद और मुरादाबाद में हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष पद से दिये गये थे हैं या नहीं। इसी प्रकार दो भाषण ब्रज-साहित्य मण्डल के है। यदि न हों तो हम भेज देंगे।

आपका
वृन्दावनदास

श्री अनिलकुमार राय आंजनेय के नाम

(३०६)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २६-२-७२

बन्धुवर,

आपके दो पत्र यथा समय प्राप्त हो गये। अनेक धन्यवाद ! आपका विद्या प्रेम एवं साहित्यानुराग वस्तुतः सराहनीय है। हम हिन्दी के सामान्य कार्यकर्ता ऐसे सहृदय, साहित्य-प्रेमी सज्जनों के सम्पर्क से अपने को कृतार्थ माना करते हैं।

डा० बनारसीदास चतुर्वेदी के पत्र शीर्षक पुस्तक में जो कुछ अच्छा है वह पूज्य चतुर्वेदी जी की महिमा ही है। हम लोग तो उनके कल्याणकारी व्यक्तित्व को प्रस्तुत करने का प्रयास करते हैं। इसमें हमें कहाँ तक सफलता मिली है या मिलती है यह जाँचने का काम आप सदृश बन्धुओं का है। आपके हृदयोद्‌गारों के प्रति आभार प्रकट करता हूँ।

ब्रज-भारती की यत्किंचित् सेवा अवश्य ही मुझसे बन पड़ी है। इससे मुझे पर्याप्त यश भी मिला है। मैं आपको सम्वत् २०२८ का तीसरा और दूसरा अंक आज ही बुक-पोस्ट द्वारा भेज रहा हूँ।

आशा है आप स्वस्थ एवं सानन्द हैं।

आपका
वृन्दावनदास

(३०७)

प्रकाश भवन,
मथुरा. १५-५-७३

बन्धुवर,

कृपा पत्र मिला, धन्यवाद ! ब्रज-भारती का ज्येष्ठ अंक छप रहा है, अबकी बार ज्येष्ठ के आरम्भ में ही वितरित हो जावेगा।

हिन्दी पर रूस में बहुत काम हो रहा है सन् १९५७ से १९७२ तक १५ वर्षों में कम से कम २० शब्द कोश तैयार हुए हैं, प्रत्येक शब्द कोश में ५ हजार से ४० हजार शब्द तक हैं।

रूस में ५०० भारतीय लेखकों एवं कवियों की कृतियों का रूसी भाषा में अनुवाद हुआ है और खूबी यह है कि जितनी प्रतियाँ छपती हैं हाथों हाथ बिक जाती हैं। हिन्दी अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रसार प्रचार पा रही है, उसमें

तथा उसकी लिपि में जो अनेक गुण विद्यमान हैं उन्हीं को इस व्यापक रुचि का श्रेय मिलना चाहिए।

विश्व के तेतीस विश्वविद्यालयों में हिन्दी का पठन-पाठन चालू है। रूस में तो कमाल का काम हो रहा है। मैं आप सब हिन्दी सेवकों को बधाई अर्पित करता हूँ। मैंने अबकी बार सम्पादकीय में ये सब सूचनाएँ पाठकों के लाभार्थ प्रस्तुत कर दी हैं।

आप पटना पहुँचकर वहाँ के पते से मुझे अवगत करें। आपके पत्रों का उत्तर अवश्य दिया जायगा।

आपका
वृन्दावनदास

(३०८)

प्रकाश भवन,
मथुरा. १-८-७३

बन्धुवर आंजनेय जी,

कृपा पत्र मिला। यह जानकर कि आप अयोध्या में आजकल निवास कर रहे हैं परम हर्ष हुआ। कृपा कर हमारे पुस्तकालय में भी अवश्य जाइये। महन्त अमरदास जी बड़े सात्विकी महानुभाव हैं, वे ही उसके संचालक हैं पुस्तकालय राजकोट में नृसिंह मंदिर में स्थित है। जब आप हनुमान गढ़ी अथवा कनक भवन दर्शनार्थ जाते हैं तो पुस्तकालय वहाँ से पास ही है।

हमारे द्वारा अनुवादित मार्कण्डेय पुराण की प्रति आपको खूब दिखाई दे गई। यह अनुवाद मैंने लगभग ३२ वर्ष पहले किया था। उस समय मैं संग्रह शील न था और पुस्तक की मेरे पास एक भी प्रति नहीं है।

आशा है आप स्वस्थ एवं सानन्द हैं।

श्री झड़प की पुस्तकें मिल गईं, उनकी समीक्षा हम ब्रज-भारती के भाद्रपद अंक में प्रकाशित कर रहे हैं, अभी उनके पत्र का उत्तर भी लिख रहे हैं। निःसन्देह उनका अध्ययन बड़ा गहन है।

आपका
वृन्दावनदास

(३०६)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ५-१०-७३

बन्धुवर आंजनेय जी,

कृपा पत्र तथा नियमावली मिले। नियमावली आवश्यक संशोधन के उपरान्त ब्रजभारती के फाल्गुन अंक में छपेगी तथा उसके २५० पुनर्मुद्रण आपको भेज दिये जायेंगे। झड़प जी और आप जनपदीय आन्दोलन का कार्य बड़े मनोयोग से कर रहे हैं इसलिए आपको बधाई। आजकल मैं डा० वासुदेव शरण अग्रवाल के पत्रों का संग्रह छपाने में व्यस्त हूँ, प्राक्कथन, भूमिका आदि लिख रहा हूँ उस कार्य को शीघ्र समाप्त करना है। डा० अग्रवाल जनपदीय आन्दोलन के आदि प्रवर्तक एवं आचार्य थे। उन्होंने जनपदीय आन्दोलन की रूपरेखा, जनपदीय अध्ययन, जनपदीय साहित्य आदि पर अनेक पत्र लिखकर एक विलक्षण साहित्यिक निधि छोड़ी है। मैं उस निधि को हिन्दी-जगत तक पहुँचाने के लिए कृतसंकल्प हूँ। ईश्वर के अनुग्रह का अभिलाषी हूँ।

क्या मेरी पुस्तक 'भारतीय संस्कृति के विविध परिदृश्य' आपके पास नहीं है? लिखें। मैंने लगभग २५ वर्ष पहले मारकण्डेय पुराण का अनुवाद किया था उस समय मैं संग्रहशील न था, अब वह पुस्तक अप्राप्य है। मैंने एक हिन्दी इंग्लिश डिक्शनरी की रचना भी की थी परन्तु उसका कोई महत्व नहीं है। झड़प जी को पत्र लिख दिया है। उनका चतुर्वेदी जी विषयक लेख तो फाल्गुन में ही छप सकेगा।

आप इसकी प्रतिलिपि रामराज्य कानपुर और उत्तर बिहार पटना में प्रकाशनार्थ भेज दें।

आशा है आप स्वस्थ एवं सानन्द हैं।

आपका
बृन्दावनदास

(३१०)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ८-१२-७३

बन्धुवर आंजनेय जी,

आपके पत्र का उत्तर पहले दे चुका हूँ। इस पत्र के साथ डॉ० गोपाल राय जी वाला पत्र भेज रहा हूँ।

एक विज्ञप्ति आचार्य पं० पद्मसिंह जी शर्मा के व्यक्तित्व कृतित्व सम्बन्धी लेख को पाने के आशय से भेज रहा हूँ। आचार्य जी की शताब्दी हरिद्वार में

मनाई जा रही है। स्मृति ग्रन्थ के लिए अपनी रचना शीघ्र मुझे भेज दें। आचार्य जी का व्यक्तित्व तो इतना महान् और उनका कृतित्व इतना बहुविध है कि आपके अनेक मित्र उन पर लिखना उचित समझेंगे। कृपा कर सामग्री बटोर कर मुझे भेजें। शेष कुशल।

आपका
बृन्दावनदास

(३११)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ७-१-७४

बन्धुवर आंजनेय जी,

आपका ३-१-७४ का पत्र आज मिला। उसके साथ आपकी विद्यालय पत्रिका का पुनर्मुद्रण तथा त्रिवेदी जी का लेख। कोशस्थिति शीर्षक आपका लेख बहुत ही सुन्दर और विचारोद्दीपक हैं। आपने अपनी भाषा में जनपदीय शब्दों का समावेश बड़े सुन्दर ढंग से किया है। आपने जनपदीय कार्यकर्त्ता की आदर्श शैली को अपनाया है। डा० वासुदेवशरण जी अपनी भाषा में जनपदीय भाषाओं के लोक शब्दों को नगीने की तरह जड़ देते थे परन्तु आपने लोक शब्दों के पुष्कल प्रयोग से जिस शैली को अपनाया है उससे लोक-शब्दों के प्रयोग का महत्व स्थापित होगा। जनपदीय कार्यकर्त्ताओं को तो आपकी शैली अनुकरणीय है मेरी ऐसी धारणा है। आपकी पत्रिका जब श्रद्धेय चतुर्वेदी जी के पास पहुँच जाय तब मुझे लिखें मैं उनका ध्यान उस पर आकर्षित करूँगा। ब्रज-भारती इस पत्र के पहुँचने के बहुत पूर्व ही आपको मिल चुकी होगी। अबकी बार देर से निकली है। डा० वासुदेवशरण जी के पत्र डा० परमेश्वरीलाल के पास हैं यह मेरी जानकारी में है परन्तु वे उनकी प्रतिलिपियाँ हमारे संग्रह में प्रकाशनार्थ देना नहीं चाहते। हम उनको पहले लिख चुके हैं, उन्होंने निषेध किया था, शायद किसी दिन वे खुद ही छपावें।

ज्ञानतरंगिणी वाला आपका लेख जनपदीय आन्दोलन के विपरीत अनेक भ्रान्तियों का निवारण कर रहा है। आप बधाई के पात्र हैं।

आपका
बृन्दावनदास

(३१२)

प्रकाश भवन,
मथुरा. १५-१-७४

बन्धुवर आंजनेय जी,

आपका पत्र तथा ज्ञान तरंगिणी की प्रति मिली। धन्यवाद ! आपके पूर्व प्रेषित सभी पत्र मिल गये हैं। वह लिफाफा जिसमें ज्ञान तरंगिणी की

सम्पादकीय टिप्पणी थी—भी मिल गया। जनपदीय परिषद् की नियमावली फाल्गुन अंक में प्रकाशित हो रही है, १०० रिप्रिन्ट निकलवाऊँगा। मैंने झड़प जी को लिख दिया हैं कि पहले आप वाले अन्तिम ड्राफ्ट को छापेंगे और इसी पर ६ महिने चल कर अनुभव प्राप्त करेंगे फिर आवश्यक संशोधन करके पंजीयन करायेंगे और तदुपरान्त पुस्तकाकार छापेंगे।

मैं समझ रहा था कि चतुर्मुख पहले भी निकल चुका है। आपके पत्र से विदित होता है कि प्रवेशांक शिवरात्रि के अवसर पर प्रकाशित होगा। मैंने चतुर्मुख में प्रकाशनार्थ एक लेख "जनपदीय अध्ययन : डा० वासुदेवशरण अग्रवाल का दृष्टिकोण" शीर्षक झड़प जी को भेज दिया है। ज्ञान तरंगिणी में प्रकाशनार्थ "जनपदीय आन्दोलन के जनक डा० वासुदेवशरण अग्रवाल" शीर्षक लेख बहुत शीघ्र भेजूँगा। डा० वासुदेवशरण अग्रवाल के दृष्टिकोण को हिन्दी जगत में फैलाना जनपदीय ज्ञान गरिमा को प्रकाश में लाने के सदृश ही है। मैं उन पर कई लेख लिख रहा हूँ और वे अनेक पत्रिकाओं में प्रकाशनार्थ प्रेषित हों ऐसी व्यवस्था भी कर रहा हूँ। डा० वासुदेवशरण अग्रवाल के पत्र शीर्षक पुस्तक एक महीने में तैयार हो जावेगी। यह पुस्तक जनपदीय अध्ययन, आन्दोलन का विश्व कोष ही समझिये। सूचनाओं का भाण्डागार है। ज्ञान-तरंगिणी पर सम्मति शीघ्र भेजूँगा।

आपका

वृन्दावनदास

(३१३)

प्रकाश भवन,

मथुरा. २७–१–७४

बन्धुवर आंजनेय जी,

कृपा पत्र तथा २५ पुनर्मुद्रण मिले। धन्यवाद! इस पत्र के साथ आपकी सेवा में "कुशान कालीन भारत" शीर्षक एक लेख भेज रहा हूँ। मथुरा में राजकीय संग्रहालय की शताब्दी मनाई गई थी। उसमें विश्व भर के पुरा-तत्व विशेषज्ञों ने एक विचार गोष्ठी में भाग लिया। मथुरास्थ संग्रहालय में जो मूर्त्तियाँ आदि पुरातात्विक सामग्री है वह अधिकांशतः कुशान कालीन तथा बौद्ध धर्म सम्बन्धी है। इसलिए यह लेख उस काल की स्थिति का परिचायक होता हुआ उस अवसर पर सामयिक सिद्ध हुआ। इतिहास के विद्यार्थियों के लिए यह महत्वपूर्ण एवं सूचनाप्रद है। इसे ज्ञानतरगिणी में प्रकाशित करें।

श्री नरेश पाण्डेय चकोर एम० ए० सम्पादक अङ्ग माधुरी बोरिंग रोड (पश्चिम) पटना–१ लोकभाषाओं पर बड़ा काम कर रहे हैं। वे कर्मठ व्यक्ति हैं तथा विषम परिस्थिति में भी अंगिका के मासिक-पत्र 'अंग माधुरी' को निरन्तर निकाल रहे हैं। वे ही उसकी आर्थिक एवं सम्पादकीय व्यवस्था करते हुए जनपदीय कार्यरत रहते हैं। वे हमारी अन्तरजनपदीय परिषद् में सदस्य होने के अधिकारी हैं। उनका नाम नियमावली के अन्त में अवश्य जोड़ दें। वे सपरिवार मथुरा पधारे थे। उनसे मेरी इस सम्बन्ध में बात हो गई है। वे बहुत उपयोगी एवं सहायक सिद्ध होंगे। झड़प जी को यह सन्देश दे दें, वैसे मैं उनको लिख रहा हूँ। जनपदीय आन्दोलन के जनक डा० वासुदेवशरण अग्रवाल शीर्षक एक लेख बहुत शीघ्र आपको भेजूँगा।

मैंने श्री रमेशचन्द्र जी दुबे ए, ६० गाँधी नगर मुरादाबाद को लिखा है कि १३, १४ अप्रेल को होने वाले श्री पद्मसिंह शर्मा शताब्दी समारोह के अवसर पर हरिद्वार में अन्तरजनपदीय परिषद् की एक बैठक भी कर ली जाय तो कैसा रहे। यह ता० १६ अप्रेल को हो सकती है। उस अवसर पर वहाँ साहित्यिकों का जमघट तो होगा ही, अपने जनपदीय कार्यकर्त्ता भी पहुँच जावेंगे। उनका मत मालूम होने पर आपको लिखूँगा, आपकी तथा झड़प जी की क्या राय है इस सम्बन्ध में ?

आपका

वृन्दावनदास

(३१४)

प्रकाश भवन,

मथुरा. ८–२–७४

बन्धुवर आंजनेय जी, प्रणाम !

कृपा पत्र मिला। धन्यवाद ! इस पत्र के साथ जनपदीय आन्दोलन के जनक डा० वासुदेवशरण अग्रवाल शीर्षक एक लेख भेज रहा हूँ। मैंने इसे मुद्रित करा लिया हैं। एक प्रति झड़प जी को चतुर्मुख में प्रकाशनार्थ भेज दी है। कुशानकालीन भारत लेख का ६ वाँ पृष्ठ भी संलग्न है।

श्री दुबे जी ने मुझे लिखा है कि अन्तरजनपदीय परिषद् की बैठक के विषय में प्रबंध समिति से स्वीकृति लेकर लिखेंगे। उनका जैसा उत्तर होगा मैं आपको और झड़प जी को उससे अवगत कर दूँगा।

श्री नरेश प्राण्डेय चकोर बोरिंग रोड पश्चिम पटना–१ को आप भी लिखें। मैंने उन्हें लिख दिया है वे अङ्ग माधुरी की प्रति आपको भेजते रहेंगे।

रंजन जी को मैंने लिख दिया है कि वे आपको लोकशास्त्र अङ्क की एक प्रति भेज दें अथवा जब मथुरा आवें लेते आवें मैं ही आपको उसे भेज दूँगा ।

उत्तर प्रदेशीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन का आगामी अधिवेशन ता० ३, ४ मार्च को झाँसी में हो रहा है । मैंने उसके संयोजक श्री श्रीधर शास्त्री १९० बहादुरगंज इलाहाबाद ३ को अन्तरजनपदीय परिषद् की बैठक उस अवसर पर भी आयोजित करने को लिखा है तथा आप लोगों से भी सम्पर्क सूत्र स्थापित करने और अधिवेशन के निमन्त्रण एवं सूचनाएँ आपको भेजने के लिए लिखा है ।

आशा है आप स्वस्थ एवं सानन्द हैं ।

आपका
वृन्दावनदास

(३१५)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २२–३–७४

बन्धुवर आंजनेय जी, प्रणाम !

कृपा पत्र मिला । इससे पूर्व भी आपके सब पत्र मिल गये थे तथा उत्तर भी यथा समय भेज चुका हूँ ।

जनपदीय आन्दोलन का सूत्र अब आप जैसे कर्मठ कार्य-कर्त्ताओं के हाथ में आ गया है । मैं अब इस आन्दोलन की उन्नति और उसके विकास के सम्बन्ध में आश्वस्त हूँ ।

चतुर्मुख का प्रकाशन जिन परिस्थितियों में विलम्बित हो गया उनका उल्लेख श्री झड़प जी अपने पत्र में कर चुके हैं । वे इसी कार्य से आजकल बलिया में ठहरे हुए हैं ।

श्री दुबेजी ने मुझे भी लिखा था कि समारोह मई के लिए टल गया है, स्मृति ग्रन्थ के विषय में आपको श्री दुबे जी से तत्सम्बन्धी सूचना मिल ही गई है । मैं आपसे सहमत हूँ कि बचे हुए लेखों को स्मृति अंक के दूसरे खण्ड अथवा किसी पत्रिका के विशेषाङ्क के लिए सुरक्षित कर दिया जाय । आप मुझे चतुर्मुख के आचार्य पं० पद्मसिंह शर्मा विशेषांक का मानद सम्पादक बनने का निमन्त्रण दे रहे हैं । मुझे आपकी आज्ञा का पालन करने में कोई आपत्ति नहीं है परन्तु मैं यहाँ इतनी दूर से कोई ठोस सेवा कर पाऊँगा इसमें मुझे सन्देह है. वैसे मेरे नाम का उपयोग आप चाहे जिस रूप में कर सकते हैं । यदि चतुर्मुख का आप पं० पद्मसिंह शर्मा विशेषाङ्क निकालना चाहते हैं तो क्यों न उसी में दुबे जी के पास पड़ी अवशिष्ट सामग्री का उपयोग कर लिया जाय ?

जिन लेखकों ने श्रम करके लेख भेजे हैं उनकी यदि केवल पंक्तियाँ ही छापी गईं तो उन्हें बड़ा क्लेश होगा। आपने जो मुझको लिखा है वह दुबे जी को लिखा या नहीं? मेरी राय से आप दुबे जी को स्पष्ट लिखें और उनके पास पड़ी बची हुई सामग्री को चतुर्मुख के विशेषाङ्क के लिए मँगा लें।

शेष सब कुशल है।

आपका
वृन्दावनदास

(३१६)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ५–४–७४

बंधुवर आंजनेय जी,

कृपा पत्र दिनांक २८-३-७४ यथा समय प्राप्त हो गया था। धन्यवाद! मैं लखनऊ, अयोध्या की यात्रा से कल संध्या समय ही लौटा हूँ। अयोध्या में उत्तर प्रदेशीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन की शाखा स्थापित कर दी है तथा कई स्थानों पर महत्वपूर्ण साहित्यिक गोष्ठियाँ आयोजित कराई थीं। हमारे पुस्तकालय में भी मानस समारोह हुआ था। पुस्तकालय के दिवगत मंत्री राजकरन लाल जी के स्थान पर महन्त रामचन्द्रदास एम० ए० को मंत्री निर्वाचित कराया गया।

आपकी एवं झड़प जी की इच्छानुसार तथा मेरी प्रार्थना पर दुबे जी ने १८ लेखों का बण्डल रजिस्टर्ड पोस्ट पार्सल से मुझे भिजवा दिया है। मैंने उसमें एक महत्वपूर्ण लेख डा० मलखानसिंह सिसोदिया लिखित और शामिल करके १९ लेखों का रजिस्टर्ड पोस्ट पार्सल आज आपके पते पर भेजा है। मैंने लेखों में संशोधन न करके उन्हें यथावत् भेज दिया है कारण पत्र की सीमाओं का ध्यान करके अन्तिम निर्णय तो झड़प जी और आपका ही होना ठीक होगा। आप उसमें आवश्यक संशोधन परिवर्द्धन करके चतुर्मुख के आचार्य पं० पद्मसिंह शर्मा अङ्क की व्यवस्था कर डालिये। समारोह मई के द्वितीय सप्ताह में होगा ऐसा दुबे जी ने लिखा है, तब तक यह अङ्क निकल जाय तो ठीक है, मैंने झड़प जी को भी लिख दिया है।

शेष सब कुशल है।

आपका
वृन्दावनदास

(३१७)

प्रकाश भवन,
मथुरा. १-५-७४

बन्धुवर आंजनेय जी,

कृपा पत्र मिला। चतुर्मुख की प्रति भी कल शाम की डॉक से मिल गई। दुबे जी का पत्र आया है, उन्होंने लिखा है कि समारोह की तिथि ३० मई निश्चित की जा रही है। उन्हें स्वयं ८, ९, १० मई को सरकारी काम से लखनऊ जाना है। डा० विष्णुदत्त राकेश जो समारोह के संयोजक हैं ३० मई के लिए सहमत हैं। अब केवल आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी जी की स्वीकृति लेनी शेष है। मैंने श्रद्धेय चतुर्वेदी जी को लिखा है कि वे द्विवेदी जी को इसके लिए राजी करें।

जैसा कि मैं आपको पहले लिख चुका हूँ इस समारोह से एक दो दिन आगे-पीछे अन्तर्जनपदीय बैठक भी रख ली जाय। अन्तर्जनपदीय कार्य अब फिर से प्रारम्भ हो जाना चाहिए और सब भाई बैठकर उसको अग्रसारित करने का मार्ग तय करें। डा० रंजन ने लिखा था कि यदि बीस कार्यकर्ता भी आन्दोलन के मर्म और महत्व को समझ कर कर्तव्यनिष्ठ हो जाय तो जनपदीय सम्मेलन का उद्देश्य सफल सिद्ध हो जाएगा। मैं उनसे सहमत हूँ।

चतुर्मुख का श्री स्वामी सहजानन्द सरस्वती अङ्क अच्छा निकला है। इस यज्ञ में आपकी और झड़प जी की आहुति बड़ी दीप्तिमान है। यदि आप दोनों महानुभावों के सदृश कुछ अन्य लोग भी इसी प्रकार मैदान में आ जाँय तो आन्दोलन गतिवान हो सकता है।

मैं अपना लेख तो भेज चुका हूँ। वंश परम्परा पर लेख शायद दुबे जी लिख देंगे। वे ही सम्बन्धित व्यक्तियों को जानते हैं। एक पत्र उन्हें लिख दें। चतुर्वेदी जी ने बड़ी महत्वपूर्ण सामग्री झड़प जी को दे दी है। वे स्वयं चतुर्वेदी जी से मिल आये हैं।

समारोह की तिथि निश्चित होने पर जनपदीय कार्यकर्त्ताओं की सूची बनाकर उनको पूर्व सूचित किया जाना चाहिए।

शेष सब कुशल है।

आपका
वृन्दावनदास

(३१८)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ७–५–७४

बन्धुवर आंजनेय जी,

कृपा पत्र मिला। धन्यवाद! चतुर्मुख की प्रतियाँ मिल गईं। अन्तर-जनपदीय परिषद् शब्द ठीक प्रतीत होता है। अखिल भारतीय लगाने या न लगाने से कोई फर्क नहीं पड़ता है। संयोजक डा० राजेन्द्र रंजन रहेंगे। उनके द्वारा सभी अन्तरजनपदीय कार्य-कर्ताओं को पूर्व सूचित कर दिया जायगा। सम्मेलन जैसे आन्दोलनों से एक चेतना उत्पन्न होती है, विषय उभर कर सामने आता है और चर्चा का श्रीगणेश हो जाता है। ठोस परिणाम तो कार्यकर्ताओं की रुचि और निष्ठा पर ही निकलते हैं। चतुर्वेदी जी एक अर्से से लिख रहे हैं कि जनपदीय कार्यकर्त्ता एक बार अवश्य ही मिलें। मुझे प्रसन्नता है कि हम सब इस बात पर सहमत हैं। आप लोगों के उत्साह और श्रम पूर्ण साधना से ही लगता है कि जनपदीय आन्दोलन फिर चलेगा। मैं समझता हूँ इससे हिन्दी-हित का संवर्धन होगा।

चतुर्वेदी जी ने आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी जी को ३० मई स्वीकार कर लेने को पत्र लिखा है। उन्होंने उस पत्र की प्रतिलिपि मुझे भेज दी है। अब द्विवेदी जी के उत्तर की प्रतीक्षा है।

आचार्य पद्मसिंह जी शर्मा के पुत्र से मैं परिचित नहीं हूँ। मैं न तो उनका नाम जानता हूँ, न उनका पता। मैं श्री दुबे जी को तो इस विषय में लिख चुका हूँ। वे अक्सर दौरे पर रहते हैं इसलिए उनकी ओर से पत्रोत्तर में विलम्ब हो जाता है। आप चाहें तो उन्हें सीधा लिखें। चतुर्मुख बहुत अच्छा निकला है। झड़प जी बहुश्रुत हैं तथा मनीषी भी। वे जो भी अङ्क निकालेंगे अच्छा ही निकलेगा। मैंने उनसे निवेदन किया है सम्पादकीय वे ही लिखें।

डा० बनारसीदास चतुर्वेदी से वह महत्वपूर्ण सामग्री ले ही आये हैं। आचार्य किशोरीदास वाजपेयी जी को हम लिख चुके हैं। आशा है वे सहयोग का हाथ अवश्य बढ़ावेंगे।

रंजन जी आज मिले थे। झड़प जी और आपके लेख उन्हें मिल गये हैं। वे दोनों निबन्धों को उच्चकोटि का बता रहे थे। हिन्दी विद्यापीठ आगरा विश्वविद्यालय में जिन सज्जन की ओर आपका संकेत है, वे हैं श्री उदयशंकर शास्त्री गाँधी नगर, आगरा। इन्होंने 'पं० पद्मसिंह शर्मा के पत्र' शीर्षक एक

छोटी सी पुस्तक निकाल दी है। क्या यह आपको नहीं मिली। लेख यह लिख दें तो अच्छा है, आप पत्र-व्यवहार करें। शेष सब कुशल है।

आपका
बृन्दावनदास

(३१९)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ३१-५-७४

बन्धुवर राय जी,

आज ही डा० विष्णुदत्त राकेश द्वारा प्रेषित निमन्त्रण-पत्रों का बण्डल वितरणार्थ एवं व्यक्तिशः प्रेषणार्थ प्राप्त हुआ। समारोह ९, १० जून के लिए निश्चित हो चुका है। निमन्त्रण-पत्र संलग्न है।

इस निमन्त्रण पत्र में अन्तरजनपदीय परिषद् की सूचना भी मुद्रित है अतः अब किसी अन्य सूचना की मैं आवश्यकता नहीं समझता, कारण उससे अनावश्यक रूप से भ्रम फैलेगा। रंजन जी आजकल अपने एक भाई और एक बहिन के विवाह में व्यस्त हैं। ९, १० जून को वे भी वहाँ होंगे ही। मैं तथा रंजन जी दोनों यह चाहते थे कि जनपदीय आन्दोलन के मर्मज्ञ एवं कर्मठ कार्य कर्त्ता आन्दोलन सम्बन्धी अपने विचार निबन्ध रूप में लेख बद्ध करके लाते जिससे तद्विषयक एक साहित्य का निर्माण सम्भव होता परन्तु अब यह सब समयाभाव के कारण असम्भव है। अब तो जो कुछ करना है उसे बातचीत से ही करेंगे।

शेष भेंट होने पर। आपका पत्र मिल चुका है।

आपका
बृन्दावनदास

(३२०)

प्रकाश भवन,
मथुरा. १४-६-७४

बन्धुवर आंजनेय जी,

मैं कल रात्रि को ११। बजे हरिद्वार से लौटकर घर आ गया हूँ। समारोह का द्विदिवसीय कार्यक्रम अत्यन्त सफल रहा। आचार्यद्वय हजारीप्रसाद जी एवं विश्वनाथप्रसाद जी अस्वस्थतावश न पहुँच पाये थे। अतः दोनों दिन समारोह की अध्यक्षता का भार मुझे ही वहन करना पड़ा था। आप दोनों बन्धुओं की अनुपस्थिति बहुत खली। सन्त राम नगीनासिंह, श्री रघुवीर प्रसाद

एवं श्री रामनगीना राय पहुँच गये थे। तीनों ही सज्जन हिन्दी प्रेमी एवं सेवा भावी हैं। श्री रामनगीना राय तो हमारे प्रस्थान करते समय भी वहाँ ही थे।

आपके सभी पत्र मिल गये और उनसे उन परिस्थितियों का भी पता चल गया जिनके कारण इच्छा होते हुए भी आपका सम्मिलित होना असम्भव हो गया। खैर ! फिर सही।

श्री दुबे जी की आज्ञानुसार मैं दोनों भाषण छपाकर ले गया था। दोनों प्रतियाँ सेवा में प्रेषित हैं।

चतुर्मुख की अधूरी मुद्रित प्रति जो आपने हरिद्वार भेजी थी मुझे मिल गई तथा आपका पत्र भी।

शेष कुशल है। चतुर्मुख का आचार्य पं० पद्मसिंह शर्मा अङ्क अभी मुझे नहीं मिला है।

आपका

वृन्दावनदास

(३२१)

प्रकाश भवन,

मथुरा. अनुमानित तिथि—दिसम्बर ७४

प्रियवर आंजनेय जी, सप्रेम नमस्कार !

आपका पत्र मिला। धन्यवाद ! चतुर्मुख की वृहत्त्रयी (झड़प, आंजनेय, राय) की विलक्षण हिन्दी-सेवा से मैं अत्यधिक प्रभावित हूँ। इस त्रिमूर्ति ने स्वावलम्बन का मार्ग अपनाकर एक महान् साहित्यिक यज्ञ रचा है। अन्तर-जनपदीय परिषद् में भी आप तीनों महानुभावों ने नई जान फूँकी है। आप लोगों की साधना और आपके कृतकार्य की ओर जब मेरा ध्यान आकृष्ट होता है तो मेरा हृदय गद्‌गद् हो जाता है। शुभाः सन्तु ते पन्थानः।

मैं श्रद्धांजलि अङ्क की रचना में आपको पूरा सहयोग दूँगा। इस पत्र के साथ सेठ गोविन्ददास जी पर संस्मरणात्मक लेख भेज रहा हूँ। श्रद्धेय जवाहरलाल जी पर भी लिखा हुआ लेख टंकन में है। मैंने दोनों लेख इसी सप्ताह के भीतर लिखे हैं, दोनों लेख विशुद्ध संस्मरणात्मक हैं।

डा० रंजन से मेरी बात हो गई है। आश्चर्य है कि उनकी भेजी चिट्ठियाँ आपको नहीं मिलीं। में उनसे तथा अन्य साहित्यकारों से आपको बहुत शीघ्र लेख भिजवाऊँगा। आप निश्चिन्त रहें। जवाहरलाल जी पर तो लेख ब्रज क्षेत्र से ही संग्रहीत होंगे अतः इसमें तो हमारा दायित्व प्रत्यक्ष है।

'ज्ञानमूर्ति आचार्य वासुदेवशरण' शीर्षक सुन्दर ग्रन्थ (डा० वासुदेवशरण अग्रवाल संस्कृति शोध संस्थान से प्रकाशित) प्राप्त हो गया ? क्या एक प्रति रजिस्टर्ड बुक-पोस्ट से भेज दें ?

श्रद्धेय बनारसीदास जी चतुर्वेदी तथा अन्य कतिपय साहित्यकारों से शीघ्र सामग्री भिजवाऊँगा। अच्छी सामग्री प्राप्त होने पर ही अङ्क को निकालें, त्वरा न करें, कारण लेखकों का सहयोग मन्थर गति से ही उपलब्ध होता है।

आशा है आप स्वस्थ एवं प्रसन्न हैं।

आपका
वृन्दावनदास

(३२२)

प्रकाश भवन,
मथुरा. १–२–७५

बन्धुवर आंजनेय जी, सस्नेह नमस्कार !

आपका कृपा पत्र तथा बन्धुवर शांडिल्य को लिखे पत्र की प्रतिलिपि मिली। आपके दोनों पत्रों से पत्र-साहित्य के विषय में आपके विचारों की प्रौढ़ता और परिपक्वता के दर्शन होते हैं। पत्र-साहित्य के सिद्धान्त पक्ष का तो आपने अपने पत्रों में बड़ा सजीव उद्घाटन कर दिया है। एक बात मैं आपसे कह दूँ प्रशंसा करने में मुझे किसी प्रकार का भय भी नहीं है। पात्रता की सराहना गुणग्राहकता का प्रथम सोपान है, उसकी उपेक्षा एक प्रकार की अवहेलना है जो कदापि वांछनीय नहीं। अधिकारी व्यक्तित्व में एक सम्मोहिनी शक्ति है—एक प्रकार का आकर्षण है जिसके वशीभूत होकर पत्र लेखक अपने हृदयोद्गार प्रगट करता है और स्थिति के इस सन्दर्भ में उस पर किसी प्रकार के आरोप का नितान्त औचित्य नहीं है। पत्र-लेखक की सामग्री का श्रेय मेरे विचार से उस व्यक्ति को अधिक है जिसको पत्र लिखा गया है।

शांडिल्य जी को लिखा पत्र तो उन्हें भूमिका में क्या लिखा जाना चाहिए इसका मौन संकेत कर रहा है। शांडिल्य जी अध्ययनशील, प्रखर बुद्धि के व्यक्ति हैं, मुझे विश्वास है कि वे भूमिका में आपके विचारों का उपयोग करेंगे तथा जहाँ आवश्यकता होगी आपके लिखे सुन्दर वाक्यों को उद्घृत भी करेंगे।

जब प्रतिलिपियाँ भेजी जा चुकीं तो मूल प्रतियों को भेजने का प्रश्न ही नहीं उठता। विश्वास ही विश्वास का जनक है और फिर साहित्यिकों में इस प्रकार का सन्देह कैसा ? यह तो शुद्ध साहित्यिक कार्य है आर्थिक पक्ष तो

इसमें गर्भित है ही नहीं। प्रतिलिपि और मूल प्रति में भेद तो अचिन्तनीय है, कल्पनातीत है। शेष फिर !

आपका
वृन्दावनदास

(३२३)

प्रकाश भवन,
मथुरा. १०-२-७५

बन्धुवर आंजनेय जी,

कल आगरा गया था। मान्यवर श्री अमृतलाल जी चतुर्वेदी से भेंट हुई थी। उनसे 'चतुर्मुख' के लिए दो सरस मर्मस्पर्शी कविताएँ लाया हूँ। इस पत्र के साथ प्रेषित हैं।

आशा है आप स्वस्थ एवं सानन्द हैं। झड़प जी को प्रणाम कहिये।

इलाहाबाद में भोजपुरी सम्मेलन के अवसर पर एक छोटी सी बैठक अन्तर्जनपदीय की कर लेने पर आपका क्या विचार है ? मिलना भेंटना भी हो जायेगा तथा परिषद् का भावी कार्य-क्रम भी निश्चित कर लेंगे। अगर आप बन्धुगण इस सम्बन्ध में यह निर्णय ले लेते हैं तो ही मैं इलाहाबाद पहुँचूँगा अन्यथा नहीं। मैंने गणेश चौबे जी को भी लिखा था और उनसे इस प्रस्ताव पर सहमति चाही थी परन्तु उन्होंने कोई उत्तर नहीं दिया है।

आप तथा झड़प जी एवं रामनगीना राय जी सोच समझकर उचित कार्यवाही करें। १५, २० बन्धु तो एकत्रित हो ही जावेंगे और फिर भोजपुरी के बन्धु वहाँ होंगे ही। शेष कुशल है।

आपका
वृन्दावनदास

(३२४)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २६-२-७५

प्रियवर आंजनेय जी,

आपके सब पत्र मिल गये। आज झड़प जी तथा गणेश जी के पत्र भी मिले हैं। ऐसा प्रतीत होता है आप सभी बन्धुगण प्रयाग पहुँच रहे हैं। हमने सोचा कि हम ही क्यों रह जाँय और क्यों न इस अवसर पर पारस्परिक भेंट वार्ता का लाभ उठाएँ। झड़प जी ने ठीक लिखा है कि जब कुछ बन्धु कहीं बैठेंगे तो एक गोष्ठी के रूप में ही सही विचार विमर्श तो कर ही लेंगे।

अतः मैं भी ता० ७ मार्च को प्रयाग के लिए प्रस्थान करने का विचार बना रहा हूँ। जब भेंट होगी तब वहीं उपयुक्त व्यक्ति बैठकर विचार विनिमय कर लेंगे। अब समय थोड़ा रह गया है अतः गहमरी जी आदि से कार्यक्रम में समाविष्ट कराना आदि कठिन है। वैसे आपके और गणेश जी के कहने पर अगर वे कुछ कर चुके हों तो वह भी ठीक। रंजन जी तो शायद न आ सकेंगे। आप जिन लोगों को बुला सकें बुलावें।

कुछ वन्धुओं को गणेश जी ने भी लिखा है। शेष भेंट होने पर।

आपका
वृन्दावनदास

(३२५)

प्रकाश भवन,
मथुरा. १६–४–७५

बन्धुवर आंजनेय जी, प्रणाम !

आपका पत्र अभी मिला। 'ब्रज भारती' का फाल्गुन अंक ता० १५ को भेजा जा चुका है, आपको मिला होगा।

एक समाचार लीजिये। ता० १६ अप्रेल को मैंने स्वयं अपने हाथों से 'श्री वृन्दावनदास पुस्तकालय, वाचनालय एवं संग्रहालय' के भवन का शिलान्यास कर दिया है। संस्था की रजिस्ट्री कराई जा चुकी है। बहुत शीघ्र एक विशाल भवन तैयार हो जायगा। कार्य तीव्र गति से प्रारम्भ कर दिया गया है। इस पुस्तकालय को शनैः शनैः शोध केन्द्र के रूप में विकसित करने की योजना इसके स्मृति पत्र के उद्देश्यों में है। इसकी स्थापना में सर्व श्री बनारसीदास जी चतुर्वेदी कृष्णानन्द जी गुप्त, युगलकिशोर चतुर्वेदी, डा० श्यामसुन्दर बादल, गौरीशंकर द्विवेदी, रमेशचन्द्र जी दुबे, रामरींझन जी रसूलपुरी, अमृतलाल चतुर्वेदी जैसे देश के मूर्धन्य साहित्यकारों का परामर्श प्राप्त हो चुका है। इसमें ब्रजभाषा, हिन्दी तथा अनेक जनपदीय भाषाओं के विविध प्रकार का साहित्य सुरक्षित रहेगा। यदि जनपदीय अध्ययन और हिन्दी प्रचार का मार्ग इस संस्था द्वारा प्रशस्त हो जाय तो इसकी सार्थकता स्वयं सिद्ध होगी। भवन श्री हीरालाल धर्मशाला के ऊपर की मंजिल में बन रहा है और आशा की जाती है कि तीन मास में बनकर तैयार हो जाएगा। मुझे आशा है कि साहित्यिक बन्धु इसे जनपदीय आन्दोलन और अन्तरजनपदीय परिषद् का एक विशिष्ट मंच बनाकर ही दम लेंगे।

'चतुर्मुख' तथा अन्य पत्रों में इसका समाचार अपनी टिप्पणियों सहित प्रकाशित करा दें। यह आप लोगों की ही संस्था रहेगी। यदि मेरी यह कल्पना साकार हो गई तो मुझे बड़ी प्रसन्नता होगी।

आशा है आप स्वस्थ एवं सानन्द हैं।

आपका
वृन्दावनदास

श्री कुलदीपनारायण राय 'झड़प' के नाम

(३२६)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २३-७-७३

बन्धुवर, प्रणाम !

कृपा पत्र यथा समय प्राप्त हो गया था। मैं ९ जून को पत्नी सहित बम्बई चला गया था और २० जुलाई को लौटा हूँ। वहाँ मेरी चार विवाहित पुत्रियों में तीन और तीन विवाहित पुत्रों में दो सपरिवार निवास करते हैं अतः साल छः महिने में जब कभी उधर जाना होता है तो पारिवारिक बन्धनों के कारण कुछ समय लग ही जाता है। आपकी प्रेषित एक-एक पुस्तक तो मिल ही गई है उनकी समीक्षा निश्चित रूप से पत्रिका में की जायेगी। प्रेस से भी एक पत्र मिला है। मैंने उसका उत्तर दे दिया है।

गोस्वामी तुलसीदास—जीवन वृत्त और व्यक्तित्व आपका महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है। मैं उसे साद्यन्त पढ़ूँगा जिससे मेरी ज्ञानवृद्धि होगी और समीक्षा लिखने में भी सुगमता होगी और यह तो मानस चतुःशती का युग है, कितनी सामयिक सामग्री बड़े सुयोग से अध्ययन को मिली है ?

ब्रज-भारती का ज्येष्ठ अङ्क सेवा में प्रेषित है, भविष्य में भी पत्रिका आपको नियमित रूप से मिलती रहेगी। कृपाभाव रक्खें।

आपका
बृन्दावनदास

(३२७)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २६-९-७३

बन्धुवर,

कृपा पत्र मिला। धन्यवाद ! आपको हमारी की हुई समीक्षा पसन्द आई यह जानकर प्रसन्नता हुई। आपके ग्रन्थों का आलोड़न करने पर आपके

गहन अध्ययन का आभास मिलना अत्यन्त स्वाभाविक है, कारण हाथ कंगन को आरसी क्या ? समीक्षक के सामने सूर्य के प्रकाश की नाईं स्थिति तो स्पष्ट ही होती है।

डा० विवेकीराय की समीक्षा मैंने भी पढ़ी थी। वे बात उस लहजे में कहने के आदी प्रतीत होते हैं जिसे अँग्रेजी में Circumlocution कहते हैं। निःसन्देह उन्होंने व्यंगात्मक शैली का प्रयोग किया है। जहाँ उन्होंने आपकी कतिपय मान्यताओं पर मीठा व्यंग किया है वहाँ आपके दूसरे अकाट्य तर्कों एवं अध्ययन पर आधारित निष्कर्षों पर दाद भी दी है। उनकी शैली उछल-कूद की है, कभी यहाँ तो कभी वहाँ। हमें उनके कथ्य पर कोई आपत्ति न होती यदि वे समीक्षा के उपसंहार स्वरूप ग्रन्थ की व्यापक गवेषणा के सम्बन्ध में भी उचित परामर्श प्रस्तुत करते।

आशा है आप अब स्वस्थ एवं सानन्द हैं।

आपका

वृन्दावनदास

(३२८)

प्रकाश भवन,

मथुरा. १३-११-७३

बन्धुवर राय जी,

कृपा पत्र तथा अन्तरजनपदीय साहित्य संसद की नियमावली आदि प्राप्त हुए। धन्यवाद !

मैं समझता हूँ, 'अखिल भारतीय अन्तर्जनपदीय-परिषद्' यही नाम ठीक है। आपने अपने पत्र में तथा नियमावली में भी परिषद् शब्द का ही उल्लेख किया है, फिर हैडिंग में अ० ज० साहित्य संसद कैसे हो गया, यह समझ में नहीं आया। कृपा कर इस भ्रान्ति को दूर करें।

परिषद् के उद्देश्य सामान्यतया ठीक हैं। नियमावली में सदस्यता और उसके शुल्क आदि भी उचित ही हैं। प्रश्न यह है कि इस गुरुतर कार्य के संचालन के लिए अर्थ की क्या व्यवस्था होगी ? कार्यकर्त्ताओं को कुछ पारश्रमिक अथवा भत्ते के रूप में तो देना ही होगा।

पूर्वांचल पर जोर देते हुए आप जो गठन कर रहे हैं, वह उचित ही है। पूर्वी भागों की अतीत में उपेक्षा भी बहुत हुई है और उधर कार्य के लिए क्षेत्र भी है।

मुझे अध्यक्षता स्वीकार है। भला, जिस संस्थाओं में आप सदृश कर्मठ सदस्य हों उसमें मुझे सम्मिलित होने में क्या आपत्ति है ?

आप नियमों को अन्तिम रूप दे दें और एक फेअर कापी बना लें। अथवा उसे व्रजभारती में चार पृष्ठीय लेख के रूप में छापकर २००, २५० रिप्रिण्ट्स निकलवा लेंगे और वह ही फिलहाल काम करने के लिए ठीक रहेगा।

भोजपुरी अंगिका, वज्जिका आदि लोक भाषाओं में तो अच्छा काम हो रहा है। कई पत्रिकाएँ निकल रही हैं। कवि लोग भी सक्रिय है। भोजपुरी के कवि सम्मेलन बड़े ठाट से होते हैं। भोजपुरी के प्रति वहाँ के प्रदेशों में ममत्व भी है। श्रीगणेश चौबे हमारे मित्र हैं, उन्होंने तो एक कोश की भी रचना करीब-करीब कर ही ली है। मेरी राय में इन लोक भाषाओं के हिन्दी कोष बनने का समय आ गया है। इन कोशों से इन भाषाओं का तो विकास होगा ही, हिन्दी का शब्द-सामर्थ्य भी बढ़ेगा। स्व० डा० वासुदेवशरण अग्रवाल लोकभाषाओं के शब्दों के आचार्य थे। वे बड़े मजे में अपनी भाषा में लोक शब्दों को नगीने की तरह जड़ देते थे।

जनपदीय कार्य बड़ा महत्त्वपूर्ण है, उसके लिए आपने जो गठन किया है अथवा जिसको करना चाहते हैं, मैं उसका स्वागत करता हूँ और अपने अक्षुण्ण सहयोग के प्रति आपको आश्वस्त करता हूँ। नियमावली लौटा रहा हूँ।

आशा है आप स्वस्थ एवं सानन्द हैं।

आपका

वृन्दावनदास

(३२९)

प्रकाश भवन,

मथुरा. १८–११–७३

मान्यवर झड़प जी,

लोक भाषाओं के उन्नयन में मुख्य बाधा उन शीर्ष हिन्दी विद्वानों का विरोध है जो इन भाषाओं के संरक्षण और सम्बर्द्धन में हिन्दी के हितों की हानि देखते हैं। ये कतिपय विद्वान् यह समझते हैं कि हिन्दी हित का ठेका उन्हीं ने ले रक्खा है। स्थिति यह है कि लोक भाषाओं के कार्यकर्ता राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी को शिरोधार्य करके और उसके प्रति आस्थावान् और श्रद्धावनत होकर अपनी-अपनी लोकभाषा के साहित्यिक परिष्कार का काम कर रहे हैं जिसे किसी प्रकार रोका भी नहीं जा सकता। लोक भाषाओं का कार्य तो हिन्दी के समृद्धीकरण के लिए हैं।

मुझे इस बात से बड़ी प्रसन्नता है कि आप जनपदीय आन्दोलन का कार्य बड़ी निष्ठा से कर रहे हैं। आप अनेक स्थानों पर जाकर इसका अलख जगा रहे हैं तथा स्थानीय लोगों में इसके प्रति रुचि उत्पन्न कर रहे हैं। एक प्रकार से पूर्वी अंचल में तो आप ही इस आन्दोलन को पुनर्जीवित कर रहे हैं। आज हिन्दी जगत् की सबसे बड़ी आवश्यकता यह है कि जनपदीय आन्दोलन को पुनरुज्जीवित किया जाय और अन्तरजनपदीय परिषद् का पुनर्गठन कर उसे अधिकाधिक सक्रिय बनाया जाय। मैंने जनपदीय आन्दोलन की रूपरेखा शीर्षक एक लेख अनेक पत्रों में प्रकाशित कराया है। वृत्तान्त नामक एक पत्र की प्रति आपको भेज रहा हूँ जिसमें वह लेख प्रकाशित है। ब्रज-भारती के सम्पादकीय में भी यह टिप्पणियों के अन्तर्गत प्रकाशित हो रहा है। आप जो काम कर चुके हैं और जो मुझे विदित हो चुका है अथवा भविष्य में विदित होता जायगा, उसका मैं लेखा जोखा रक्खूँगा तथा उसको अनेक पत्रों में अपनी टिप्पणियों सहित प्रकाश में लाऊँगा। हमें अन्तरजनपदीय काम को आगे बढ़ाना है। यह इस आन्दोलन का सौभाग्य है कि इसे आप जैसे कार्यकर्ता और विद्वान् की एक निष्ठा सुलभ हो गई।

आशा है आप स्वस्थ एवं सानन्द हैं।

आपका
वृन्दावनदास

(३३०)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ५-१२-७३

मान्यवर झड़प जी,

कृपा पत्र आंजनेय जी के पत्र के साथ मिला। धन्यवाद ! पं० बनारसी दास चतुर्वेदी पर आपका लेख और अ० भा० अन्तरजनपदीय परिषद् की नियमावली आदि मिले। हमारी पत्रिका त्रैमासिक है अतः अब तो फाल्गुन अङ्क निकलेगा, उसी में नियमावली और लेख प्रकाशित हो सकेंगे। नियमावली में यदि आवश्यक हुआ तो संशोधन कर दूँगा। २५० प्रतियाँ पुनर्मुद्रण रूप में निकलवाकर आंजनेय जी के पते पर भेज दूँगा। आपके पास डा० वासुदेवशरण अग्रवाल के पत्र हैं क्या ? यदि हों तो इस पत्र को तार समझ कर उनकी प्रतिलिपियाँ भेज दें। उनके पत्रों का संग्रह हम छाप रहे हैं परन्तु अब वह अन्तिम दौर में है। अतः यदि पत्र हों तो जिस दिन यह पत्र मिले, उसी दिन भेजने की कृपा करें।

डा० वासुदेवशरण अग्रवाल तो जनपदीय आन्दोलन के आदि प्रवर्तक थे। उनके पत्र जनपदीय ज्ञान के भाण्डागार हैं। मैं तो प्रूफ संशोधन, भूमिका लेखन, प्राक्कथन लेखन आदि के कारण उनका कई बार पारायण कर चुका हूँ। निःसन्देह वह विलक्षण साहित्यिक निधि है। मुझे बड़ी प्रसन्नता है कि आप जनपदीय आन्दोलन का कार्य बड़े मनोयोग से कर रहे हैं। डा० बनारसीदास जी चतुर्वेदी आपके इस दिशा में किए हुए कार्य से अत्यन्त प्रभावित हैं। आप यात्राएँ करके जनपदीय अध्ययन को प्रोत्साहित कर रहे हैं।

व्रज-भारती मार्गशीर्ष अङ्क प्रेसाध्यक्ष की असावधानी से कुछ पिछड़ गया है। अभी ८, ७ दिन की और देर है।

मैं बहुत व्यस्त रहता हूँ। जनपदीय कार्यकर्त्ताओं की सूची आप बनावें, उसे देख लूँगा तथा संशोधन परिवर्द्धन कर दूँगा, आपकी सहायता करूँगा।

आपका
वृन्दावनदास

(३३१)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ... .

बन्धुवर झड़प जी,

कृपा पत्र आपके दो मिले। धन्यवाद ! मैंने कुछ दिन हुए आपको जनपदीय अध्ययन : डा० वासुदेवशरण अग्रवाल का दृष्टिकोण शीर्षक एक लेख भेजा था, आशा है आपको मिला होगा, उसे आप चतुर्मुख के प्रवेशांक में छाप सकते हैं।

अन्तरजनपदीय परिषद् की नियमावली प्रेस में भेजी हुई है, यदि संभव हुआ तो उसे कल ही लौटा दूँगा और आप उसे भी चतुर्मुख के प्रवेशांक में छाप दें। संशोधित नियमावली कुछ काल बाद व्रज-भारती में छप जायेगी।

मैं बहुत शीघ्र एक लेख "जनपदीय आन्दोलन के जनक डा० वासुदेव शरण अग्रवाल" शीर्षक आपको भेजूँगा। यदि समय रहते मिल जाय तो प्रवेशांक में छापें अन्यथा किसी आगामी अङ्क में छाप दें।

ता० ३, ४ मार्च को उत्तरप्रदेशीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन का अधिवेशन झाँसी में हो रहा है। ता० २० फरवरी वृन्दावन में प्रमुख स्नान की तिथि वृन्दावन अर्द्ध कुम्भ की है। यह तिथि मुझे बक्सर पहुँचने के लिए सुविधाजनक नहीं है।

आचार्य पं० पद्मसिंह शर्मा का स्मृति अंक श्री रमेशचन्द्र जी दुबे एम० ए०, गाँधी नगर, मुरादाबाद निकाल रहे हैं। यह १३, १४ अप्रेल को होने वाले (हरिद्वार कुम्भ के अवसर पर) आयोजन में प्रकाशित होगा। आप श्री दुबे से पत्र व्यवहार करें। इस आयोजन का निमन्त्रण कार्ड शायद मैं आपको भेज चुका हूँ। आज पुनः भेज रहा हूँ। इसमें दिये हुए पते पर आप प्रतिनिधियों के ठहरने सम्बन्धी व्यवस्था के हेतु लिखा-पढ़ी करें।

कृपा भाव रक्खें।

आपका
वृन्दावनदास

(३३२)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ४–२–७४

बन्धुवर राय जी, सादर नमस्कार !

कृपा पत्र मिला। जनपदीय अध्ययन एवं आन्दोलन सम्बन्धी लेख मैं आपको बराबर भेजता रहूँगा। लोक-साहित्य मर्मज्ञ डा० कन्हैयालाल सहल शीर्षक एक लेख इस पत्र के साथ प्रेषित है।

आचार्य पं० पद्मसिंह शर्मा स्मृति समारोह के अवसर पर अन्तर जनपदीय आयोजन अवश्य कर लें। तत्सम्बन्धी सूचना सभी जनपदीय कार्यकर्त्ताओं को भेज दें। आशा है श्री वेदपाठी से आपको उत्तर मिल चुका होगा। वैसे मैंने इस समारोह के मुख्य कर्णधार श्री रमेशचन्द्र जी दुबे ए-९० गाँधी नगर मुरादाबाद को तो लिख ही दिया है।

पं० गणेश चौबे एक दूसरे दृष्टिकोण से ऐसा कहते हैं। केवल भोजपुरी परिषद् नाम रखने से परिषद् का क्षेत्र सीमित हो जायगा। अन्तर जनपदीय परिषद् की संज्ञा ही अनेक परिषदों के अस्तित्व का बोध कराती है। हमें तो सभी लोकभाषाओं का काम करना है कारण उनका हिन्दी के प्रति समन्वय और सौहार्द तब ही सम्भव होगा। मुख्य कार्य हिन्दी प्रचार प्रसार है। हम लोक भाषाओं के माध्यम से भी हिन्दी के गीत गाना चाहते हैं। अगर हम सभी लोक भाषाओं को लेते हैं तो लोक भाषाओं की पारस्परिक प्रतिद्वन्दिता भी समाप्त होगी। हिन्दी वाले लोकभाषाओं का काम करें और लोकभाषाओं के विद्वान् हिन्दी का। सब ही कुछ एक ही तो है।

आप बहुविध रूप से हिन्दी की महती सेवा कर रहे हैं। अब तक का किया हुआ आपका कार्य भी यथेष्ट है। मैं चाहता हूँ कि श्री आंजनेय आपके

व्यक्तित्व और कृतित्व पर एक लेख लिखें जिसे हम ब्रजभारती में प्रकाशित कर सकें।

आपका
वृन्दावनदास

(३३३)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ८–२–७४

बन्धुवर झड़प जी,

आपका ३०–१–७४ का कृपा पत्र यथा समय मिल गया। धन्यवाद ! बन्धुवर गणेश जी जनपदीय आन्दोलन के सच्चे कार्यकर्ता हैं। उनका व्यक्तित्व सरल, प्रतिभाशाली और निरभिमानी है। उसमें अहं भाव तो नाम मात्र को नहीं। वे जनपदीय आन्दोलन के प्रति शुभ भावना रखते हुए अपने हार्दिक विचारों को व्यक्त करते हैं। यदि हम संस्था का नाम 'भोजपुरी जनपदीय परिषद्' रखते हैं तो हमारी परिधि और हमारा कार्य क्षेत्र बहुत ही संकुचित हो जाता है। भोजपुरी वाले अपनी परिषद् बना लें हमें क्या आपत्ति है, परन्तु सभी लोक भाषाओं के प्रति सद्भावनाओं का प्रचार तो अखिल भारतीय संस्था ही कर सकती है। जनपदीय आन्दोलन को क्षेत्रीय रूप देकर बैठ जाना अन्तर जनपदीय हितों के विरुद्ध है और कदापि मान्य नहीं है। हमें सभी लोकभाषाओं को साथ लेकर चलना है। हमें तो लोक-भाषाओं के माध्यम से ही राष्ट्रभाषा का प्रचार प्रसार करना है। हम लोक भाषाओं के सहारे से ही लोक संस्कृति और लोक साहित्य के दर्शन कर सकते हैं।

श्री रमेशचन्द्र जी दुबे ने लिखा है कि वे हरिद्वार में आचार्य पं० पद्मसिंह शर्मा के स्मृति समारोह के अवसर पर अन्तर जनपदीय परिषद् की एक बैठक करने का प्रस्ताव १०-२-७४ की कार्य समिति की बैठक में रक्खेंगे। उनको आप भी लिखें। उनका पता है श्री रमेशचन्द्र जी दुबे ए-९० गाँधी नगर, मुरादाबाद। उनका उत्तर आने पर मैं आपको तद्वत् सूचित करूँगा। दुबे जी ने लिखा है कि हरिद्वार वाला समारोह अब ६, ७ अप्रेल को होगा।

उत्तर प्रदेशीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन का आगामी अधिवेशन झांसी में ३, ४ मार्च को हो रहा है। मैं संयोजक श्री श्रीधर शास्त्री बहादुर गंज इलाहाबाद—३ को लिख रहा हूँ कि उस अवसर पर अन्तर जनपदीय परिषद् की भी एक बैठक कर लें तथा आपसे पत्र-व्यवहार करें। आप भी उनसे सम्पर्क करें।

जनपदीय आन्दोलन के जनक डा० वासुदेवशरण अग्रवाल शीर्षक एक लेख के मैंने प्रतिमुद्रण करा लिए हैं। एक प्रति आपको भेज रहा हूँ, इसे चतुर्मुख में प्रकाशित करें। इसमें डा० वासुदेवशरण का दृष्टिकोण काफी छान-बीन के बाद प्रतिपादित किया गया है। जब डोंगरी और राजस्थानी को मान्यता मिल चुकी, मैथिली को मिल चुकी तो भोजपुरी को क्यों न मिले ? अवश्य मिलनी ही चाहिए। लोकभाषाओं के उन्नयन और साहित्यिक-परिष्कार के आन्दोलन को अब कोई नहीं रोक सकता है। हम यह मानने को कदापि तैयार नहीं कि लोकभाषाओं के उन्नयन से हिन्दी हितों को आघात पहुँचेगा। लोक भाषाओं का क्षेत्र अत्यन्त सीमित है। वे हिन्दी की प्रतिद्वन्दिता में आ ही नहीं सकतीं। हमें तो लोकभाषाओं के सहारे हिन्दी को समृद्ध और प्रचारित करना है।

आशा है आप स्वस्थ एवं सानन्द हैं।

आपका
वृन्दावनदास

(३३४)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २–३–७४

प्रियवर झड़प जी,

आपका दिनांक १६–२–७४ का पत्र मुझे यथा समय मिल गया था। मैं ता० ५ को मथुरा आ गया हूँ। ता० ३, ४ को झाँसी में उत्तर प्रदेशीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन का अठारहवाँ अधिवेशन मेरे सभापतित्व में ही हुआ था। बम्बई से झाँसी होता हुआ वापिस आ गया हूँ।

पत्रिका का फाल्गुन अङ्क २, ३ दिन में ही पहुँच रहा है। अबकी बार सम्पादकीय में जनपदीय गतिविधियों का यथेष्ट उल्लेख कर दिया है। सम्भव है कोकशास्त्र, लोक साहित्य आदि पर एक गोष्ठी निकट भविष्य में मथुरा में ही आयोजित करें। यदि योजना क्रियान्वित हुई तो आपको पधारने को लिखेंगे।

आंजनेय जी अवश्य आपके जीवन वृत्त पर कुछ संस्मरणात्मक लिखेंगे ऐसा मेरा विश्वास है। मैं उन्हें लिख भी रहा हूँ। चतुर्मुख का अङ्क ता० २० फरवरी को प्रकाशित हुआ या नही।

जनपदीय अलख जगाते रहिये।

आपका
वृन्दावनदास

(३३५)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २–९–७४

बन्धुवर,

कृपा पत्र मिला। मैं २० जुलाई को बम्बई गया था और १७ अगस्त को मथुरा लौटा। इन दिनों व्यस्त भी रहा। आपकी ओर से श्री अनिलकुमार राय 'आंजनेय' ही अधिक पत्र भेजते रहे हैं और उनके पत्रों का मैंने उत्तर भी यथावत् दिया था। उन्हीं पत्रों में बराबर आपको स्मरण किया गया है। आपका उजियार आना जाना भी बहुधा रहता ही है।

आपके डा० पाठक को रजिस्ट्री द्वारा भेजे लेख लौट गये थे। उन्होंने मकान बदल लिया है। आंजनेय जी ने उन्हें पुनर्प्रेषित करके मेरे पास भेज दिया। वे सब मुझे मिल गए हैं और उन पर आवश्यक कार्यवाही हो रही है। आप महानुभावों ने मेरे प्रति जो स्नेह अभिव्यक्त किया है उसके लिए मैं अत्यन्त आभारी हूँ। साहित्यिक वन्धुओं से स्नेह मिले इससे बढ़कर दुनियाँ में कोई उपलब्धि नहीं।

डा० वासुदेव शरण अग्रवाल के पत्र शीर्षक पुस्तक की एक प्रति आप और एक श्री रामनगीना राय जी अवश्य अवश्य आंजनेय जी से ले लें। चतुर्मुख आप खूब निकाल रहे हैं। उसके लिये यात्रा भी करते हैं। शंकर ने भी किसी सत्य के प्रतिपादन के लिये दिग्विजय किया था।

एक बार आप वन्धुओं से भेंट होनी चाहिए। अन्तरजनपदीय काम को बढ़ाने के लिए भी इसकी आवश्यकता है। आप कलकत्ता हो आइये। कार्तिक मास में दीपावली, द्वितीया आदि के अवसर पर मथुरा की तरफ आप लोग आवें तो यहाँ परिषद् की बैठक बुलावें।

श्री रामनगीनाराय जी को प्रणाम ! चतुर्मुख की विस्तृत समीक्षा डा० रंजन से करा रहा हूँ। मेरा स्वयं ऐसा करना ठीक नहीं है, कारण उसके सम्पादकों में मेरा भी नाम है।

आपका
वृन्दावनदास

(३३६)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ५-१०-७४

बन्धुवर झड़प जी, नमस्कार !

कृपा पत्र मिला। डा० अग्रवाल शोध संस्थान वाले डा० साहब के कृतित्व अथवा यों कहिए उनके जनपदीय आन्दोलन पर कतिपय भाषणों को

कराने की योजना बना रहे हैं। एक दिन वे ऐसा नियत करना चाहते हैं जिसमें मैं तथा दो-तीन अन्य सज्जन जिनको मैं ही बताऊँ अपने व्याख्यान दें। इस प्रकार के गूढ़ विषयों पर व्याख्यान लिखित निबन्धों के पाठ रूप में ही होते हैं। क्या यह सम्भव है कि आप, आंजनेय जी और मैं तीनों ही उस दिन अपने-अपने निबन्ध वहाँ पढ़ें। यह संस्थान लखनऊ में है। आवास भोजनादि की व्यवस्था संस्थान द्वारा होगी। सम्भव हुआ तो मार्ग व्यय भी हम दिलवाने की चेष्टा करेंगे। २६, २७ नवम्बर की तिथियाँ कैसी रहेंगी। २४ को विदुर कुटी में महाभारत के काल निर्णय सम्बन्धी गोष्ठी है। यदि उसमें भी आप भाग लेना चाहेंगे तो हम आपको वहाँ से भी निमन्त्रण भिजवा देंगे। विदुर कुटी जिला बिजनौर में है। विदुर कुटी गंगा तट पर अवस्थित है।

आप आंजनेय जी से सलाह करके लिखें, रामनगीनाराय जी भी यदि सम्मिलित होना चाहें तो हो सकते हैं।

आशा है अब आप कलकत्ता यात्रा से वापिस आ गये होंगे।

आपका

वृन्दावनदास

(३३७)

प्रकाश भवन,

मथुरा. २–१–७५

बन्धुवर झड़प जी, सस्नेह नमस्कार !

कृपा पत्र मिला। स्व० गोविन्ददास और जवाहरलाल जी चतुर्वेदी पर संस्मरणात्मक निबन्ध आंजनेय जी को भेज चुका हूँ। एक लेख डा० रंजन और एक श्री बालमुकुन्द चतुर्वेदी का भी जवाहरलाल जी पर भेजा जा चुका है। एक पुराना अङ्क भी इन्हीं पर था वह भी आंजनेय जी को भेज दिया है। आप सब सामग्री देख लेंगे।

आप विकट परिस्थितियों में चतुर्मुख का प्रकाशन कर रहे हैं यह आपके अदम्य साहस और घोर परिश्रम शीलता का ही द्योतक है। बन्धुओं की उपेक्षा और मँहगाई की भीषण मार ने हिन्दी सेवा को लोहे के चनों के सदृश बना दिया है परन्तु शिव साहित्यकार को तो गरल पीना ही है। आप और आपके दोनों सहयोगी (बन्धुवर आंजनेय जी एवं रामनगीनाराय जी) हिन्दी सेवा में एक कीर्तिमान स्थापित कर रहे हैं। आपको बधाई !

मैंने कई सज्जनों को लेखादि भेजने को लिखा है। आशा है आपके पास यथेष्ट मात्रा में सामग्री पहुँचेगी।

नागपुर सम्मेलन में हम और आप दोनों ही नहीं जा सकेंगे। मैं विदुर कुटी के श्री गिरवरचरण अग्रवाल को आपके लेख के विषय में तथा श्रद्धेय चतुर्वेदी जी और राजेश्वर जी आदि को लेखों के लिए लिखूँगा। नूतन वर्ष की बधाई।

आपका
वृन्दावनदास

(३३८)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २४-४-७५

बन्धुवर श्री झड़प जी,

कृपा पत्र आपका मिला। अस्वस्थता ने पूरे परिवार को घेरा, यह जानकर दुःख हुआ। अब कुछ चैन की साँस ली है यह सुख की बात है। अन्तरजनपदीय की बैठक भाद्रपद में ही की जाय तो अच्छा रहेगा। उस अवसर पर एक विचार गोष्ठी भी आयोजित हो जिसमें कम से कम १५ प्रमुख लोक भाषाओं पर ३० विद्वान् (एक-एक लोकभाषा पर दो-दो) निबन्ध लिखकर लावें। यह निबन्ध सम्बन्धित लोकभाषा के साहित्य और उसकी समस्याओं पर होंगे।

परिषद् के वैधानिक गठन और प्रत्येक अंचल में उसकी शाखा स्थापित करने का सुझाव भी आपका ग्राह्य हैं। यह भी साङ्गोपाङ्ग होना ही चाहिए।

मैंने ता० १६ अप्रेल को श्री वृन्दावनदास पुस्तकालय, वाचनालय एवं संग्रहालय नामक निबन्धित संस्था के भवन का शिलान्यास परिवारी जनों के मध्य स्वयं कर दिया है। भवन-निर्माण की प्रक्रिया तीव्रगति से चल रही है। यह भवन दो महिने में बनकर तैयार हो जायगा। पुस्तकालय में मैं अपनी पुस्तकों पत्र-पत्रिकाओं और कतरनों आदि के विशाल संग्रह को भविष्य के लिये सुरक्षित कर देना चाहता हूँ। मैं चाहता हूँ कि अन्तरजनपदीय-परिषद् की बैठक के समय उसका उद्घाटन भी हो जाय किंवा परिषद् की बैठक पुस्तकालय भवन में ही आयोजित की जाय। विद्वानों की सूची पहले आप बनाकर भेजें, उसमें मैं संशोधन करूँगा। नियमावली तो आप बना ही चुके हैं, उस पर ही पुनः विचार कर लेंगे। शेष फिर।

आपका
वृन्दावनदास

(३३६)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २३-५-७५

बन्धुवर झड़प जी, प्रणाम !

आपका पत्र यथा समय मिल गया था। अब यह तो तय ही हो गया कि भाद्रपद में जन्माष्टमी के आसपास आयोजन करने हैं। कृपाकर प्रत्येक बोली के साहित्य और समस्या पर दो-दो लेख लिखाने के लिए विद्वानों का चयन कर उनसे पत्र-व्यवहार शुरू कर दें। निबन्ध पाठ तो उस आयोजन का मुख्य भाग ही होगा। इस प्रकार के पत्र-व्यवहार में आप श्री आंजनेय जी और श्री रमण शांडिल्य से सहायता ले सकते हैं। संयोजन तो आपको ही करना है।

कम से कम ५० व्यक्तियों से पत्र-व्यवहार करें, जिससे समय पर ३०-३५ तो आ ही जायेंगे, कुछ मथुरा आगरा जनपद के होंगे।

इसके साथ जनपदीय साहित्य की प्रदर्शिनी, जनपदीय कवि सम्मेलन (छोटे रूप में) हो जायगा। यही अन्तरजनपदीय सम्मेलन का रूप है। अपेक्षित प्रस्ताव पारित हो जायेंगे। एक सूची उन व्यक्तियों की भी बनाइये जिन्हें बुलाना है। सूची को देखकर मैं भी कुछ नाम जो रह गये होंगे, दे दूँगा।

आंजनेय जी कर्मठ व्यक्ति हैं, उनको साथ में लेकर इस आयोजन की रूप रेखा बना डालिये। रूपरेखा बनने पर तिथियाँ तथा तदनुसार कार्यक्रम निश्चित हो जायगा।

आपके स्वास्थ्य की दशा देखकर चिन्ता होती है। मैं तो समझता था कि झड़प जी के रूप में किसी भीमकाय पूर्णरूपेण स्वस्थ व्यक्ति के दर्शन होंगे, परन्तु प्रयाग में जो प्रथम बार आपसे भेंट हुई तो आपके शरीर को देखकर मैं अवाक् रह गया। आपको स्वास्थ्य के प्रति सावधानी रखनी है, अर्श के रोग पर योग्य चिकित्सक की सहायता से काबू पाना है।

आशा है अब आप स्वस्थ हैं। पुस्तकालय भवन का पटाव हो गया है। १५ दिन में पटाव खुलने पर (आर० सी० सी०) प्लास्टर वगैरह होगा तथा किवाड़ बनेंगे।

आपका
वृन्दावनदास

(३४०)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ३०-६-७५

बन्धुवर झड़प जी,

कृपा पत्र मिला। यह तो स्पष्ट ही है कि महत्त्वपूर्ण विषयों पर स्वस्थ-चित्त से ही लिखा जा सकता है। अनायास ही आपके रोग के कारण चिन्ता उत्पन्न हो गई है।

ठीक है, जन्माष्टमी के आसपास अन्तरजनपदीय परिषद् की बैठक मथुरा में हो जानी चाहिए, उसी अवसर पर अन्य कार्य-क्रम भी सम्पन्न हो जायेंगे।

उद्घाटन तो हम पहले ही करा देंगे, कारण वह मुहूर्त्त से होगा। अभि० ग्रन्थ समर्पण दिल्ली में होगा, उसका प्रयास भी उससे पूर्व ही करा लेने का विचाराधीन है। ग्रन्थों का वितरण मथुरा के उत्सव में भी हो जायगा।

३० निबन्धों के लिए तीस व्यक्तियों का चयन और उनसे पूर्व निवेदन परमावश्यक है, अन्यथा वह सब स्वप्नवत् रहेगा। प्रत्येक जनपदीय भाषा के साहित्य पर एक उच्चस्तरीय निबन्ध होना चाहिए।

आप तो अपनी तिथियाँ निश्चित कर दीजिये। पहले मारे सो मीर। तिथि निश्चित कर तीस विद्वानों को तीस विषय दे दीजिए, जिससे वे निश्चित तिथि पर अपना निबन्ध तैयार करके ले आवें।

आमन्त्रित व्यक्तियों के ठहरने का स्थान श्री हीरालाल धर्मशाला, स्वामीघाट रहेगा। सभाओं का स्थल श्री वृन्दावनदास पुस्तकालय, वाचनालय एवं संग्रहालय रहेगा। यह पुस्तकालय श्री हीरालाल धर्मशाला के अन्तर्गत अपने भवन में स्थित है। मेरे विचार से भादों बदी ७, ८ यही दोनों तिथियाँ ठीक रहेंगी। कार्यक्रम की एक रूप-रेखा बनाकर निमन्त्रण पत्र का प्रारूप तैयार कर लें तथा यदि चाहें तो मेरे अवलोकनार्थ भेज दें।

लिस्ट में कुछ नाम बढ़ाकर भेज रहा हूँ। निमन्त्रण-पत्र छपने पर जो नाम और आवश्यक समझे जायेंगे, वे दे दिये जायेंगे या उनके निमन्त्रण-पत्र यहाँ से ही भेज दिये जायेंगे। आप आंजनेय जी से काम लीजिए, वे कर्मठ एवं उत्साही कार्यकर्त्ता हैं तथा विषय वस्तु को जानते भी हैं।

आशा है अब आप खूब स्वस्थ हैं।

आपका
वृन्दावनदास

(३४१)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २०-७-७५

बन्धुवर झड़प जी,

कृपा पत्र मिला। आपने अपने पिछले पत्र में जिन दो बातों की ओर संकेत किया था, वे अब प्रमुख रूप से व्यवधान सिद्ध हो रही हैं। यहाँ २, ३ दिन से अनवरत वृष्टि हो रही है तथा आपात स्थिति के कारण १४४ भी लगी हुई है। मैं डि० मैजिस्ट्रेट से मिलकर स्वीकृति लेने की चेष्टा करूँगा। यदि स्वीकृति मिल गई तो निमन्त्रण पत्र को छपाकर आपको भेज दूँगा। निमन्त्रण पत्र भेजे जाना तो आपके यहाँ से ही ठीक होगा। स्वागत-समिति यहाँ कब बनेगी ? अन्तरजनपदीय परिषद् की बात समझने वाले यहाँ कम ही हैं। मन्त्री, अध्यक्ष की ओर से निमन्त्रण तथा कार्यक्रम छप कर प्रेषित होंगे। यह सब स्वीकृति मिलने पर ही सम्भव होगा।

पुस्तकालय का भवन तो तैयार हो गया है परन्तु बढ़ई का काम अभी शेष है। लकड़ी चिरी हुई पड़ी है, कारीगर नहीं आ रहे हैं। उसको तो मैं देख ही रहा हूँ।

२, ३ दिन में स्थिति स्पष्ट होने पर आपको सूचित करूँगा। आंजनेय जी को लिख रहा हूँ।

आपने कुछ पत्रों को विज्ञप्ति भेज दी है सो ठीक है। निमन्त्रण का मजमून बहुत ठीक बना है। यदि अनुमति मिल गई तो ३०० छपाकर आपको भेज दूँगा। आप निमन्त्रण भेज देना फिर जो कुछ होगा देखा जायगा। यह तो ठीक है कि वर्षा और आपात् स्थिति के कारण उपस्थिति कम होने की आशा है। अनुमति मिलने पर इधर के पत्रों में जैसा आपने लिखा है विज्ञप्ति मैं भेज दूँगा। शेष २, ३ दिन में।

आपका
वृन्दावनदास

(३४२)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ६-८-७५

बन्धुवर झड़प जी,

कृपा पत मिला। वस्तु स्थिति से अवगत हुआ। मैं आज ही प्रातः आपको १५० निमन्त्रण पत्र भेज चुका हूँ। ठीक है, कम ही लोगों को आने

दीजिए। आपात स्थिति तो है ही। पंजीकरण, भावी संगठन, लोक साहित्य का पुनरुद्धार आदि विषय महत्व के हैं और जैसा आपने लिखा है, उन पर विचार आवश्यक है। आगरा महा जनपद के कुछ वरिष्ठ लोगों को मैं बुला लूँगा जिससे आस-पास शाखायें संगठित हो जाय और बाहर की कम उपस्थिति की किसी हद तक पूर्त्ति हो सके। चतुर्मुख को परिषद् का अधिकारिक पत्र, मुख-पत्र बनाना है और उसका प्रचार-प्रसार भी अपेक्षित है।

५० पत्र मैंने आंजनेय जी को भी भेज दिये हैं। आज अभी मगहिया का पत्र आया है कि श्री रघुवीर प्रसाद सिंह के नेतृत्व में ५ सदस्यों का प्रतिनिधि मण्डल मथुरा पहुँच रहा है। ५ व्यक्ति तो यह ही हो गए।

आशा है, आप सकुशल हैं। जिस तरह आपने रूपरेखा बनाई है, वही ठीक है। मैं २, ३ दिन बाद निमन्त्रण पत्र भेजूँगा और उनकी बावत आपको यथा सम्भव सूचित कर दूँगा।

आपका
वृन्दावनदास

(३४३)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २२-८-७५

बन्धुवर झड़प जी,

अनुमति मिल गई है, तथा पुस्तकालय भी काम चलाऊ तैयार हो गया अतः आप समय से अवश्य पधारें। इस कार्य को अब विधिवत् सम्पन्न कर ही देना है। विज्ञप्ति आपने खूब करा दी है। इधर के लोगों को मैंने भी निमन्त्रण भेज दिया है।

आशा है स्वस्थ एवं सानन्द हैं। यदि कुछ निमन्त्रण पत्र बचें तो साथ में लेते आवें।

आपका
वृन्दावनदास

(३४४)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २२-८-७५

बन्धुवर झड़प जी,

आपका पत्र अभी मिला। पैकट देर से पहुँचा। जो भी हो, आप पूर्व के अधिक लोगों को भेज दीजिए।

मैंने सर्व श्री डा० चतुर्वेदी जी, डा० आर्य, डा० राकेश, श्रीराम पाण्डेय, रसूलपुरी जी, हरिदत्त जी, वेदप्रकाश गर्ग, जगदीश वाजपेमी, शिवचरन पैंजनिया, रामनारायण उपाध्याय, बादल जी, गौरीशंकर द्विवेदी जी, अमृतलाल जी, राजेश्वर जी श्री भगवानदास तिवारी, लल्लन मिश्र, गोवर्द्धननाथ शुक्ल, गणेश चौबे, रमेशचन्द्र दुवे, रमण शाण्डिल्य, हयारण मित्र तथा और भी अनेकों को पहले ही निमन्त्रण भेज दिये थे। पूर्व के लोगों को आप अवश्य भेज दें।

आप २८ तक अवश्य पहुँचें। आज हरिदत्त जी तथा अन्यों को भेज रहा हूँ।

यह पत्र जल्दी मिल जाय तो २०, २५ निमन्त्रण पत्र सादा डाक से एक लिफाफे में हमें भेज दें।

आपका
वृन्दावनदास

(३४५)

डा० बनारसीदास चतुर्वेदी के नाम

प्रकाश भवन,
मथुरा. १८–२–६६

आदरणीय चतुर्वेदी जी, सादर वन्दे !

ब्रजसाहित्य मण्डल का पुनरुद्धार शीर्षक आपका लेख कई पत्रों में प्रकाशित हो चुका है। ब्रजभाषा ही क्या समस्त हिन्दी जगत आपके व्यापक दृष्टिकोण के कारण आपका चिरऋणी है। आपने ब्रज-साहित्य और हिन्दी के कार्यकर्ताओं के लिए समीचीन नेतृत्व प्रस्तुत किया है। आपके सुझाव मौलिक हैं और यदि उनका उचित रूप से कार्यान्वियन हो तो हिन्दी की ठोस सेवा हो सकती है। कुछ सुझाव तो आपके ऐसे हैं जिन्हें कलांकार (लेखक और कवि) स्वयं अपने परिश्रम से कार्य में परिणत कर सकते हैं परन्तु कुछ के लिए धन की आवश्यकता होगी और आर्थिक बाधा उनके कार्यान्वियन में सामने खड़ी होती है। यद्यपि मैं यह मानता हूँ कि किसी भी अच्छे कार्य के लिए धन की कमी नहीं रहती तथापि हमारे दान दाताओं की मनोवृत्ति कुछ ऐसी है कि वे आडम्बर पूर्ण बातों में तो व्यय करते हैं और साहित्यिक एवं साँस्कृतिक आवश्यकताओं की ओर उनकी उपेक्षा की दृष्टि रहती है। सत्साहित्य के प्रकाशन, स्मृति भवनों के निर्माण और जीर्णोद्धार की दिशाओं में यदि कोई बाधा है तो वह धनाभाव। कृपाकर इस दिशा में कुछ चिन्तन करें और उपाय

जनता के सन्मुख रक्खें। सरकार ने अवश्य कुछ अपने कोष से किया है, परन्तु हमारे धनीमानी लोग इस दिशा में संकोची से ही प्रतीत होते हैं।

मैं आपके इस लेख को ब्रज-भारती में भी प्रकाशित कर रहा हूँ, कारण दैनिक पत्रों में स्थायी साहित्य इतना सुरक्षित नहीं रहता जितना पुस्तकाकार अवधि सम्पन्न पत्रों में।

डा० वासुदेवशरण जी को लिख रहा हूँ, मैंने उनको दो पत्र समय-समय पर लिखे लेकिन उत्तर एक का भी न मिला। ऐसा प्रतीत होता है कि वे एक लम्बे अर्से से रुग्ण हैं।

ब्रजभाषा में पत्र लिखने का अभ्यास कम है, घर में तो आबाल वृद्ध सब ब्रजभाषा में भी बोलते हैं। फिर भी आपकी आज्ञा पालन करने की चेष्टा करूँगा। ब्रजभाषा और खड़ी बोली का एक रिश्ता है जिसे आपने स्वयं अपने लेख में ही अनुपम ढंग से प्रतिपादित किया है।

ब्रज-साहित्य मण्डल विषयक पुराने कागजात प्राप्त हो गये हैं इसके लिए आपको धन्यवाद ! मैं कल १५) मनी आर्डर से भेज रहा हूँ कृपया उन्हें टाइप कराकर यथाविधि भेजने का कष्ट करें।

रेडियो स्टेशन के सम्बन्ध में श्री राजबहादुर जी ने अपने विचार मथुरा के एक सम्मेलन में व्यक्त किये थे। मैं उस समय बम्बई था। लोगों से ज्ञात हुआ कि वे उसे मथुरा में स्थापित कराने के लिए कृतसंकल्प हैं। वे ब्रज साहित्य में रुचि रखते हैं, मुझे आशा है कि वे अवश्य ही इस सम्बन्ध में उचित व्यवस्था करेंगे। मैं उनसे पत्र-व्यवहार कर रहा हूँ।

श्री सत्यनारायण कविरत्न की जयन्ती मनाने की व्यवस्था करूँगा। आपके द्वारा लिखित तत्सम्बन्धी जीवन चरित्र को भी सम्मेलन से मँगाने की चेष्टा करूँगा।

ब्रज-भारती का तीसरा अङ्क छप रहा है, १५ दिन में आपकी सेवा में पहुँचेगा। कृपाभाव रखना जी।

आपका

वृन्दावनदास

(३४६)

प्रकाश भवन,

मथुरा. २६-२-६६

आदरणीय चतुर्वेदी जी, सादर नमस्कार !

रजिस्ट्री आपकी मिली। ब्रज-साहित्य मण्डल सम्बन्धी इसमें अमूल्य सामग्री है। यदि आप सम्बन्धित पत्रावली को सुरक्षित न रखते तो मण्डल के

अतीत के चित्रों से संसार अनभिज्ञ ही रह जाता। इस पत्रावली को कौतूहल वश मैं साद्यन्त पढ़ चुका हूँ, इसके अतिरिक्त और भी जो कुछ अंश शेष हो उसे भी भिजवाने की कृपा करें।

आपने साथ ही कविरत्न सत्यनारायण जी की जीवनी भी खूब भेजी। आपकी शैली इतनी मनोहर और हृदयग्राही है कि आपकी रचना को यदि हाथ में ले लिया जाय तो जब तक उसे सम्पूर्ण पढ़ न ली जाय छोड़ने को जी नहीं चाहता है। कविरत्न जी का वैवाहिक प्रसङ्ग इस खूबी से लिखा गया है कि अच्छे से अच्छे उपन्यास भी उसके आगे पानी ही भरेंगे। कविरत्न की स्त्री को लिखे गये पत्रों में कविरत्न का हृदय पटल कितना स्वच्छ, पवित्र, शालीन और मनोहर प्रतीत होता है? उन्होंने अपने ही शब्दों में अपनी मनोव्यथा का जो तर्कपूर्ण विश्लेषण किया है उसकी सुषमा वर्णनातीत है। स्त्री के धृष्टतापूर्ण व्यवहार से वे किंचित् भी व्यग्र नहीं हुए हैं और उन्होंने अपने मन के भाव बड़ी निर्भीकता और सौजन्य से व्यक्त किये हैं।

आपका सुझाव कि महत्वपूर्ण प्रत्येक मसाले को अपने स्थान पर एक प्रतिलिपि के रूप में रक्खा जाय मूल्यवान् है। यद्यपि मैंने स्वयं के प्रयासों से प्रकाशित तो प्रत्येक वस्तु की प्रतिलिपि अपने यहाँ सुरक्षित रक्खी है परन्तु मण्डल सम्बन्धी सामग्री के लिए भी इस प्रकार न सोचा था। अब मैं अनुभव करता हूँ कि एक अलमारी इसके लिए भी रिजर्व कर दूँ।

अब तक मैंने जिन-जिन पत्रिकाओं, साप्ताहिक पत्रों अथवा मासिकों और दैनिकों में जितने लेख लिखे हैं उनकी एक-एक प्रति तो मेरे पास लगभग सबकी है। पूरी एक अलमारी भरी हुई है। अंग्रेजी में भी 'Letters to the Editor' को लिखे और प्रकाशित पत्रों की संख्या लगभग एक सहस्र होगी, वे सब Cuttings भी लिफाफों में रक्खे हैं। कुछ मित्र कहते हैं कि हिन्दी के लेखों में कुछ का चयन कर उनको पुस्तकाकार प्रकाशित किया जाय। समय मिलने पर इस कार्य को किसी स्थानीय विद्वान् के सुपुर्द करूँगा, मैं स्वयं इसको करने की इच्छा नहीं रखता। कृपा भाव रक्खें। शेष फिर!

आपका

बृन्दावनदास

(३४७)

प्रकाश भवन,

मथुरा. २२-४-६८

आदरणीय चतुर्वेदी जी, सादर प्रणाम!

कृपा पत्र मिला। आपने विश्राम करने को लिखा सो उसकी नौबत तो आ ही न पाई। चलते समय अमर उजाला वालों ने सम्मेलन के निष्कर्षों पर

केवल अमर उजाला के ही लिए लेख लिख कर भेजको कह दिया। यहाँ आकर वह लिखा, वह आज अमर उजाला में प्रकाशित भी हो गया है।

फिर चढ़ी हुई डाँक के उत्तर लिखें। समारोह विषयक अनेक पत्रों का उत्तर देना आवश्यक था। लगभग १५० विद्वानों को तीनों मुद्रित भाषणों की प्रतियाँ बुक पोस्ट से आज ही भेज चुका हूँ।

स्मारिकाओं को डाँक से भेजे जाने की व्यवस्था के लिए पं० रमेशचन्द दुबे को आज एक लम्बा पत्र लिखा है, स्मारिकाऐं आगरा में उन्हीं के पास हैं। उनका विद्वानों को भेजा जाना वांछनीय ही नहीं मेरी दृष्टि में आवश्यक भी है।

ब्रज-भारती दफ्तरी के पास है, कल या परसों आ जायगी। आगामी अङ्क ज्येष्ठ का होगा। उसका समय भी आ ही गया है। उसमें आपका अध्यक्षीय भाषण छापेंगे, २५० प्रतियाँ भाषण की छाप लेंगे, ५०-६० आपको भेज देंगे। मेरे ख्याल से यह काम १५ दिन के भीतर हो जायगा, आपका भाषण तो समारोह की जान है, उसका पूरी तौर प्रचारित होना साहित्यिक दृष्टि से हितकर है, अतः अत्यन्त आवश्यक भी है। आतिथ्य सत्कार में कमी की शिकायत सही है। मैं १५ दिन में आपसे मिलने आऊँगा तब ही कुछ बातों पर प्रकाश डालूँगा। शेष फिर।

आपका
वृन्दावनदास

(३४८)

प्रकाश भवन,
मथुरा. १५-५-६८

आदरणीय चतुर्वेदी जी, प्रणाम !

बढ़ी हुई डाँक की दर में सबसे पहिला पत्र आपकी सेवा में प्रेषित कर रहा हूँ। सरकार ने यह अच्छा नहीं किया। आपका खर्च बहुत बढ़ गया।

आज आपका भाषण तथा कुछ अन्य सामग्री प्रेस में भेज दी। बहुत जोर देकर जल्दी करा रहा हूँ फिर भी प्रेसाध्यक्ष २, ३ दिन में शुरू करने को कहते हैं।

शिशु स्मृति समारोह सिकन्दराराऊ में हो रहा है। बहुत दिनों से लिखा-पढ़ी चल रही है। उनके स्थानीय कार्यकर्ता राजेश जी दीक्षित ने बहुत पहले से न्यौता दे रक्खा है। जाने का विचार है। आपके स्वास्थ्य की क्या हालत है, आप पधारेंगे या नहीं ?

चैर्निशोव को काफी सामान भेजा है। उनका पत्र आने से विदित होगा कि सामग्री पहुँची या नहीं।

इधर १६ ता० को गाजियाबाद में ब्रज-साहित्य मण्डल की स्थायी-समिति की बैठक हो रही है, उसमें तो जाना ही है। अधिवेशन भी जून में हो जाता दीख रहा है।

वास्तव में कर्तव्य पालन की जिस दिशा की ओर आपने इंगित किया था साहित्यिक बन्धु उस ओर चल पड़े हैं, पहिले आगरा का समारोह और अब सिकन्दराराऊ। ये सब आपके द्वारा ध्यानाकर्षण के शुभ परिणाम हैं।

आपका
वृन्दावनदास

(३४६)

प्रकाश भवन,
मथुरा. १८-२-६६

आदरणीय चतुर्वेदी जी, प्रणाम !

दीनबन्धु ऐन्ड्रूज पर आपकी पुस्तिका प्राप्त हुई। इस पुस्तिका को पढ़ कर ही उस महापुरुष के जीवन का प्रकाशमान् चित्र सामने आया। दीनबन्धु का जीवन महान् आदर्शों से ओत-प्रोत एक निष्ठावान् कर्तव्य-परायण व्यक्ति का चरित्र था।

ब्रज-अभिनन्दन ग्रन्थ शीर्षक मेरा लेख सैनिक ने अपने १६ ता० के अङ्क में प्रकाशित कर दिया है। यद्यपि उसमें प्रूफ सम्बन्धी अशुद्धियाँ बहुत हैं (जैसे ब्रज के स्थान पर अनेक बार 'वृज' शब्द का प्रयोग किया गया है, और श्री प्रभुदयाल के नाम के आगे मीतल शब्द खा गये हैं) तथापि आशय तो स्पष्ट हो ही जाता है।

कई आवश्यक कार्य फीरोजाबाद की यात्रा में बाधक हो रहे हैं। श्री रतनलाल बंसल से पत्र की प्रतीक्षा में हूँ। शीघ्र सेवा में उपस्थित होऊँगा।

आपका
वृन्दावनदास

(३५०)

प्रकाश भवन,
मथुरा.

आदरणीय चतुर्वेदी जी, प्रणाम !

हस्तलिखित अभिनन्दन ग्रन्थों को सुरक्षित करने की प्रक्रिया अपेक्षाकृत सुगम है इसमें तो कोई सन्देह नहीं है। यदि इस प्रकार अभिनन्दन ग्रन्थ बन

सकें तो प्रत्येक निर्मित ग्रन्थ पर २००), २५०) व्यय करने को मैं व्यक्तिगत रूप से तैयार हूँ। इस कार्य में कुछ व्यावहारिक कठिनाइयाँ हैं। जिसके पास सामग्री है वह उसे त्यागने को उत्सुक नहीं है। हमारा विद्वत्समाज भी अपेक्षित लेखों को जुटाने में तत्परता नहीं दिखाता। यदि हमारे लेखक बन्धुओं को यह पता चल जाय कि उनकी लिखित सामग्री मुद्रित न होकर किसी एक व्यक्ति या संस्था के संग्रहालय में ही उसी रूप से केवल सुरक्षित रहेगी तो वे कभी कुछ लिखकर देने का कष्ट ही न करेंगे। लेखकों का ध्येय आत्म-विज्ञापन है न कि अभिनन्दनीय व्यक्ति का सम्मान। हस्तलिखित ग्रन्थ में उनके ध्येय की पूर्ति नहीं हो पाती है। मैंने टांटिया जी को स्व० श्री प्रकाश जी के स्मृति ग्रन्थ के विषय में लिख दिया है। यशपाल जी ने मुझे आपके मत से अवगत कराया था। टांटिया जी के उत्तर की प्रतीक्षा है।

मुझे माननीय राजबहादुर जी से दिल्ली में मण्डल सम्बन्धी कुछ बातें करनी हैं। तब ही मैं उनसे श्री राजाबाबू वाले उद्यान की बावत बातचीत करूँगा और आपके पत्रों वाली पुस्तक भी उन्हें दूँगा।

डा० भगवानदास माहौर टौरिया, नरसिंहराव झाँसी, रामचरणहयारण मित्रादि को भी पुस्तक शीघ्र भेजूँगा, वैसे मुझे अक्टूबर में झाँसी अपने भानजे की बरात में जाना है, बचे खुचे सभी साहित्यिकों को झाँसी में उसी समय पुस्तकें दे दूँगा।

दुबे जी ने अपने पत्र में पुस्तक की बड़ी प्रशंसा की है। यदि सम्भव हुआ तो उस पत्र की प्रतिलिपि आपको भेजूँगा, पढ़ने लायक है।

और सब कुशल है, कृपाभाव रक्खें।

आपका
वृन्दावनदास

(३५१)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ३०-७-७१

आदरणीय चतुर्वेदी जी, प्रणाम !

यहाँ आकर सबसे पहिला काम जो किया वह था पं० श्री नारायण जी से भेंट। चतुर्वेदी जी अब स्वस्थ हैं। पत्रों के संग्रह वाली पुस्तक एक उनको भेंट की तथा दो प्रतियाँ सरस्वती के लिए समीक्षार्थ भी उन्हीं को दे दीं। पुस्तक उनको बहुत पसन्द आई। सम्मेलन का जिक्र भी आया। उनकी हमारे वाले सम्मेलन के कार्यकर्त्ताओं के प्रति भावना रोष तथा असन्तोष की है तथा

इस सीमा तक है कि वे अपने भावों को छिपा नहीं पाते हैं। जो हो। हमने तो उन्हें बड़े विनम्र भाव से कह दिया कि अपना उद्देश्य तो हिन्दी की सेवा है, यार की यारी से काम है ख्वारी से कदापि नहीं। हम तो एक विनम्र कार्यकर्ता हैं, अपने बाजे बजाकर अपना कार्यकाल समाप्त कर देंगे। परन्तु उनका तो मतभेद है ही।

कल माननीय मुख्यमन्त्री जी से भेंट की। लोगों का अपार समूह पहले से भी मौजूद था। हमने तो अपना सम्मेलन का अध्यक्ष विषयक परिचय देकर P. A. महोदय से केवल दो मिनट के साक्षात्कार का समय माँगा। वे भीतर गये तथा हमें लिवा कर ले गये। मैंने अपनी पुस्तक भेंट करने के बाद उनसे पूछा कि आप चतुर्वेदी जी से परिचित होंगे। उन्होंने उत्तर दिया, "खूब !" फिर हमने आपके पत्रों की पुस्तक तथा सम्मेलन के अध्यक्षीय भाषण की एक प्रति भेंट कर दी। ब्रज-साहित्य मण्डल तथा सम्मेलन पर कृपा दृष्टि रखने के लिए निवेदन करके हमने विदाई ले ली। आज डा० लक्ष्मीशंकर मिश्र निशंक अध्यक्ष हिन्दी विभाग कान्यकुब्ज कालेज को भी दोनों पुस्तकें भेंट की। वे बड़े सहृदय व्यक्ति हैं तथा उच्चकोटि के ब्रजभाषा कवि भी। कल प्रातः अयोध्या जा रहा हूँ।

आपका

वृन्दावनदास

(३५२)

प्रकाश भवन,

मथुरा. १०–८–७१

आदरणीय चतुर्वेदी जी, प्रणाम !

यद्यपि जिल्दें तैयार होते ही मैंने पुस्तकों के वितरण का शुभारम्भ कर दिया था तथापि कुछ मित्र एकत्रित होकर मुझसे ग्रन्थ को विमोचित कराने का आग्रह करने लगे। अतः संलग्न निमन्त्रण पत्र उन्हीं के आग्रह का परिणाम है। आपका तो इतनी दूर से इतनी स्वल्प सूचना पर पधारना असम्भव ही है। सेठ गोविन्ददास जी उस दिन मथुरा पधार रहे हैं, मित्रगण उनकी उपस्थिति का लाभ उठाना चाहते हैं।

स्व० प्यारेलाल जी चतुर्वेदी वाला लेख मिल गया है। उसके छपाने की व्यवस्था करूँगा। भाद्रपद अङ्क तो लगभग पौन छप चुका और शेष मैटर कम्पोजिंग में है अतः अब यह लेख या तो मार्गशीर्ष अङ्क में छपेगा अथवा इसके छपाने की "योगी" या 'उत्तर बिहार' में व्यवस्था करने का विचार है। सैनिक वाले छाप दें तो और भी अच्छा, उनसे आगरा में बातचीत करूँगा।

श्री प्रकाश जी के स्मृति ग्रन्थ के विषय में टांटिया जी को लिखा है। उत्तर की प्रतीक्षा है।

यशपाल जी ने पुस्तक डा० बनारसीदास चतुर्वेदी के पत्र की भूरि-भूरि प्रशंसा की है। वे उसकी समीक्षा जीवन साहित्य में कर रहे हैं ऐसा उन्होंने लिखा है। यशपाल जी आप में बड़ी आस्था रखते हैं। दुबे जी ने तो बेहद तारीफ की है। शेष फिर !

आपका
वृन्दावनदास

(३५३)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २२-८-७१

आदरणीय चतुर्वेदी जी, प्रणाम !

आपकी छोटी बहिन के स्वर्गवास का समाचार मुझे पं० अमृतलाल जी चतुर्वेदी से ज्ञात हो गया था। फिर आपके एक पत्र से जिसकी प्रतिलिपि आपने मुझे भेजी थी मुझे उस दुःखद घटना की जानकारी हुई। उनकी अवस्था ७५, ७६ वर्ष की थी तथा दीर्घकाल से वे रुग्ण थीं ऐसा भाई अमृतलाल जी ने मुझसे कहा था। सबसे बड़े दुःख की बात तो यह हुई कि उनका देहावसान आपके वाराणसी जाने के बाद हुआ और यह अनायास ही अनुपस्थिति में विछोह हो गया। ईश्वरेच्छा बलीयसी। मैं भी इधर बीमार पड़ गया इसलिए आपको संवेदना-पत्र भी न लिख पाया। मैं अत्यन्त दुःख के साथ संवेदना प्रकट करता हूँ तथा ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करे।

मैंने कल डा० मिथिलेश को संवेदना सूचक पत्र लिखकर भेज दिया है।

मुझे यह जानकर परम प्रसन्नता हुई कि आप अब सम्पादकाचार्य स्व० श्रद्धेय बाबू रामानन्द जी चटर्जी का स्मृति ग्रन्थ निकालने के लिए सचेष्ट है। मेरे पूज्य पिताजी उनके बड़े भारी प्रशंसक थे तथा इसी कारण Modern reveaid के भी वर्षों तक ग्राहक रहे। वे हिन्दू मुस्लिम समस्या पर स्व० चट्टोपाध्याय के तर्कपूर्ण दृष्टिकोण से अत्यन्त प्रभावित थे। चटर्जी महोदय ने मुस्लिम सम्प्रदायवाद का जैसा जबरदस्त भण्डाफोड़ अपने पत्र के माध्यम से किया था वैसा अन्यत्र कम दिखाई दिया। वे अँग्रेजों की इस दिशा में पक्षपात-पूर्ण नीति के भी कटु आलोचक थे। Modern reviend की प्रतियाँ तत्कालीन हिन्दू मुस्लिम समस्या पर बड़ा अच्छा अध्ययन प्रस्तुत करती थीं। शेष फिर !

भवदीय
वृन्दावनदास

(३५४)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ३१-८-७१

आदरणीय चतुर्वेदी जी,

श्री रामधारीसिंह दिनकर का पत्र आया है। वे लिखते हैं, "प्रियवर चतुर्वेदी जी के पत्रों का संग्रह मिला। तदर्थ अनेक धन्यवाद ! पुस्तक बहुत सुन्दर और उपादेय है। रामधारीसिंह दिनकर।"

आज डा० हजारीप्रसाद जी द्विवेदी, श्री रामकृष्ण एम० ए० तथा श्री कृष्णकुमार मिश्र कानपुर को एक-एक प्रति भेज दी है।

आज लखनऊ जा रहा हूँ। वहाँ से लौटकर झाँसी के साहित्यिकों को प्रतियाँ भेज दूँगा। रामशंकर जी द्विवेदी ने बड़ी सुन्दर समीक्षा भेजी है उसे टंकित कराकर कई पत्रों में प्रकाशनार्थ भेज दूँगा।

श्री ओमप्रकाश गोयल ने उनको भेजी हुई दसों प्रतियाँ फीरोजाबाद के मित्रों को बाँट दी है। श्री ओमप्रकाश जी हमारे बड़े दयालु सम्बन्धी हैं और हमारा बड़ा ख्याल रखते हैं। हरिशंकर जी के ग्रन्थ में उनसे बड़ी मदद मिलेगी।

'आज' में यदि ग्रन्थ की समीक्षा छपे तो उसकी एक प्रति मुझे अवश्य भिजवाइये। मैं सभी समीक्षाओं को एकत्रित कर रहा हूँ।

अयोध्या वाला पुस्तकालय अब खुला ही समझिये। क्या ही अच्छा हो कि उसका उद्घाटन आपके ही कर कमलों से दशहरा के दिन हो ? आप तो अभी उधर हैं ही।

यहाँ सब क्षेम कुशल है।

आपका
वृन्दावनदास

(३५५)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ८–९–७१

आदणीय चतुर्वेदी जी, प्रणाम !

ता० ५ को आगरा में नागरी प्रचारिणी सभा वालों ने महेन्द्र जी का अभिनन्दन समारोह मेरी अध्यक्षता में ही मनाया था। महेन्द्र जी की बहुमुखी सेवाओं पर अनेक वक्ताओं ने महत्त्वपूर्ण चर्चाऐं कीं। आगरा की साहित्यिक, सांस्कृतिक और सामाजिक गतिविधियों में महेन्द्र जी का वास्तव में दीर्घकालीन

योगदान रहा है। वहाँ बन्धुवर शम्भुनाथ जी मिले थे। उन्हें पत्रों की पुस्तक भेंट कर दी। इन्होंने अपने पिता श्री पर स्मृति-ग्रन्थ निकालने की भी चर्चा की। हमने उन्हें प्रत्येक प्रकार के सहयोग के लिए आश्वस्त किया। मैं उनके विद्यालय में भी अवश्य जाऊँगा। कभी उनके साथ ही कार्यक्रम बना लेंगे। स्व० प्यारेलाल जी का स्मृति ग्रन्थ भी ब्रज साहित्य मण्डल की आगरा शाखा से प्रकाशित हो जायगा। आज कल आगरा शाखा के प्रमुख कार्यकतर्त्ता और प्रधान मन्त्री डा० राजेश्वर जी ही हैं।

वहन सत्यवती मल्लिक, सत्येन्द्र जी, जगदीशचन्द्र माथुर और जगदीश प्रसाद चतुर्वेदी प्रभृति महानुभावों ने पुस्तक की भूरि भूरि प्रशंसा की है। आपके पुण्य प्रताप से इस प्रकाशन में मुझे भी पुष्कल यश मिल गया। कई प्रकाशकों ने कहा कि ३०० पृष्ठ की पुस्तक के १५), २०) मूल्य रक्खा जाना चाहिये था, यहाँ तक लखनऊ के एक प्रकाशक ने तो कहा कि अब भी बढ़ा दो परन्तु मैंने उन लोगों के प्रस्ताव को इस बिना पर अमान्य कर दिया कि ऐसा करने से पुस्तक लेने में पाठक को हिचक उत्पन्न होगी।

आपका
वृन्दावनदास

(३५६)

प्रकाश भवन,
मथुरा. १५-९-७१

आदरणीय चतुर्वेदी जी, प्रणाम !

मैं दिल्ली हो आया हूँ। यशपाल जी से विस्तृत बातें हुईं। श्री राजबहादुर जी विदेश गये हुए हैं, उनके सचिव को पत्रों की पुस्तक दे आया हूँ। डा० सेठ गोविन्ददास जी भी नहीं मिले उनके भी सचिव को पुस्तक दे आया हूँ। भक्तदर्शन जी की पुत्री को पुस्तक दे आया हूँ। उनको पत्र आज लिख रहा हूँ उस दिन वे देहरादून गये हुए थे। श्री रोहनलाल चतुर्वेदी को भी पुस्तक दे आया हूँ। उनसे राजाबाबू के बाग का जिक्र आया था।

श्री प्रकाशवीर शास्त्री कल मेरे मकान पर पधारे थे। हिन्दी दिवस मेरे ही निवास स्थान पर उनकी अध्यक्षता में मनाया गया था। उनसे हरिशंकर जी के ग्रन्थ के विषय में वार्तालाप हो गया है, उनको भी पत्रों की पुस्तक भेंट कर दी।

मैं १८ ता० को बम्बई जा रहा हूँ। वहाँ ८, १० दिन रहूँगा।

ता० १३ को हृषीकेश जी की पुण्यतिथि उनके निवास स्थान पर मनायी गयी। आपका टेप किया हुआ भाषण सर्व प्रथम सुनाया गया। ८ बजे तक डा० रामविलास शर्मा अध्यक्ष रहे और उसके बाद के लिए वे मुझे मनोनीत कर गये। फिर मुझे भी रात्रि को वापिस आना था। अतः ९-१५ पर मैं भी अमृतलाल जी को मनोनीत कर चला आया। बड़ा सफल समारोह रहा। कृपाभाव रक्खें। बम्बई का पता—C/o D. L. Agrawal 15 Akash Deep, Dongarsi Road, Teen Batti, Bombay.

पुस्तक रामनिवास जी को भी भेंट कर दी।

आपका
वृन्दावनदास

(३५७)

प्रकाश भवन,
मथुरा. १०-१०-७१

आदरणीय चतुर्वेदी जी, प्रणाम !

आज बहुत दिन बाद आपको पत्र लिखने बैठा हूँ। इस बीच में आपके कई पत्र आ गये हैं। मैं ता० १८ सितम्बर को बम्बई के लिए चल पड़ा था। मेरी पत्नी उससे बीस दिन पहले ही वहाँ चली गई थी। बम्बई में एक सप्ताह रहना तो अनिवार्य था कारण वहाँ भाई के अलावा एक विवाहित पुत्र और दो विवाहित बड़ी पुत्रियों के परिवार भी रहते हैं। वहाँ से ता० २७ को वायुयान से हम दोनों बंगलौर पहुँचे। रेल से ७०० मील वाला सफर वायुयान से केवल एक घण्टा दस मिनट में ही समाप्त हो गया। बंगलौर में मेरी तीसरी लड़की है। मेरे जामाता हौस्पैट में डालमियाँ सीमैण्ट (भारत) लि० के सर्वोच्च पदाधिकारी हैं। उन्होंने बंगलौर में एक प्रेस खोल लिया है जिसकी देख-रेख मेरे दोनों दौहित्र करते हैं। बंगलौर में वहाँ के स्थानीय हिन्दी प्रेमियों से भी मिला। ता० २९ को मैसूर का दशहरा देखा। वृन्दावन उद्यान की प्रकाशमयी छटा बड़ी अद्भुत है। शायद इस उद्यान का सा सौन्दर्य एशिया में अन्यत्र सुलभ न हो। वहाँ से तिरुपति में भगवान वेङ्कटेश्वर के दर्शन करते हुए हास्पैट पहुँचे जहाँ विशाल तुङ्ग भद्रा बाँध देखा। हास्पैट से बम्बई और बम्बई से दूसरे दिन ही मथुरा को चल पड़े और ता० ७ को यहाँ आ गये। यात्रा सुखद रही।

डा० माहौर को पुस्तक तो भेजी जा चुकी। उसकी प्राप्ति स्वीकृति और पत्र में पुस्तक पर व्यक्त विचार भी प्राप्त हो चुके थे। अब उनको शोध-

कार्य के सम्बन्ध में आज ही लिख रहा हूँ। ब्रह्मचारी जीवनदत्त स्मृति ग्रन्थ का कार्य चल रहा है। गयाप्रसाद जी और जगन्नाथ प्रसाद जी ने मेरे पत्रों के उत्तर में उत्साह जनक आश्वासन दिया है।

होलीपुरा की तीर्थयात्रा अवश्य करूँगा। शम्भुनाथ जी से समय निश्चित करना है। राजेश्वरजी को भी साथ ले जाऊँगा।

मित्रजी समारोह कर चुके। उन्होंने एक मुद्रित स्मारिका भेजी है। उस पर ब्रज-भारती के आगामी अङ्क में एक टिप्पणी दे रहा हूँ। उन्होंने मुझसे अनुरोध किया है।

डा० महेश से अभी भेंट नहीं हुई है। वे रिजर्व नेचर के हैं परन्तु मैं तो उन्हें ढूँढ़ ही लूँगा। उनकी संस्था में उनके विभागाध्यक्ष से लेकर सभी बन्धु मेरे नित्यप्रति के साथ उठने बैठने वाले हैं।

श्री मथुराप्रसाद मानव का छन्द मुझे बहुत पसन्द आया। उसको आवश्यक प्रयोग के लिए सुरक्षित कर लिया गया है।

अन्तर्जनपदीय परिषद् के दस पन्द्रह विद्वानों के उनके चित्र सहित लेख ग्रन्थ में रहें इस विचार से मेरी शत प्रतिशत सहमति है। सम्पादक मण्डल को आपका सुझाव प्रेषित किया जा रहा है। निस्संदेह इससे ग्रन्थ की गरिमा ही नहीं जनपदीय ज्ञान विषयक उपादेयता भी बढ़ेगी।

स्व० पं० प्यारेलाल जी चतुर्वेदी के अङ्क के लिए ५१) की धनराशि मेरी ओर से अर्पित है। आप जब फीरोजाबाद पधारेंगे अथवा दिल्ली में आपको दे दूँगा।

श्री महेन्द्र शास्त्री से तो आपने पहले ही मेरा परिचय करा दिया है। उनको ब्रजभारती उनके पुस्तकालय के पते पर नियमित रूप से जाती है। उनके अभिनन्दन ग्रन्थ की एक प्रति मुझे प्राप्त भी हो चुकी है। उसकी समीक्षा मैंने सम्पादकीय में भाद्रपद अङ्क के अन्तर्गत कर दी है। मैंने आपके ऊपर रचित उनका एक सुललित छन्द उसमें उद्धृत किया है। छन्द इस प्रकार है—

हे बनारसीदास, आपके हम आजीवन दास,
हिन्दी को क्या क्या न दिया है, मान दिया, अभिमान दिया है।
इसके सेवक दल को बल, दे दिया आत्म-विश्वास॥
लाखों लेखक पैदा करके, उनकी चिन्ताओं को हरके,
घर के लोगों के समान, उनको रखते थे पास।

यह समीक्षा ब्रज-भारती के नवीनतम अङ्क (भाद्रपद) में पृष्ठ ५ पर अङ्कित है। आपने पढ़ी नहीं, अथवा आपकी प्रति कोई ले गया ? कृपा कर लिखें दूसरी प्रति भेज दी जायगी। सम्पादकीय तो आप पूरा पढ़ने की कृपा करें।

सर्व श्री रामइकबालसिंह राकेश, श्री महेन्द्रशास्त्री तथा मधुकर जी भट्ट के लिए पुस्तक की प्रति शीघ्र भेज रहा हूँ। ११ ठिकानों से लेखों की माँग है, सभी जल्दी भी कर रहे हैं। प्रातः ७ बजे से ६ बजे तक और फिर भ्रमण, भोजन और शयनोपरान्त ३ बजे मध्याह्नोत्तर से रात्रि के ११ बजे तक निरन्तर लेखन कार्य चल रहा है। पत्र लेखन के विषय में आपका "परिछाँया" पड़ गया प्रतीत होता है। शेष फिर, कृपा भाव रक्खें।

आपका

वृन्दावनदास

(३५८)

प्रकाश भवन,

मथुरा. २६–१०–७१

आदरणीय चतुर्वेदी जी, प्रणाम !

मैं आगरा हो आया हूँ। वहाँ पर श्री विद्याशंकर जी से डा० हरिशंकर जी के ग्रन्थ के विषय में विस्तृत वार्ता हुई। ग्रन्थ-रचना विषयक मुख्य बाधा मैंने उनके सन्मुख उपस्थित की। उन्होंने कहा कि ग्रन्थ निर्माण तो आपको ही करना है, हम लोग यदि इसमें कुछ सक्रिय होंगे अथवा पहल करेंगे तो हमसे पूज्य पण्डित जी की स्वर्गस्थ आतमा को महान् क्लेश होगा। मुझे किसी अंश में उनकी इस बात में कुछ तत्व दिखाई दिया। एक अच्छी बात यह है कि अब वे २५०, ३०० पृष्ठ के एक छोटे ग्रन्थ के पक्ष में हैं जिसमें व्यक्तित्व पर संस्मरणात्मक लेख हों तथा पण्डित जी के कृतित्व अर्थात् उनके निर्मित साहित्य पर कुछ प्रकाश पड़े। मैं इस बात से सहमत हूँ। उनकी राय यह है कि आप एक सूची उन लोगों की तैयार करें जिनसे इस पर लेख माँगने हैं तथा लेख माँगने का काम उन लोगों में मैं करूँ। कृपा कर अब आप एक सूची तैयार करा दीजिये जिनको लेखों के लिए एक मुद्रित पत्र भिजवाया जा सके। पहले ग्रन्थ निर्माण कर लिया जाय, उसकी आर्थिक व्यवस्था पर पीछे विचार कर लिया जायगा। भाई बालकृष्ण जी, ओमप्रकाश जी तथा मैं इस ग्रन्थ के मुद्रणार्थ अवश्य धन देंगे और आर्य समाज भी कुछ करेगी ऐसी आशा है। प्रमुख काम ग्रन्थ निर्माण का है। आप सूची बनवा दें तथा एक अपील भी

यदि अपने नाम से बना दें तो अच्छा होगा उसके साथ मैं हस्तलिखित पत्र लिखकर भेजूँगा। आप प्रधान सम्पादक होंगे और मैं सह सम्पादक।

आगरा में डा० राजेश्वर चतुर्वेदी फ्लू से पीड़ित थे, अमृतलाल जी मिले नहीं। राजेश्वर जी कल मथुरा भी आये थे। उन्होंने रावेलाल जी चतुर्वेदी के ग्रन्थ के विषय में जिक्र किया। भाई शम्भुनाथ जी उनसे मिले थे। उस ग्रन्थ को भी तैयार करना है। मैं आगरा में भाई शम्भुनाथ जी से न मिल सका था। अब दो-चार दिन बाद फिर आगरा जाऊँगा तब शम्भुनाथ जी से अवश्य मिलूँगा, उन्हें पत्रों की पुस्तक भी देनी है।

कल यहाँ श्री प्रभुदयाल मीतल के साथ श्रद्धेय श्री नारायण जी चतुर्वेदी मेरे निवास स्थान पर पधारे थे। करीब ३ घण्टे बड़ा अच्छा साहित्यिक समागम रहा। उस समय मेरे यहाँ कई बाहर से आये हुए मित्र भी उपस्थित थे। चाय पान हुआ और खूब वार्तालाप हुआ। उनकी इच्छा मथुरा में अपने सम्मेलन का अधिवेशन करने की है। मुझसे सहयोग माँगते थे तथा सद्भावना और सहानुभूति भी। मैंने कहा वह तो पूर्णरूपेण आपके लिये सुरक्षित और अर्पित है। परन्तु सम्मेलन के अधिवेशन का अर्थ कम से कम चार हजार रुपया है और मैं अकेला इस भार को उठाने में असमर्थ हूँ। मथुरा में आर्थिक सहयोग नहीं मिल पाता। हाँ, और कोई सज्जन इस भार को उठावें तो मैं सक्रिय सहयोग और अपना आर्थिक अंश दान सहर्ष दूँगा परन्तु पूरा भार कदापि वहन न कर सकूँगा। निजी तौर पर आपसे निवेदन करूँ कि दूसरे सम्मेलन का अध्यक्ष होते हुए मेरे द्वारा उनका सम्मेलन अपनी जिम्मेदारी पर कराया जाना सर्वथा अनुचित और अशोभनीय होगा। उनके मनोनीत सभापति श्री बालकृष्ण हैं। उनसे मीतल जी ने एक सप्ताह में विचार कर लिखने को कहा है।

एक पत्र पहिला लिखा हुआ रक्खा था वह भी इसके साथ प्रेषित है। शेष फिर !

आपका
वृन्दावनदास

(३५९)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २४-१२-७१

आदरणीय चतुर्वेदी जी, सविनय प्रणाम !

आपकी शुभ जन्म तिथि के उपलक्ष में आपको प्रणामांजलि। मैं आजकल बहुत व्यस्त रहा हूँ और इच्छा होते हुए भी पत्र न लिख सका। आगरा



डा० बनारसीदास चतुर्वेदी तथा बाबू वृन्दावनदास

एक दिन तो हिमसुन्दरी नामक उपन्यास का विमोचन करने तथा परसों स्व० हृषीकेश जी के चित्र के अनावरण सम्बन्धी समारोह की अध्यक्षता करने जाना पड़ा था। चित्र का अनावरण डा० रामविलास शर्मा ने किया था। श्री अमृत लाल चतुर्वेदी आपकी जन्म तिथि के विषय में फीरोजाबाद चलने की कह रहे थे।

अयोध्या के पुस्तकालय के लिए मैं पुस्तकों का एक विशाल संग्रह तथा पुरानी पत्रिकाओं की एक विराट संख्या भेज चुका हूँ। महन्त जी का पत्र पुस्तकों की पहुँच के सम्बन्ध में आ चुका है। जनवरी में कोई तिथि निश्चित कर उसको औपचारिक उद्घाटन के बाद चालू कर दिया जायगा।

स्व० सेठ कन्हैयालाल पोद्दार से आप परिचित होंगे ही। उनके एक पुत्र श्री रामनिवास पोद्दार थे जिनका ३, ४ महिने हुए स्वर्गवास हो चुका है। वे लगभग १०, १५ पत्र पत्रिकाओं से विविध विषयों से सम्बन्धित कतरनें नित्य काट लेते थे और उन्हें इकट्ठा करते जाते थे। उनका यह क्रम लगभग ५० वर्ष तक चलता रहा। वे सन् १६३५ तक तो मथुरा ही रहे थे परन्तु तदनन्तर बम्बई में स्थायी रूप से रहने लगे, वहाँ उन्होंने काफी धन कमाया और समुद्र के किनारे वर्ली में एक विशाल भवन बनवाया और उसी में रहने लगे। उनके स्वर्गवास से पहले (लगभग १, १॥ महिने पहिले) अपनी बम्बई यात्रा में मैं उनसे मिलने गया। मेरे साथ मेरे छोटे भाई रनछोरदास भी थे। वे आराम कुर्सी पर अधलेटे से विश्राम कर रहे थे तथा उनके सामने कतरनों के (बण्डलों में बँधे) एक महान ढेर को हमने देखा। वे अश्रु-पूरित नेत्रों से मेरी ओर देखकर बोले, "वृन्दावनदास जी, किसी समय मैं साहित्य की इस अमूल्य निधि को देखकर हँसता था परन्तु आज वह समय आ गया है कि मैं इसे देखकर रोता हूँ। आप खूब आये, अभी इस ढेर को अपने साथ ही ले जाओ, मेरे नौकर इसे आपकी कार पर लाद देंगे।" मैं यह सुनकर अवाक् रह गया। मैं जानता था कि वे कभी एक कतरन भी किसी को न देते थे और वह सामग्री उन्होंने अपने जीवन भर की साधना के द्वारा एकत्रित की थी। मैं उस ढेर को जो जीर्ण शीर्ण बण्डलों के रूप में था ले आया। मेरे भाई ने उसे बोरों में भरवाकर और ऊपर से पत्तियों से बाँधकर मथुरा भेज दिया, किराये के लगभग १५०) मेरे लग गये।

साल भर से ये बोरे यों ही पड़े थे। इनसे जगह भी घिरी हुई थी, चूहे भी अपना काम करने लगे। बरसात और गर्मी में उन्हें निकालकर देखने की हिम्मत न हुई। कई छुटभइये साहित्यिक बन्धुओं को भी उस काम पर

ध्यान देने को कहा परन्तु कुछ न हुआ। अन्त में यही निश्चय किया कि अब जाड़ों में ही उसे देखने का समय आ गया है। मैं अब उन फटे टूटे बण्डलों को नये वेष्टन में लिपटवा रहा हूँ तथा सरसरी तौर से उस सब को देख भी रहा हूँ। कोई विषय ऐसा नहीं जिस पर अगणित कतरनें विद्यमान न हों। इतिहास, दर्शन, साहित्य कला, प्राचीन भारत, थियेटर, ड्रामा, डान्स, डाइवोर्स, सैक्स, आयुर्वेद, मूर्तिकला, वेद, पुराण, उपनिषद्, महापुरुष, धर्माचार्यों, नेताओं, सार्वजनिक कार्यकर्ताओं की जीवनियों आदि से सम्बन्धित हजारों कतरनें हैं। कतरनें अधिकांश अँग्रेजी में है, हिन्दी के पत्रों से कतरनें तथा पुस्तकों के सम्बन्धित खण्ड मूल पुस्तकों में से निकाल कर विषयगत बण्डलों में रक्खी मिली हैं। मैं इस निधि में से कुछ अंश अयोध्या के पुस्तकालय में रक्खे जाने के लिए भेज रहा हूँ, शेषांश मथुरा के पुस्तकालय में सुरक्षित किया जायगा। विद्यानुरागियों, अध्येताओं, शोधार्थियों के बड़े काम की चीज है। जो इस अथाह सागर में गोता लगावेगा निःसन्देह अनुपम रत्न ढूँढकर ले आवेगा। पुस्तकालय के विज्ञापन में जिज्ञासुओं और साहित्य सेवियों को इस निधि से लाभ उठाने को आमन्त्रित किया जायगा।

झाँसी के श्री सुमित्रानन्दन गुप्त बहुत ही बढ़िया और साहित्यप्रेमी सज्जन हैं। साहित्यिकों के प्रति उनका भाव बड़ा ही आत्मीयतापूर्ण होता है। शायद उन्होंने यह गुण स्वर्गीय दद्दा से विरासत में पाया है। मैंने उन्हें ५० पुस्तकें आपके पत्रों वाली भेजकर उनसे प्रार्थना की थी कि विनिमय में अपने यहाँ के सभी प्रकाशन भेज दें। मुझे आपको यह सूचित करते हुए बड़ी ही प्रसन्नता है कि उन्होंने स्व० दद्दा, स्व० सियारामशरण जी की सभी पुस्तकें एक-एक भेज देने की कृपा की है। मैंने उस संग्रह को मथुरा के पुस्तकालय एवं संग्रहालय के लिए सुरक्षित कर दिया है। अगर किसी दूसरी पुस्तक के विनिमय में उनसे एक सैट और मिल सका तो उस दूसरे सैट को अयोध्या भेज दूँगा। जो पुस्तकें उन्होंने मुझे भेजी हैं मैंने तो उनमें से अधिकांश को देखा तक न था। दोनों बन्धुओं ने दर्जनों पुस्तकें लिख डाली थीं।

योगी के वे तीनों अङ्क मुझे प्राप्त हो गये हैं जिनमें श्री रामइकबालसिंह राकेश के लेख आपके पत्रों के सम्बन्ध में हैं। मैं उनको पढ़कर श्रीयुत राकेश जी को शीघ्र ही लिखूँगा तथा उन्हें आपके पत्रों की पुस्तक भी भेजूँगा जो शायद उन्हें अद्यतन नहीं भेजी जा सकी है।

डा० चैनिशोव को भी पत्र लिख रहा हूँ। कृपाभाव रखें।

आपका
वृन्दावनदास

(३६०)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ३०-१-७२

आदरणीय चतुर्वेदी जी, प्रणाम !

कृपापत्र मिला। साथ में स्वर्गीय श्री बलदेव पहलवान के राष्ट्रपति को लिखे हुए पत्र की प्रतिलिपि भी। अनेक धन्यवाद ! इसको मैं सुरक्षित कर लूँगा।

दीक्षान्त समारोह वाले दिन मैं भी सपरिवार प्रयाग में ही था। मुझसे दूसरे दिन प्रभात शास्त्री जी ने कहा कि आप भी समारोह के कुछ देर बाद पधारे थे। मैं तीसरे दिन प्रातः दारागंज से (जहाँ मैं ठहरा था) आपसे मिलने के लिए सत्यनारायण कुटीर पहुँचा परन्तु वहाँ ज्ञात हुआ कि आप पहले दिन ही जा चुके थे। प्रभात जी कह रहे थे कि वे आपको नागरीप्रचारिणी में किसी विशेष समारोह में उपाधि प्रदान कर देंगे।

अयोध्या में स्थापित पुस्तकालय का खूब स्वागत हुआ। स्थानीय विद्वानों और महन्तों ने उसे एक अभाव की पूर्ति के रूप में बताया। उद्घाटन के अवसर पर लगभग १२५, १५० सज्जन एकत्रित हो गये थे और अनेक भाषण, गायन आदि से उत्सव अत्यन्त सफल रहा। मुझे विश्वास है कि इस पुस्तकालय द्वारा जनता की खासी सेवा हो सकेगी।

प्रयाग में सम्मेलन कार्यालय का निरीक्षण, स्थायी समिति की बैठक आदि का काम था। आगामी अधिवेशन की रूपरेखा भी बनानी थी। सभी कुछ करके वहाँ से २५ ता० को जनता एक्सप्रेस से चलकर २६ की प्रातः मथुरा आ गया।

आशा है आप स्वस्थ एवं सानन्द हैं।

आपका
वृन्दावनदास

(३६१)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ८-२-७२

आदरणीय चतुर्वेदी जी, प्रणाम !

डा० वारान्निकोव को लिखा हुआ आपका पत्र आपकी आज्ञानुसार लौटा रहा हूँ। आगरा अखबार प्रेस वालों को राजेश्वर जी ५०) दे आये हैं

तथा उनसे २५ पुस्तकें ले आये हैं। मैंने पुस्तक साद्यन्त पढ़ भी ली है। पुस्तक में अधिकांश वे लेख हैं जो हृदय स्पर्शी भावों को व्यक्त करते हुए श्रद्धेय प्यारेलाल जी के मरणोपरान्त लिखे गये हैं। स्वर्गीय राधेलाल जी बड़े ऊँचे दर्जे की अँग्रेजी बोलते व लिखते थे। उनके लेखों से विदित होता है कि वे अँग्रेजी के उच्चकोटि के विद्वान् थे। अँग्रेजी के सभी लेख पाण्डित्यपूर्ण हैं तथा हृदयग्राही भाषा में लिखे गये हैं। स्वर्गीय प्यारेलाल जी की महानता और लोकप्रियता तो इसी से विदित होती है कि उनको श्रद्धांजलि अर्पित करने वालों में देश के मूर्धन्य व्यक्ति थे। वे जाति के एक उच्च हितैषी और संगठनकर्ता थे तथा आजीवन परोपकार में ही रत रहे। उनका जीवन प्रेरणा का स्रोत था। मैं इस स्मृति ग्रन्थ का ब्रजभारती के फाल्गुन अङ्क में सम्पादकीय स्तम्भों के अन्तर्गत उल्लेख कर रहा हूँ।

'आशा' के सासनी सर्वेक्षण अङ्क की श्रद्धेय श्री नारायण जी ने सरस्वती में बढ़िया समीक्षा की है। यह समीक्षा नवीन प्रकाशन शीर्षक के अन्तर्गत सरस्वती के दिसम्बर अङ्क में की गई है।

श्री नारायण जी ने मथुरा से प्रेषित समीक्षा तो कर दी है परन्तु आपके पत्रों वाली पुस्तक की अद्यतन नहीं हो पाई है यद्यपि मैं उसकी दो प्रतियाँ उन बहुत सी पुस्तकों के पहले ही दे आया था जो बाद में प्रकाशित हुई हैं और उनकी समीक्षा भी सरस्वती में प्रकाशित हो गई है। शायद वे भूल गये, मैं उनको याद दिलाऊँगा।

पुस्तकालय की व्यवस्था अयोध्या में ठीक ही रहेगी ऐसी आशा है। वहाँ के महन्तों में इसके लिए मैंने रुचि पाई है।

उत्तर प्रदेशीय सम्मेलन का अधिवेशन अबकी बार झाँसी में करने का विचार है।

इतिहास की पुस्तक छप चुकी है। ३६४ पृष्ठ में समाप्त हुई। भूमिका श्री जगदीशप्रसाद चतुर्वेदी से लिखवा रहा हूँ। प्राक्कथन मैंने लगभग लिख लिया है। जगदीशप्रसाद जी को छपे फार्म २, १ दिन में भेजूँगा जिससे वे भूमिका लिख दें। उनसे पहले ही बातें हो चुकी हैं और उन्होंने कृपाकर ऐसा करना स्वीकार कर लिया है।

अबकी बार ब्रजभारती का सम्पादकीय १२ पृष्ठों का हो गया। अगले अङ्क में 'अन्तरजनपदीय कार्य का लेखा जोखा' के रूप में कुछ लिखूँगा तथा आप जब इधर आवेंगे तब एक बैठक भी बुलावेंगे। शेष सब कुशल हैं।

आपका

वृन्दावनदास

(३६२)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २२-२-७२

आदरणीय चतुर्वेदी जी, प्रणाम !

ब्रज-भारती का फाल्गुन अङ्क छप चुका। एक प्रति आपकी सेवा में भेज रहा हूँ। कृपाकर अबकी बार सम्पादकीय को साद्यन्त पढ़ें। आजकल अनेक लोकभाषाओं पर प्रकाशित पत्रिकाएँ मेरे पास आ रही हैं। शायद यह ब्रज-भारती के माध्यम से बनाये गये साहित्यिक सम्पर्क का शुभ परिणाम है। जनपदीय आन्दोलन की चर्चा का माध्यम मेरे पास केवल ब्रज-भारती ही है। मैं इस साधन का ही उपयोग कर रहा हूँ। मेरा ध्येय है समस्त आगत पत्रिका साहित्य का अनुशीलन, आलोड़न तथा ब्रज-भारती के सम्पादकीय स्तम्भों में उसकी समीक्षात्मक चर्चा। इस चर्चा से प्राप्त-सामग्री के सारतत्व का वितरण अनायास ही हो जायगा और जनपदीय कार्यक्रम को बल मिलेगा। १२ पृष्ठीय सम्पादकीय सामग्री से आजकल की जनपदीय गतिविधि का सम्यक् दिग्दर्शन हो सका है ऐसी मेरी धारणा है। इस समस्त साहित्य को पढ़कर इसके निचोड़ को प्रस्तुत करने की क्रिया में मुझे बड़ा परिश्रम करना पड़ता है परन्तु यदि इससे जनपदीय कार्यक्रम को कुछ बल मिला तो मैं अपना परिश्रम सार्थक समझूँगा।

आपने लिखा कि जनपदीय कार्यक्रम पर पन्द्रह दिन में एक बार आप मुझे पत्र लिखेंगे यह जानकर बड़ा हर्ष हुआ। मैं उन पत्रों को भी खास तौर से ब्रज-भारती में देना चाहूँगा। मध्यप्रदेश, बिहार, अरुणाचल आदि में लोक-भाषाओं पर उत्तर प्रदेश की अपेक्षा अधिक काम हो रहा है। समस्त लोक-भाषाओं पर किये जा रहे काम का संक्षिप्त विवरण देकर हमें पारस्परिक सौहार्द बढ़ाना चाहिये। ऐसी मेरी मान्यता है।

आपने डा० राजेश्वरप्रसाद लिखित समीक्षा (स्व० प्यारेलाल जी के स्मृति ग्रन्थ पर) भेजी, परन्तु इसके प्राप्त होने के पूर्व ही मैं उसकी चर्चा सम्पादकीय में कर चुका था। आपकी भेजी हुई समीक्षा को अगले अङ्क में छाप देंगे।

मेरा प्रस्ताव है कि आप जनपदीय आन्दोलन की कुछ चर्चा समाचार पत्रों में भी करें।

स्व० हरिशंकर शर्मा के स्मृतिग्रन्थ के लिए तीन-चार लेख ही मिले हैं। आजकल विद्वन्समाज लेख लिखकर देने में भी बड़ी कृपणता से काम ले रहा है। बड़ी लिखा-पढ़ी के बाद ही लेख सो भी क्वचित् ही मिल पाते हैं हालाँकि

आपके अभि० ग्रन्थ के लिए इस प्रकार की कमी का अनुभव कतई न हुआ था ब्रजभूमि खण्ड के लिए हमने जितने महानुभावों से लेख माँगे थे उनके तीन चौथाई भाग ने हमारे साथ सहयोग किया और इस विषय में कोई कठिनाई नहीं हुई थी।

यदि स्व० प्यारेलाल स्मृति ग्रन्थ की २५ प्रतियाँ और मिल जाँय तो मथुरा के चतुर्वेदी समाज के मध्य वितरण में सुविधा मिलेगी।

श्री कृष्णनन्द गुप्त और रामइकबालसिंह जी के एक-एक ग्रन्थ को छपवाने के लिए आपके सुझाव पर गम्भीरता से विचार कर रहा हूँ। कृपाकर लिखिये उनका आकार क्या होगा। १५०, २०० पृष्ठों की पुस्तक ठीक रहेगी। ४ पेज की भूमिका लिखकर मैं पुस्तक से अपना तादात्म्य स्थापित कर लूँगा। लेखक को ५० प्रतियाँ दी जा सकती हैं। दोनों के प्रति मेरा भी अपार स्नेह है और मैं चाहता हूँ कि उनकी कुछ सेवा इस प्रकार में कर सकूँ।

आपका

वृन्दावनदास

(३६३)

प्रकाश भवन,

मथुरा. २६-२-७२

आदरणीय चतुर्वेदी जी, प्रणाम ! होली की सश्रद्ध बधाई।

कृपापत्र यथा समय प्राप्त हो गया था, अनेक धन्यवाद ! पंकज जी की मेरे ऊपर साहित्यालोक का अङ्क निकालने की मनोकामना आखिर सफल हो ही गई। उनके मन में तो यह बात बहुत समय से थी परन्तु साधनों की क्षीणता के कारण कार्यान्वयन में देर हो रही थी। मेरा तो अनुभव यह हुआ है कि हिन्दी के काम से बड़ा स्नेह और मान मिलता है। पंकज जी के पत्र में तो ८, ७ लेख ही हैं ग्रन्थ के लिए व्यक्तित्व पर आये हुए लगभग ५० लेखों में तो स्नेह वर्षा चरम सीमा पर पहुँच गई है और मुझे जीवन के अन्तिम क्षणों तक भी हिन्दी-सेवा में तल्लीन रहने की प्रेरणा प्रदान कर रही है। मैं तो सभी समादरणीय बन्धुओं का अत्यन्त आभारी हूँ।

डा० मधुकर भट्ट का बड़े स्नेह और आत्मीयता से आपूरित निमन्त्रण पत्र मिला है। वे चाहते हैं कि मैं वाराणसी पहुँचूँ, आपका भी आदेश है और मेरी इच्छा भी आपके वाराणसी में दर्शन करने की है। यदि कोई विशेष बाधा उपस्थित न हुई तो मेरा विचार रामनवमी पर अयोध्या और तदुपरान्त वाराणसी आने का है। आपको और भट्ट जी को अपने आने की तिथि से पूर्व

सूचित करूँगा। मैं सपत्नीक आऊँगा और गौधोलिया स्थित जयपुरिया भवन में ठहरूँगा।

श्री रामइकबालसिंह राकेश तो लोक-साहित्य के धुरन्धर विद्वान् हैं। उनकी लेखन शैली विद्वत्तापूर्ण और विश्लेषणात्मक है। मुझे दुःख है कि उनसे पहले परिचय प्राप्त न हो सका। आपने तो कई पत्रों में उनकी बावत तथा उनसे सम्पर्क करने को मुझे लिखा था और मैंने कदाचित् एकाध दफा उनको लिखा भी था परन्तु कदाचित् उन दिनों वे अस्वस्थ थे। वे बड़े सहृदय और आत्मीयता के भावों से भरे व्यक्ति हैं और उनकी साहित्यिक प्रतिभा तो उच्च-स्तरीय है ही। उन्होंने मुझे एक पाण्डित्यपूर्ण लेख भेजा है, चूँकि वह लोक-साहित्य सम्बन्धी समीक्षात्मक लेख है अतः मैंने उसे ग्रन्थ-सम्पादक डा० आनन्द स्वरूप पाठक को दे दिया है और उन्होंने उसे सहर्ष अङ्गीकार भी कर लिया है।

राजेन्द्र रंजन जी होली की छुट्टियों में मथुरा आ गये हैं। आपका पत्र हमने उन्हें पढ़वा दिया है। वे अपनी डाक्टरी के काम में मस्त हैं उधर दूसरे सम्पादकगण इतनी त्वरा में हैं कि सामग्री का अम्बार लगाते चले जा रहे हैं। वे कहते हैं कि दिल्ली में उनके पास विपुल सामग्री एकत्रित हो गई हैं। जो हो, मैं तो थोड़ी ढील ही दे रहा हूँ जिससे रंजन जी आपकी कल्पना की कोई चीज तैयार करके दे सकें।

स्वर्गीय पं० हरिशंकर जी के स्मृति-ग्रन्थ के सम्बन्ध में अबकी बार सम्पादकीय में लेख भी दे दिया है, यही लेख कई पत्रों में भी निकल चुका है। प्रतिक्रिया बहुत ही स्वल्प हुई है। मुझे इन कामों में सहयोग की कमी से बड़ी निराशा हो जाती है। जिन बन्धुओं के लेखों का महत्व है वे तो लिखकर देते नहीं। लेख तो इकट्ठे कराये ही जा सकते हैं परन्तु उनके प्रति पाठकों का आकर्षण न होगा, स्वयं उनके पुत्र ही कहेंगे कि खानापूर्ति है।

मुझे भाई विद्याशंकर जी से मिलना है। मैं ता० २४ को आगरा गया तो था परन्तु वह यात्रा तो आगरा में बन्धुवर सतीश चतुर्वेदी, राजाबाबू, पंकज जी आदि से मिलने के उपरान्त तोरा ग्राम के उत्सव में सम्मिलित होने के बाद समाप्त हो गई और उसमें विद्याशंकर जी से मिलने का समय ही न बचा। तोरा में उत्सव सफल रहा। मैं डा० राजेश्वर चतुर्वेदी को लेकर लगभग ३ बजे पहुँच गया था। दिव्य जी आगरे के अन्य कुछ साहित्यिकों को लेकर मंच पर विराजमान थे। लोगों ने बड़ा स्वागत सत्कार किया। ३ वर्ष पूर्व हुए अर्द्ध शताब्दी समारोह, आपके तथा अनेक स्नेहमय उल्लेख किये गये। हमने कवि-

रत्न सत्यनारायण पुस्तकालय की स्थापना का सुझाव दिया और १०१) की पुस्तकों के दान की घोषणा कर दी। उपस्थित ग्रामीण वृद्ध समाज ने तो इस सुझाव की भूरि-भूरि प्रशंसा यह कहकर की कि "जाते तो हमें आइबे कौ बहानौ और बैठवे कौ ठीया ही मिल जायगौ आपने जि बड़ी अच्छी बात कही। हम सब भी मिलकर जा काम में सहयोग दिंगे।" शम्भुनाथ जी मिश्र ने होली बाद मथुरा आने और योजनापूर्ति के हेतु अन्तिम वार्तालाप तथा आवश्यक कदम उठाने के लिए वचन दिया। विभव जी ने भवन का शिलान्यास किया है परन्तु अर्द्ध निर्मित भवन उनकी कृपणता का मौन साक्ष्य प्रदान कर रहा है।

श्री लल्लन मिश्र तो पण्डित हैं, बड़ा अच्छा लिखते हैं। मेरे ऊपर बड़ा बढ़िया लेख लिखकर भेजा है। छिपे हुए रत्नों को उद्घाटित करने में आपकी अपूर्व क्षमता है।

शेष सब कुशल है। आशा है आप ज्ञानपुर में ज्ञान के बजाय स्वास्थ्य लाभ कर रहे होंगे कारण ज्ञान का भण्डार तो आपके पास भरापूरा है ही और वह तो लुटाने से निरन्तर वर्द्धमान है, केवल स्वास्थ्य की थोड़ी कमी है और इसी को सम्पन्न करना है।

आपका
वृन्दावनदास

(३६४)

प्रकाश भवन,
मथुरा. १०–३–७२

आदरणीय चतुर्वेदी जी, प्रणाम !

कृपापत्र मिला। धन्यवाद ! कल व्रज-साहित्य मण्डल की स्थायी समिति की बैठक में दिल्ली जा रहा हूँ। मण्डल के सम्बन्ध में आपने जो कुछ लिखा वह ठीक है। मण्डल का काम करने में मेरा केवल एक ही उद्देश्य है और वह यह कि इसको ऐसी मजबूत नींव पर खड़ा कर दिया जाय कि फिर इसे कोई हिला झुला न सके। मैंने अपने अथक परिश्रम से इसको एक रूप तो दे दिया है परन्तु इसमें मैं अभी स्थायित्व नहीं ला पाया हूँ। यदि हमारे सरकारी कर्मचारियों में सार्वजनिक कार्यों के प्रति लेशमात्र भी सहानुभूति और सहयोग की भावना होती तो मैं शायद अपने लक्ष्य-प्राप्ति में सफल हो गया होता। हमारी सभी योजनाऐं सरकारी अधिकारियों की महती उपेक्षा का ग्रास बन गई हैं और कोई प्रगति नहीं हो पा रही है। संसद और विधान सभा के प्रतिनिधियों से मुझे कुछ विशेष आशा कभी नहीं रही है।

संस्थाओं में चुनावी चक्कर बड़ा भयंकर है। लोग महत्वाकांक्षी तो हैं परन्तु अभीप्सित पदों की आसीनता में जो कठोर श्रम सन्निहित है उसका उनको आभास नहीं। किये हुए काम से संस्था में जब चमक आती है तो उसके प्रति पदलोलुपों का आकर्षण बढ़ जाता है, कुछ लोग ईर्ष्यावश बने बनाये महल को ढहा देने के लिए उद्यत हो जाते हैं। लोग यह नहीं देखते कि जो कुछ बड़ी मेहनत से बना है वह कुचक्र से नष्ट हो सकता है। आपने ठीक लिखा कि ब्रजभारती तो बन्द हो ही जायेगी। प्रेस वाला सबसे पहले कागज माँगता है, छपने की बात तो पीछे उठती है। फिर भी स्थिति अभी इतनी भयंकर नहीं है। मैं इन सबको समझा बुझा कर मेल मिलाप के मार्ग पर लारहा हूँ। मेरा पत्र जो अमर उजाला में छपा था आपने पढ़ा होगा मैं समझता हूँ अभी कुछ दिन और मैं मण्डल में कार्यरत रहूँगा और शायद उस काल में कुछ इसका भला हो सके।

श्री कृष्णानन्द जी से झाँसी अधिवेशन में भेंट होगी तब उनकी पुस्तक के सम्बन्ध में बात करूँगा हमारा प्रकाशक लागत बिल्कुल नहीं लगाता। पुस्तक तो हमको छापकर देनी पड़ती है और वह थोड़ी पुस्तकें बदले में ही लेता है। हमारे पीछे पुस्तकों को बाँटने का महारोग लगा है। सस्ते मूल्य पर भी पुस्तकें उपलब्ध कराने की योजनाएँ चला रक्खी हैं। धर्मार्थ पुस्तकालय एक तो खोल ही दिया है, दो एक सार्वजनिक वाचनालय और खोलने ही हैं। अतः यह सब खर्च खाता है परन्तु है कुछ नियमानुसार। यदि नियम और संयम न हो तो कोषागार रिक्त होने में देर क्या लगती है।

पुस्तकों के मामले में तो मैंने स्वलिखित पुस्तकों के मुद्रण, प्रकाशन और वितरण की व्यवस्था ही बनाई है और उसमें मुझे प्रचार और वितरण की दृष्टि से बड़ी सफलता मिली है, दूसरे लेखकों की पुस्तकें तो मैंने छपाई नहीं है। आपने कृष्णानन्दजी और राकेश जी के छोटे-छोटे ग्रन्थों (एक दो) के प्रकाशन के लिए लिखा था इसलिये मैंने अपने विचार व्यक्त कर दिये थे। वैसे तो मैं इससे बचना ही चाहता हूँ। जो कुछ मैंने अपने ऊपर ओट रक्खा है वह इतना अधिक है कि मुझे दम मारने की फुर्सत भी नहीं मिलती। शेष फिर।

आपका

वृन्दावनदास

(३६५)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ४–४–७२

आदरणीय चतुर्वेदी जी प्रणाम ।

आपके कई कृपा पत्र मिल चुके हैं, अनेकानेक धन्यवाद । बन्धुवर जगदीश प्रसाद चतुर्वेदी ने मेरे इतिहास ग्रन्थ की बड़ी भव्य भूमिका लिख कर भेजदी है । मेरी धारणा थी कि पुस्तक में अनेक कमियाँ होंगी परन्तु यह निर्विवाद है कि उसका कोई गुण बन्धुवर जगदीश प्रसाद जी की दृष्टि से ओझल न हो पाया । जिस पक्ष को मैं उल्लेखनीय मानता था वह मेरे बिना किसी इशारे के उन्होंने उजागर कर दिया है । वे कुशल समीक्षाकार हैं, मुझे उनसे यह आशा थी और वह पूर्ण हुई ।

भाई गोपालप्रसाद व्यास ने ३० मार्च को दिल्ली में श्रद्धेय श्री नारायण जी चतुर्वेदी का अभिनन्दन किया था । मैंने उस अवसर को उन्हें सार्वजनिक रूप से धन्यवाद देने के लिए उपयुक्त समझा और मैं दिल्ली पहुँचा । समारोह अत्यधिक सफल रहा । केन्द्रीय मन्त्रियों के आगमन से आयोजन में चार चाँद लग गये । माननीय बाबू जगजीवन राम, श्री राजबहादुर जी, कृष्णचन्द्र पन्त जी, भगवत झा आजाद, सुधाकर जी पाण्डेय, गंगा बाबू आदि सज्जन पधारे । सभी ने चतुर्वेदी जी के गुणों की भूरि-भूरि प्रशंसा की । इस विषय में ब्रजक्षेत्र का प्रतिनिधित्व मैंने किया तथा अभिनन्दन करते हुए भूमिका के लिए भी सार्वजनिक रूप से आभार प्रकट कर दिया । बड़ा आनन्द रहा । मैंने आपके और उनके चिर सान्निध्य का भी जिक्र किया था । ऐसे अवसरों पर आपकी याद तो आती ही है ।

अयोध्या का पुस्तकालय विधिवत् चल रहा है । मैं अबकी बार रामनवमी ता० २३ मार्च को वहाँ ही था ।

डा० आई० डी० सैरीब्रियाकोव मास्को से यहाँ पधारे थे । उस समय इत्तफाक से डा० भगवान सहाय पचौरी और डा० अम्बाप्रसाद 'सुमन' मेरे पास बैठे थे । खूब साहित्यिक चर्चा रही । वे हाथरस के राजा दयाराम और उनके समकालीन अथवा आश्रित बख्तावर कवि के बारे में पूछ-ताछ कर रहे थे । डा० पचौरी ने बताया कि बख्तावर के नाम पर हाथरस में एक गली वर्तमान है । बस, फिर क्या था भोजनोपरान्त डा० सैरीब्रियाकोव हाथरस को ही चल पड़े । वे दिल्ली में संस्कृत महा सम्मेलन में भाग लेने आये थे,

उनके आगमन की पूर्व सूचना मुझे बन्धुवर चैनिशोव से मिल चुकी थी । मैं उनकी वांछित सामग्री को जुटाने का प्रयास करूँगा । हाथरस में अपने परिचित बन्धुओं को इसके लिए खट खटाऊँगा ।

श्री चैनिशोव को लिखे आपके पत्र की प्रतिलिपि मिली । मुझे श्री चैनिशोव का विस्तृत पत्र मिला हैं । अबकी बार सम्पादकीय में मैं आप दोनों महानुभावों की इस जनपदीय सेवा का सविस्तर उल्लेख करूँगा ।

श्री रामरींझन जी रसूलपुरी ने 'उत्तरविहार' में अन्तरजनपदीय परिषद पर एक बहुत ही ज्ञानवर्द्धक लेख लिखा है । उसको में ब्रजभारती में उद्घृत करना चाहता हूँ ।

आपके द्वारा 'प्रेषित अन्तर्जनपदीय शोधकार्य' शीर्षक लेख को मैं ब्रजभारती में छाप रहा हूँ, उसके कुछ Reprints ले लूँगा और उन्हें कुछ साप्ताहिक पत्रों को भेजकर उस लेख को उनके पत्रों में प्रकाशित करने का अनुरोध करूँगा ।

आशा है आप स्वस्थ एवं सानन्द है । कृपाभाव बना रहे ।

आपका
वृन्दावनदास

(३६६)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २१-४-७२

आदरणीय चतुर्वेदी जी ! प्रणाम ।

आपके सब पत्र मिल गये । अनेक धन्यवाद । मण्डल का अधिवेशन २७ अप्रैल को भरतपुर में हो रहा है । निमन्त्रण पत्र संलग्न है । यदि सम्भव हो सके तो पधारें । एक दिन का मेला है ।

मैंने ब्रजभाषा और भोजपुरी की साहित्य अकादमी द्वारा मान्यता दिये जाने के लिए अपने भाषण में पुरजोर अपील कर दी है । भाषण की विज्ञप्ति तो होगी ही । मैं आपसे सहमत हूँ कि अन्तर्जनपदीय परिषद की दृष्टि से यह प्रश्न अत्यन्त महत्वपूर्ण है । लोक भाषाओं को मान्यता देने से उनके कार्यकर्तागण प्रोत्साहित होंगे तथा हससे साहित्य की श्रीवृद्धि होगी । मेरी तो धारणा यही है कि लोक भाषाओं के हित में हिन्दी का हित भी निहित है । लोक भाषाएें तो हिन्दी के ही विभिन्न अंग हैं ।

मण्डल की गति विधियों पर मैंने अपने भाषण में प्रकाश डाल दिया

है। स्थानीय लोग वस्तु स्थिति से पूर्णतया परिचित हैं। दिल्ली के सज्जन बाहर के लोगों में गलतफहमी फैला सकते हैं क्योंकि यह स्वाभाविक है कि उनको यहाँ की जानकारी नहीं। दिल्ली के बन्धुने आपको बाहर का समझ कर ऐसी बातें लिख मारी हैं। मण्डल के पास कोई सम्पत्ति कभी थी ही नहीं। पुस्तकें जरुर थीं जिनकी कीमत इस समय हजार दो हजार से अधिक कदापि नहीं। मैं तो इन बातों की कभी चिन्ता नहीं करता। चाहता हूँ किसी प्रकार यह संस्था अपने पाँवों पर खड़ी हो जाय और चलने लगे। प्रगति बड़ी ही मन्द है। देखिये अगले तीन वर्षों में क्या होता है। इन वर्षों में तो व्रजभारती के निरन्तर २७ अंक निकाल कर मैं कुछ सन्तोष कर लेता हूँ कारण यह कार्य मैंने एकाकी अपने ही बलबूते पर किया है और ईश्वर ने मेरी मद्द की है। व्रजभारती के इन अंकों में जनपदीय कार्य के सम्वन्ध में जो जानकारी दी गई है तथा उससे जो चेतना भी उत्पन्न हुई है उसे मैं पत्रिका की एक उपलब्धि मानता हूँ।

मैं मई की लखनऊ यात्रा में अवकी बार वाराणसी भी आना चाहता हूँ, उस अवसर पर आपके दर्शनों का लाभ होगा। कृपाभाव रक्खें।

आपका
वृन्दावनदास

(३६७)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २६-१०-७३

आदरणीय चतुर्वेदी जी प्रणाम।

कृपा पत्र मिला। अनेक धन्यवाद। आपके लम्बे पत्रों से ऊवने का प्रश्न ही नहीं उठता। जिस व्यक्ति को जिस चीज का मनसा वाचा कर्मणा व्यसन हो उससे वह ऊब कैसे सकता है? हिन्दी का कार्य मेरा हावी वन गया है और सब ओर से ध्यान हटा कर मैंने उसे हिन्दी-कार्य करने की ओर केन्द्रित कर दिया है। जब मुझे हिन्दी के स्वप्न जगत में ही विचरना है तो आपके पत्रों का लाखों बार स्वागत है, कारण उनमें हिन्दी हित चिन्तन ही सर्वोपरि होता है।

व्रज साहित्य मण्डल की भूमि अधिग्रहण हेतु ४३१००) एकत्र कर लिया गया है। २३०००) सेठ गंगा दास झँवर ने दिये और २५ हजार में हमने पहली भूमि अम्बरीश टीला वेच दिया। कलक्टर ने उसके विक्रयकी अनुमति दे दी थी। अब कलक्टरी से चालान बनकर आते ही रुपया जमा कर दिया जायगा। तदुपरान्त award घोषित होगा और हमें भूमि पर अधिकार

प्राप्त हो जायगा। भूमि पर अधिकार प्राप्त कर हम उन महत्वाकांक्षी योजनाओं को कार्यान्वित करने का प्रयास आरम्भ करेंगे जिनकी एक लम्बे काल से प्रतीक्षा की जा रही थी।

रंजन जी को Typhaid होगया था, वे १५, २० दिन के उपरान्त कल मुझसे मिलने आये थे। एक बार सासनी जाना पड़ेगा तब अन्तर्जनदीप परिषद के अधिवेशन की योजना वहाँ से patrons से बनाना सम्भव होगा। डा० डोरीलालजी ने कागज की कमी के कारण पाठकों के पत्र छापना ही बन्द कर दिया था। मुझे प्रसन्नता है कि मेरे यहाँ लिखने पर कि इससे तो पाठकों और आपके बीच संपर्कसूत्र ही टूट जायगा और पत्र की उपयोगिता घट जायगी उन्होंने पाठकों के पत्र छापना पुनः आरम्भ कर दिया है।

पं० श्री नारायण जी की पुस्तक मैं अकादमी से ले आया हूँ पढ़कर विस्तृत समीक्षा करूँगा। बड़े-बड़े धुरन्धर विद्वानों की भी यह धारणा है कि लोक भाषाओं का उन्नयन हिन्दी के हित में बाधक होगा। उनका मत है कि यदि अपने-अपने क्षेत्रों में लोक भाषाएँ सक्रिय होजाँयगी तो हिन्दी को पूछेगा कौन ? हिन्दी फिर रह ही कहाँ जायगी। हमारा यह तर्क कि लोक भाषाओं की परिधि अत्यन्त सीमित है, वे पूरे देश की राष्ट्रभाषा को जो व्यापक रूप से प्रचलित है कदापि अपदस्थ नहीं कर सकती। लोक भाषा तो क्या कोई भी अन्य भारतीय भाषा हिन्दी का विकल्प कभी हो ही नहीं सकती। फिर लोक भाषाएँ तो हिन्दी के ही विभिन्न रूप हैं, जनपदीय रूप कह लीजिये। इन्हीं जनपदीय भाषाओं का परिष्कृत स्वरूप तो हिन्दी है। इसीलिये तो डा० वासुदेवशरण अग्रवाल, मैथिलीशरण गुप्त, रामकृष्णदास, डा० मोतीचन्द्र और स्वयं आप कहते- कहते नहीं थकते कि लोक भाषाओं के कोश छपने चाहिये, इन कोशों के छपने पर हिन्दी का एक ऐसा महाकोश बनेगा जो विश्व साहित्य में अप्रतिम होगा और जिससे हिन्दी की दरिद्रता सदा के लिए दूर हो जायगी।

निशंकजी हमारे परम मित्र हैं। जब कभी मैं लखनऊ पहुँचता हूँ तो मालुम होते ही वे मेरे निवास स्थान पर अवश्यमेष आते हैं और साहित्यिक विषयों पर चर्चा करते हैं। मैं सुकवि विनोद के ग्राहक और बनवाऊँगा तथा ब्रजभाषा की कृतियाँ उनको भिजवाता रहूँगा।

डा० मलखान सिंह जी सिसोदिया से बराबर सम्पर्क बना रहता है। उनके लेख ब्रजभारती में निकलते रहते हैं। उनको साहित्य वारिधि भी हमने

ही बनवाया हैं। वे सही किस्म के साहित्यिक हैं और माण्डलिक गतिविधियों में सदा प्रमुख भाग लेते हैं। साहित्यि वाचस्पति भी वे बनेंगे इसमें कोई सन्देह नहीं। उनका प्रेषित अंडमान अंक आज ही मिला। इस अंक में आपकी प्रेरणा ही सर्वत्र दृष्टिगोचर है। सुन्दर अंक निकला है। डा० सिसोदिया उच्च कोटि के कवि भी हैं।

श्री कृष्णानन्द गुप्त ने जो पत्र हमें भेजे थे वे छप चुके हैं। नाहटाजी वाले पत्र भी छप चुके अब आपको लिखे पत्र छप रहे हैं। मीतलजी, सत्येन्द्रजी, सुमन जी आदि के पत्र छपने शेष हैं।

दिल्ली में व्यास जी हिन्दी भवन बनवा रहे हैं यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई। अब तो उन्हें किसी दिन मथुरा बुलाकर लड्डू खिलावेंगे।

अंजोर का अंक मैंने पढ़ लिया है। मेरे पास उसकी दो प्रतियाँ आ चुकी हैं। आंजनेय-कुलदीप नारायण वार्ता बड़ी सार गर्मित है तथा जनपदीय आंदोलन पर प्रकाश डालती है।

बन्धुवर शम्भुनाथ जी को स्व० राधेलाल जी के स्मृति अंक को शीघ्र प्रकाशित करने को लिख रहा हूँ। भाई राजेश्वर जी कहते थे कि ग्रन्थ तैयार है, छपने की व्यवस्था होनी शेष है।

डा० चैंनिशोव को आपके सुझावों के विषय में लिखूँगा। उन्होंने ब्रजभाषा की नई पुस्तकें माँगी थी वे इकट्ठी करली हैं। उन्हें भी भेज रहा हूँ तथा एक विस्तृत पत्र भी उन्हें लिख रहा हूँ।

सर्वश्री ओमनारायण माधवसेन और उमेश शुक्ल को ब्रजभारती के अंक भेज रहा हूँ। उनसे पत्र व्यवहार भी करूँगा। कविताएँ तो सुकवि विनोद में ही छपने भिजवाइये, हमारे पास कविताओं को छापने के लिए स्थान का अभाव हैं।

ओरछेश जी पर आप जो पुस्तक छपाना चाहते हैं और जिसके लिए ४५०) आपने इकट्ठे कर लिए हैं उसकी पाण्डु लिपि और रुपये मेरे पास भेज दीजिये, मैं उसे ११०० छपा दूँगा आपके रुपये की लागत भाव से जितनी पुस्तकें होंगी वे आपको भेजदी जाँयगी शेष पुस्तकों से मै निवट लूँगा।

यही प्रक्रिया १२८ पृष्ठ की पुस्तिका (राजकुमारी जी की कविताओं की) पर भी लागू करनी होगी। यद्यपि मुझे इस छपाने और पुस्तकें खपाने के काम में बड़ी दिक्कत और परेशानी होती है, आर्थिक क्षति भी काफी होती है लेकिन किया क्या जाय। जरूरी काम तो करने ही होंगे।

मैं गणेश शंकर जी पर की हुई शोध को भी छपाने की व्यवस्था अवश्य करूँगा, उसे प्रकाशक की मार्फत ही तय करना है ।

दीपावली की आपको मानपूर्वक अनेक बधाइयाँ । नूतन वर्ष शुभ हो ।

आपका
वृन्दावनदास

(३६८)

प्रकाश भवन,
मथुरा. १८-११-७७

मान्यवर चतुर्वेदी जी ! प्रणाम ।

जनपदीय आन्दोलन की रूप रेखा शीर्षक एक लेख मैंने कई पत्रों में प्रकाशित कर दिया है । वृत्तान्त (दिनाँक ३१ नवम्बर) की एक प्रति आपकी सेवा में भेज रहा हूँ, इसमें यह लेख मुद्रित है । ब्रजभारती की संपादकीय टिप्पणी भी इसको लेकर है । यह अंक ८, १० दिन में आपके पास पहुँचेगा ।

हमारे कतिपय शीर्षस्थ हिन्दी विद्वान् जनपदीय आन्दोलन अथवा लोक भाषाओं के उन्नयन में हिन्दी-हितों की हानि का अनुमान लगाते हैं । उनकी धारणा है कि यदि लोक भाषाएँ बलवती हो गईं तो वे हिन्दी के प्रचार- प्रसार में बाधक होंगी । इसके विपरीत लोकभाषाओं के कार्यकर्त्ता तो राष्ट्र भाषा के रूप में हिन्दी को शिरोधार्य करके ही अपनी भाषा का साहित्यिक परिष्कार अथवा उन्नयन करना चाहते हैं जिसे किसी प्रकार रोका भी नहीं जा सकता । इस स्थिति में जनपदीय आन्दोलन को गतिशील बनाना ही समय की सबसे बड़ी माँग है । इससे लोक भाषाओं के प्रति रुचि उत्पन्न होगी और हिन्दी का दारिद्र्य दूर होगा ।

भाई कुलदीप-नारायण पूर्वी क्षेत्रों में जनपदीय आन्दोलन को निस्संदेह रूप से गतिशील बना रहे हैं । वे अनेक स्थानों पर जाकर स्थानीय कार्य-कर्त्ताओं से सम्पर्क स्थापित कर चुके हैं । मैं उनके कार्यों का लेखाजोखा रक्खूँगा और उसकी वांछित विज्ञप्ति भी करूँगा । मैंने 'वृत्तान्त' की एक प्रति उनको भी भेजी है । सासनी का सूत्र भी सम्हालना है ।

हमने ब्रजभारती में निरन्तर सरकार का ध्यान आकर्षित किया है कि उन्हें केवल अपने मत्रालयों पर ही हिन्दी-योजनाओं के लिए निर्भर न रहना चाहिये, देश में यत्र तत्र सर्वत्र प्रतिभा विखरी पड़ी है उसका भी उपयोग करते रहना चाहिये । पुस्तकों के हिन्दी अनुवाद, प्राविधिक साहित्य का निर्माण,

विधि सम्बन्धी साहित्य का हिन्दीकरण आदि विषयों पर सरकारी मशीनरी बड़ी शिथिल रही है, उन्होंने जितना इन कार्यों पर व्यय किया है परिणाम में फल उसका आधा भी नहीं मिला है। यदि वे प्रादेशिक स्तर पर कार्य कर रही हिन्दी-सेवी संस्थाओं या व्यक्तियों का सहयोग लेते तो काम अच्छा और किफायत से हो सकता था। बड़े हर्ष का विषय है कि मथुरा के श्री शर्मन लाल अग्रवाल को Law of Torts के हिन्दी अनुवाद पर ५०००) का पुरस्कार मिला है। इस उदाहरण से हमारे कथन की पुष्टि हो रही है।

आपका भेजा हुआ लेख मिला, इसे ब्रज भारती के आगामी (फाल्गुन अंक) में छापकर पुनर्मुद्रण निकलवा लेंगे और आपको तथा श्री कुलदीप जी को भेज देंगे।

श्री उमेश जोशी का पत्र आया है। ता० २४ दिसम्बर को वल्लभ जी का सम्मान करना चाहते हैं, मुझे भी संरक्षकों में से एक बनाना चाहते हैं, तथा १०१) संरक्षक शुल्क भी माँग रहे हैं। स्मारिका भी निकालेंगे। मैं उनकी बात मान लूँगा और १०१) का चैक उनको भेज दूँगा।

भाई शम्भुनाथ जी अपने पिता जी के स्मृति अंक की वांछित व्यवस्था शीघ्र कर रहे हैं ऐसा उन्होंने मुझे लिखा था। उनके उत्सव में अवश्य सम्मिलित हो जाऊँगा अगर तिथि मेरे किसी अन्य पूर्व निश्चित कार्यक्रम में बाधक न हुई तो। अभी इस सम्बन्ध में मुझे कोई सूचना प्राप्त नहीं हुई है। कृपा भाव रक्खें।

आपका
वृन्दावनदास

(३६९)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २४–११–७७

आदरणीय चतुर्वेदी जी, प्रणाम।

आज रमेशचन्द्र जी दुवे के द्वारा भेजी हुई विज्ञप्तियों का बण्डल मिला। ये विज्ञप्तियाँ आचार्य पं० पद्मसिंह शर्मा की प्रस्तावित जयन्ती के सम्बन्ध में है। स्मृति-ग्रन्थ के लिए मसाला इकट्ठा करना है। किन-किन महानुभावों से लेख मँगाने चाहियें। विज्ञप्ति में संगी साथियों के संस्मरणों पर अधिक जोर दिया गया है। वैसे आचार्य जी के साहित्य पर तो लिखा ही जा सकता है, कारण उनका पुष्कल साहित्य सौभाग्य से प्रकाशित है।

कुछ विज्ञप्तयाँ आपको भेज रहा हूँ। आप अपना लेख मुझे भेज दें।

दुवे जी ने तो लिखा हैं कि सारा काम मुझे ही करना है। आपका मार्ग दर्शन अपेक्षित है। यह पुण्य कार्य होजाय तो बहुत बड़ी बात होगी।

डा० अग्रवाल के पत्रों के छपे फर्मे देखकर रंजन जी बहुत खुश हुए, उन्होंने कहा कि यह बहुत बड़ा काम होगया। उस संग्रह में आपको लिखे गये पत्रों का महत्व सर्वाधिक है। पुस्तक का ¾ भाग छप चुका है।

सासनी के विद्यालय में उपद्रव होगया। छात्रों ने यहाँ तक कहा है कि हमें विद्वानों के लेखों से युक्त पत्रिका न चाहिये, हमें तो जैसी पत्रिका हमेशा से मिल रही है वैसी ही मिलनी चाहिये। उनकी द्वादश माँगों में एक माँग यह भी है। मालुम होता है कि रागद्वेष से प्रेरित कुछ अध्यापकों का इसमें हाथ है। रंजन जी सासनी वाले सम्मेलन के प्रति कुछ हतोत्साह से हैं। उनका ख्याल है कि शायद इस वर्ष वह सफल न हो सकेगा। वैसे उनका लोक शास्त्र अंक तो पूरा हो चुका है ऐसा प्रतीत होता है। राया इंटर कालेज ने भी बड़ा सुन्दर अंक निकाला हैं। मथुरा जनपद में जनपदीय अंकों के प्रकाशन की प्रगति अच्छी है। कृपाभाव रक्खें।

आपका

वृन्दावनदास

(३७०)

प्रकाश भवन,

मथुरा. २०-६-७५

आदरणीय चतुर्वेदी जी ! प्रणाम।

आपके कृपापत्र मिल गये। मैंने आपको चित्रकूट से भी एक पत्र लिखा था, पहुँचा होगा।

मीतल जी ने जो पंक्ति अपने भाषण में समाविष्ट करदी वह सर्वथा अविचारित ही समझी जानी चाहिये। यदि कोई संस्था निष्क्रिय है तो वह भविष्य में भी रहेगी यदि उसके कार्यकर्ता अकर्मण्य हैं। अतीत में ब्रजसाहित्य मण्डल के कार्यकर्ताओं के कार्यकलाप सदा ही अव्यवास्थित रहे, उन्होंने कभी सुविचारित योजनाऐं कार्यान्वित नहीं की, अन्यथा उसमें गतिरोध की स्थिति उत्पन्न होने का कोई कारण ही समुपस्थित न होता। या तो लोग जुवानी जमा खर्च करते रहे अथवा यदि कुछ लोग सक्रिय होकर रुपया लाये भी तो उन्होंने उसे अधिवेशनरूपी तमाशों में उड़ा डाला। मैंने जब इस कार्य भार को सम्हाला था तो मैं उस पूर्व स्थिति से भलीभाँति परिचित था। मैंने ठोस काम करने की ही इच्छा से प्रकाशन किया और नियमित रूप से अद्यतन

व्रजभारती के २८ अंक निकाल कर हिन्दी संसार को देदिये । जो लोग कहते हैं कि कुछ नहीं है अथवा कुछ नहीं हुआ ये वही हैं जिन्होंने स्वयं कभी कुछ नहीं किया और न करना चाहते हैं और न करेंगे । यदि व्रज साहित्य मण्डल नाम मात्र को ही अस्तित्व में है तो उसका दोष उन्हीं पर है जो स्वयं निष्क्रिय हैं और व्रज भाषा के दावेदार तो बनते हैं परन्तु करने धरने को उनके पास कुछ भी नहीं हैं ।

यदि आप चाहें मेरे उपर्युक्त विचार उद्धृत कर सकते हैं । साहित्यिक बन्धुओं के अगाणित पत्र मेरे पास आये हैं और उन्होंने व्रज भारती द्वारा की गई जनपदीय-सेवा की भूरि-भूरि प्रशंसा की है । व्रजभारती ने सभी लोक भाषाओं का समादर किया है, कहाँ क्या होरहा है इस पर प्रकाश डाला है तथा जहाँ जो अच्छा काम होरहा है उसके प्रति सद्भावना व्यक्त की है । विभिन्न लोकभाषाओं की अनेक पत्रिकाएँ मेरे पास आती हैं मैं उन सभी की न्यूनाधिक समीक्षा करके उनको प्रकाश में लाता हूँ । मण्डल और सम्मेलन के मन्चो से व्रजभाषा और हिन्दी का अविछिन्न सम्बन्ध स्थापित करते हुए सभी लोकभाषाओं और हिन्दी के पारस्परिक सम्बन्धों में प्रचुर सौहार्द और समन्वय का वातावरण बनाता रहा हूँ ।

श्री यशपाल जैन को २३ सितम्बर के दिन हस्तलिखित अभि० ग्रन्थ सर्मापित होरहा है इधर हमारे उपाध्यक्ष सेठ गंगादास झँवर भी शायद २२, २३ में आरहे हैं, यदि कोई व्यवधान उपस्थित न हुआ तो मैं दिल्ली जाऊँगा ।

भाद्रपद की पत्रिका २, ४ दिन में पहुँचेगी दौनों सम्मेलनों के अधिवेशन सानन्द सम्पन्न होगये । जो होना था होगया । चर्चाएँ खूब रहीं । उसका जो कुछ भी महत्व हो वह तो आप मुझसे अधिक जानते हैं ।

मैं हिन्दी दिवस के अवसर पर प्रयाग में ही था । वहाँ भारती परिषद वालों ने मेरी अध्यक्षता में एक समारोह किया था जिसमें ३० प्रतिनिधि कवियों को अंग वस्त्रम् समर्पित करके तिलकायित किया गया । राष्ट्र कवि दिनकर मुख्य अतिथि थे । थोड़ी देर के लिए मौरिशस के डा० रवीन्द्र घरभरन भी उपस्थित रहे । कवि सम्मेलन में अवधी, भोजपुरी और हिन्दी की ही त्रिवेणी प्रवाहित होती रही व्रज भाषा की कविता तो एकाध ही हुई ।

मैं सत्य नारायण कुटीर में ठहरा था ।

शेष सब कुशल हैं ।

आपका

वृन्दावनदास

(३७१)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २६–६–७२

आदरणीय चतुर्वेदी जी ! प्रणाम ।

ता० २३ को श्री यशपाल जैन के षष्टि पूर्ति-समारोह में सम्मिलित होने को दिल्ली गया था। बाबू जगजीवनराम जी के द्वारा श्री यशपाल को हस्तलिखित ग्रन्थ समर्पित हुआ। दिल्ली निवासी साहित्यिक बन्धु अच्छी संख्या में पधारे थे। हमने भी व्रज साहित्य मण्डल और ब्रज क्षेत्र की ओर से उनके अभिनन्दन में कुछ शब्द कहे थे। कई भाषणों में आपके शुभ नाम का भी उल्लेख हुआ था। आपके उनके इतने प्रगाढ़ सम्बन्ध रहे हैं कि यह तो स्वाभाविक ही था।

ता० २४ और २५ को दोनों दिन सेठ गंगादास जी झँवर के सम्मान में संगीत गोष्ठियों का आयोजन हुआ था। झँवर साहब को हमने मण्डल का उपाध्यक्ष निर्वाचित किया है। वे उद्योगपति तो हैं हीं कलाकार भी बड़ी उच्च कोटि के हैं। लक्ष्मी और सरस्वती का विलक्षण संयोग है। शास्त्रीय संगीत बड़ा अच्छा प्रस्तुत करते हैं। उन्हें २०० के लगभग व्रज भाषा के ख्याल कण्ठस्थ हैं और उन्हें वे विभिन्न गायकियों में गाते रहते हैं।

ता० २४ को बन्धुवर बालकृष्ण जी गुप्त बाबा पृथ्वीसिंह जी आजाद के साथ मेरे निवास स्थान पर पधारे थे। बाबा का दर्शन अद्भुत है। उन्होंने मेरे साथ चायपान किया और अनेक मनोरंजक संस्मरण सुनाये। उनको सांसारिक ज्ञान प्रचुर मात्रा में प्राप्त है, अनुभवी व्यक्ति हैं। मैंने उनसे कहा था कि श्रद्धेय चतुर्वेदी जी के बीसियों पत्रों में अनुरोध के बावजूद मैं अभी तक आपके दर्शन करने कहीं न पहुँच सका था, यद्यपि कई बार उन्होंने उन ट्रेनों का विवरण भी दिया था जिनसे आप मथुरा होकर गुजरे थे। बाबा की महान् कृपा हुई। बालकृष्ण जी उन्हें मुझसे मिलवा कर श्याम को जनता से विदा कर आये और फिर झँवर साहिब के सम्मान में आयोजित गोष्ठी में भी सम्मिलित हुए थे।

श्री युगलकिशोर जी चतुर्वेदी के अभि० ग्रन्थ के लिए आप अवश्य ही कोई संस्मरणात्मक लेख अथवा वह सम्भव न हो तो आशीर्वाद स्वरूप कुछ शब्द ही लिख भेजे। उन्होंने उस ग्रन्थ का प्रधान सम्पादक मुझे ही बना दिया है तथा मेरे द्वारा काफी मसाला एतदर्थ संगृहीत भी हुआ है।

शेष सब कुशल हैं । आशा है आप स्वस्थ एवं सानन्द हैं ।

आपका
वृन्दावनदास

(३७२)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ७-१०-७२

आदरणीय चतुर्वेदी जी ! प्रणाम ।

सौभाग्य से या दुर्भाग्य से मुझे संस्थाओं की बैठकों, समारोहों और अधिवेशनों की अध्यक्षता करने के अवसर बहुत आये हैं । नगरपालिका से मेरा तीस वर्ष तक सम्बन्ध रहा । नगरपालिका का तमाशा बड़ा विचित्र है । यदि सदस्य कभी अपने को मनोविनोद अथवा अवकाश की मनःस्थिति में पाते हैं तो भाषण कला के प्रदर्शन का द्वार खुल जाता है । भाषणों में एक दूसरे पर चोट, दलीय संघर्ष तथा अध्यक्ष पर भी निराधार आरापों की बौछार होती रहती है । संयत, असंयत दोनों प्रकार की भाषाओं का खुलकर प्रयोग होता है । अध्यक्ष पर जिन कल्पित तथा मिथ्या आरोपों को लेकर प्रहार होता है उसकी यदि वह सफाई देता है तो मामला केवल और ही उलझता है, शान्ति स्थापित नहीं हो सकती । भ्रष्ट, शिथिल, अकर्मण्य, समस्त वेतनभोगी कर्मचारियों के करने न करने के सभी कार्यों का दायित्व अध्यक्ष पर डाल कर उसकी खाल खींची जाती है । तुर्रा यह है कि जब दोषी कर्मचारियों को अध्यक्ष दण्डित करने पर उतारू होता है तो इन्हीं सदस्यों में से कुछ उसको वैसा न करने के लिए मजबूर करते हैं, यदि अध्यक्ष उनकी न माने तो बस 'तू मेरा न मैं तेरा ।

'मेरी सदैव यह धारणा रही है कि कार्यकर्ता को अपनी संस्था के विधान की जानकारी अवश्य होनी चाहिये, बिना इसके उसकी पकड़ सदैव ढीली रहेगी और वह अपनी जिम्मेदारी का निर्वाह सफलता पूर्वक नहीं कर सकेगा । लगभग तीस वर्ष हुए मैं यू० पी० म्यूनिसिपैलिटीज एक्ट की एक एक amotated पुस्तक देख रहा था । एक Section की Commentary में एक नोट मुझे इस प्रकार दिखाई पड़ा । उसको मैं यहाँ अक्षरशः उद्धृत करने का लोभ संवरण नही कर सकता । नोट इस प्रकार है ।

Qualifications of a president—The statute prescribes the qualifications of the president. The passage of Albert crew's treatise on procedure at meetings will pay persual.

"The ideal chairman should be man of infinite tact and petience, possess a judicial mind, be able to command the respect of the meetiag, be absolutely impartial in his rulings, never allowing the latter to be questioned and always ready and resourceful when difficulties arise. He should be firm yet courteous, to be carried away by party or other feelings. able to endure bores cheerfully and circumvent mere destructionist skillfully.

A chairman should possess a calm placid temperment, have proper slense of the dignity of this position. not to sule gariulous, and be accustomed. to rule without fussiness, banter or bullying.

A good chairman should be able to govern a meeting with genial domination and be a benevolent autocrat, not overbearing or brusqe in maunar, but deter mined in a quiet way to have the business of the meeting transacted in a orderly and expeditions manner.

एक आदर्श अध्यक्ष के जितने गुण वर्णित हैं वे तो ईश्वर प्रदत्त होकर प्रतिभाशाली व्यक्तित्व में ही विद्यमान हो सकते हैं परन्तु निरन्तर अभ्यास से भी इनमें से कुछ गुण आत्मसात् किये जा सकते हैं। आपने अपने लेख में जो निराधार आरोपों से मेरे चिन्तातुर और उद्विग्न न होने की बात लिखने की कृपा की है वह इसी अभ्यास का थोड़ा सा सुफल है। फिर आप भी तो अक्सर मुझे लिखा ही करते हैं 'माध्यस्थ मानो विपरीत वृत्तौ।

महाभारत में भी एक प्रसंग है और वह है श्रीकृष्ण नारद सम्वाद। श्रीकृष्ण ने अन्धक वृष्णि संघ की समिति में कटु विवादों और अपनी सामर्थ्य विहीनता की शिकायत नारद जी से की है। उन्होंने कहा है कि प्रमुख होते हुए भी उन्हें वाग्बाण सहन करने पड़ते हैं, अक्रूर आदि नेताओं के कटु प्रहारों से उद्विग्नता उत्पन्न होतीहै। नारद ने कहा, आप तो सर्वज्ञ हैं, ज्ञानियों को मीठे वचन और दानादि से सन्तुष्ट करो, फूट न पड़ने दो। देश और ज्ञानियों के हित में सहनशीलता के अनुपम गुण को आत्मसात् करो। आदि आदि, बड़ा ही रोचक प्रसङ्ग हैं। भीष्म से नीति का वर्णन करते हुए कहा है। आजकल ब्रज भारती के सम्पादकीय को पसन्द करते हुए कई बन्धुओं ने बड़ी सद्भावना युक्त अभिव्यक्ति की है। उसके कुछ उद्धरण अगले पत्र में

लिखूँगा। डा० वैर्नीशोव के एक दो पत्रों की प्रतिलिपि भी भेजूँगा।

कृपाभाव रक्खें।

आपका

वृन्दावनदास

पुनश्च—

एलबर्ट ल्यू ने एक आदर्श समाध्यक्ष के जो अनुपम गुण बताये हैं वे अधिकांशतः स्वर्गवासी रायबहादुर बाबू जमनाप्रशाद में मौजूद थे। राय बहादुर साहब मथुरा नगर पालिका के लगभग १५ वर्ष चेअरमैन रहे, उनके कार्य काल में मैं दस वर्ष सदस्य रहा। मैं इसको अपना सौभाग्य समझता हूँ।

(३७३)

प्रकाश भवन,

मथुरा. १०–२–७३

आदरणीय चतुर्वेदी जी ! प्रणाम।

कृपा पत्र मिला। अनेक धन्यवाद। यह तो ठीक ही है कि विज्ञापन आजकल सार्वजनिक जीवन में सारतत्व है। पर इसके करने के लिए भी अक्ल चाहिये और यह हरेक के बस की बात नहीं है।

मेरे पौत्र का शुभ विवाह ता० १७ फरवरी का है। बारात फीरोजाबाद ही जायगी। श्री बालकृष्ण गोयल (लल्लाबाबू) की पुत्री से ही सम्बन्ध हुआ है। उस अवसर पर आप फीरोजाबाद ही रहें ऐसी अनेक मथुरा और फीरोजाबाद वासियों की हार्दिक इच्छा है। मैं भी समझता हूँ कि आपकी उपस्थिति से उभय पक्ष के लोग गौरवान्वित होंगे। अतः कृपाकर १५, १६ को ही फीरोजाबाद पहुँच जांय। वहाँ तो आपका घर ही है।

ब्रज-साहित्य मण्डल के कार्यकर्त्ता भी उपाधि प्राप्ति के सिलसिले में आपका अभिनन्दन करना चाहते हैं। उन्होंने मुझसे कहा है कि आपसे मथुरा भी आने की प्रार्थना करूँ। कृपाकर ऐसी व्यवस्था करें कि दोनों कार्यक्रम ही सफल हो जायें।

कृपा भाव रक्खें। मैं विवाह सम्बन्धी कार्यक्रमों में व्यस्त हूँ अन्यथा बिन बुलाये भी आपके अभिनन्दनोत्सवों में दिल्ली पहुँचता। डा० आनन्दस्वरूप पाठक आज पधारे थे, उन्होंने दिल्ली के आयोजन की भव्यता के विषय में कहा था।

आपका

वृन्दावनदास

(३७४)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २३-३-७३

आदरणीय चतुर्वेदी जी, प्रणाम !

आपका कृपा पत्र रामराज्य के पृष्ठ सहित मिला। रामराज्य में छपे आचार्य लक्ष्मीकान्त जी त्रिपाठी के पत्र, आपके आभार प्रदर्शन तथा सम्पादकीय टिप्पणी को पढ़कर हृदय गद्गद् हो गया। तीनों ही उपर्युक्त लेख अन्तस्तल की शुद्ध एवं पावन भावना से लिखे हुए और मन को आनन्द विभोर करने वाले हैं। ब्रजभारती में दी हुई मेरी टिप्पणी इनकी उत्कृष्टता को कहाँ पहुँच सकती है ?

उन विशेष सुख और सुविधाओं का उपभोग करते हुए भी जो आपके जीवन में सर्वथा आपसे दूर ही रही हैं जब मैं अपने जीवन में नीरसता और नैराश्य का अनुभव करने लगता हूँ तब मैं अपने ख्यालों की दुनियाँ में आपकी गगनचुम्बी महानता का अनुभव करता हूँ। विषम परिस्थितियों में भी आपने सदैव कर्तव्य कर्म को ही अपनाया है और ऐहिक उलझनों की उपेक्षा की है। शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक, सामाजिक अनेक व्याधियों को एक तरफ रखकर जो व्यक्ति निरन्तर सेवा के पथ पर आरूढ़ रहते हैं उनका व्यक्तित्व निःसन्देह वन्दनीय है।

मैं रामराज्य के सम्पादक महोदय श्री रामनाथ गुप्त और आचार्य लक्ष्मीकान्त जी त्रिपाठी को आपके पत्र संग्रह की एक-एक प्रति भेंट करना चाहता हूँ। सोचता हूँ कि दोनों प्रतियाँ रजिस्टर्ड बुक-पोस्ट से बाबू रामनाथ गुप्त को ही भेज दूँ, वे ही उनमें से एक त्रिपाठी जी को दे देंगे।

आपकी आज्ञानुसार श्री प्रकाशचन्द्र जी मुख्य मन्त्री मध्य प्रदेश को मण्डल की ओर से एक पत्र भेज रहा हूँ। वहाँ से उत्तर आने पर तदनुसार आपको सूचित करूँगा।

शेष सब कुशल है। पहले पत्नी की बीमारी और अब उनके कुछ चंगा होने पर अपनी डाढ़ की पीड़ा ने मुझे झकझोर डाला। लेकिन चिन्ता की कोई बात नहीं है।

स्व० द्वारिकानाथ भार्गव की स्मृति में एक पुस्तकालय की स्थापना मैंने करा दी है। अमरनाथ विद्याश्रम के कर्मठ प्रधानाचार्य श्री आनन्दमोहन जी बाजपेयी उसकी समुचित व्यवस्था करने तथा उसे समुन्नत बनाने के लिए

कृत संकल्प एवं दत्तचित्त हैं। मुझे आशा है कि बाजपेयी जी की कर्मठता के फलस्वरूप पुस्तकालय मथुरा की एक वास्तविक एवं श्रेष्ठ उपयोगी संस्था के रूप में विकसित होगा।

शेष सब कुशल है। कृपाभाव रक्खें।

पं० पद्मसिंह शर्मा पर लिखे हुए आपके लेख पर टिप्पणी करते हुए आचार्य किशोरीदास जी बाजपेयी ने लिखा है। उनका पत्र इस प्रकार है—

ब्रजभारती का फाल्गुन अङ्क मिला! आप मण्डल का संचालन भार दूसरे मजबूत कन्धों को सौंपने में सम्पन्न हो गये हैं यह हर्ष की बात है। काव्य और संगीत का संगम, अँगूठी में नगीना। ब्रज भारती के पृष्ठ उलट-पलट कर मैं जरूर देख लेता हूँ यद्यपि आँखों से परेशानी होती है कुछ पढ़ने में। आप थोड़े से पृष्ठों में अधिक से अधिक उपयोगी सामग्री देते हैं। आकार प्रकार में ब्रज-भारती आकर्षण नहीं रखती पर इसका अन्तरंग आकर्षक है। इस अङ्क में फक्कड़ी फैलो भाई बनारसीदास चतुर्वेदी का लिखा पं० पद्मसिंह शर्मा संस्मरण पढ़ा शर्मा जी से ही मुझे तथा चतुर्वेदी जी को चाय दीक्षा' मिली थी। मैंने पं० पद्मसिंह शर्मा जैसा सहृदय नहीं देखा। **—किशोरीदास बाजपेयी**

मण्डल का भार तो मैं ही वहन कर रहा हूँ हाँ अब अध्यक्ष के साथ कार्य वाहक शब्द और जुड़ गया है। झँवर साहब से आशा बनी हुई है। जब फलवती हो जायगी आपको भी इससे अवगत करूँगा।

आपका
वृन्दावनदास

(३७५)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २४–४–७३

आदरणीय चतुर्वेदी जी, प्रणाम!

भगवान पशुपतिनाथ के दर्शन करने के बाद काठमाण्डू में तीन दिन और ठहरे। भैरवा की flight रिजर्व करा ली परन्तु ऐन मौके पर flight Cancel हो गई और फिर दूसरे दिन पटना की flight avail की।पटना में साहित्यकों से मिलकर बड़ा आनन्द प्राप्त हुआ। सबसे पहले पं० श्रीराम शर्मा पाण्डे के निवास स्थान पर पहुंचा। उन्होंने मुझे साथ लेजाकर सब ही बन्धुओं से मिलाया। दूसरे दिन जनपदीय कार्यकर्ताओं ने हमारा अभिनन्दन भी किया था। वहाँ पर जनपदीय कार्य खूब प्रगति कर रहा है। लोक

भाषाओं पर काम करने में कार्यकर्ताओं की अत्यधिक रुचि है। मुझे वहां मालूम हुआ कि आप वहाँ सारन जिले में एक मास तक ठहर चुके हैं। वहाँ के साहित्यिक बन्धु सदैव आपका बड़े स्नेह और आदर के साथ स्मरण करते हैं।

मैं डा० अग्रवाल के पत्रों के मुद्रण का कार्य अविलम्ब शुरू करने वाला हूँ। काफी पत्रों का सम्पादन कर चुका हूँ तथा भूमिका भी लिखना शुरू कर दिया है।

आशा है आप स्वस्थ एवं सानन्द हैं। कृपा भाव रखें, हमने अयोध्या में पं० पद्मसिंह शर्मा और कविरत्न सत्यनारायण की जयन्तियाँ मनाईं। व्यग्र जी भी उपस्थित थे। वे आपके परिचित हैं।

आपका

वृन्दावनदास

(३७६)

प्रकाश भवन,

मथुरा. २-५-७३

आदरणीय चतुर्वेदी जी, प्रणाम।

कृपा पत्र सब मिले। अनेकानेक धन्यवाद।

'कौटिल्य काल के कुछ अधिकारी' लेख मेरा ही था और यह भी ठीक है कि हमारा आपका सम्बन्ध ४१ वर्ष पुराना है, वैसे जब मैं १७, १८ वर्ष का था और आगरा कालेज में इण्टर का छात्र था तब मैंने आगरा कालेज के किसी छात्रावास में आपका भाषण सुना था और तब ही से मैं आपको जानता हूँ। मैंने फिर दो एक बार आपके मथुरा में भी दर्शन किये थे परन्तु छात्र की स्थिति में होता हुआ आपसे विशेष सम्पर्क स्थापित न कर सका था।

श्री दुबे जी का पता है, 'श्री रमेशचन्द्र दुबे डिप्टी डाइरैक्टर चकबन्दी ए ६० गाँधी नगर मुरादाबाद।' दुबे जी हिन्दी के अनन्य भक्त हैं और कुछ न कुछ करते ही रहते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि सर्वाङ्ग सुन्दर पत्रिका 'प्रभायन' निकलवाने में उन्हीं का हाथ है। मैंने प्रभायन की प्रति उसके सम्पादक श्री ललित भारद्वाज को लिखकर आपको भी भिजवाई थी।

डा० वासुदेव शरण अग्रवाल के पत्रों के छापने का कार्य शुरू कर दिया है। कल ही प्रेस वाले को बा० कृष्णानन्द और श्री नाहटा के पत्र दे दिये हैं। भूमिका लिखना भी प्रारम्भ कर दिया है।

नागरी प्रचारिणी सभा आगरा में मुख्यमन्त्री कमलापति त्रिपाठी का

अभिनन्दन समारोह दि० ६ को है को है। डा० राजेश्वर चतुर्वेदी उसकी अध्यक्षता करने को मुझे आमन्त्रित कर रहे हैं।

पटने में मालूम हुआ कि वहाँ विहार में आप सारन जिले में एक महीने रहे थे। कदाचित् महेन्द्र शास्त्री से आपका परिचय उसी समय हुआ होगा। पं० श्रीराम शर्मा सम्पादक योगी बड़ी सज्जन प्रकृति के व्यक्ति हैं उनका आपका तो शायद विशाल भारत के समय से ही परिचय है। पटने की गोष्ठी का हाल दिसम्बर २३ के प्रदीप में प्रकाशित हो गया है।

'प्रकर' पत्र आपके पास पहुँचता है या नहीं, उसमें डा०सियाराम तिवारी लिखित आपके पत्र संग्रह की बड़ी सुन्दर समीक्षा प्रकाशित हुई है।

आजकल डा० अग्रवाल का पाणिनि कालीन भारत पढ़ रहा हूँ, बड़ी विलक्षण पुस्तक है। उसके पढ़ने से डा० अग्रवाल के गम्भीर ज्ञान का पता चलता है।

आपका
वृन्दावनदास

(३७७)

२०२ नीलाम्बर ३७ पैडर रोड,
बम्बई-२६. १३-६-७३

आदरणीय चतुर्वेदी जी, प्रणाम।

भीषण गर्मी से कुछ त्राण पाने के लिए तथा साथ ही दौहित्र के २४ दिसम्बर को विवाह में सम्मिलित होने के लिए मैं बम्बई आगया हूँ। यहाँ पर वर्षा हो रही है, गर्मी का नाम नहीं। वर्षा के कारण वातावरणमें शीतलता है, ठण्डी हवायें चलती हैं ऐसी जैसी कि शिमला में भी क्या चलती होंगी।

यहाँ प्रात:कालीन शीतल वातावरण में डा० अग्रवाल के पत्र संग्रह के लिए भूमिका लिख रहा हूँ। मेरा विचार कम से कम ३२ पृष्ठीय भूमिका एवं प्राक्कथन लिखने का है। ८, १० पृष्ठ तो डा० अग्रवाल के महान् व्यक्तित्व की चर्चा पर ही लग जावेंगे। 'डा० अग्रवाल के आपको लिखे हुए पत्र कदाचित् सर्वाधिक महत्वपूर्ण हैं।' पृथिवी पुत्र भी उन्हीं पत्रों से भरा हुआ है। मैं उनका विशेष रूप से अध्ययन कर रहा हूँ। डा० अग्रवाल सचमुच शब्दों के आचार्य थे और कृष्णानन्द जी द्वारा उनको कपिल और कणाद की 'कोटि में रक्खा जाना सर्वथा उचित ही था।'

मेरी पुस्तक 'प्राचीन भारत में हिन्दू राज्य' करीब-करीब समाप्त हो चुकी है। इसका नामकरण शायद शुभ नक्षत्र में किया गया था।

डा० आग्रवाल के पत्रों का संग्रह छपना शुरू हो गया था परन्तु कागज के अभाव ने उसे महीने भर के लिए फिर रुकवा दिया है, इधर मैं बम्बई भी रह लूँगा।

कृपा भाव रक्खें।

आपका
वृन्दावनदास

(३७८)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २७-७-७३

आदरणीय चतुर्वेदी जी, प्रणाम।

कृपा पत्र मिला। धन्यवाद। डा० वासुदेव शरण और आपके बीच जो पत्र-व्यवहार हुआ है उसका मैंने सम्यक् अध्ययन कर लिया है। उन्होंने आपको जो कृतज्ञता सूचक शब्द लिखे थे वे भी मेरी नजर से गुजर चुके हैं तथा मैंने उनका उपयोग कर लिया है। मैं पत्रों पर विस्तृत भूमिका लिख रहा हूँ। निस्सन्देह आपके पत्र-लेखन की उदार वृत्ति ने साहित्य जगत के धुरन्धर विद्वानों को भी पत्र लिखने को बाध्य किया है और प्रत्यक्षतः इससे हिन्दी साहित्य का भला ही हुआ है।

देव पुरस्कार के सम्बन्ध में मैंने मध्यप्रदेश शासन को फिर लिख दिया है तथा व्रजभारती के सम्पादकीय स्तम्भ में फिर इस पर प्रकाश डाल रहा हूँ।

स्वर्गीय रूपकिशोर जी जैन का स्मृति ग्रन्थ तो अवश्य निकलना चाहिये। यशपाल जी के अभि० समारोह में मैंने सार्वजनिक रूप से यशपाल जी को इसके औचित्य के प्रति सजग किया था, उस सभा में अक्षय जी, जगदीशचन्द्र जी माथुर, सत्यवती मल्लिक तथा दर्जनों अन्य साहित्यकार उपस्थित थे। यह कार्य परिश्रम साध्य है परन्तु इन लोगों के पास तो सभी साधन उपलब्ध हैं, दृढ़ इच्छा शक्ति चाहिये। मैं उस यज्ञ में समुचित आहूति देने को उद्यत हूँ।

कुलदीप नारायण जी से मेरा पत्र-व्यवहार हुआ है, उन्होंने समीक्षार्थ अपनी सभी पुस्तक भेजी हैं। समीक्षा व्रजभारती में प्रकाशित कराऊँगा।

मैं ता० २० को बम्बई से लौट कर आ गया हूँ। कृपा भाव रक्खें।

आपका
वृन्दावनदास

श्री मधुसूदन चतुर्वेदी के नाम

(३७९)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ८-४-६७

प्रिय चतुर्वेदी जी, प्रणाम।

कृपा पत्र तथा 'समर संगीत' नामक आपकी कृति प्राप्त हुए। धन्यवाद। बड़ी सुन्दर रचना की है आपने। ब्रजभारती में इसकी समीक्षा की जायेगी।

प्रेस यहाँ हैं तो कई परन्तु उन्हें आप ही लिखें तो उत्तम होगा। मैं उनके पते आपको लिखे देता हूँ।

(१) अग्रवाल प्रेस, छत्ता बाजार, मथुरा
(२) मथुरा प्रिंटिंग प्रेस, तिलक द्वार, मथुरा
(३) राष्ट्रीय प्रेस, डैम्पियर नगर, मथुरा
(४) अजन्ता प्रेस, छत्ता बाजार, मथुरा

ये ही प्रेस हैं जो बाहर का काम करते हैं तथा जिनकी छपाई शुद्ध है। आप पत्र-व्यवहार करलें। मैं तो यह समझता हूँ कि आपको सुविधा वहाँ ही छपवाने में रहेगी कारण आप वहाँ अपनी निगरानी रख सकते हैं। वैसे जैसा आप उचित समझें। शेष कुशल है।

भवदीय
वृन्दावनदास

(३८०)

मथुरा. १४-९-६७

प्रिय चतुर्वेदी जी, सादर नमस्कार।

'बनवासी के गीत' मिले, पढ़े और गाये। आपकी समिति बड़े सुन्दर प्रकाशन कर रही है। हिन्दी के प्रति आपका योगदान अपूर्व है। मैं आपके साहित्यिक प्रयासों की मुक्त-कण्ठ से सराहना करता हूँ। आपने जितने प्रकाशन मेरे पास भेजे हैं वे सभी श्रेष्ठ हैं। धन्यवाद,

आपका
वृन्दावननास

(३८१)

मथुरा. ९-३-६९

मान्यवर चतुर्वेदी जी, नमस्कार।

हमने आपके ऊपर एक लेख लिख कर उसकी चार प्रतियाँ टाइप

कराकर चार समाचार पत्रों में प्रकाशनार्थ भेज दिया था। वह लेख तीन पत्रों में अविकल प्रकाशित हो चुका है। एक पत्र अमर उजाला की प्रति तो आपकी सेवा में भेजी जा रही है। अन्य दो पत्रों की एक एक प्रति भी शीघ्र सेवा में प्रेषित होगी।

शेष कुशल है।

आपका
वृन्दावनदास

पुनश्च :

स्वर्गीय डा० हरिशंकर शर्मा स्मृति ग्रन्थ के लिए लेख शीघ्र भेजिए व्यक्तित्व और कृतित्व पर अथवा ब्रजभाषा साहित्य के किसी अङ्ग पर गवेषणा पूर्ण। इस सम्बन्ध में यदि त्वरा करेंगे तो मैं व्यक्तिगत रूप से बाधित होऊँगा।

वृन्दावनदास

(३८२)

२४-१२-६६

मान्यवर चतुर्वेदी जी।

बहुत दिन से आपका कोई कृपा पत्र नहीं मिला। आप इस बीच इधर आये भी परन्तु दर्शन का सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ। ऐसा प्रतीत होता है कि व्यस्त कार्यक्रम के बाद ही आप लौट गये।

श्रद्धेय चतुर्वेदी जी को ६ जनवरी के लगभग अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट किया जायेगा। महामहिम राष्ट्रपति जी को औपचारिक रूप से यह कार्य सम्पन्न करने को लिखा गया है। उनकी स्वीकृति आने पर अंतिम तिथि का निर्णय किया जायेगा। ग्रन्थ तीन चौथाई के लगभग छप चुका है। ग्रन्थ का ब्रजभूमि खण्ड अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

अपने अद्यावधि प्रकाशित ग्रन्थों की सूची भेजने की कृपा करें।

शेष सब कुशल है।

आपका
वृन्दावनदास

(३८३)

१७-१०-७०

मान्यवर चतुर्वेदी जी।

श्रद्धेय बनारसीदास जी चतुर्वेदी का पत्र आया है। उन्होंने लिखा है कि आपको कूर्मांचल केसरी पं० बदरीदत्त पाण्डे के संस्मरण छापने पर

बधाई दी जाये। उनकी आज्ञा शिरोधार्य है, आपको बहुत-बहुत बधाई। आप वास्तव में उसी प्रकार का साहित्य प्रकाशित करते है जिसकी इस क्षेत्र के साहित्यिक वाँछा करते हैं। इस क्षेत्र के साहित्यिकों के प्रति आपका स्नेह और आत्मीयता बड़ी स्तुत्य है। आपके द्वारा इस क्षेत्र के अनेक साहित्यकारों को प्रतिष्ठा मिली है।

शेष सब कुशल है।

आपका
वृन्दावनदास

(३८४)

२०-१०-७०

मान्यवर चतुर्वेदी जी।

कृपा पत्र प्राप्त हुआ। धन्यवाद। आप तो भिषगाचार्य स्वयं हैं, ऐसे वैद्यराज नहीं जो ठोंक पीट कर बनाये जा सकें। आपके व्यक्तित्व में हिन्दी के साहित्यकार और नेता दोनों के दर्शन होते हैं। आपकी कृतियाँ आपकी साहित्यिक प्रतिभा और प्रकाशन समिति आपके हिन्दी प्रचार कार्य की दक्षता की परिचायक हैं। मेरी सदैव यह मान्यता रही है कि जो हिन्दी प्रेमी हिन्दी का कार्य अहिन्दी भाषी क्षेत्र में करते हैं उनको हिन्दी-क्षेत्र में काम करने वालों से अधिक श्रेय मिलना चाहिये।

मैं प्राचीन भारत के हिन्दूराज्य का इतिहास, एक अर्से से लिख रहा था। अब वह पूरा होता आ रहा है। इसमें बड़ी मेहनत हुई है। उसे छपाने की व्यवस्था कर रहा हूँ।

श्रद्धेय बनारसीदास जी के पत्र तथा डा० वासुदेवशरण अग्रवाल के पत्रों का संग्रह ये दोनों पुस्तकें भी लगभग लिखी जा चुकी हैं, इनको भी शीघ्र मुद्रित करना है।

आशा है आप स्वस्थ एवं सानन्द हैं।

आपका
वृन्दावनदास

(३८५)

२७-४-७१

मान्यवर चतुर्वेदी जी।

कृपा पत्र मिला। धन्यवाद। आप ३० ता० तक आगरा आ रहे हैं तथा तदुपरान्त दर्शन देंगे यह जान कर हर्ष हुआ। आप अवश्य पधारें।

आगरा कितने दिन ठहरेंगे और वहाँ के ठहरने का स्थान कौन-सा होगा यह भी लिखें।

पत्र संग्रह के मुद्रण में यथेष्ट प्रगति हो गयी है, ३०० पृष्ठीय पुस्तक में लगभग २४० पृष्ठ तो छप चुके हैं मुझे आशा है कि लगभग दो सप्ताह में पुस्तक पूर्ण रूपेण छपकर तैयार हो जावेगी। चित्र और आवरण आदि को छपाने का प्रवन्ध भी साथ-साथ किया जा रहा है।

अब की बार उत्तर प्रदेशीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन का वार्षिक अधिवेशन श्रद्धेय चतुर्वेदी जी की नगरी फीरोजाबाद में ही हो रहा है, २३, २४ मई को। कृपा कर उसमें अवश्य सम्मिलित हों।

शेष सब कुशल है।

आपका
वृन्दावनदास

(३८६)

२२-७-७२

मान्यवर चतुर्वेदी जी।

कृपा पत्र मिला। धन्यवाद। ब्रज साहित्य मण्डल की शाखा की स्थापना का वृत्त पढ़ कर अत्यानन्द हुआ। अब वहाँ ब्रज साहित्य की सेवा के निमित्त आपको एक मंच उपस्थित हो गया। मुझे विश्वास है कि आपके नेतृत्व में वहाँ कुछ काम होगा।

नवीन पुस्तक छप तो गयी है परन्तु बेसिक के काम के कारण बाइंडिंग नहीं हो पा रहा है। मैं समझता हूँ १५ दिन और लग जाएंगे। आवरण भी छपने दे दिया है।

शेष सब कुशल है।

आपका
वृन्दावनदास

श्री युगल किशोर चतुर्वेदी के नाम

(३८७)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ५-१०-७२

मान्यवर चतुर्वेदी जी, प्रणाम।

अभी डा० कृष्णदत्त जी बाजपेयी का पत्र आया है। वे अहिच्छत्रा वाले अपने लेख को वापिस माँगते हैं, अतः उस लेख को आप उन्हें अविलम्ब वापिस कर दें। वे उसका संक्षिप्तीकरण करके एक छः पृष्ठीय लेख मुझे भेज

देंगे (ब्रज भारती में प्रकाशनार्थ) ऐसा उन्होंने मुझे वचन दिया है। मैं उनको आप वाले अंक में समावेश करने के लिए ब्रज जनपद अथवा जनपदीय आन्दोलन पर कुछ लिखकर भेजने का अनुरोध कर रहा हूँ, शायद वे मेरी प्रार्थना स्वीकार कर लेंगे। मैंने मण्डल के मन्त्रिमण्डल की गत बैठक में श्री प्रभुदयाल जी मीतल से भी ब्रज जनपद पर कुछ लिखकर भेजने को कह दिया है तथा श्री रमेशचन्द शर्मा से भी सोंख पर लिखने को पुनः कहा है। अब हाँका लगाऊँगा और इन दोनों से शीघ्र ही लेख भिजवाने की चेष्टा करूँगा।

डा० सत्येन्द्र का लेख (सस्मरण) एवं साहित्यिक दोनों प्रकार का प्राप्त हो गया। आपको अनेक धन्यवाद।

श्री डा० तिवारी जी का कार्यक्रम स्थगित हो गया सो ठीक ही है। मैं तो पहले ही जानता था। ये लोग बड़े व्यस्त रहते हैं इनसे तो भाग्यवश कोई बात बन जाय तो आश्चर्य ही होगा। शेष कुशल।

आपका
वृन्दावनदास

(३८८)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ३०-८-७३

मान्यवर चतुर्वेदी जी, प्रणाम। कृपा पत्र मिला। धन्यवाद।

ब्रजभारती के सम्पादकीय का प्रथम पृष्ठ मैंने इसी दृष्टि से लिखा था कि उसका रिप्रिंट अन्य पत्रों में भी हिन्दी दिवस के अवसर पर प्रकाशित कराया जाय। राष्ट्र भाषा सन्देश' से हमारा यह तय है कि हमारी पत्रिका के अवतरण वे छापेंगे और उनके पत्र के हम।

इस पत्र के साथ लोक शिक्षक के लिए लेख संलग्न हैं। यह संपादकीय टिप्पणी का परिवर्द्धित स्वरूप है। कृपा कर इसी को लोक-शिक्षक में प्रकाशित करें।

स्वर्गीय प्यारेलाल जी चतुर्वेदी का जन्म शताब्दी समारोह नागरी प्रचारिणी सभा आगरा के प्रांगण में ता० २६ को हमारी अध्यक्षता में ही मनाया गया। हमने तथा सर्वश्री रघुनाथ प्रसाद चतुर्वेदी, राजेश्वर प्रसाद चतुर्वेदी, पृथ्वीनाथ चतुर्वेदी आदि ने स्व० चतुर्वेदी जी के अनेक मानवीय गुणों की भूरि-भूरि प्रशंसा की। हमने कहा कि स्व० चतुर्वेदी जी को भगवान की विद्यार्थी-स्वरूपा सृष्टि बड़ी प्रिय था। उन्होंने अपनी आय का ५५ प्रतिशत विद्यार्थियों को वृत्तियाँ देने पर व्यय किया। अतः विद्यार्थियों की सभाओं में उनके जीवन पर प्रकाश डाला जाय। उनकी इच्छा थी कि मथुरा-वृन्दावन के

बीच किसी स्थान पर एक आश्रम बनाया जाय जहाँ विधवाएँ तथा अनाथ रहें, अवकाश प्राप्त वृद्धजन भी चाहें तो रहें। हमने प्रस्तावित आश्रम के लिए ब्रजसाहित्य मण्डल की भूमि का भाग देने की घोषणा की जिसका उपस्थित चतुर्वेदी समाज ने बड़ा स्वागत किया। हमने यह सुझाव भी दिया कि शताब्दी कार्यक्रम पूरे वर्ष तक यदा-कदा चलता रहना चाहिये और वर्षान्त में सब समारोहों का लेखा-जोखा एक स्मारिका में प्रकाशित किया जाय। चतुर्वेदी सभा और चतुर्वेदी पत्र को भी सुदृढ़ बनाया जाय। संयोजकों ने सभी सुझावों को मान्य बताया।

ता० २७ को हमने मथुरा में कविरत्न गोविन्द चतुर्वेदी की अध्यक्षता में कवि गोष्ठी का आयोजन किया। हमने तथा सर्वश्री जुगलकिशोर चतुर्वेदी महेन्द्रनाथ चतुर्वेदी, दीनानाथ सुमनेश तथा अन्य सज्जनों ने श्रद्धांजलि अर्पित की। तदुपरान्त ब्रजभाषा कविता की पढ़न्त गोष्ठी सम्पन्न हुई।

इस आशय का कोई सम्वाद भी प्रकाशित करने की कृपा करें। ये सब आयोजन श्रद्धेय बनारसीदास जी चतुर्वेदी की प्रेरणा से कराये गये थे।

आपका
वृन्दावनदास

श्री रमण शांडिल्य के नाम

(३८९)

मथुरा. ५-१-६९

प्रियवर शांडिल्य जी।

कृपा पत्र मिला। धन्यवाद। लोक भाषाएँ समुन्नत हों, अपने साहित्य का विकास करें, समृद्ध बने हिन्दी वालों को इसमें कोई आपत्ति नहीं है। हम तो इन भाषाओं को हिन्दी के ही विभिन्न अंगों के रूप में देखते हैं। इन्हीं भाषाओं का एक परिष्कृत स्वरूप विकसित हुआ है और वह हिन्दी है। और इसी कारण वह राष्ट्र भाषा है। राष्ट्र भाषा को अपदस्थ करने की किसी क्षेत्रीय भाषा की सामर्थ्य नहीं है। लोक भाषाओं के विद्वानों ने ही तो शताब्दियों की अपनी तपःपूत साधना से हिन्दी के वर्तमान परिष्कृत स्वरूप का गठन किया है। हम अपनी ही बनाई हुई इमारत को कैसे ढहा सकते हैं? वातावरण को विषाक्त करने वाले अपनी मानसिक संकीर्णता से ही ऐसा करते हैं।

आपने इन भाषाओं पर बड़ा काम किया है। आपका कृतित्व प्रकाश

में आना ही चाहिये। विहार राष्ट्र भाषा परिषद पटना, हिन्दुस्तानी एकादमी प्रयाग हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग, नागरी प्रचारिणी सभा वाराणसी हिन्दी समिति लखनऊ आदि को टटोलिए। शायद कहीं से कुछ आश्वासन मिले। इधर की तरफ कभी आने का विचार है क्या निकट भविष्य में ?

ब्रजभारती की पुरानी फाइलें उपलब्ध नहीं है परन्तु मेरे सम्पादन काल की सभी २२ प्रतियाँ वर्तमान है जिनमें आपके पास कितनी है यह मैं नहीं जानता। इन २२ में जो कमी होगी पूरी की जा सकती है।

आपका
वृन्दावनदास

(३६०)

मथुरा. २३-३-६६

बन्धुवर शाण्डिल्य जी।

कृपा पत्र मिला। अनेकानेक धन्यवाद। आपने जिन शब्दों में मुझे स्मरण किया है उसके लिए आभारी हूँ। मेरा तो शेष जीवन हिन्दी की सेवा के ही लिये अर्पित है। तन, मन, धन से जितना बन जाये करना है। भारतेन्दु बा० हरिश्चन्द्र ने कहा था—

निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति कौ मूल,
विनु निज भाषा ज्ञान के मिटत न हिय कौ शूल।

जनपदीय भाषाओं के साथ-साथ आपका हिन्दी पत्र साहित्य का ज्ञान भी बहुत अच्छा है। आपने जिस पत्र साहित्य का उल्लेख किया है उसमें से अधिकांश मेरी नजर में न था। पत्र साहित्य हमारी पत्रिकाओं में भी बिखरा पड़ा है। हिन्दी साहित्य में पत्रों के पुस्तकाकार स्वरूप के दर्शन दुर्लभ ही हैं। पत्र साहित्य को जो बिखरा पड़ा है पुस्तकाकार करना अत्यन्त आवश्यक है। इससे हिन्दी के लिये अनुकूल साहित्य का सृजन होगा।

श्रद्धेय बनारसीदास चतुर्वेदी के पत्रों को मैं छपवा रहा हूँ। ३०० पृष्ठों की पुस्तक होगी। इसमें ४० पृष्ठीय मेरी भूमिका है। अप्रैल मास के अन्त तक पुस्तक प्रकाशित हो जायेगी। तब एक प्रति आपकी सेवा में प्रेषित होगी।

राहुल जी पर एक लेख मैंने श्री सूरज प्रसाद साकची के आग्रह पर लिखा है। उसे मैं शीघ्र ही आपकी सेवा में भेजूँगा।

आपका
वृन्दावनदास

(३६१)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २८-३-७२

बन्धुवर शाण्डिल्य जी।

कृपा पत्र मिला। धन्यवाद। उदासीन ही नहीं अपितु विरोधी वातावरण में आपकी हिन्दी-सेवा सराहनीय है। लोक-भाषाओं के तो आप मर्मज्ञ हैं ही। आजकल हमारे हिन्दी कार्यकर्ता बन्धु लोक-भाषाओं पर किए कार्यों को शंका की दृष्टि से देखते हैं तथा लोक-भाषाओं के उन्नयन में उन्हें हिन्दी का अहित दिखाई पडना है। वस्तुतः यह भ्रान्त धारणा ही हिन्दी को व्यापक लोकप्रियता प्राप्त करने में बाधक है। इस प्रकार का पृथकतावादी आंदोलन हिन्दी को क्षति पहुँचा रहा है और वह अलग-थलग होती जा रही है। इस वैमनस्य में अँग्रेजी प्रेमी लोग अपनी प्रेयसी को घुसाने का प्रयत्न करते रहते हैं। कैसी विडम्बना है। मैं तो गला फाड़-फाड़ कर कहता रहता हूँ कि सभी बोलियाँ हिन्दी के ही अङ्ग हैं, इनको हिन्दी से पृथक् समझना भूल है। खेद की बात है कि हिन्दी साहित्य का इतिहास लिखते समय उसमें हम ब्रजभाषा साहित्य, अवधी साहित्य और उसके सृष्टाओं का उल्लेख तो करते हैं और अब कुछ दिन से मैथिली और विद्यापति का भी करने लगे हैं परन्तु भोजपुरी, मगही, अगिका आदि अनेक भाषाओं की उपेक्षा करते हैं। समन्वय और सौहार्द की बड़ी कमी है। गनीमत यही है कि आप सदृश साहित्यिक इस खाई को पाटते रहते हैं। हम तो चाहते हैं हमारी सभी बोलियाँ (खासतौर से हिन्दी क्षेत्र की) फलें फूलें और हिन्दी भी दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति करे।

डा० ब्रजेश्वर वर्मा निदेशक केन्द्रीय हिन्दी संस्थान से मेरा परिचय है। कई साहित्यिक गोष्ठियों में उनसे भेंट हुई है। वे बड़े सुलझे हुए और सज्जन व्यक्ति हैं। मैंने उन्हें एक पत्र लिख दिया है जिसमें उनसे नियमावली और मुद्रित प्रवेश पत्र की एक-एक प्रति आपको भेजने के लिए प्रार्थना की है। आपका पता भी उनको साफ-साफ लिख दिया है। मुझे आशा है कि दोनों चीजें आपको अवश्य प्राप्त होंगी।

आपके भेजे कटिङ्ग भी प्राप्त हुए, उनको पढ़कर ज्ञानार्जन करूँगा यथा सम्भव ब्रजभारती में चर्चा भी।

आशा है आप स्वस्थ एवं सानन्द है। मान्यवर रसूलपुरी जी बहुत अस्वस्थ हो गये थे। ईश्वर कृपा से अब कुछ स्वास्थ्य लाभ कर रहे हैं।

विद्वत्ता के साथ उनमें आत्मीयता और सहृदयता के महान् गुण पूरी मात्रा में विद्यमान हैं। ईश्वर उन्हें चिरायु करें।

आपका
वृन्दावनदास

(३६२)

मथुरा. १६-६-७२

बन्धुवर शाण्डिल्य जी।

आपका कृपा पत्र मिला। आपके रोगग्रस्त होकर अस्वस्थ हो जाने का समाचार पढ़कर दुःख हुआ। श्रद्धेय चतुर्वेदीजी कहते हैं रोग ग्रस्त होना पाप है परन्तु जब इस पाप को दूसरी शक्ति ही अर्जित करा दे तो हमारा क्या दोष ?

आपकी व्यर्थ प्रशंसा मेरा उद्देश्य नहीं, मेरे तो हृदयोद्गार हैं जो अनायास ही निकलते हैं। मुझे अपनी धारणाओं में जब पुष्टि मिल जाती है तब मुझे अपने निष्कर्षों पर प्रसन्नता होती है। एक लेख में डा० सत्येन्द्र जैसे मनीषी ने आपके लेख से पुस्कल-उद्धरण देकर किसी अपनी बात की पुष्टि की है, आप वास्तव में एक बढ़िया लेखक हैं और यह हम आपको खुश करने के लिये नहीं दूसरों के आगे उदाहरण प्रस्तुत करने के लिये वाँछित प्रचारात्मक दृष्टि से करते हैं। जिस प्रकार का भार हम लोगों ने ओढ़ रक्खा है उसमें सुयोग्य लेखकों को छाँट कर हिन्दी संसार के आगे रखना भी एक कर्तव्य है अन्यथा हिन्दी की नाव कैसे चलेगी। अपनी सीमित क्षमताओं से हम कम ही सफल हो पाते हैं परन्तु अनवरत प्रयास हमारा धर्म है जिससे हमें विमुख नहीं होना है। रसूलपुरी जी अब ठीक हैं, गनेश जी का पत्र आया है उससे विदित हुआ। उत्तर बिहार के कई अंक भी आये हैं। आपके पास भी पहुँचे होंगे। रसूलपुरी जी ने हिन्दी का बड़ा काम किया है। मेरी दृष्टि में उनकी गणना मूर्धन्य पत्रकारों में होनी चाहिये। ब्रजभारती का वाँछित अंक भेजा है। भाद्र पद अंक एक सप्ताह में चांग-लांग ही पहुँचेगा।

आपका
वृन्दावनदास

(३६३)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ३-१२-७२

बन्धुवर शाण्डिल्य जी।

कृपा पत्र मिल गये। धन्यवाद। आपका हिन्दी प्रेम सराहनीय है।

हमने उक्त विषय में श्री प्रकाशवीर जी शास्त्री से पत्र-व्यवहार किया है। सचित्र लेख हिन्दुस्तान में मुद्रणार्थ भेजा है। संसद में जो गर्मागर्मी हुई उसमें हमारा कर्तृत्व भी निहित था। हमारे कई सदस्यों ने हिन्दी के प्रश्न को उठाते हुए असम और अरुणाचल में हो रहे हिन्दी विरोध की कटु आलोचना की थी। इधर हमने स्वयं कई लेख अमर उजाला, सैनिक आदि पत्रों में अपने नाम से लिखे हैं तथा अंग्रेजी परस्त ईसाइयत प्रचारक अधिकारियों के स्थानान्तरण की माँग की है। लेख प्रकाशित हो चुके हैं। आप लिखें तो कतरनें भेजें।

व्रजभारती में (मार्ग शीर्ष अंक) भी यह प्रश्न चर्चित किया है। अंक एक सप्ताह में आपके पास पहुँचेगा।

आज रजिस्टर्ड बुक-पोस्ट से प्राचीन भारत में हिन्दू राज्य की एक प्रति भेजी है। आप इसकी समीक्षा पटना वाले पत्रों में भेजें। वहाँ के सहृदय सम्पादक आपकी लेखनी से प्रभावित हैं क्योंकि आपकी समीक्षा बड़े काँटे की होती है।

शेष कुशल। स्वास्थ्य का ख्याल रक्खें।

आपका
वृन्दावनदास

(३६४)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ४-५-७३

बन्धुवर शाण्डिल्य जी।

उत्तर बिहार के दो अंकों में डा० बनारसीदास चतुर्वेदी के पत्र पर और एक अंक में प्राचीन भारत में हिन्दू राज्य पर आपके समीक्षात्मक लम्बे लेख पढ़े। आप गहन अध्ययन और आलोड़न के उपरांत लिखते हैं और आपकी शैली विवरणात्मक है। दोनों पुस्तकों की उत्तम समीक्षाओं के लिये धन्यवाद। चतुर्वेदी जी का भी पत्र आया था जिसमें उन्होंने पत्र संग्रह पर की हुई आपकी समीक्षा का उल्लेख किया था।

आप मिले खूब। आपका अगला कार्यक्रम क्या है ? कभी इधर की तरफ आवें या कहीं सुस्थिर चित्त से बातचीत हो तो प्रकाशन व्यवस्था बनाई जाय। आपके लेख तो काफी संख्या में प्रकाशित हो चुके हैं, परन्तु मेरी इच्छा है कि कुछ प्रकाशित पुस्तकों का श्रेय भी आपकी लेखनी को प्राप्त हो।

अनेक शुभ कामनाओं के साथ।

शुभेच्छु
वृन्दावनदास

(३६५)

२०२ नीलाम्बर
३७ पेडर रोड
बम्बई. ३०-११-७४

बन्धुवर शाण्डिल्य जी।

आपका ता० १७-११-७४ का पत्र पुनर्प्रेषित होकर मुझे यहाँ मिल गया। मुझे यहाँ अपने अनुज बम्बई निवासी श्री आर० डी० अग्रवाल की धर्मपत्नी की गम्भीर बीमारी का सन्देश प्राप्त कर ता० १२ नवम्बर को आना पड़ा था। अत्यन्त दुःख की बात है कि उसका ता० २४ नवम्बर को निधन हो गया। मुझे यहाँ ता० ८ दिसम्बर तक रुकना है। मैं ९ दिसम्बर को मथुरा पहुँचूँगा।

आपने अपने पत्र में सभी बातों पर सम्यक् प्रकाश डाल दिया है। वर्तमान मनःस्थिति और पोबदी के स्थानान्तरण का भी समाचार विदित हुआ। धीरे धीरे 'रात्रिगमिष्यति भविष्यति सुप्रभातं' वाली उक्ति साकार होगी। आपने धैर्यपूर्वक घने संकट का सामना किया है।

(३६६)

बन्धुवर !

जनपदीय भाषाओं का साहित्य शीर्षक पाण्डुलिपि को सरसरी दृष्टि से देख गया हूँ। इसमें ११ लेख तथा आपकी लिखी प्रस्तावना है। आशा है इन लेखों की नामावलि आपके पास भी होगी। ग्यारह लेखों के अन्तर्गत आपका लेख वज्जिका के रचनाकार भी है जिसे मैंने यहाँ से सम्मिलित कर दिया है। इन लेखों से यह पुस्तक पूर्णतः पूर्वांचलीय भाषाओं वाली ही बनेगी। इस पुस्तक का कलेवर २५० पृष्ठों का बैठगा, ऐसा मुद्रक से परामर्श के उपरान्त अनुमान किया गया है। यदि इन लेखों में ब्रजभाषा, बुन्देली निमाड़ी, राजस्थानी, मगधी, बघेली, छत्तीसगढ़ी, मालवी, हरियाणवी आदि अन्य लोक-भाषाओं के साहित्य सम्बन्धी लेखों को एकत्रित करके जोड़ा जाय तो एक वृहदाकार ग्रन्थ बनेगा। डा० रंजन को पाण्डुलिपि दिखाकर उनका परामर्श लिया था। वे बोले 'इन लेखों में पुनरावृत्ति तथा पिष्टपेषण अधिक मात्रा में है, उनकी राय में सभी प्रमुख जनपदीय लोक-भाषाओं पर विवेचनात्मक दृष्टि से २००, २५० पृष्ठ की पुस्तक छपनी चाहिये। यदि रंजन जी की राय पर चलें तो प्रस्तुत लेखों में तो आमूलचूल परिवर्तन करना होगा और वह कार्य दुष्कर प्रतीत होता है। इसलिये मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि प्रस्तुत पाण्डुलिपि को ही मान्य करते हुए—

(१) पुस्तक इसी रूप में निकाली जाय जिसका कलेवर लगभग २५० पृष्ठ होगा।

(२) सम्पादक में केवल आपका ही नाम रहे, भूमिका मैं लिख दूँगा। अनावश्यक पुनरावृत्ति को मैं ही देख लूँगा। शेष फिर।

आपका
वृन्दावनदास

(३६७)

प्रकाश भवन,
मथुरा. १-१-७५

बन्धुवर शाण्डिल्य जी।

साङ्पो का गालो-मोनपा शब्दावली अंक मिला। आपका प्रयास सराहनीय है। हमारे कतिपय साहित्यिक बन्धु लोक-भाषाओं के साहित्यिक उन्नयन में हिन्दी के अहित की कल्पना करते हैं। यह भावना नितान्त भ्रांत है। लोक-भाषाओं के संरक्षण से हिन्दी का तनिक भी अहित नहीं होता। हिन्दी तो लोक-भाषाओं के हार में मध्यमणि के सदृश विराजती है। प्रत्येक लोक भाषा का क्षेत्र सीमित है परन्तु हिन्दी प्रत्येक भारतवासी की अनिवार्य भाषा है। संसार का प्रत्येक व्यक्ति चाहे वह शिक्षित हो अथवा अनपढ़ दो भाषायें जानता और बोलता है, पहली मातृभाषा दूसरी राष्ट्र-भाषा। अतः मातृ-भाषाओं के परिष्कार से राष्ट्रभाषा की क्षति किस प्रकार होगी यह बात समझ में आने वाली नहीं है। मातृभाषा-भाषियों की गणना का राष्ट्रभाषा-भाषियों की गणना से कोई सम्बन्ध नहीं है। राष्ट्रभाषा तो प्रत्येक व्यक्ति की भाषा है। हम भारत में राष्ट्रभाषा-भाषियों की संख्या ५५ करोड़ मानते हैं। सभी शंकायें निराधार हैं।

आपका अङ्क सुन्दर और उपयोगी सामग्री से परिपूर्ण है। नूतन बर्ष की बधाई। मेरे पिछले पत्र का उत्तर शीघ्र दें।

आपका
वृन्दावनदास

(३६८)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २८-१०-७५

बन्धुवर शाण्डिल्य जी।

आपने शायद जनपदीय भाषाओं के साहित्य पर कुछ लिखने की कसम खा रक्खी है। मैं कितने ही पत्र आपको लिख चुका हूँ परन्तु आपने उस

सम्बन्ध में कोई उत्तर ही नहीं दिया। मैंने आपको यह लिखा था कि पहले आपको ५० प्रतियाँ भेजी जाँय और आप ही विद्वानों को भेजें। इसका आशय यह था कि पीछे जितनी आप चाहें आपको और भेज दी जाँय। शायद आपने अर्थ का कुछ अनर्थ कर लिया और मौन साध कर बैठ गये। मैंने बहुत से विद्वानों की पुस्तकें भेंट स्वरूप भेज दी हैं। आप लिखें कि आपको किस स्टेशन पर कितनी पुस्तकें भेज दी जाँय। जितनी पुस्तकें आप चाहें आप रख लें। शेष के बिकने की व्यवस्था सोचें जिससे इस तेजी के जमाने में लगी हुई रकम इसमें से निकले।

आपने तो आपको भेजी हुई पुस्तक की पहुँच भी नहीं लिखी जबकि अनेक व्यक्तियों ने न केवल पहुँच अपितु अपने विचार भी लिखकर भेज दिये हैं। क्या उन चिट्ठियों की नकल आपको भेजी जाय।

मुझे आपकी इस चुप्पी से बड़ा दुःख हुआ है। मैं आपको बता देना चाहता हूँ कि अब मेरा स्वास्थ्य वह नहीं रहा है जो आपने देखा था। अब मुझसे काम नहीं होता है, थकान अनुभव करता हूँ। अपने ऊपर ओढ़े हुए कामों को मैं छोड़ना चाहता हूँ। नया दायित्व तो अपने ऊपर लेना असम्भव है। मैं चाहता हूँ कि मुझे कुछ ऐसे सहयोगी मिलें जो काम को बाँट लें परन्तु यह तो निराशा मात्र हैं।

मैं चाहता था कि आप ही अपनी पुस्तक को विद्वानों को भेजें तथा उनको पत्रादि भी भेजें। इसमें मैंने कोई बुराई का काम नहीं किया। अब यह सब मुझे ही करना पड़ा है। अन्तर जनपदीय परिषद वाले भी पूरे काम का भार मेरे ऊपर छोड़ गये जिसको करते-करते मैं बिल्कुल समाप्त सा हो गया हूँ। ठीक है, जैसे चलना है कुछ दिन और चल लिया जाय।

निम्नलिखित व्यक्तियों को पुस्तक भेजी जा चुकी है या दी जा चुकी है। सर्वश्री (१) राम रीझन रसूलपुरी, (२) डा० सियाराम तिवारी, (३) गणेश चौबे, (४) परमानन्द पाण्डेय, (५) नरेश पाण्डेय चकोर, (६) डा० आनन्द स्वरूप पाठक, (७) श्री निर्मल मिलिन्द, (८) डा० विनोद जी शर्मा, (९) डा० स्वर्ण किरण, (१०) डा० त्रिभुवन ओझा, (११) डा० बेचन, (१२) राधाकृष्ण चौधरी, (१३) विशेश्वर प्रसाद केशरी, (१४) श्री प्रफुल्ल कुमार मोग, (१५) डा० बच्चन पाठक सलिल, (१६) श्री रमेशचन्द्र दुबे, (१७) श्री हरिश्चन्द्र मिश्र, (१८) डा० बनारसीदास चतुर्वेदी, (१९) डा० लालताप्रसाद नैथानी, (२०) डा० रामस्वरूप आर्य, (२१) सत्येन्द्र जी।

सर्वश्री नरेश पाण्डेय, स्वर्णकिरण, विसेश्वरप्रसाद केसरी, डा० बच्चन

पाठक सलिल ने पुस्तक की बड़ी प्रशंसा की है। डा० सलिल ने कुछ कमियाँ भी बताई हैं उनका पत्र संलग्न है।

श्री नरेश पाण्डेय कुछ पुस्तकें माँग रहे हैं। उनको पुस्तकें कितनी भेजें। शुरू में ४०, ५० ही भेजना उचित होगा। आशा है आप स्वस्थ एवं सानन्द हैं। पत्र की प्रतीक्षा में।

आपका
वृन्दावनदास

श्री अवधेश नारायण सिंह के नाम

(३६६)

प्रकाश भवन,
मथुरा. १-६-७३

वन्धुवर अवधेश जी।

दोनों पत्र तथा सम्बन्धित लेख प्राप्त हो गये। हम लेख को यथा सम्भव अगले अंक में ही प्रकाशित कर रहे हैं। आजकल आपाधापी, मारधाड़, उछलकूद के युग में थोड़ी बात कहने सुनने वाला मजे में रहता है। आपने संक्षिप्त लेख में गागर में सागर का खेल दिखा दिया है। यह एक कला है और मजबूरी ने मुझे इस कला को पसन्द करने की आदत डाल दी है। आप जानते हैं कि मुझे थोड़े से में ही अनेक मित्रों को सतुष्ट करना पड़ता है।

फिर यह कोई बुरी बात नहीं। हमारे पूर्वज ही सूत्र शैली के आविष्कारक थे और इस शैली में समायोजित ज्ञान विश्व की अप्रतिम निधि है और उस पर हमको गर्व है। आप फिर कभी इसी विषय पर सोदाहरण लेख लिख देंगे तो हम उसको भी छाप देंगे।

द्विवेदी जी पर आप सचित्र लेख साप्ताहिक हिन्दुस्तान में अवश्य भेजें। वहाँ छपने के लिये कुछ Pull चाहिये। क्या आप का हास्यावतार पंडित गोपाल प्रसाद व्यास से कुछ परिचय है? यदि है तो उन्हें लिखें, आपका काम हो जायगा। मैं भी कुछ करूँगा। आप लेख भेजकर मुझे लिख दें।

शेष सब कुशल है। ज्ञानपुर जाकर ऋषि तुल्य पं० बनारसीदास चतुर्वेदी के दर्शन करिये।

आपका
वृन्दावनदास

(४००)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ३०-८-७३

बन्धुवर।

आपका कृपा पत्र मिला। धन्यवाद। आपके पावन पुरी काशी पर किए हुए कार्य से मैं अत्यन्त प्रभावित हुआ हूँ। मैं इस कार्य का ब्रजभारती के आगामी अंक के सम्पादकीय में संक्षिप्त रूप से उल्लेख करूँगा। काशी के धार्मिक, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक महत्व पर आप अवश्य एक ग्रन्थ लिखें। अब तक के लिखे हुए निबन्धों को क्रमबद्ध करके संकलित सामग्री में जो कमी रह गई हो उसे पूरी करके पुस्तक का रूप दे दें।

शेष सब कुशल है।

भवदीय
वृन्दावनदास

श्री गौरीशंकर गुप्त (गाय घाट वाराणसी) के नाम

(४०१)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २८-११-७१

बन्धुवर गुप्त जी,

कृपा पत्र मिला। धन्यवाद। श्रद्धेय चतुर्वेदी जी इतने साहित्यिक बन्धुओं पर कृपा करते हैं कि आपके विषय में उन्होंने मुझे लिखा हो तो आश्चर्य न होगा। आपको 'ब्रजभारती' का नवीन अंक भेजा जायगा।

डा० बनारसीदास चतुर्वेदी के पत्रों की पुस्तक तैयार हो गई है। कुछ दिन बाद आपकी सेवा में प्रेषित होगी। जिल्दें बनने को हैं।

आप अपनी दोनों पुस्तकों बापू और उनकी दिनचर्या तथा पत्रकार वृहत्त्रयी की दो-दो प्रतियाँ रजिस्टर्ड बुक-पोस्ट से भेजिये। उन्हें देखने पर आपको कुछ सलाह दूँगा।

'ब्रजभारती' का भाद्रपद अंक सेवा में प्रेषित है। शेष फिर।

आपका
वृन्दावनदास

(४०२)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ७-२-७२

बन्धुवर गुप्त जी।

आपका पत्र मिला। पहिला पत्र भी यथा समय मिल गया था। हमें

कार्याधिक्य के कारण वृन्दावन आने-जाने का अवकाश ही नहीं मिलता। एक बार गये भी तो 'मोदी-भवन' वालों ने श्री नारायणदास बाजोरियाजी से मिलने भी न दिया। विदित हुआ कि वे असाध्य रूप से बीमार हैं। अतः वृन्दावन से पुस्तकें लाना सम्भव नहीं है।

'डा० बनारसीदास चतुर्वेदी के पत्र' शीर्षक पुस्तक की एक प्रति आपको रजिस्टर्ड बुकपोस्ट से भेजी जा रही है।

'ब्रज-भारती' सम्वत् २०२८ का ज्येष्ठ अङ्क भी पृथक् डाक से प्रेषित है।

आशा है, आप स्वस्थ एवं सानन्द हैं। पत्रोत्तर में विलम्ब होने के कारण उसमें निहित कार्यक्रम का विफल हो जाना ही है। आजकल श्रद्धेय बनारसीदास जी चतुर्वेदी तो ज्ञानपुर में ही हैं। उनसे मिलें तो हमारा प्रणाम कहिये।

आपका
वृन्दावनदास

(४०३)

प्रकाश भवन,
मथुरा. १७-९-७४

बन्धुवर गुप्तजी,

'गाँधी-विचार और आज की परिस्थितियों में उसकी उपयोगिता' पर आपने मेरे विचार माँगें।

मेरी तो धारणा यह है कि गाँधीजी के विचारों की भारतीय जीवन से सानुकूलता आज ही नहीं है, सदा-सर्वदा भी रहेगी। भारत एक निर्धन देश है और गाँधीजी सदा ही मितव्ययी और स्वावलम्बी जीवन के पक्षपाती थे। उन्होंने सदैव पाश्चात्य तड़क-भड़क का विरोध किया और भारत की आर्थिक दशा के अनुकूल स्वदेशी के व्यवहार और सादा जीवन व्यतीत करने पर बल दिया। आज के इस युग में जबकि महंगी चरम सीमा पर है, गाँधी जी द्वारा प्रतिपादित मितव्ययी जीवन का सिद्धान्त कितना उपयोगी है? गाँधी जी अपनी आवश्यकतायें कम-से-कम रखने पर जोर दिया करते थे। पाश्चात्य पद्धति के अनुसार औद्योगीकरण के पक्ष-पाती इस विचारधारा के विरुद्ध थे। उन विरोधियों का कहना था कि आवश्यकतायें कम-से-कम रखने से औद्योगीकरण न हो सकेगा तथा जीवन-स्तर भी ऊँचा न उठेगा। परन्तु आज चीजों के अभाव में तथा गगनचुम्बी मूल्यों के परिप्रेक्ष्य में तो गाँधीजी की कम से कम

क्रय करने वाली नीति से ही जीवन सुखी हो सकता है और महंगी से भी त्राण मिल सकता है।

आज हम यदि अपनी आवश्यकतायें कम-से-कम करते हुए बाजार से न्यूनतम चीजें खरीदें तो भाव नीचे आ सकते हैं। सम्पन्न घरों की गृहणियाँ अनावश्यक वस्तुओं के संग्रह से बाजार में वस्तुओं का अभाव उत्पन्न कर देती हैं।

इसी प्रकार अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में भी गाँधीजी की 'जियो और जीने दो' की नीति ही विश्व कल्याण का मार्ग प्रशस्त कर सकती है। मैं तो कहूँगा कि गाँधीजी के विचारों की उपयोगिता जैसी आज की परिस्थितियों में है, वैसी कभी नहीं थी।

आज आपको 'डा० वासुदेवशरण अग्रवाल के पत्र' शीर्षक पुस्तक की एक प्रति रजिस्टर्ड बुक-पोस्ट से भेजी है।

एक चित्र इस पत्र के साथ है। अनेक चित्रों का क्या करेंगे? मेरे पास अब यही बचा है।

शेष सब कुशल है।

आपका
वृन्दावनदास

श्री परमानन्द पाण्डेय के नाम

(४०४)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ६-१२-७०

मान्यवर पाण्डेय जी प्रणाम।

ता० १५-११-७० का कृपा पत्र यथा समय मिल गया था। मैं कल प्रातः ही दस दिवसीय लखनऊ-अयोध्या यात्रा से लौटा हूँ। उत्तर में इसी कारण से विलम्ब हुआ। आपने जो मेरे सम्बन्ध में अपने उदार भाव व्यक्त किये हैं उनके लिये अनुगृहीत हूँ। अनेक राजनीतिक एवं सामाजिक झंझावातों से निकल कर कुछ वर्षों से हिन्दी और हिन्दी सेवियों की सेवा में रत हूँ। आप सदृश मित्रों का स्नेह मेरे जीवन का महान सम्बल है।

'आप अङ्गिका का प्रकाशन आरम्भ कर रहे हैं, यह जानकर अत्यन्त हर्ष हुआ। आपकी पत्रिका 'अङ्ग जनपद' की प्रमुख साहित्यिक कृति के रूप में विकसित होगी इसमें मुझे कोई संदेह नहीं है। अपने जनपद की लोक-भाषा का साहित्य समृद्ध कर आप हिन्दी का महान् उपकार कर रहे हैं। मेरी सदैव यह मान्यता रही है कि लोक-भाषाओं का संरक्षण, सम्बर्द्धन और उन्नयन

हिन्दी के हित की बात है अहित की नहीं। लोक भाषायें हिन्दी की जड़ें हैं जिनके सिंचन से हिन्दी पुष्पित और पल्लवित होगी। कतिपय बन्धुओं की यह धारणा कि लोक भाषायें समृद्ध होकर हिन्दी को अपदस्थ करने की दिशा में सक्रिय होंगी निर्मूल है। हमें लोक भाषाओं के अक्षय शब्द भाण्डार से हिन्दी को सामर्थ्यशाली बनाना है। यदि हम ऐसा कर सकें तो हिन्दी को अन्तर्राष्ट्रीय भाषा का स्तर प्राप्त करने से कोई नहीं रोक सकता। हिन्दी का भविष्य आप सदृश मनीषियों के हाथ में है।

यही मेरी शुभकामना और यही मेरा निवेदन है। पत्रिका प्राप्त होने पर उसकी समीक्षा व्रजभारती में की जायेगी।

आपका
वृन्दावनदास

(४०५)

प्रधान-कार्यालय
मथुरा. २६-७-७०

मान्यवर पाण्डेय जी।

कृपा पत्र प्राप्त हुआ। धन्यवाद। साहित्यिक बन्धुओं से सुखद संवाद पाकर मन को जो प्रसन्नता होती है वह वर्णनातीत है। गणेशजी तो हमारे परम मित्र हैं। वे सहज स्नेहवश सभी जगह हमारे द्वारा की गई क्षुद्र सेवाओं की श्लाघा करते हैं। अन्तंजनपदीय परिषद के तो स्तम्भ ही हैं। आजकल कतिपय मूर्द्धन्य विद्वान भी उपभाषाओं के प्रति किये गये कार्यों को सन्देह की दृष्टि से देखते हैं। उनका मत है कि इन जनपदीय भाषाओं के संरक्षण और सम्वर्द्धन से हिन्दी का संख्या बल और प्राणबल घटेगा। हमें तो उनका तर्क कतई बुद्धिगम्य नहीं होता। हिन्दी एक विराट् स्वरूप है, समस्त उपभाषायें (बोलियां) उसके अङ्ग-प्रत्यङ्ग हैं। हमारे मत से तो जिस प्रकार अङ्ग-प्रत्यङ्गों के पुष्ट होने से शरीर पुष्ट होता है। उसी प्रकार उपभाषाओं के उन्नयन से हिन्दी की उन्नति होगी अवनति नहीं। हिन्दी और उसकी बोलियों में प्रतिस्पर्द्धा का प्रश्न ही नहीं उठता। राष्ट्रभाषा राज्यभाषा सम्पर्क भाषा सब कुछ हिन्दी ही है और रहेगी, उसका विकल्प अचिन्त्य है, सम्भाव ही नहीं हैं। इस तथ्य को जिस प्रकार ठेठ हिन्दी वाले जानते हैं उससे अधिक उन क्षेत्रों के लोग मानते हैं जहाँ मातृ-भाषा के रूप में बोलियाँ प्रचलित हैं। हिन्दी तो राष्ट्रभाषा के उच्चासन पर प्रतिष्ठित हो चुकी, उसकी यह स्थिति असंदिग्ध है।

उपभाषाओं के कार्यकर्त्ता, लेखक साहित्यकार अपनी-अपनी भाषाओं

के साहित्य का उन्नयन करना चाहते हैं, इससे उन्हें रोका भी तो नहीं जा सकता। मैं इसमें निर्भ्रान्त हूँ कि ये सभी कार्यकर्त्तागण हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में शिरोधार्य करते ही हैं। साहित्य का उन्नयन या परिष्कार तो संस्कृत का आश्रय लेने से ही होगा और संस्कृत सभी भाषाओं की जननी है, इससे तो पारिवारिकता और बढ़ेगी, घटेगी कैसे यह समझ में नहीं आता। हिन्दी की शक्ति, सामर्थ्य, सार्वभौमता आदि को चुनौती देने के दिन लद गये। यह मान्यता तो जब अन्तर्राष्ट्रीय स्तरों पर भी स्थिर हो चुकी है, प्रादेशिक अथवा क्षेत्रीय स्तरों पर तो प्रथम कोई विरोध के स्वर हैं ही नहीं और यदि होंगे भी तो वे अरण्यरोदन के अतिरिक्त कुछ नहीं।

कौन नहीं जानता कि हिन्दी तो समग्र जनपदीय भाषाओं से ही समुदभूत उसका नवनीत है। यदि हमें निरन्तर हिन्दी को पुष्ट करते रहना है तो इस (जनपदीय भाषाओं रूपी) कामधेनु की दोहन करना होगा। यदि हिन्दो के शब्द भण्डार को वर्द्धमान करते रहने की प्रक्रिया को नैरन्तर्य प्रदान करना है तो जनपदीय भाषाओं की ओर झाँकना ही होगा।

ब्रजभारती के प्रति आपके उदारता पूर्ण भावों के लिये कृतज्ञ हूँ। जन्माष्टमी के अवसर पर मथुरा आवें, गणेश जी भी आवेंगे। कृपा भाव रक्खें।

आपका
वृन्दावनदास

(४०६)

प्रकाश भवन,
थुरा. २७-४-७१

प्रियवर पाण्डेय जी।

आशा है आप स्वस्थ एवं सानन्द हैं। हमें मित्रवर सूरज प्रसाद मिश्र से ज्ञात हुआ है कि स्व० महापंडित राहुल सांकृत्यायन द्वारा तिब्बत से लाये हुए तिब्बती ग्रन्थ कहीं पड़े नष्ट हो रहे हैं तथा उनकी मुद्रण-प्रकाशन आदि की कभी कोई व्यवस्था नहीं की गई। हमें यह जानकर खेद तो हुआ परन्तु बिना यह जाने कि वस्तुस्थिति क्या है हम कोई निष्कर्ष निकाल लेना उचित नहीं समझते हैं। क्या उन पर कोई ऐसा लेख जिसमें उन ग्रन्थों का विवरण हो तथा साहित्यिक दृष्टि से उनकी उपयोगिता की चर्चा हो लिखा जाना संभव है? वे जैसे कुछ भी हैं यदि उन पर आप कोई छोटा-सा लेख हमें भेजने की कृपा करें तो उस लेख को ब्रजभारती में प्रकाशनार्थ सर्वाधिक प्राथमिकता दी जायेगी।

स्व० पद्मश्री डा० हरिशंकर शर्मा के स्मृति ग्रन्थ के लिये हम सामग्री एकत्रित कर रहे हैं। यदि आप उनके व्यक्तित्व और कृतित्व पर कुछ लिख सकें तो हमें एक मास के भीतर अवश्य भेज दें।

डा० सत्येन्द्र जी लोक-साहित्य के मनीषी विद्वान हैं। उनके व्यक्तित्व या कृतित्व पर आप कुछ लिखकर भेजें तो आभारी होऊँगा। डा० सत्येन्द्र जी ने तीन नाटक लिखे थे यदि वे परिषद में उपलब्ध हों तो उन्हीं पर एक समीक्षात्मक निबन्ध लिख भेजें।

आपका
वृन्दावनदास

(४०७)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ९-३-७६

बन्धुवर पाण्डेय जी।

आपका कृपा पत्र मिला। धन्यवाद। आपने लिखा है कि बिहार राष्ट्रभाषा परिषद की पत्रिका अब ब्रजभारती के विनिमय में भेजी जाया करेगी यह जानकर प्रसन्नता हुई। मैं आगामी मास से राष्ट्रभाषा परिषद के नाम प्रति भेजना प्रारम्भ कर दूँगा।

मैंनें अभिनन्दन ग्रन्थ की एक प्रति आपको देने के लिये श्री अनिल कुमार राय आंजनेय को लिख दिया है, वे बहुत शीघ्र आपको एक प्रति दे आवेंगे। मैं उन्हें फिर लिख रहा हूँ।

हमारा विचार यह है कि निकट भविष्य में आचार्य पद्मसिंह शर्मा का शताब्दी समारोह तथा अन्तर जनपदीय परिषद की बैठक का आयोजन मथुरा में ही किया जाय। मैंने डा० बनारसीदास जी चतुर्वेदी तथा अन्य विद्वानों से इस सम्बन्ध में पूछताँछ की है।

आशा है आप सानन्द हैं।

आपका
वृन्दावनदास

श्री आचार्य बैजनाथ राय के नाम

(४०८)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ३१-१०-७३

बन्धुवर आचार्य राय जी।

प्रणाम। आपका पत्र यथा समय प्राप्त हो गया था। धन्यवाद।

पत्रिका आपको भेजी जा चुकी है। डा० आर्य का पत्र भी मिल गया है। आपकी समीक्षाएँ मैंने 'समीक्षा' पत्रिका में पढ़ी हैं। उनसे मैं बहुत प्रभावित हुआ। आपमें आधुनिक युगबोध की सही पकड़ एवं समीक्षक की पैनी दृष्टि सर्वथा सराहनीय है।

यदि आपकी लिखी पुस्तकों की दो-दो प्रतियाँ हमें हमारी पुस्तकों के विनिमय में मिल सके तो हम उन्हें अपने संग्रहालय में रखने में प्रसन्नता का अनुभव करेंगे।

कृपा भाव रखें।

आपका
वृन्दाबनदास

(४०६)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ८-१२-७३

बन्धुवर आचार्य राय जी,

प्रणाम।

कृपा पत्र तथा 'पं० अम्बिका प्रसाद बाजपेयी' पर लेख मिला। इससे पूर्व अभिनन्दन ग्रन्थ में प्रकाशनार्थ लेख भी मिल चुका है। आपकी प्रेषित तीन पुस्तकों की एक-एक प्रति रंजन जी को समीक्षार्थ दे दी हैं। उनकी समीक्षा 'ब्रजभारती' में प्रकाशित कर दी जायेगी। कल 'आधुनिकतम् निबन्ध' की दो प्रतियाँ भी प्राप्त हो गई हैं। उस पुस्तक को भी देखकर उस पर अवश्य लिखेंगे। सबके लिए आपको अनेक धन्यवाद।

अपनी दोनों पुस्तकों की समीक्षा के सम्बन्ध में मैंने 'समीक्षा' सम्पादक डा० गोपालराय जी को लिखा था। उन्होंने आपके द्वारा लिखी समीक्षा को सहर्ष 'समीक्षा' में प्रकाशित करने का वचन दिया है। एतदर्थ वे स्वयं आपसे आग्रह करेंगे। उनका जो पत्र आया है वह इस पत्र के साथ आपके अवलोकनार्थ प्रेषित है।

आपकी कृतियों के प्रकाशन के सम्बन्ध में निवेदन है कि प्रकाशकों का हाल तो वैसा ही है जैसा कि उनके विषय में एक चित्र आपके मस्तिष्क में है। मेरी पुस्तकों के त्वरित प्रकाशन का रहस्य तो यह है मैं उनके मुद्रण में यथेष्ट धन लगा देता हूँ जिससे प्रकाशक का पंथ तो सुगम हो ही जाता है। मूल्य भी आज के मूल्यों की अपेक्षाकृत बहुत कम मैं ही निर्धारित करता हूँ। वैसे तो को कई प्रकाशक मेरी नजर में हैं जो १०० पुस्तकें रायल्टी स्वरूप देने की शर्त पर पुस्तक का प्रकाशन करने को उद्यत हो जाते हैं, परन्तु

अव्यवस्था विलम्ब आदि की जोखिम तो है ही, कारण उनकी आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है। बहुधा मैंने अपने कई मित्रों को राय दी है कि पुस्तक की टंकित प्रति अपने पास सुरक्षित रख कर प्रकाशक से व्यवहार करने की जोखिम उठानी चाहिये। कारण यदि वह निश्चित अवधि के भीतर ग्रन्थ को प्रकाशित करने में विफल होता है तो हम उसे दूसरी जगह छपा तो लेंगे। बहुत से साहित्यिकों को इस दिशा में असावधानी बरतने के कारण अर्थात् टकित प्रति के अभाव में अपनी मूल रचना से ही सदा के लिये हाथ धोना पड़ा है। कागज की कमी तथा भीषण मँहगाई आज प्रकाशक को 'टालू मिक्सचर' देने का बड़ा शक्तिशाली बहाना है। इधर की तरफ तो प्रकाशन कार्य ठप्प सा पड़ा है। मैंने इसलिये आपको इस सम्बन्ध में अपनी ओर के प्रकाशकों से सम्पर्क स्थापित करने को लिखा था। उससे अपना यथेष्ट नियन्त्रण रहता है। परन्तु अहिन्दी भाषी प्रदेश में हिन्दी की पाण्डुलिपि के प्रकाशन की क्षीण भावनाएँ भी मेरे मस्तिष्क से बाहर नहीं हैं। आप सोचिये तथा निम्नांकित प्रकाशकों को पत्र लिखिये—पं० यज्ञदत्त जी शर्मा, साहित्य प्रकाशन, मालीवाड़ा, दिल्ली तथा श्री रामगोपाल परदेसी, प्रगति प्रकाशन, वैतुल बिल्डिंग आगरा, आप मेरा हवाला दे सकते हैं, मैं भी इन लोगों से बात करूँगा। शायद इस दौरान में कागज को स्थिति कुछ सम्हले।

आचार्य पद्मसिंह शर्मा की शताब्दी हरिद्वार में मनाई जा रही है। तद्विषयक विज्ञप्ति सेवा में प्रेषित है। स्व० शर्मा जी के व्यक्तित्व कृतित्व सम्बन्धी अपना लेख लिखकर स्मारिका अथवा स्मृति ग्रन्थ में प्रकाशनार्थ मुझे शीघ्र भेजने की कृपा करें।

शेष कुशल है।

आपका
वृन्दावनदास

(४१०)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २८-६-७४

प्रिय राय जी।

आपका कृपा पत्र यथा समय प्राप्त हो गया। धन्यवाद। चिर सौभाग्यवती गीता का विवाह सोल्लास सानन्द सम्पन्न हो गया और वह विदा होकर आ भी गई है, यह जानकर परम प्रसन्नता हुई। उसके शुभ विवाह की शुभ तिथि ज्येष्ठ शुक्ल द्वितीया सम्वत् २०३१ वि० शुभ वासर गुरुवार दि० २३ मई १९७४ ई० सदा अविस्मरणीय बनी रहेगी। चिरंजीव श्री रवीन्द्रनाथ राय के साथ उसकी जोड़ी सुख, सुस्वास्थ्य प्रसन्नता और समानता के

भाव में सुदीर्घ काल तक बनी रहे। परमेश्वर उसे सुख समृद्धि और दीर्घायु प्रदान करें। उसे मेरा शुभाशीर्वाद कहिये।

पं० पद्मसिंह शर्मा के स्मृति ग्रन्थ का सम्पादन मुद्रण और प्रकाशन तो मुरादाबाद में हुआ था। हमने संग्रहीत सब लेख वहाँ भेज दिये थे। संग्रह ग्रन्थ की सीमा से कहीं अधिक हो गया और यही कारण हैं कि अवशिष्ट सामग्री का उपयोग श्री झड़प द्वारा सम्पादित 'चतुर्मुख' नामक मासिक पत्रिका में प्रकाशित कराने को बलिया भेजा गया। आशा है आपके लेख का उपयोग हो गया होगा।

आशा है आप स्वस्थ एवं सानन्द हैं।

आपका
वृन्दावनदास

(४११)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ६-११-७४

प्रिवयर आचार्य जी।

आपका पत्र मिला। धन्यवाद। अत्यधिक व्यस्तता तथा कई संस्थाओं के प्रशासनिक कार्यों में निरन्तर रत रहने के कारण पत्र-लेखन के कार्य में बाधा पड़ती रहती है। मुझे आश्चर्य है 'ब्रजभारती' का अङ्क आपको कैसे नहीं मिला वह तो नियमानुसार भेजा गया था। अस्तु, आज पुन: उसकी एक प्रति भेजी जा रही है। मेरी सद्यः प्रकाशित कृति 'डा० वासुदेव शरण अग्रवाल के पत्र' आपको अद्यतन न भेजी जा सकी, इसका मुझे खेद है। वह प्रति आपको आज दिन रजिस्टर्ड बुक-पोस्ट से भेज दी गई है, पहुँच लिखने की कृपा करें।

आपका लेख 'चतुर्मुख' के विशेषांक में छपा था, मुझे विश्वास है उसकी प्रति उसके प्रबन्ध सम्पादक श्री अनिलकुमार राय ने आपको अवश्य भेज दी होगी। यदि न भेजी हो तो कृपा कर एक कार्ड उन्हें डाल दें, वे अवश्य भेज देंगे।

अभिनन्दन ग्रन्थ तो अभी छप ही रहा है। उसके सम्बन्ध में अभी कुछ भी नहीं कहा जा सकता, परन्तु शीघ्र निकलने का प्रयत्न हो रहा है।

शेष कुशल है। कृपा भाव रखें।

आपका
वृन्दावनदास

(४१२)

२०२ नीलाम्बर
३७ पेंडर रोड,
बम्बई-२६, २७-११-७५

बन्धुवर आचार्य राय जी।

आपका ता० २३-१०-७५ का पत्र यथा समय प्राप्त हो गया था। परिवार में तीन विवाहों के कारण मुझे ता० ६ को ही चलकर बम्बई आना पड़ा। मैं १ दिसम्बर को मथुरा पहुँच जाऊँगा।

२६, ३० अगस्त को मथुरा में अन्तर जनपदीय परिषद् का अधिवेशन हुआ था। बिहार, बंगाल आदि के कार्यकर्त्ताओं को आमन्त्रित करने का कार्य सचिवों का था। मुझे बड़ा ही दुःख है कि कुछ महत्वपूर्ण कार्यकर्त्ता बुलाने में रह गये। वैसे बाढ़ तथा दूरस्थ होने के कारण बाहर के लोग बहुत ही कम आये थे, विवरण तो आपने पढ़ ही लिया है। आप अब कोई निबन्ध अवश्य लिखें। हम एकत्रित सब लेखों को 'चतुर्मुख' में प्रकाशित करने की व्यवस्था कर रहे हैं।

मैं श्री कुलदीप नारायण राय को लिख रहा हूँ कि वे आपको आवश्यक समितियों में मनोनीत करके आपसे पत्र-व्यवहार करेंगे।

अभिनन्दन ग्रन्थ में आपका लेख छप गया है। ग्रन्थ अब शीघ्र प्रकाशित होगा।

आशा है आप स्वस्थ एवं सानन्द है। स्नेह भाव बनाये रखें।

लोक साहित्य के अध्ययन को विश्व विद्यालय स्तर पर चालू किया जाय यह सुझाव अच्छा है। हिन्दी के अध्ययन को आकर्षक बनाना है। लोक-साहित्य के अध्ययन से पाठ्यक्रम की नीरसता दूर होगी तथा विद्यार्थियों को प्रतीत होगा कि हिन्दी की शब्द सम्पदा तथा अभिव्यक्ति सामर्थ्य एवं भाव प्रकाशन इससे बढ़ा है। मैं मथुरा पहुँचकर आपको बन्धुवर रमण शाण्डिल्य रचित एवं सम्पादित 'जनपदीय भाषाओं का साहित्य' शीर्षक पुस्तक की एक प्रति भेजूँगा। यदि दिसम्बर के पहले सप्ताह में पुस्तक न पहुँचे तो कृपाकर मुझे स्मरण करादेंगे। इस पुस्तक की भूमिका मैंने लिखी है।

आशा है स्वस्थ एवं सानन्द हैं।

आपका
वृन्दावनदास

श्री मोहनलाल शर्मा के नाम

(४१३)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ६-१-६७

प्रिय शर्मा जी, सादर नमस्कार ।

आज दिन ब्रजभारती छपकर प्रेस से आ गई। कल आपको भेजेंगे। आपकी कविता इसी अंक में स्थान पा गई है।

कल यहाँ ब्रजमाधुरी कार्यक्रम के प्रोड्यूसर डा० शरणबिहारी गोस्वामी आये थे। मैंने अपने निवास स्थान पर उनको चाय के लिये आमन्त्रित किया था। उन्होंने ब्रजभाषा गद्य के लेख ब्रजभारती में छापने पर बल दिया। मैंने आपके लेख की बावत उनसे जिक्र किया। इस पर वे बोले कि उनका लेख बहुत सुन्दर था और ब्रजभारती में प्रकाशित उनके उस लेख को पढ़कर ही मैंने उनका नाम आकाशवाणी के ब्रजमाधुरी कार्यक्रम के अन्तर्गत वार्ताकारों की सूची में सम्मिलित कर लिया था। हमें बड़ी प्रसन्नता हुई कि प्रशंसात्मक जिन भावों को हम अपने पहिले पत्र में आपको व्यक्त कर चुके हैं उनकी अनायास ही इतनी उत्तम पुष्टि ब्रजमाधुरी कार्यक्रम के संचालक से मिल गई। अस्तु। अब आप ब्रजभाषा गद्य में अपनी रचनाएँ हमें अवश्य भेजते रहें। हमें आपके लेखों को ब्रजभारती में छापने में बड़ी प्रसन्नता होगी।

हिन्दी सम्बर्द्धिनी योजना का अपूर्व स्वागत हो रहा है, कई बड़े उत्तम लेख प्राप्त हुये हैं। आप भी इसमें योगदान दें।

शेष फिर।

आपका
वृन्दावनदास

(४१४)

प्रकाश भवन,
मथुरा. १२-६-७०

बन्धुवर शर्मा जी।

कृपा पत्र, निमन्त्रण पत्र तथा लेख मिले। धन्यवाद। मैं आपके विद्यालय के उद्घाटन समारोह के प्रति अपनी शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ। लखनऊ, इलाहाबाद की यात्रा पर गया था। इलाहाबाद में हिन्दुस्तानी ऐकादमी की बैठक थी। कल ही आया हूँ, आज ही आपका पत्र देखा।

ब्रजसाहित्य मण्डल का इतिहास लिखा जाय यह आपका सुझाव मुझे बहुत अच्छा लगा। परन्तु प्रश्न यह है इसे लिखे कौन? मेरे द्वारा लिखा जाना कुछ उचित प्रतीत नहीं होता। मेरे विचार से आप ही शनैः शनैः इसे

लिख डालें, छपाने की व्यवस्था तो हो ही जायगी। ब्रजभारती में भी क्रमशः छापा जा सकता है लेकिन इस प्रकार तो वर्षों की बात हो जायगी, कारण तीन महिने में ५, ६ पृष्ठ निकल पायेंगे। मेरे विचार से पुस्तक रूप में यह चीज निकले तो उत्तम होगा। आप चाहें तो उसी विषय पर कुछ अन्य विद्वान् जैसे डा० सत्येन्द्र, श्री प्रभुदयाल मीतल, श्री गो० प्र० व्यास, ज्यो० राधेश्याम, श्री जवाहरलाल, श्री रामनारायण अग्रवाल आदि के विशिष्ट लेख भी उसमें समाविष्ट कर दिए जाँय। इस पर विचार करें।

आपका लेख आगामी अङ्क में निश्चय ही छापेंगे। पुस्तकें आप सुविधानुसार मँगालें, वे सुरक्षित रक्खी हैं। दूसरी की बाबत तो यों ही लिख दिया था जिससे आपको वस्तुस्थिति ज्ञात हो जाय। यदि डा० चैनिशोव उसे फिर माँगते हैं तो मैं उसे बाजार (वृन्दावन) से खरीद कर उनको भेज दूँगा, आपकी प्रति तो आपके पास ही रहनी चाहिये। आपकी नूतन पुस्तक की मैं उत्सुकता से प्रतीक्षा करूँगा।

शेष सब कुशल है।

आपका
वृन्दावनदास

(४१५)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ७-२-७१

प्रियवर शर्मा जी, नमस्कार।

ब्रज-साहित्य मण्डल के इतिहास विषयक निबन्ध की जो रूपरेखा आपने अपने पत्र में दी है वह मुझे अत्युत्तम जँची। १६४० से १६७० तक का इतिवृत्त इसके अन्तर्गत होगा यह ठीक ही है। आगे चलकर यही निबन्ध एक पुस्तक की भूमिका प्रस्तुत कर सकेगा। आप निबन्ध को शीघ्र तैयार करके भेजिये हम उसे ब्रजभारती में प्रकाशन हेतु सर्वाधिक प्राथमिकता देंगे। लेखों की बड़ी आवश्यकता है।

पोद्दार अभिनन्दन ग्रन्थ शायद सेठ नारायण प्रसाद जी पोद्दार से आपको निःशुल्क मिल सके। आप मथुरा आवें तब उनसे मिलें, हम भी उनसे कह सुनकर उसे आपको दिलाने की चेष्टा करेंगे। डा० सत्येन्द्र की पुस्तक तो खरीदनी ही पड़ेगी, कारण वह हमारे पास नहीं है।

जनगणना विषयक आपके विचार एव सुझाव बहुत उपयुक्त एवं उचित हैं। हम भी इसी प्रकार सोचते हैं तथा जैसा कि पहले प्रचार किया था अब भी पुनः उस सूत्र को जोड़ना चाहते हैं।

ब्रजबन्धु विनोद का काम भी कर ही डालिये। ऐसे ग्रन्थ की बड़ी जरूरत है। हम अपने घर को ही नहीं पहिचान रहे हैं। मैं इसमें आपको हर प्रकार का सहयोग दूँगा। आप चीज तैयार करिये। अपने सहयोग के प्रमाण स्वरूप अपना फार्म भर कर इस पत्र के साथ ही भेज रहा हूँ। २५ फार्म कम से कम मुझे भेज दीजिये, मैं मथुरास्थ ब्रजभाषा प्रेमियों से भरवाकर भेज दूँगा। मथुरा के किस-किस कवि या साहित्यिक ने आपको फार्म भर कर दे दिया यह लिख दें जिससे उनको व्यर्थ न खटखटाना पड़े।

अब इन कामों में विलम्ब न करें। जो कमी रह जायगी वह दूसरी आवृत्ति में पूरी करेंगे। अग्रगामी होने का सौभाग्य आपकी चीज को मिले यह मेरी आकांक्षा है। इस सम्बन्ध में जो और सुझाव होंगे पीछे दूँगा, पहिले परिचय पत्र इकट्ठे कीजिये।

ब्रजक्षेत्र के अतिरिक्त बीसियों ब्रजभाषा कवि और लेखक और भी देश में यत्र-तत्र सर्वत्र फैले हुए हुए हैं। उनमें से कुछ को मैं जानता हूँ वे हमारे विशाल ब्रजभारती परिवार के सदस्य भी हैं। आप जब मुझे लिखेंगे मैं उनके नाम व पते भी आपको भेज दूँगा जिससे आप उन्हें पत्रक भेजकर भरवा कर मँगवालें। मैं अपने पत्र के साथ आपके मुद्रित पत्र को संलग्नक के रूप में भेजकर उनसे भरवा कर मँगवा सकता था परन्तु मैं चाहता हूँ कि बहैसियत सम्पादक आपका ही उनसे व्यक्तिगत सम्पर्क हो।

ब्रजभारती में भी आपके इस कार्य का प्रचार करूँगा परन्तु अब की बार फाल्गुन अंक तो छप भी चुका कारण प्रेस वाले को दिसम्बर जनवरी में अवकाश था अतः मैंने उसका उपयोग कर लिया, अब तो ज्येष्ठ अंक में ही सम्पादकीय में चर्चा चलाऊँगा, यह अंक दो महीने बाद छपना शुरू हो जायगा।

प्रस्तुत पत्र भी पत्र-व्यवहार स्तम्भ के अन्तर्गत छपने योग्य है, अतः आपकी अनुमति से इसे भी प्रकाशित करना है।

आपने लिखा है कि ब्रजक्षेत्र के अतिरिक्त ब्रजभाषा के साहित्यिक बन्धुओं के जो नाम मुझे मालूम हैं उन्हें मैं पते सहित आपको सूचित करूँ। मैं बहुत शीघ्र ऐसी सूची आपको भेजूँगा। आपकी ब्रजबन्धु विनोद की योजना बहुत अच्छी है, इसको बढ़ाइये। आपके पत्र को आगामी मैं अंक में प्रकाशित करूँगा तथा इसकी चर्चा सम्पादकीय में।

आपका
वृन्दावनदास

श्री राधेबिहारी लाल सक्सेना 'राकेश' के नाम

(४१६)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २-५-६७

प्रिय सक्सेना जी, नमस्कार।

कृपा पत्र तथा लेखादि मिले। धन्यवाद। ब्रजभारती का मार्ग शीर्ष (नवीनतम) अङ्क छप चुका हैं, वाइंडिग में है। ४, ५ दिन में आपकी सेवा में पहुँचेगा। इस अंक में तो आपकी प्रेषित सामग्री का उपयोग नहीं हो सकता था अगले अंक में अवश्य यथासाध्य उपयोग करेंगे।

हमारी हिन्दी सम्बर्द्धिनी योजना का सर्वत्र बड़ा स्वागत हो रहा है, वह सत्वर लोकप्रियता प्राप्त कर रही है। राष्ट्रभाषा सन्देश ने तो उसको अविकल अपने अंक में उदधृत किया था। कई विद्वानों ने शुभकामनाएँ और कई ने उपयोगी लेख भेजे हैं। वे हमने मार्गशीर्ष के अंक में प्रकाशित भी किए हैं।

गोवर्धन में साहित्य परिषद की स्थापना करने का आपका कार्य स्तुत्य है। शुभ कामनाओं के साथ।

आपका
वृन्दावनदास

(४१७)

प्रकाश भवन,
मथुरा. १५-५-६७

प्रिय सक्सेना जी।

आपके प्रचार मन्त्री श्री देवकीनन्दन कुम्हेरिया का निमन्त्रण पत्र आया था। यह परम हर्ष की बात है कि अब की बार आप लोगों ने कवि सम्राट भक्त शिरोमणि सूरदास जी की जयन्ती बड़े समारोह पूर्वक मनाई। वास्तव में चन्द्रसरोवर एवम् परासोली तो ऐसे स्थान है जिनका सौभाग्यवश आपको सानिध्य प्राप्त है और जहाँ यह उत्सव मनाया भी जाना चाहिये।

उस दिन स्थानीय उत्सवों में भाग लेने के कारण मैं वहाँ पहुँचने में असमर्थ रहा इसका मुझे कुछ खेद ही रहा। धन्यवाद।

आपका
वृन्दावनदास

डा० लक्ष्मीशंकर मिश्र 'निशंक' के नाम

(४१८)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ५-५-६६

मान्यवर निशंक जी।

मान्यवर दुबे जी के पत्र के साथ आपका पत्र मिला। अनेकानेक धन्यवाद। दुबेजी ने आपकी रचनाओं के विषय में जो कुछ लिखा है मैं उमसे अत्यन्त प्रभावित हुआ हूँ। आप अपनी कृति को निःसन्देह शीघ्रातिशीघ्र छपाइये। मैं जो कुछ सहयोग सम्भव होगा अवश्य दूँगा। आपकी कुछ पुस्तकों को ऐसी पुस्तकों के विनिमय में निकलवा दूँगा जो आपके पास से आसानी से निकल जायेंगी। यह तो निश्चित ही है कि ब्रजभाषा की पुस्तकों की बिक्री कम है। पुस्तक पर आवरण आकर्षक होना चाहिये।

मैं अपनी आगामी लखनऊ यात्रा में आपके दर्शन करूँगा।....

आप कभी मथुरा पधारें तो दर्शन देना न भूलें। २३, २४ मई को फीरोजाबाद में उत्तर प्रदेशीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन का वार्षिक अधिवेशन मेरी अध्यक्षता में हो रहा है। कवि सम्मेलन भी होगा, पधारें। आपको विधिवत् निमन्त्रण भी पहुँचेगा।

आशा है आप स्वस्थ एवं सानन्द हैं।

आपका
वृन्दावनदास

(४१९)

मथुरा. १६-३ ७३

बन्धुवर निशंक जी।

"सुकवि" को पुनः प्रकाशित करने का आपका विचार परम स्तुत्य है। यह तो ब्रजभाषा की बड़ी अनुपम सेवा होगी। मैं तो बड़ी खोज में था कि कोई इस शुभ कार्य को हाथ में ले। मेरी समस्त शुभ कामनाएँ तथा पूर्ण सहयोग आपके लिए सुरक्षित है। ब्रजभारती के आगामी अङ्क में मैं इसकी चर्चा कर दूँगा, मुझे आशा है कि आपके पास कविताओं के ढेर लग जायेंगे। कवियों को मालूम होने दीजिये, वे तो अपनी रचनाओं के प्रकाशन के लिए छटपटाते ही रह जाते हैं। पत्र ही कौन-सा है जो उनकी रचनायें छापें। मैं बहुत ही शीघ्र कुछ रचनाएँ जो मेरे पास संग्रहीत हैं, भेजूँगा तथा और भी कवियों से लेकर स्वयं भेजूँगा अथवा उनसे सीधे भिजवाऊँगा।

आपका
वृन्दावनदास

(४२०)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ७-५-७३

बन्धुवर निशंक जी ।

यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि श्रद्धेय विद्वद्वर श्री नारायण जी चतुर्वेदी के संरक्षण में आप सुकवि को पुनर्जीवित करने जा रहे हैं। हिन्दी साहित्य जगत् की यह एक विशाल उपलब्धि होगी। सम्प्रति हिन्दी कविता के लिये समग्र रूप से कोई पत्र है ही नहीं। अनेक उत्कृष्ट कविताएँ अप्रकाशित रह जाती है। प्रकाशन के अभाव में अनेक कविगण हताश होकर लिखना छोड़ देते हैं।………हम ब्रजक्षेत्र के कवियों की कविताएँ स्वयं भेजेंगे तथा भिजवायेंगे। मैंने ब्रजभारती में टिप्पणी तो दे दी है, ज्येष्ठ अंक लगभग छप चुका है। आगामी अंक में विज्ञप्ति भी छाप देंगे, तब तक आपका प्रथम अंक भी निकल आवेगा।………कवियों के पते शीघ्र भेजूँगा।

आपका
वृन्दावनदास

(४२१)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २३-५-७३

बन्धुवर निशंक जी।

श्री ब्रजनन्दन गुप्त ब्रजेश कोट बाजार राठ (हमीरपुर) की दो रचनाएँ भेज रहा हूँ। कृपा कर इन्हें सुकवि विनोद में प्रकाशित कर दें। इनको पत्र भी लिखें जिससे ये आपको निरन्तर कविता भेजते रहें। ये बड़े ही सरस ब्रजभाषा काव्य की रचना करते हैं, कठिनाई केवल यही है कि इनका लिखना सुस्पष्ट नहीं है। इसके लिए इन्हें ताकीद करनी पड़ेगी। लेख सुस्पष्ट होना चाहिये अन्यथा अशुद्ध छप जाने का भय है। अशुद्ध मुद्रण से पत्र की बदनामी होती है। इस दोष से घाटा सर्वाधिक सम्पादक को लगता है। दोष किसी और का और आता अपने ऊपर है।

शेष फिर।

आपका
वृन्दावनदास

(४२२)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २१-९-७३

बन्धुवर निशंक जी, प्रणाम।

कृपा पत्र मिला। मैं बुन्देलखण्ड की साहित्यिक यात्रा से कल लौटा हूँ। आने पर आपका पत्र मेज पर एकत्रित डाँक में मिला। पहले तो आप हमें ही आजीवन सदस्य बनाइये। १०१) का चैक संलग्न है।

मैं ता० १२ को लखनऊ में ही था। उस दिन त्वरा में आपसे न मिल सका परन्तु श्रद्धेय श्री नारायण जी चतुर्वेदी के दर्शन अवश्य उनके निवास स्थान पर जाकर कर लिये थे। उनसे कई घण्टे वार्तालाप हुआ था।

आपकी पत्रिका का एक ही अंक हमारे पास आया था उसे हम देख भी न पाये थे कि श्री दीनानाथ सुमनेश उसे हमारे पास से ले गये। अतः समीक्षा तो तब हो जब अंक हमारे सामने हों। कृपा कर दोनों अंकों की कम से कम ५-५ प्रतियाँ हमें बुक-पोस्ट से भेज दें। लोगों को दिखाकर कविताएँ भिजवाने का प्रयत्न करूँगा, जो भी देखेगा उसे ले तो जायेगा ही। कुछ कविताएँ तथा पते बहुत शीघ्र आपको भेजूँगा।

मथुरा भूखी बस्ती है यहाँ से विज्ञापन अथवा सदस्यता सम्बन्धी कोई भी आर्थिक सहयोग कठिन ही नहीं असम्भव है।

संरक्षक, आजीवन सदस्य बनाने को चतुर्वेदी जी के माध्यम से पत्र भिजवायें तो लाभ ही रहेगा।

भवदीय
वृन्दावनदास

श्री डा० लल्लन मिश्र के नाम

(४२३)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २७-१-७२

प्रियवर मिश्र जी, प्रणाम।

कृपा पत्र यथा समय प्राप्त हो गया। अनेक धन्यवाद। मैं अपनी दस दिवसीय हिन्दी सेवा यात्रा पर था, कल ही लौटा हूँ। सपरिवार लखनऊ, अयोध्या, प्रयाग गया था। जिस हेतु से गया था वह संलग्न दो मुद्रित पत्रों से विदित हो जायगा।

विश्वविद्यालयों के कार्यों में विलम्ब लग ही जाता है। सर्वत्र एक-सी

ही दशा है। आप पीछे पड़े रहिये तब ही काम होगा। आज के प्रजातन्त्र युग में यही तरीका काम निकालने का रह गया है। स्वतन्त्रता का अर्थ लोगों ने स्वच्छन्दता ही लगाया है और जिम्मेदारी के साथ कोई काम करके देता नहीं।

ग्रन्थके लिये अपने सहयोगी सुकवि जीकी कविता तथा अपना लेख आप निश्चित पते पर अथवा मुझे ही भेज दें। उनको निश्चित रूप से सम्मानपूर्ण स्थान प्राप्त होगा।

अयोध्या में पुस्तकालय २१ ता० से चालू हो गया है।

शेष कृपा है।

आपका
वृन्दावनदास

(४२४)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ४-२-७२

बन्धुवर।

कृपा पत्र मिला। साथ में चतुर्वेदी जी लिखित पुत्रों को पत्र की प्रतिलिपि भी। बड़ा ही बढ़िया पत्र है। कल्पना की उड़ान यथार्थ के धरातल पर कितनी सच्ची है।

प्रस्तुत पत्र तथा आपका पत्र दोनों हमने सम्बन्धित फाइल में सुरक्षित कर लिये हैं। जब कभी श्रद्धेय चतुर्वेदीजी के पत्रों के दूसरे संस्करण की बात चलेगी आपके पत्रों को उसमें प्राथमिकता दी जायेगी। कृपा भाव रक्खें।

आपका
वृन्दावनदास

(४२५)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २६-२-७२

प्रियवर मिश्र जी, प्रणाम।

कृपा पत्र मिला। धन्यवाद। अयोध्या गर्मियों की छुट्टी में जायेंगे यह जानकर हर्ष हुआ। अवश्य जाँय और पुस्तकालय को देखें।

सासनी अंक आपको अवश्य भिजवाऊँगा। मैं आज ही रंजन जी को लिखकर उसकी कुछ प्रतियाँ मँगा रहा हूँ। कृपा कर १५ दिन बाद पुनः एक कार्ड मुझे लिख दें।

पी० डी० जैन कालेज का अंक मेरे पास था तो सही परन्तु मथुरा से

जनपद अंक निकालने का व्रत लेने वाले श्री शर्मनलाल अग्रवाल उसे मेरे पास से ले गये हैं। उसको आपके लिये पाने की चेष्टा भी करूँगा।

डा० अग्रवाल (डा० बासुदेवशरण अग्रवाल) के पत्रों की पुस्तक का मुद्रण अभी खटाई में ही पड़ा है। उनके पुत्रों से अनुमति मिले तब काम हो।

शेष सब कुशल है।

आपका
वृन्दावनदास

(४२६)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २०-४-७२

बन्धुवर मिश्र जी।

कृपा पत्र मिला तथा 'स्मार्त निराला' की बढ़िया समीक्षा भी। अनेक धन्यवाद। समीक्षा ब्रजभारती के आगामी अङ्क में प्रकाशित कर दी जायगी।

आपने चतुर्वेदी जी के उनके पुत्रों को लिखे हुए जिन पत्रों का उल्लेख किया है वे मेरे पास नहीं हैं। यदि हो सके तो उनकी कापी मुझे भेज दें।

चतुर्वेदी जी के पत्रों का दूसरा संग्रह अवश्य छापने का विचार है। अभी कुछ समय बाद ही ऐसा करने का इरादा है। मेरे पास चतुर्वेदी जी के अगणित पत्र विद्यमान हैं। अब की बार संग्रह में से पुराने बहुत से पत्रों की छँटनी करके उनके नये पत्रों का समावेश किया जायगा।

आशा है आप स्वस्थ एवं सानन्द हैं। ब्र० सा० मण्डल का १६ वाँ अधिवेन २७ अप्रैल को भरतपुर में हो रहा है। यदि सम्भव हो सके तो पधारें, निमन्त्रण संलग्न है।

आपका
वृन्दावनदास

(४२७)

प्रकाशन भवन,
मथुरा. १७-७-७२

बन्धुवर मिश्र जी।

कृपा पत्र मिला। अनेक धन्यवाद। आपने मेरे प्रति जो स्नेह एवं सद्भाव व्यक्त किए उनके लिए आपका आभारी हूँ। 'पत्र-संग्रह' जो सज्जन आपका सन्दर्भ देकर मँगावेंगे उनको अवश्यमेव प्रेषित होंगे।

आपका प्रबन्ध मूल्यांकित होकर भी अनिर्णीत ही पड़ा है यह जान कर दुःख हुआ। क्या श्रद्धेय चतुर्वेदी जी वाराणसी में आपको बुलाकर

मौखिक परीक्षा नहीं ले सकते ? उनके वर्तमान स्वास्थ्य की परिस्थिति में वि० वि० वाले यह सुविधाजनक अधिकार तो उन्हें दे ही सकते हैं अथवा उनके स्थान पर कानपुर का ही कोई विद्वान् उस कार्य को सम्पन्न कर सकता है। ऐसे मामलों में देर करके हम कार्य और विषय की गरिमा को ही समाप्त कर देते हैं। क्या इस विषय में सीनेट या काउन्सिल के किसी सदस्य के माध्यम से वि० वि० का द्वार खटखटाया नहीं जा सकता। मैं अपने पत्र में चतुर्वेदी जी को लिखूँगा कि वे इस कार्य को शीघ्र पूर्ण करने में सहायक हों। शेष सब कुशल है। अभि० ग्र० का मुद्रण अभी शुरू नहीं हुआ है, आशा है शीघ्र ही ऐसा होगा।

आपका
वृन्दावनदास

(४२८)

प्रकाश भवन,
मथुरा. १६-१०-७२

बन्धुवर मिश्र जी।

कृपा पत्र यथासमय प्राप्त हो गया था। अनेक धन्यवाद। आपने व्रजभारती के सम्पादन तथा अध्यक्षीय भाषण पर जो भाव व्यक्त किये उनके लिए अनुगृहीत हूँ। मुझे खेद है कि मौखिक परीक्षा का सुयोग बन ही नहीं पा रहा है। आवश्यक है कि वह काम पूरा हो और स्व० विद्यार्थी पर लिखा आपका शोध-प्रबन्ध प्रकाश में आ सके। अब की बार २२ ता० की सीनेट की मीटिंग में इसका पता लगाऊँगा तथा इस कार्य को शीघ्र कराने की चेष्टा करूँगा।

आप श्रद्धेय चतुर्वेदी जी पर अवश्य लिखें। वह लेख अमर उजाला और सैनिक में प्रकाशित होना चाहिये। एक प्रति मुझे भी भेज दें। तीन कापी टाइप करावें। कोई नवीन बात नहीं है।

आपका
वृन्दावनदास

(४२९)

प्रकाश भवन,
मथुरा. १६-११-७२

बन्धुवर मिश्र जी।

कृपा पत्र यथा समय मिल गया। मेरी पुस्तक प्राचीन भारत में हिन्दू राज्य के सम्बन्ध में जिन आत्मीयता के भावों से आपने मुझे स्मरण किया है

उसके लिये आभारी हूँ। इस पुस्तक की रचना में मुझे अत्यधिक परिश्रम करना पड़ा। अनेक ग्रन्थों के आलोड़न के उपरान्त तथ्य स्थिर किये गये और तभी पुस्तक भी लिखी जा सकी। पुस्तक की समीक्षा अच्छी हो रही है इससे प्रकट है कि हिन्दी ससार इसका अच्छा स्वागत कर रहा है।

आशा है आप स्वस्थ एवं सानन्द हैं।

आपका
वृन्दावनदास

(४३०)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ३०-११-७२

बन्धुवर।

आपका पत्र मिला। धन्यवाद। यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि श्रद्धेय बनारसीदास जी चतुर्वेदी से आपकी कानपुर में भेंट हो गई। अब वे फीरोजाबाद आ गये हैं, मैं भी शीघ्र ही उनके दर्शन करूँगा।

मेरी नई पुस्तक (प्राचीन भारत में हिन्दू राज्य) की चर्चा निस्सन्देह खूब हो रही है। यह आप सदृश सहृदय मित्रों की सद्भावनाओं का सुफल है। मण्डल के विषय में लिखा सो ठीक ही है। संस्थाओं के काम ऐसे ही चलते हैं। संस्थाओं के संचालन में एक धैर्य और निष्ठा की दृढ़ मनस्थिति की अपेक्षा रहती है। संस्था का अध्यक्ष कैसा होना चाहिये इस पर एक अँग्रेज मनीषी का मत अत्यधिक महत्वपूर्ण, सारगर्भित और हमारी संस्कृति के अनुरूप है। मैं उसे कभी उद्धृत कर आपको लिखूँगा। आप मुझे १५ दिन बाद स्मरण करावें। आजकल मेरी तबीयत ठीक नहीं है, अधिक श्रम बर्दाश्त नहीं कर सकता।

शेष सब कुशल है।

आपका
वृन्दावनदास

(४३१)

प्रकाश भवन,
मथुरा.

बन्धुवर मिश्र जी।

आपका कृपा पत्र मिला। धन्यवाद। लखनऊ की द्विदिवसीय यात्रा से आज लौटा हूँ। अँग्रेज मनीषी की चर्चा का स्मरण कराया इसके लिये धन्यवाद। एक आदर्श अध्यक्ष की व्याख्या इसी प्रकार की गई है।

एलवर्ट ने जिन गुणों से सम्पन्न अध्यक्ष की चर्चा की है वह क्या कभी जीवन में विफल हो सकता है ? परन्तु एक ही व्यक्ति में इतने गुणों का समावेश दुर्लभ है। प्रतिभावान् व्यक्ति अभ्यास से इन गुणों को आत्मसात् करने में सक्षम हो सकता है।

आपको पी-एच० डी० की उपाधि अब शीघ्र प्राप्त होगी यह जानकर परम प्रसन्नता हुई, ज्यों बड़री अँखियाँ निरखि आँखन को सुख होत। पूज्य चतुर्वेदी जी अभी तो इधर ही हैं, हाँ ज्ञानपुर अवश्य जायेंगे जैसा आपने लिखा है।

आशा है आप स्वस्थ एवं सानन्द हैं। सम्मेलन का अधिवेशन अत्यधिक सफल रहा।

आपका
वृन्दावनदास

(४३२)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २-२-७३

बन्धुवर मिश्र जी।

आपका पत्र पाकर परम प्रसन्नता हुई। पी-एच० डी० की उपाधि प्राप्ति पर आपको बहुत बधाई। आपने विषय भी बड़ा सुन्दर लिया था। आपका शोध प्रबन्ध अवश्य छपेगा। कृपाकर लिखिये कि वह कितने पृष्ठों का होगा। १८ × २२ साइज अठपेजी कितने पृष्ठ होंगे। हमारा कई प्रकाशकों से सम्पर्क है। कोई न कोई तो उसे हाथ में लेने को उद्यत हो ही जायगा।

यदि आप अपने व्यय से ही छपवाना चाहें तो उसकी छपाई की की व्यवस्था कराई जा सकती है। मेरे विचार से आपको प्रकाशक के माध्यम से ही काम करना उचित है क्योंकि आजकल लागत बहुत आती है।

आशा है आप स्वस्थ एवं सानन्द हैं।

आपका
वृन्दावनदास

(४३३)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २१-२-७३

बन्धुवर डा० मिश्र जी।

कृपा पत्र मिला। यदि कानपुर वाले ग्रन्थ को छापें तो बात ठीक

बनेगी कारण आप उसे छपते भी देख लेंगे। आपके विश्वास का आदमी हो तो कम मूल्य रखने की बात पर ज्यादा महत्व न दें, कारण अधिक मूल्य रखने पर कमीशन उन्हें अधिक ही देना होगा। आपको प्रकाशन की बिक्री से क्या मतलब है। आप तो रायल्टी स्वरूप पुस्तकें ही ले लें। रही अच्छी बुरी ख्याति की बात सो ये तो सभी एक ही थैली के चट्टे-बट्टे हैं। कौन कह सकता है कि किससे कैसे निबटे, फिर भी काम तो करना ही पड़ता है। मैं तो अपनी पुस्तक स्वयं छपाता हूँ और कम से कम इस दृष्टि से उन पर निर्भर नहीं हूँ।

शेष सब कुशल है।

भवदीय
वृन्दावनदास

(४३४)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २८-७-७३

बन्धुवर लल्लन जी।

कृपा पत्र मिला। धन्यवाद। ज्येष्ठ अंक असंदिग्ध रूप से आपके कालेज के पते से भेजा गया है। किसी ने ले लिया होगा। अब आज ही दुबारा सेवा में प्रेषित है।

श्रद्धेय चतुर्वेदी जी की मेरे ऊपर महान् कृपा है। साहित्यिक क्षेत्र में मेरे कार्य कलापों से उनको सन्तोष प्राप्त है और यही मेरा सबसे बड़ा सम्बल है।

सुधाकर जी से आपके ग्रन्थ के प्रकाशन की बात बन ही जानी चाहिये थी। नागरी प्रचारिणी सभा तो उसके प्रकाशन के लिये बड़ा ही उपयुक्त माध्यम सिद्ध होती। अवसर मिला तो पाण्डेय जी से इस सम्बन्ध में मैं भी बातचीत करूँगा। वाराणसी तथा दिल्ली में अनेक प्रकाशक शोध प्रबन्ध छाप रहे हैं, आपका प्रबन्ध तो एक महिमा सम्पन्न व्यक्तित्व से सम्बन्धित है। यदि आप प्रकाशकों से सम्पर्क स्थापित करें तो इसके त्वरित प्रकाशन में मुझे तनिक भी सन्देह नहीं है।

आशा है आप स्वस्थ एवं सानन्द हैं।

आपका
वृन्दावनदास

(४३५)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २१-६-७३

बन्धुवर मिश्र जी ।

कृपा पत्र मिला । मैं बुन्देलखण्ड की साहित्यिक यात्रा से कल रात्रि को ही लौटा हूँ । उरई में एक ग्रन्थ का विमोचन करना तथा झाँसी में हिन्दी दिवस से सम्बन्धित आयोजनों में भाषण करना यात्रा का मुख्य उद्देश्य था ।

ब्रजभारती का वर्ष २७ का ज्येष्ठ अंक पृथक् डाक से भेज रहा हूँ ।

आपके शोध प्रबन्ध को छपवाने की व्यवस्था तो करनी ही है, कारण वह एक वन्दनीय महापुरुष के व्यक्तित्व और कृतित्व से सम्बन्धित है । मैं स्थानीय किंवा आगरा क्षेत्र के प्रकाशकों से स्वयं बातचीत करके आपको लिखूँगा । यहाँ के प्रकाशक अर्थाभाव से ग्रस्त रहते हैं । क्या आप रायल्टी स्वरूप १०० प्रतियाँ लेकर संतुष्ट होंगे । यदि नहीं, तो कृपाकर कानपुर विश्व-विद्यालय के अधिकारियों से सम्पर्क करें । हम डा० वीरेन्द्र स्वरूप से कह सकते हैं । वे विधान परिषद् के अध्यक्ष हैं, कानपुर विश्वविद्यालय क्षेत्रों में प्रभावशाली हैं तथा हमारे मित्र हैं ।

शेष फिर ।

आपका
वृन्दावनदास

श्री ब्रजनन्दन ब्रजेश के नाम

(४३६)

प्रकाश भवन,
मथुरा. १६-११-६८

प्रिय ब्रजेश जी ।

कृपा पत्र आपका मिला । धन्यवाद । आपकी हृदयग्राही कविता पढ़ कर बड़ा आनन्द हुआ । मीरा का रेखा चित्र नामी आपकी रचना हमने अपने सहयोगी पत्रकार मित्र अखण्ड विजय ज्योति के सम्पादक को उनकी पत्रिका में प्रकाशनार्थ दे दी थी । उन्होंने उसे अभी छापा नहीं प्रतीत होता है । मैं उनसे पूछूँगा । कृपाकर उसकी एक प्रतिलिपि भेज दें । यथा सम्भव शीघ्र अपनी ही पत्रिका में छाप देगे । हम उसकी सारगर्भिता को पहले न समझ

पाये परन्तु आपकी कविता पढ़कर अब उसे प्रकाशित करने का लोभ संवरण नहीं कर सकते।

धन्यवाद।

आपका
वृन्दावनदास

श्री डा० शालिग्राम गुप्त के नाम

(४३७)

प्रकाश भवन,
मथुरा. १०-११-६५

प्रिय डा० गुप्त। सादर नमस्कार।

कृपा पत्र और लेख प्राप्त हुए। धन्यवाद। मार्गशीर्षकी पत्रिकाका मैटर प्रेस में दिया जा चुका है, अतः आपका लेख निस्संदेह फाल्गुन की पत्रिका में प्रकाशित होगा। आपकी कृति अति सुन्दर एवं ललित है। उससे पत्रिका का गौरव बढ़ेगा। आपके पूज्य पिता डा० माताप्रसाद जी तो मण्डल पर बड़ी कृपा रखते हैं। उन्होंने तो पुनर्जीवित मण्डल की प्रथम गोष्ठी में भाग लिया था और उस दिन हम लोग उनका अभिनन्दन करके धन्य हुए थे। आप भी मण्डल के विषयों में रुचि लें और पत्रिका के लिये कोई अपनी रुचि का लेख यदाकदा भेज दिया करें। इधर की तरफ आवें तो हमें सूचित भी करें जिससे हम अवसर पाकर आपको किसी गोष्ठी में भी आमन्त्रित करें।

शेष कुशल है।

आपका
वृन्दावनदास

(४३८)

प्रकाश भवन,
मथुरा. १४-१२-६५

प्रिय डाक्टर साहब, सादर नमस्कार।

आपका १८-११-६५ का पत्र यथासमय मिल गया था। यद्यपि पहिले कुछ ऐसा प्रतीत होता था कि आपके प्रेषित लोकगीत हम इस अङ्क में प्रकाशित न कर सकेंगे, परन्तु पीछे कुछ ऐसी स्थिति बन गई कि इसी अंक में उनको छापना सम्भव हो गया। आपके भेजे गीत छप गये हैं। पत्रिका के पूरी होने में थोड़ा कार्य शेष है। आशा है एक सप्ताह या दस दिन के भीतर हम उसे आपकी सेवा में पहुँचा सकेंगे।

धन्यवाद।

आपका
वृन्दावनदास

(४३६)

महाकवि ग्वाल पुण्य शताब्दी समारोह समिति
प्रधान कार्यालय, प्रकाश भवन,
डोरी बाजार, मथुरा।
दि० २६-८-६७

प्रिय बन्धु।

समारोह समिति ने कुछ विशेष परिस्थितियों वश समारोह की तिथियाँ स्थगित करने का निश्चय किया है। अतः ग्वाल शताब्दी समारोह अब १०, ११ दिसम्बर को होगा। समारोह के विस्तृत कार्यक्रम सहित आगामी तिथियों की सूचना शीघ्र ही निकट भविष्य में आपकी सेवा में भेजी जावेगी। समारोह को अधिक तैयारी सहित मनाया जाय इसी भावना से इसको थोड़े दिन के लिये ही स्थगित किया गया है।

आपका
वृन्दावनदास

(४४०)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २५-३-६८

प्रिय डाक्टर गुप्त जी। सादर नमस्कार।

समारोह सम्बन्धी प्रथम पत्रक सेवा में प्रेषित है। विस्तृत कार्यक्रम भी शीघ्र भेजा जायगा। इस अवसर पर अन्तर्जनपदीय परिषद एवं ब्रजभाषा साहित्य सम्मेलन भी करेंगे।

तीनों दिन एक-एक स्मृति ग्रन्थ भेंट होगा। ग्वाल-स्मृति ग्रन्थ में आपका लेख सम्मिलित कर लिया गया।

इस अवसर पर साहित्यिकों का एक बड़ा सम्मेलन होने की आशा है। आप इसमें पधारने की योजना बनावें। आशा है आप अपना महत्वपूर्ण योग-दान अवश्य देंगे। आपके आने से हमारा कार्य सरल होगा। धन्यवाद

आपका
वृन्दावनदास

श्री डा० श्याम शर्मा के नाम

(४४१)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ३-६-७०

प्रिय बन्धु।

आपका कृपा पत्र स्व० डा० अग्रवाल जी के पत्रों की प्रतिलिपि सहित

प्राप्त हुआ। धन्यवाद। डा० अग्रवाल जी के उन पत्रों का विशेष महत्व है जिनमें जनपदीय निरूक्त की अनेक गुत्थियों को सुलझाया गया है। उन्होंने अनेक जनपदीय शब्दों में वैदिकी विद्या के दर्शन किये हैं। अनेक शब्दों का तादात्म्य वैदिक शब्दावली से किया है। उनके अनेक पत्रों में उपनिषदों का नवनीत संग्रहीत है। फिर भी प्रस्तुत पत्रों का कुछ न कुछ उपयोग करेंगे ही, आपकी टिप्पणी से उनकी उपयोगिता बढ़ गई है।

शेष कुशल।

आपका
वृन्दावनदास

(४४२)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ५-१-७१

प्रियवर डा० शर्मा जी।

कृपा पत्र तथा दो लेख मिले। धन्यवाद। सुविधानुसार दोनों लेखों को ब्रजभारती में स्थान प्राप्त होगा।

जनपदीय आन्दोलन विषयक आपके विचारों से मैं सहमत हूँ। आपका लेख विचारोद्दीपक है, उससे कुछ चेतना ही आवेगी।

शेष सब कुशल है। ब्रजभारती अङ्क ३ सम्वत् २०२७ (मार्गशीर्ष अंक) पहुँचा होगा।

आपका
वृन्दावनदास

(४४३)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ६-२-७१

प्रिय डा० शर्मा जी।

कृपा पत्र दिनांक २५-१-७१ यथासमय प्राप्त हो गया। धन्यवाद। आपने यह खूब लिखा 'बारम्बार कष्ट देने के लिये क्षमा।' साहित्यिक बन्धुओं को पत्र लिखने में तो हमें एक विचित्र आनन्द का अनुभव होता है और फिर जब हिन्दी-सेवा के ही लिये अपना क्षुद्र योगदान करने बैठे तो यदि साहित्यिकों के पत्रों से घबराने लगे तो बस हो गई हिन्दी सेवा।

आपने मेरे प्रति जो भाव व्यक्त किये हैं उनके लिये आभारी हूँ। आपने जो अभिनन्दन ग्रन्थ सम्बन्धी बात लिखी है वह ठीक ही है, कुछ विद्वज्जन इस कृपा को करने हेतु दत्तचित्त और कार्यरत हैं। मुझे तो उसमें कुछ करना धरना है नहीं।

आशा है आप सानन्द हैं। मुझे पत्र लिखने के पूर्व यह कभी न सोचिये कि मुझे कोई कष्ट होगा। मुझे तो इससे राहत होती है, जिसे मुझे आपसे पाने का अधिकार है।

शुभेच्छु
वृन्दावनदास

श्री श्यामसुन्दर खत्री के नाम

(४४४)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २४-६ ६६

मान्यवर खत्री जी।

आप तो हमारे मान्य उत्कृष्ट समीक्षाकार हैं। आपकी भेजी समीक्षा निस्सन्देह ब्रजभारती में समादृत स्थान प्राप्त करेगी।

जैसा कि मैंने आपको पिछले पत्र में लिखा था श्रद्धेय चतुर्वेदी जी का आपरेशन सफल हो गया। वे परसों तक अस्पताल के प्राइवेट वार्ड में विश्राम कर रहे थे। सम्भव है आजकल में ४ लाजपत कुंज, सिविल लाइन्स, आगरा अपनी पुत्री के यहाँ चले गये हों। वे कहते थे कि कुछ दिन वहाँ भी ठहरेंगे और उसके बाद फीरोजाबाद जायेंगे।

श्री बनारसीदास चतुर्वेदी ग्रन्थ की तैयारी. जोरों से चल रही है। विभागीय सम्पादक अपने-अपने कार्य में जुटे हुये हैं। मैं अपना कार्य ता० ३० तक पूर्ण कर लूँगा। अक्टूबर में ग्रन्थ का मुद्रण आरम्भ हो जायगा, अभी तो आशा यही है कि २४ दिसम्बर की उनकी जन्मतिथि पर ही ग्रन्थ का समर्पण करेंगे। शेष कुशल।

आपका
वृन्दावनदास

(४४५)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २२-१-७१

बन्धुवर खत्री जी। प्रणाम।

कृपा पत्र यथासमय मिल गया था। धन्यवाद। आपने अपनी सुलभ कृपा से मुझ पर अपार स्नेह वर्षा की है जिससे मैं विभोर हो गया हूँ। आप सदृश प्रेमीजनों का सौहार्द मेरे जीवन का महान् सम्बल है। आप इसी भाँति कृपा बनाये रहें।

आपकी अस्वस्थता का समाचार पढ़ कर दुःख हुआ। अब तो

आपके पत्र को आये तीन सप्ताह से भी अधिक हो गया, आशा है आप अब स्वस्थ हैं।

फाल्गुन का अंक बहुत शीघ्र सेवा में पहुँचेगा।

कृपा भाव रक्खें।

आपका
वृन्दावनदास

(४४६)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ७-४-७१

मान्यवर खत्री जी, प्रणाम।

कृपा पत्र यथासमय मिल गया। धन्यवाद। मुझे अत्यधिक प्रसन्नता है कि भारतीय संस्कृति के विविध परिदृश्य शीर्षक पुस्तक आपके पास पहुँच गई। यदि न पहुँचती तो मैं ही भेज देता। बन्धुवर मधुसूदन जी ने बड़ी संख्या में इस पुस्तक को अपनी योजना के अन्तर्गत वितरित किया है। चतुर्वेदी जी का पत्र संग्रह भी उनके माध्यम से वितरित होगा, परन्तु उसकी एक प्रति तो मैं बहुत पहिले ही आपको भेज दूँगा। पत्र संग्रह ३०० पृष्ठीय पुस्तक होगी जिसके १२४ पृष्ठ तो छप चुके। इस मासान्त में पुस्तक अवश्य छपकर तैयार हो जावेगी।

अब की बार उत्तर प्रदेशीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन का वार्षिक अधिवेशन फीरोजाबाद में हो रहा है २३, २४ मई को। इसमें आप सम्मिलित हों तो बड़ा आनन्द रहे। श्रद्धेय चतुर्वेदी जी से भी मिलने का सौभाग्य प्राप्त हो जायगा। एक पन्थ दो काज। सूचनाएं विधिवत पहुँचेंगी।

अत्र कुशलं तत्रास्तु।

आपका
वृन्दावनदास

(४४७)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २६-१-७४

मान्यवर खत्री जी, प्रणाम।

कृपा पत्र तथा लेख दोनों मिले। आपका दीर्घकाल से पत्र न पाकर वास्तव में मुझे कुछ उद्विग्नता सी थी। एकाधबार ब्रजभारती का अंक भी वापिस आया। किसी ने कहा अब आप वाराणसी रहने लगे हैं, लेकिन वाराणसी का पता मालूम न था। मैंने एक बार श्रद्धेय बनारसीदास जी

चतुर्वेदी को भी लिखा कि बा० श्यामसुन्दर जी आजकल कहाँ हैं। उन्होंने आपका कलकत्ते वाला पता लिख दिया जो कि मुझे पहले से ही ज्ञात था। जो हो, अब आपका पत्र पाकर बड़ी प्रसन्नता हुई।

आपका लेख मैं श्री रमेशचन्द्र जी दुबे को भेज रहा हूँ। वे मुरादाबाद में हैं और इस समारोह के कर्णधार होने के कारण वे ही इसे (ग्रन्थ को) मुरादाबाद में छपा रहे हैं। मैंने उन्हें लिख दिया है कि प्रस्तुत लेख का अवश्य समावेश कर लें, यदि किसी कारणवश ऐसा न कर सकें तो मुझे ही लौटा दें कारण इसे ब्रजभारती में छापा जायगा।

इस अन्तराल में मेरे दो ग्रन्थ छप चुके और लगभग समाप्तप्राय भी हो चुके। वे हैं—(१) डा० बनारसीदास चतुर्वेदी के पत्र, (२) प्राचीन भारत में हिन्दू राज्य। आपके पास इन दोनों ग्रन्थों में कौन-सा है और कौन-सा नहीं आपका उत्तर प्राप्त होने पर अपेक्षित ग्रन्थ की एक प्रति तुरन्त भेज दी जायगी।

ब्रजभारती की जो प्रतियाँ आपके पास न पहुँची हों कृपया लिखें वे भी तुरन्त भेज दी जायेंगी।

आपकी पुस्तक रवीन्द्र काव्य कुंज की एक प्रति मुझे मधुसूदन जी से प्राप्त हो गई है, उसका जिक्र चतुर्वेदी जी ने भी अपने एक पत्र में किया था। उसकी समीक्षा शीघ्र कराई जायगी।

आशा है अब आपका स्वास्थ्य उत्तरोत्तर सुधार पर है।

आपका
वृन्दावनदास

(४४८)

प्रकाश भवन,
मथुरा. १०-२-७४

मान्यवर खत्री जी। प्रणाम।

आपका कृपा पत्र मिला। उसके पूर्व आपकी सुन्दर काव्य कृति 'वेणु' भी प्राप्त हो गई। बड़ा उत्तम, मनोहर, हृदयग्राही और निर्दोष काव्य है आपका। पुस्तक हाथ में आते ही 'परीक्षा' शीर्षक से राजा शिखिध्वज की कथा पढ़ बैठा। प्रवाहमयी काव्य-धारा मन्दाकिनी में अवगाहन कर रसतृप्त हो गया। आपकी सभी रचनायें मानवीय मूल्यों के प्रतिष्ठापन की दिशा में उन्मुख होती हैं, अतः आप धन्य हैं। आपके कृतित्व में मानव-जाति का कल्याण निहित है।

आपके पत्र से मैंने यह निष्कर्ष निकाला कि प्राचीन भारत में हिन्दू

गाज्य शीर्षक मेरी पुस्तक आपके पास अभी तक नहीं पहुँची है। एक प्रति आज ही रजिस्टर्ड बुक-पोस्ट से सेवा में प्रेषित की जा रही है।

आपकी पुस्तक रवीन्द्र काव्य कुंज मुझे मधुसूधन जी चतुर्वेदी से प्राप्त हो गई। ब्रजभारती के ग्रन्थावलोकन शीर्षक में बन्धुवर डा० राजेन्द्र रंजन द्वारा की हुई उसकी संक्षिप्त समीक्षा भी ब्रजभारती के फाल्गुन अंक में छप चुकी है, फाल्गुन अंक लगभग दो सप्ताह में आपके पास पहुँचेगा। आप पुस्तक के अशुद्ध मुद्रण से बहुत खिन्न हैं यह मुझे श्रद्धेय चतुर्वेदी जी ने भी लिखा है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद एक प्रकार की उच्छृङ्खलता ने हमारे समाज की नस-नस में प्रवेश किया है। हमारा कर्मचारी वर्ग खासतौर से शुद्ध स्वच्छ काम न करने में ही अपनी स्वतन्त्रता का उपभोग समझता है। यह महारोग बड़े व्यापक पैमाने पर समाज के सभी अङ्गों में घुस गया है। अशुद्ध पढ़ना, अशुद्ध लिखना, अशुद्ध सोचना हमारे जीवन का अङ्ग बन गया है। हमें इसमें कुछ बुराई अनुभव न करनेकी भी आदत हो गईहै। मैंने बड़े-बड़े डाक्टरों प्राचार्यों और अध्यापकों को भी आमतौर से 'विद्यालय' शब्द का उच्चारण इसी रूप में करते सुना है, विद्यार्थी वर्ग को हम कहते हैं कि वे शुद्ध पठन-पाठन, शुद्ध लेखन और शुद्ध चिन्तन की आदत डालें परन्तु इन बड़ों को कहाँ तक और कैसे समझावें। यहाँ तो अवा का अवा ही खराब है।

'रवीन्द्र काव्य कुंज' आप मुझे भेजने का कष्ट न करें। मुझे वह कई स्रोतों से प्राप्त हो गई है। आप कदाचित बन्धुवर मधुसूदन जी की पुस्तक वितरण योजना से परिचित होंगे। मैं उनकी समिति के संरक्षकों में एक हूँ। प्रत्येक संरक्षक को तो उनका प्रकाशन प्राप्त होता ही है, उसको दस अन्य संस्थाओं को भी प्रत्येक प्रकाशित पुस्तक प्राप्त कराने का अधिकार है। मैंने आंशिक रूप में अपने उस अधिकार का प्रयोग भी कुछ संस्थाओं को इङ्गित करके कर रक्खा है। अतः मुझे उनका प्रत्येक प्रकाशन त्वरित मिल जाता है। भाई मधुसूदन जी अहिन्दी भाषी प्रदेश में रहकर हिन्दी-प्रचार प्रसार की दिशा में बड़ा महत्वपूर्ण काम कर रहे हैं, उन्होंने अहिन्दी भाषी प्रदेशों में हिन्दी के पठन-पाठन की रुचि उत्पन्न की है जो कि स्तुत्य है उनकी पुस्तक-वितरण योजना से हिन्दी भाषी पाठक वर्ग लाभान्वित हुआ है। वे हमारी बधाई के पात्र हैं।

ब्रजभारती के कौन-कौन से अंक आपकी फायलों में नहीं है, लिखें। वे अंक आपको भेजकर आपकी फाइल पूरी करनी है। कृपा भाव रक्खें।

आपका
वृन्दावनदास

(४४९)

प्रकाश भवन,
मथुरा. १४-६-७४

मान्यवर खत्री जी, प्रणाम।

हरिद्वार से कल रात्रि को १॥ बजे ही लौटा हूँ। आपका पत्र मेरी अनुपस्थिति में आ गया था। आचार्य द्विवेदी जी तथा विश्वनाथ प्रसाद जी अस्वस्थता वश अनुपस्थित रहे अतः दोनों दिन समारोह की अध्यक्षता का भार मेरे निर्बल कन्धों पर ही आ पड़ा। समारोह अत्यन्त सफल रहा, प्रदेश के अनेक भागों से तो प्रतिनिधिगण आये ही थे, सुदूर बिहार और मध्य प्रदेश से कई सज्जन पधारे थे। स्व० आचार्य जी की साहित्यिक सेवाओं का मूल्यांकन आपके कवि हृदय से जैसा सम्पन्न हुआ है वैसा अन्यत्र दुर्लभ ही है। भाषणों की मुद्रित प्रतियाँ संलग्न हैं।

सन्दर्भित होने के कारण वेणु की माँग हो रही है। क्या प्रकाशक महोदय उसकी दस प्रतियाँ हमारे प्रकाशनों के विनिमय में दे सकेंगे ? कई मित्र भेंट स्वरूप प्राप्त करने के इच्छुक हैं।

वेणु की भूमिका हम निश्चित रूप से व्रजभारती के भाद्रपद अंक में छाप रहे हैं।

कृपा भाव रक्खें।

आप पं० पद्मसिंह शर्मा स्मृति ग्रन्थ की भी एक प्रति प्राप्त करने के अधिकारी हैं। कृपा कर एतदर्थ श्री रमेशचन्द्र जी दुबे को लिखें।

आपका
वृन्दावनदास

(४५०)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ४-७-७४

मान्यवर खत्री जी, प्रणाम।

कृपा पत्र तथा 'वेणु' की पाँच प्रतियाँ आपके द्वारा और पाँच श्रीद्विवेदी द्वारा प्रेषित प्राप्त हो गईं। अनेक धन्यवाद। जिन साहित्यिक बन्धुओं ने इसकी प्रति प्राप्त करने की उत्कण्ठा प्रकट की है उनको तथा कतिपय पुस्तकालयों में इन प्रतियों को वितरित कर दिया जायगा। आपने अपने पत्र में जिस स्नेहमयी भाषा में मुझे स्मरण किया है उसके लिये आभारी हूँ। मेरी पुस्तक डा० वासुदेवशरण के पत्र शीर्षक छप कर तैयार हो गई हैं, बहुत शीघ्र एक प्रति आपकी सेवा में प्रेषित होगी, एक प्रति श्री देवनारायण जी द्विवेदी को

भी भेजूँगा। द्विवेदी जी तो हमारे भी स्नेही हैं, उनको ब्रजभारती नियमित रूप से जाती है।

डा० बनारसीदास जी चतुर्वेदी आजकल फीरोजाबाद में ही हैं। उनसे बराबर पत्र-व्यवहार चलता है।

कृपा भाव बनाये रहें।

आपका
वृन्दावनदास

पंडित श्रीराम पाण्डेय के नाम

(४५१)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ७-७-६८

मान्यवर पाण्डेय जी, सादर प्रणाम।

श्रद्धेय बनारसीदास जी चतुर्वेदी से आपका परिचय प्राप्त कर बड़ी प्रसन्नता हुई। श्रद्धेय चतुर्वेदी जी आशुतोष हैं, उनमें सन्तों के से गुण हैं, मण्डल की अद्यतन जो भी सेवा मुझसे बन पड़ी है उससे प्रसन्न होकर उन्होंने मुझे आशीर्वाद दिया है। यद्यपि वे गुर्दे में पथरी, अर्श, मन्दाग्नि आदि रोगों से पीड़ित हैं तथापि वे अब भी कई घण्टे साहित्यिक कार्य करते हैं। समय-समय पर पत्रादि से सम्पर्क स्थापित कर वे अनेक साहित्यिक बन्धुओं का पोषण करते रहते हैं। उन्होंने पूछा कि उनके स्वास्थ्य में अब सुधार है तथा आपको भी प्रणाम लिखा है। भाई ब्रजशंकर जी वर्मा का स्वास्थ्य अब कैसा है?

मण्डल से एक त्रैमासिक पत्रिका भी निकलती है। वह अब आपको नियमित रूप से भेजी जाया करेगी। ब्रजभारती का नवीनतम ज्येष्ठ अंक भेजा जा रहा है।

ब्रज साहित्य मण्डल का अधिवेशन गाजियाबाद में हुआ था। मेरा अध्यक्षीय भाषण कदाचित् आपको भेजा जा चुका है, यदि वह आपके पत्र में प्रकाशित हो गया हो तो उस अंक की एक प्रति कृपाकर भेज दें और यदि आपको भाषण मिला ही न हो तो कृपया सूचित करें एक प्रति फौरन भेज दी जायगी।

कृपाभाव रक्खें, योग्य सेवा से सदैव सूचित करते रहें।

मैं इस पत्र के साथ ही एक प्रति भाषण की भी भेज रहा हूँ।

आपका
वृन्दावनदास

(४५२)

प्रकाश भवन,
मथुरा. १६-७-६८

मान्यवर पाण्डे जी, सादर प्रणाम।

कृपा पत्र दि० १० प्राप्त हो गया। 'योगी' की दस प्रतियाँ भी प्राप्त हो गईं। धन्यवाद। मण्डल के कार्यकलापों में आपका सहयोग अत्यन्त सराहनीय है। श्रद्धेय चतुर्वेदी जी भी आपकी बड़ी प्रशंसा कर रहे थे। ब्रजभाषा के लिये आपके हृदय में असीम स्नेह है, यही कारण है कि अध्यक्षीय भाषण में हिन्दी तथा अन्य उपभाषाओं के प्रति प्रतिपादित समन्वयकारी दृष्टिकोण आपको भी पसन्द आया। विघटनकारी प्रवृत्तियों ने सदैव ही इस देश को अपार क्षति पहुँचाई है। छोटी-छोटी बातों में मतभेद राष्ट्रीय हितों पर कुठाराघात करते हैं और उस ऐक्य को प्रतिष्ठापित नहीं होने देते, जो देशोन्नति के लिये अत्यन्त आवश्यक है। हिन्दी देश की एकमात्र वह भाषा है जो राष्ट्रभाषा के आसन पर आसीन हो सकती है, उसकी स्थिति निरापद है, उसे किसी भी भाषा से प्रतिस्पर्द्धा रखने की आवश्यकता ही क्या है? ब्रजभाषा हिन्दी के साहित्य की भाषा है। वह तो एक प्रकार से हिन्दी की जननी है। माता और पुत्री में वैमनस्य का प्रश्न ही नहीं। पुत्री की उन्नति देखकर माता को सुख ही है, दुःख कदापि नहीं।

चतुर्वेदी जी के स्वास्थ्य में सुधार हो रहा है उनका दो पौण्ड वजन बढ़ा है।

'ब्रजभारती' निस्सन्देह आपके पास पहुँचती ही रहेगी।

कृपा भाव रक्खें।

आपका
वृन्दावनदास

(४५३)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २५-११-६८

मान्यवर पाण्डे जी, प्रणाम।

बहुत दिन बाद पत्र लिख रहा हूँ। आशा है आप स्वस्थ एवं सानन्द हैं।

मैंने अनेक मित्रों के आग्रह पर अपने अद्यतन लिखे हुये लेखों के संग्रह को पुस्तकाबद्ध कर दिया है। पुस्तक का नाम है 'भारतीय संस्कृति के विविध

परिदृश्य ।' एक प्रति रजिस्टर्ड बुक-पोस्ट से आपकी सेवा में भेज रहा हूँ। इस पुस्तक की समीक्षा भी अच्छी हो रही है। आप अपने पत्र में भी करा दें।

डा० भगवानसहाय पचौरी ने जो कि एक विद्वान् लेखक और समालोचक हैं इस पुस्तक की एक समालोचना लिखी है, उसे उन्होंने मुझे ब्रज-भारती में प्रकाशनार्थ भेजा है परन्तु मैंने यह उचित समझा कि वह अन्य पत्रों में छपे। उसकी एक प्रति इस पत्र के साथ आपकी सेवा में भेज रहा हूँ यदि आप उचित समझें तो उसे 'योगी' में छपवाने की कृपा करें।

मेरे योग्य सेवा से सदैव सूचित करते रहिये।

आपका
वृन्दावनदास

(४५४)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ८-२-६९

मान्यवर पाण्डे जी, प्रणाम।

इस पत्र के द्वारा आपको श्रीरमेशचन्द्रजी दुबे एम०ए० जिला चकबन्दी अधिकारी एवं अतिरिक्त जिलाधीश आगरा का परिचय प्रस्तुत करता हूँ। ये पहिले आगरा कालेज में हिन्दी के प्राध्यापक रह चुके हैं। काव्य मर्मज्ञ और उच्चकोटि के कवि हैं। कविताओं की कई पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। समालोचक बड़े अच्छे हैं। कदाचित् आपके पत्र में भी कुछ समालोचनायें प्रकाशित हो चुकी है। इनकी लिखी पुस्तकों की एक-एक प्रति आपको भिजवाऊँगा।

कृपा कर इनको 'योगी' की प्रति भेजा करें। ये भी श्री बनारसीदास जी चतुर्वेदी के उसी प्रकार भक्त हैं जिस प्रकार इन पंक्तियों का लेखक।

उनका पता इस प्रकार है—
श्री रमेशचन्द्र दुबे
११ बी जिलाधीश का कम्पाउन्ड
आगरा।

आशा है आप स्वस्थ एवं सानन्द हैं।

आपका
वृन्दावनदास

(४५५)

प्रकाश भवन,
मथुरा. १६-६-६६

मान्यवर पाण्डे जी । सादर प्रणाम ।

'लोक साहित्य के मनीषी कृष्णानन्द गुप्त' शीर्षक मेरा लेख 'योगी' में प्रकाशित कर देने के लिये अनेक धन्यवाद ।

कृपा कर वह प्रति जिसमें यह लेख प्रकाशित हुआ है श्री कृष्णानन्द गुप्त[1], पो० गरौठा जि० झाँसी को भेज दें तथा यदि योगी की Complementry Copy भी उन्हें जाया करे तो बड़ी उत्तम बात हो । श्री कृष्णानन्द गुप्त आज बुन्देलखण्ड के सर्वोच्च साहित्यकार हैं तथा लोक-साहित्य पर उन्होंने प्रभूत निर्माण कार्य किया है । मेरे उनसे व्यक्तिगत सम्बन्ध हैं । श्रद्धेय बनारसीदास जी चतुर्वेदी के भी वे निकटतम सहयोगियों में हैं ।

चतुर्वेदी जी को आगरा विश्वविद्यालय ने डि० लिट् और हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने साहित्य वाचस्पति की उपाधि प्रदान की है ।

कृपा भाव रक्खें ।

आपका
वृन्दावनदास

([1] श्री गुप्तजी ने कभी लोक साहित्य की सर्वश्रेष्ठ पत्रिका 'लोकवार्ता' का सफल सम्पादन किया था जिसकी प्रशंसा वेरियर एलविन जैसे विदेशी विद्वान ने भी की थी ।—सं०)

(४५६)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २१-१०-७२

मान्यवर पाण्डेय जी ।

योगी के २ सितम्बर की प्रति जिसमें मेरा मुरादाबाद[1] वाला अध्यक्षीय भाषण है तथा ६ सितम्बर वाली भी जिसमें उक्त भाषण पर आपका मूल्यवान सम्पादकीय लेख है प्राप्त हुई, अनेकानेक धन्यवाद । एक कुशल समीक्षाकार एवं सिद्धहस्त सम्पादक की नाई आपने भाषण के सार तत्व को ग्रहण कर उस पर बड़ी सुन्दर व्याख्या की है, उस भाषण को आधार बनाकर आपने हिन्दी जगत् को जो संकेत दिये हैं उससे हिन्दी का हित साधन होगा । मैं व्रजभारती के मार्गशीर्ष अंक में इस लेख को आपके नाम से ही दे रहा हूँ ।..........

श्रद्धेय बनारसीदास जी चतुर्वेदी स्वस्थ हैं, यदाकदा आपको स्मरण करते रहते हैं, कुछ दिन हुए ज्ञानपुर में उनके दर्शन किए थे।

आपका
वृन्दावनदास

(४५७)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २५-४-७३

मान्यवर पाण्डेय जी। प्रणाम।

१८ दिवसीय यात्रा[1] से हम लोग कल प्रातः सानन्द लौट आये। पटना में आपकी कृपा से सभी बन्धुओं से मिलना हो गया। अल्प सूचना पर गोष्ठी भी अत्यन्त सफल रही। बिहार में हिन्दी का काम खूब हो रहा है और यही कारण है कि जनपदीय कार्य में भी साहित्यिक बन्धुओं की अभिरुचि है। हिन्दी के सच्चे कार्यकर्ता लोक भाषाओं की कभी उपेक्षा नहीं करते। उनकी पक्की धारणा है कि लोक भाषाओं के साहित्यिक उन्नयन से राष्ट्रभाषा का कभी अहित न होगा।

कृपा भाव रखें।

भवदीय
वृन्दावनदास

---

१. ३० अगस्त सन् १९७२ को मुरादाबाद में उत्तर प्रदेशीय हि० सा० सम्मेलन का १६ वाँ अधिवेशन हुआ था जिसकी अध्यक्षता बाबू जी ने की थी।

२. पशुपतिनाथ (काठमाण्डू) की यात्रा से लौटते वक्त बाबू जी पटने में १ दिन रुके थे। उनके सम्मान में जो गोष्ठी हुई उसमें संयोगवश मैं भी उपस्थित था। हालाँकि देर से सूचना मिलने के कारण मैं शिक्षक संघ के एक्जीबीशन रोड वाले भवन में विलम्ब से पहुँचा था।—सं०

श्री सूरज प्रसाद मिश्र के नाम

(४५८)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २५-३-७१

बन्धुवर मिश्र जी।

कृपा पत्र मिला। धन्यवाद। उत्तर देने में विलम्ब हुआ, क्षमा करें। व्यस्तता ही मूल कारण है।

राहुल जी पर लेख लगभग तैयार है। शाण्डिल्य जी को भेज रहा हूँ।

ब्रजभारती आपको नियमित मिल रही है या नहीं ? आपके पास कौन-कौन से अंक हैं लिखें।

आज भारतीय संस्कृति के विविध परिदृश्य शीर्षक अपने निबन्धों के संग्रह को रजिस्टर्ड बुक-पोस्ट से आपकी सेवा में भेज रहा हूँ।

आप महान् साहित्यकारों के स्मृति अथवा अभिनन्दन ग्रन्थ निकालकर बड़ा स्तुत्य कार्य कर रहे हैं। यह तो हिन्दी की वास्तविक सेवा है और निर्विवाद रूप से उसके साहित्य की समृद्धि की दिशा में एक महनीय कार्य है।

मैंने तो अपना शेष जीवन तन-मन-धन से हिन्दी सेवा के लिये अर्पित कर रक्खा है। आप सदृश सहृदय साहित्यिक बन्धुओं के सहयोग की सदैव अपेक्षा है।

कृपा भाव रखें।

आपका
वृन्दावनदास

(४५६)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २-६-७१

मान्यवर मिश्र जी।

कृपा पत्र मिला। धन्यवाद। आपने राहुल जी द्वारा लाये ग्रन्थों के हिन्दी भाषान्तर के लिए सेठ गोविन्द दास जी को लिखा यह ठीक ही था। इस काम को केन्द्रीय मन्त्रालय करता है और इस कार्य पर अटूट धनराशि प्रतिवर्ष खर्च की जाती है। आप सेठ जी को ही खटखटाएँ और एक स्मरण पत्र श्रीमती इन्दिरा गाँधी प्रधानमन्त्री को भी भेजिये तब ही यह काम होगा।

श्री सतीशचन्द्र चतुर्वेदी पुत्र स्व० श्री हृषीकेश जी चतुर्वेदी, चौबेजी का फाटक किनारी बाजार आगरा को लिखकर उनसे राहुल जी पर उनके संस्मरण मँगाइये। उनके यहाँ कई बार राहुल जी अपनी पत्नी श्रीमती कमला सहित अतिथि रहे थे तथा अनेक स्थानों पर भ्रमण भी किया था। उनके पास श्रीमती कमला जी और राहुल जी के पत्र भी हैं। उनकी प्रतिलिपियाँ भी उनसे मँगाइये। आशा है आप स्वस्थ एवं सानन्द हैं।

आपका
वृन्दावनदास

(४६०)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ५-१-७२

बन्धुवर,

आपका स्नेहाभिसिक्त पत्र पढ़ कर कृतार्थ हुआ। हिन्दी के कार्य-कर्त्ताओं की संज्ञा मेरे कोश में देवदूत है। आपने विशिष्ट महानुभावों और माँ भारती के महान सेवकों की स्मृति रक्षार्थ सहस्रों पत्र लिख-लिखकर साहित्यिकों को जगाया है, फिर आपको मान्यवर शब्द से सम्बोधित कर मैंने अपने औचित्य का ही पालन किया है। फिर भी जैसा आप कहते हैं अग्रज के नाते मैं अब आपको बन्धुवर ही कहूँगा।

आपने साहित्यकारों में पत्रों का उत्तर न देने की प्रवृत्ति का उल्लेख किया आपकी शिकायत बिल्कुल उचित है। साहित्यिक बन्धु आत्म केन्द्रित हो गये हैं उनमें धन और यश की ही ईषणा है। छोटे भाइयों को तो उपेक्षा ही मिल रही है। यह स्थिति खेदजनक है, इससे हिन्दी का भला न होगा। आजकल राज्याश्रय का तो अभाव है ही यदि हमारे भाई भी छुटभइयों को प्रोत्साहित न करेंगे तो आत्मा ही मुमूर्ष हो जायगी और उसको पुनर्जीवित करने के लिये किसी धन्वन्तरि की आवश्यकता होगी।

आपका
वृन्दावनदास

(४६१)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ६-२-७२

बन्धुवर मिश्र जी।

सादर नमस्कार।

आपका कृपा पत्र यथासमय मिल गया था। आपने जिन तथ्यों का उल्लेख किया है उससे तो यह विदित होता है कि आज दुनियाँ में स्वार्थ-सिद्धि सर्वोपरि है। 'स्वार्थ प्रधान विश्व करि राखा' अब तुलसी की चौपाई का पठन इस प्रकार होना चाहिये।

आप दुनियाँ को अपने दृष्टिकोण से मापते हैं। साहित्यिकों की स्मृति-रक्षार्थ हजारों पत्र लिखने वाले को अपने जैसे निस्पृह व्यक्ति कहाँ से मिलेंगे?

आपका
वृन्दावनदास,

(४६२)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २०-३-७२

बन्धुवर मिश्र जी, प्रणाम ।

कृपा पत्र मिला । स्मार्त्त निराला दूसरा खण्ड की दो प्रतियां भी मिली । एक प्रति समीक्षार्थ श्री लल्लन मिश्र प्रवक्ता शुकदेव कालेज खागा, जि० फतेहपुर को भेज भी दी । समीक्षा प्राप्त होने पर प्रकाशित कर दी जायगी । रमण शाण्डिल्य जी को अब तक स्मार्त्त राहुल तैयार कर देना चाहिये था । आप जब कृति को छपा ही देते हैं तो कृतिकार को तैयार करके देने में आपत्ति नहीं होनी चाहिये । मैं भी उनको लिखूँगा । आसाम वाले महानुभाव तो ७-८ लेख लेकर अन्तर्धान हो गये उनको मैं किसकी उपमा दूँ । हिन्दी जगत् के साहित्यिक उठाईगीरे मशहूर हैं । हिन्दी के हित में इनसे सावधान रहने की आवश्यकता है ।

१० स्मार्त्त निराला यदि आप विनिमय में दे सकें तो भिजवा दें। पुस्तकालयों का भला हो जायगा । विनिमय में उतने ही मूल्य की पुस्तकें आपको भेज दी जायेंगी ।

आपका
वृन्दावनदास

(४६३)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २८-४-७३

बन्धुवर मिश्र जी, नमस्कार ।

कृपा पत्र मिला । धन्यवाद । उत्तर देरी से जा रहा है कारण मैं नेपाल गया हुआ था । परिवार सहित पशुपतिनाथ जी के दर्शन करने ।

डा० रामकुमार चौबे वाले लेख को निकालेंगे । सामग्री इतनी अधिक आ जाती है कि पत्रिका में समाविष्ट करना कठिन हो जाता है ।

आपके पास हमारी कौन-कौन सी कृतियाँ हैं । यह जानकारी प्राप्त होने पर शेष कृतियां भेजने की व्यवस्था करेंगे ।

अभिनन्दन ग्रन्थ मुद्रणाधीन है उनके प्रकाशन में अभी ६-८ महिने की देर है ।

माण्डवी और भरत पर कोई महाकाव्य हमारी दृष्टि में नहीं आया ।

महात्मा जी पर तो बहुत-सा साहित्य निकला है । आपको भिन्न स्थानों से मँगवाना पड़ेगा । यदि रुचि हो तो हम आपको कुछ पते लिखकर

भेज देंगे। वहाँ से आप मँगा लेना। दिल्ली हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने एक स्मारिका ही निकाली थी जिसका मूल्य ६०) रखा था। कृपा भाव रखें।

भवदीय
वृन्दावनदास

(४६४)

प्रकाश भवन,
मथुरा. १४ ५-७४

बन्धुवर मिश्र जी।

पत्र आपका मिला। सुधांशु जी पर कविता के साथ। ब्रजभारती का फाल्गुन अंक कैसे नहीं मिला आश्चर्य है। शायद किसी पोस्टमैन को उससे प्रेम हो गया। एक प्रति पुनः भेजी जा रही है।

नवजागरण नाम की कोई मासिक पत्रिका हमें प्राप्त नहीं हुई है। यदि आप भिजवा सकें तो अत्युत्तम हो।

श्री जगन्नाथ प्रसाद मिश्र गौड़ कमल से कतई परिचित नहीं हैं।

सुधांशु जी वास्तव में महान थे। आप तो स्वयं गुणज्ञ हैं अतः गुण-ग्राहकता स्वभावतया ही आपका गुण है।

शेष कुशल है। रचनाएँ सुविधानुसार प्रकाशित करेंगे।

आपका
वृन्दावनदास

(४६५)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ५-७-७४

बन्धुवर सूरज प्रसाद जी।

कृपा पत्र मिला। धन्यवाद। जागरण की पांच तथा 'उत्खनक' की दो-दो प्रतियाँ ही भिजवा दें। सुविधा पूर्वक यदि ५-५ भिजवा दें तो और भी अच्छा। अब की बार ये प्रतियाँ प्राप्त होने पर उनकी समीक्षा 'ब्रजभारती' में निःसन्देह करा दी जायगी।

आपकी कविताएँ भी यथासम्भव प्रकाशित करेंगे वैसे यहाँ के स्थानीय कवियों की स्पर्द्धा के कारण हम सामान्यतः कवितायें प्रकाशित नहीं करते। स्नेह भाव बनाये रहें।

आपका
वृन्दावनदास

(४६६)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ५-२-७५

प्रिय मिश्र जी।

कृपा पत्र और महेन्द्र शास्त्री पर एक लेख मिला। श्री महेन्द्र शास्त्री जी के निधन का दुःखद समाचार तो मुझे आपके पत्र से ही विदित हुआ। वे लगभग ४ माह हुए मेरे निवास स्थान पर पधारे थे। अभी कुछ दिन हुए उनका एक अत्यन्त स्नेह पूरित, आत्मीय भावनाओं से ओत-प्रोत पत्र मुझे मिला था जिसे पढ़कर मुझे दिव्यानन्द की प्राप्ति हुई थी। मैंने उनको तत्क्षण उत्तर भी दे दिया था। उनकी कुछ काल मथुरा निवास करने की आकांक्षा थी जिसका मैंने उन्हें निमन्त्रण भी दे दिया था। शास्त्री जी की साहित्यिक सेवाएँ तो थीं ही वे महामानव थे। श्रद्धेय बनारसीदास जी चतुर्वेदी भी उनकी बड़ी प्रशंसा किया करते हैं। विधि की बड़ी विडम्बना है। दुर्दैव ने उन्हें हमसे छीन लिया है।

मैं ब्रजभारती के आगामी अंक में सम्पादकीय लेख में इसकी चर्चा करूँगा तथा उसमें आपके लेख का भी सारांश दे दूँगा। आपके लेख में अधिकांशतः साहित्यिक कार्यकर्त्ताओं की भर्त्सना ही है जिसे अविकल छापना मैं उचित नहीं समझता। आपके शुभनाम का उल्लेख करते हुये आपके द्वारा प्रेषित जानकारी का भरपूर उपयोग कर लिया जायगा।

अभिनन्दन ग्रन्थ में पाठक जी ने आपके लेख का उपयोग कर लिया है। विचार सम्पादक भी अवश्य कर लेंगे। अभिनन्दन ग्रन्थ के अभी १०० पृष्ठ छपने शेष हैं। स्नेह भाव बनाये रहें।

आपका
वृन्दावनदास

(४६७)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २-९-७५

बन्धुवर मिश्र जी।

आपने जो डा० बनारसीदास जी चतुर्वेदी को लिखे अपने पत्र की प्रतिलिपि मुझे भेजी है उससे पता चलता है कि आपको शायद मालूम नहीं कि डा० बनारसीदास चतुर्वेदी के पत्रों को मैं एक संग्रह के रूप में छपवा चुका हूँ। इस पुस्तक का सम्पादक मैं ही हूँ। यदि आपने यह पुस्तक न देखी हो तो एक प्रति मैं आपको भिजवा सकता हूँ।

राहुल जी के पत्रों का संग्रह आप कष्ट झेल कर भी कर रहे हैं यह आपकी सच्ची हिन्दी सेवा ही समझी जायगी। आपकी कविता हम लौटा रहे हैं, इसे उत्तर विहार में प्रकाशनार्थ भेज दीजिये। ब्रजभारती में ब्रजभाषा की कविताएँ छपने की परम्परा रही है। यदा-कदा हमने खड़ी बोली की या नई कविताओं को स्थान देकर बड़ा स्थानीय विरोध ही मोल ले लिया था, अतः क्षमा करें।

हमने आपके पत्र संग्रह अभियान पर ब्रजभारती में पुनः एक नोट लिख दिया है जो ज्येष्ठ अंक के सम्पादकीय में प्रकाशित हो रहा है। आशा है आप स्वस्थ एवं सानन्द है।

आपका
वृन्दावनदास

(४६८)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ६-१०-७५

वन्धुवर मिश्र जी।

कृपा पत्र मिला। आपने लिखा कि अन्तर जनपदीय आन्दोलन में कुछ राजनीतिज्ञों के घुस आने से मन खट्टा हो गया है। मैं आपकी व्यग्रता का अनुभव करता हूँ। परन्तु लोक-भाषाओं के संरक्षण, सम्बर्द्धन और उन्नयन का कार्य तो परम पावन है हमें तो उस पुनीत उद्देश्य से काम है, हमें लोगों की खुटाई से क्या लेना देना।

जड़चेतन गुण-दोषमय विश्व कीन्ह करतार, संत हंस गुण गहहिं पय परिहरि वारि विकार। हमें यार की यारी से काम है ख्वारी से नहीं। आप तो जनपदीय कार्यों के स्तम्भ हैं, आपको तो निष्ठा के साथ काम में जुटे रहना है। श्री रमण शाण्डिल्य को तो हम एक गुणी और परिश्रमी साहित्य सेवी के रूप में ही जानते हैं। वे बड़े काम के आदमी हैं। जनपदीय भाषाओं पर उन्होंने लिखा भी बहुत है। वे मेरे पत्रों का संकलन कर रहे हैं। करीब ८०० पत्रों का संग्रह तो उन्होंने कर भी लिया है। आप उन्हें पत्र अवश्य भेज दें। रसूलपुरी जी के अभिनन्दन की बावत मुझे कुछ ज्ञात नहीं है। वैसे यह होना अवश्य चाहिये।

आपका
वृन्दावनदास

श्री कृष्णगोपाल दुबे एकाक्षी के नाम

(४६९)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २६-१-७१

बन्धुवर दुबे जी, प्रणाम ।

कृपा पत्र मिला । धन्यवाद । मुझे बड़ी प्रसन्नता है कि आप आदरणीय चतुर्वेदी जी का उनके निवास स्थान पर सान्निध्य प्राप्त कर सके । वे स्वस्थ एवं प्रसन्न वदन थे यह जानकर अत्यधिक हर्ष हुआ ।

आप अपनी पत्रिका का विशेषांक निकाल कर हमारे जनपदीय आंदोलन को गतिशील बनाने में अपना महत्वपूर्ण योग दे रहे हैं । श्रद्धेय चतुर्वेदी जी तो इस यज्ञ के पुरोधा हैं । हम सब उन्हीं के मार्गदर्शन में अपनी विनम्र आहुतियाँ प्रदान कर रहे है । उनकी आज्ञानुसार मैं आपको कल की डाक से 'आशा' की एक प्रति 'रजिस्टर्ड बुक-पोस्ट' भेज रहा हूँ । उसमें चतुर्वेदी जी ने इस यज्ञ की भूमिका पर बड़ा विशद प्रकाश डाला है ।

आपका
वृन्दावनदास

(४७०)

प्रकाश भवन,
मथुरा. १०-२-७२

बन्धुवर दुबे जी । प्रणाम ।

आपका कृपा पत्र तथा सैनिक के २२, २३, २४, २५ जनवरी के अंकों में प्रकाशित लेखों के पुनर्मुद्रण प्राप्त हुये । अनेक धन्यवाद । मैंने इन्हें अपने संग्रहालय में एक बहुमूल्य निधि के रूप में सुरक्षित कर लिया है । आप लोक-साहित्य के पुनरुत्थान की दिशा में बडी महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहे हैं । लोक-साहित्य और लोक-भाषाओं का संरक्षण, सम्वर्द्धन और उन्नयन हिन्दी के हित की बात है अहित की नहीं । हमारे प्राचीन लोकगीतों में हमारे पुरातन आदर्श, परम्पराएँ तथा गौरवमय अतीत के चित्र भरे पड़े हैं । हमारा लोक-साहित्य हमें हमारी पावन संस्कृति का बोध कराता है । लोक-साहित्य पर सर्जनात्मक अथवा शोधात्मक कार्य करने वालों के प्रति हमारे हृदय में अपार स्नेह और आदर है ।

आपके लेखों पर मैं ब्रजभारती के आगामी अंक में टिप्पणी लिखूँगा । इस अंक में तो सम्भव नहीं, कारण छप चुका है, एक सप्ताह दस दिन में आपके पास पहुँचेगा । लोक साहित्य पर काम करने वालों को प्रोत्साहित तो करना ही चाहिये । शेष सब कुशल है ।

आपका
वृन्दावनदास

(४७१)

प्रकाश भवन,
मथुरा. १२-४-७२

बन्धुवर एकाक्षी जी।

कृपा पत्र मिला। धन्यवाद। श्रद्धेय डा० बनारसीदास जी चतुर्वेदी की प्रेरणा से आप जो पुण्य कार्य कर रहे हैं वह अत्यन्त सराहनीय है। उसमें आपको मेरा पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। निस्सन्देह मैं प्रयास करूँगा कि अधिवेशन के कार्यक्रम में वयोवृद्ध पं० सरदारसिंह और श्री नैकसाराम ल्यालगो के अभिनन्दन को सम्मिलित कर लिया जाय। सम्मेलन का कार्यक्रम अभी निर्माणाधीन है और आपने ठीक समय ही मुझे सूचित कर दिया है।

कभी मथुरा पधारें तो दर्शन दें। वैसे सम्मेलन में तो आपके दर्शन होंगे ही। आपको सभी सूचनाएँ विधिवत् भेजी जायेंगी तथा ब्रजभारती का नवीन अंक भी समय पर प्रेषित होगा।

आपका
वृन्दावनदास

श्री हरगोविन्द गुप्त के नाम

(४७२)

प्रकाश भवन,
मथुरा. १६-१-७०

मान्यवर गुप्त जी।

श्रद्धेय चतुर्वेदी जी का आदेश हुआ है कि मैं स्व० डा० वासुदेवशरण जी अग्रवाल के पत्रों का संग्रह करूं और संकलित साहित्य की पाण्डुलिपि मुद्रण एवं प्रकाशन के निमित्त तैयार कर दूँ। यह कार्य आपके सहयोग के बिना दुष्कर है। आपके पास जितने पत्र हों या तो कृपा कर उनकी प्रतिलिपि करा कर मुझे भेज दें अन्यथा यदि मूल पत्रों को मुझे भेज दें तो मैं उनकी टाइप कापी निकलवाकर उन्हें आपको लौटा दूँगा।

मण्डल की ओर से ब्रजभारती पत्रिका नियमित रूप से आपको भेजी जायगी। श्री बनारसीदास जी को शीघ्र अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट किये जाने की योजना है। आप समारोह में पधारें। उसकी सूचना आपको पहुँचेगी।

आपका
वृन्दावनदास

(४७३)

प्रकाश भवन,
मथुरा. १५-४-७०

मान्यवर गुप्त जी।

आपके द्वारा प्रेषित डा० अग्रवाल जी के पत्र प्राप्त हो गये। धन्यवाद। कृपा कर लिखिये साथ ही किन अन्य महानुभावोंको इस संबन्धमें लिखा जाय।

डा० अग्रवाल के पत्रों के प्रकाशन से जनपदीय विज्ञान और वैदिकी विद्या का प्रकाश फैलेगा और इससे साहित्य की श्रीवृद्धि होगी। इसका श्रेय आप सदृश उन महानुभावों को होगा जिन्होंने इस निधि को संचित रक्खा।

आशा है स्वस्थ एवं सानन्द होंगे।

शुभेच्छु
वृन्दावनदास

(४७४)

प्रकाश भवन,
मथुरा. १-५ ७०

मान्यवर गुप्त जी।

कृपा पत्र मिला। धन्यवाद। आपने जनश्रुति 'खेती करें वनिज को धावै' को उद्धृत कर अपने कर्म की ओर इङ्गित किया है। परन्तु हमें तो आपकी आत्मा शुद्ध साहित्यिक प्रतीत होती है। जिस तत्परता और निष्ठा से आप साहित्यिक पत्रों में अपनी विमल आहुति प्रदान करते हैं उससे तो यही विदित होता है कि शरीर से आप भले ही कृषि उत्पादक हों, मन से आप साहित्य सेवी ही हैं।

आपने जिन महानुभावों के पते भेजे हैं निःसन्देह मुझे उन्हीं की अपेक्षा थी। वहाँ से पत्र-साहित्य मिलेगा और उस उपलब्धि का सम्पूर्ण श्रेय आपको होगा। मैं उन सभी को पत्र लिखकर भेज रहा हूँ। तथा साथ में ब्रजभारती का नवीनतम अङ्क भी। आशा है आप सपरिवार आनन्दपूर्वक होंगे। कृपा भाव रक्खें।

आपका
वृन्दावनदास

(४७५)

प्रकाश भवन,
मथुरा. १३-१२-७१

मान्यवर गुप्त जी।

कृपा पत्र यथासमय मिल गया था, धन्यवाद। सासनी वाला अङ्क

आपको भिजवाने का प्रयास अवश्य करूँगा और भी कई स्थानों से हम जनपदीय अङ्क निकलवाने की चेष्टाएँ कर रहे हैं।

'श्रम की सिद्धि' देखली है। आपने बड़ी सरस एवं प्रवाहमयी भाषा में कविता की है। यही उस पुस्तक का सर्वोत्तम गुण है। पुस्तक का एक-एक शब्द साधारण से साधारण पाठक को बोधगम्य होगा। जिस सिद्धान्त का प्रस्तुत पुस्तक में प्रतिपादन किया गया है वह निःसन्देह बड़ा उच्च है, परन्तु उसके समर्थन में जो कथानक पेश किए गये हैं वे यथार्थ के धरातल पर नहीं उतरते, अतः कुछ कृत्रिमता सी आ गई है। परन्तु यहाँ हमको श्रद्धेय दद्दा के उस मौलिक विचार का भी मान करना होगा कि लोकोक्ति साहित्य में कल्पना को अधिकतर आधार बनाया गया है। पुस्तक का कथानक लोक-साहित्य का सच्चा प्रतिनिधित्व करता है। सहज स्वाभाविकता के कारण आपकी अभिव्यक्ति बड़ी सुन्दर एवं सशक्त बन पड़ी है। ब्रजभारती के सम्पादकीय में इस पर टिप्पणी लिख रहा हूँ।

आशा है आप स्वस्थ एवं सानन्द हैं।

आपका
वृन्दावनदास

(४७६)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २६-१२-७१

बन्धुवर गुप्त जी, प्रणाम।

आशा' की प्रति कालेज से प्राप्त हो गई है। अतः आपकी सेवा में रजिस्टर्ड बुक-पोस्ट से भेजी जा रही है। इस अंक की चतुर्वेदी जी ने बड़ी प्रशंसा की है। वास्तव में इसके सम्पादक श्री राजेन्द्र रजन ने यह महत्वपूर्ण विशेषांक निकाला है।

चतुर्वेदी जी का लेख जनपदीय कार्यकर्ताओं को मार्गदर्शक का काम करेगा।

सम्मेलन का अधिवेशन झाँसी में ही करेंगे। आप सब बन्धुओं के सहयोग से हमें अपनी हिन्दी सेवा में बड़ा बल मिलेगा।
कृपा भाव रक्खें।

आपका
वृन्दावनदास

(४७७)

प्रकाश भवन,
मथुरा.

मान्यवर गुप्त जी, प्रणाम।

कृपा पत्र मिला। धन्यवाद। आपका स्नेह अपूर्व है। 'आशा' पर लिखे आपके विचारों को पढ़कर बड़ा आनन्द आया। आप अपने तीनों लेख अथवा उनमें से एकाध ही अवश्य भेजें। उनके महत्व के कारण उनके पुनर्मुद्रण की आवश्यकता है। हम उन्हें ब्रजभारती में छापेंगे। लोक-साहित्य पर आपका अध्ययन बड़ा सुन्दर और गम्भीर है। कृपा भाव रखें।

आपका
वृन्दावनदास

(४७८)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ३-६-७०

बन्धुवर गुप्त जी।

'आशा' पर आपकी लिखी हुई टिप्पणी हमने उद्धृत कर दी हैं।

लोक-साहित्य पर लिखे आपके लेख अत्यन्त विद्वत्तापूर्ण होंगे, यह तो हमें आपके प्रेषित 'सांस्कृतिक एकता के वीज मन्त्र' शीर्षक लेख से ही विदित हो रहा है। आपके इस लेख को मैं ब्रजभारती के आगामी अंक में छाप दूँगा। कारण जनपदीय कार्य की दृष्टि से यह बहुत ही उपयोगी लेख है। आप और लेखों को अपने पास ही सुरक्षित रक्खें। यदि आपके पास उनकी एकाधिक प्रतियाँ हों तो आप भले ही एक-एक प्रति मेरे संग्रहालय के लिए भेज सकते हैं। आपके लेखों का संग्रह अवश्य छपना चाहिये। सुमित्रानन्दन जी को कहिये मुझे विश्वास है वे छापेंगे। मेरे योग्य जो सेवा होगी मैं भी करूँगा।

आपने पुस्तकालय अथवा प्रतिष्ठान की स्थापना पर जो शुभाकांक्षायें प्रकट की हैं और जिन स्नेह और आत्मीयता आपूरित शब्दों में मुझे याद किया है, उनके लिये मैं आपका अत्यन्त अनुग्रहीत हूँ। आप मनीषी हैं, हृदय स्पर्शी भावों को पाण्डित्य-सुलभ शब्दावली में प्रस्तुत करते हैं।

अनेक धन्यवाद।

आपका
वृन्दावनदास

(४७९)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ८-२-७२

बन्धुवर गुप्त जी।

कृपा पत्र मिला। ब्रजभारती अंक १ वर्ष २२ की एक प्रति तथा शिशुपालसिंह जी की यमुना की एक प्रति भेजी जा रही है। ब्रजभारती के फाल्गुन अंक में जो लगभग ८-१० दिन में आपके पास पहुँचेगा गङ्गा और उसके माहात्म्य पर सोदाहरण पाण्डित्यपूर्ण लेख मुद्रित हुआ है, उसमें गङ्गा जी पर अनेक सरस छन्द उद्धृत हैं। रसखान और काली के भी छन्द उसमें प्राप्य हैं। यह एक विचित्र संयोग है।

मीतल जी से जो पूछ-ताछ करनी है उसे उनसे सीधे करें तो अच्छा है। कारण इससे उन्हें कुछ अवमानना सी प्रतीत होगी। निजी बात उनसे सीधी पूछी जा सकती है, वह मेरे माध्यम से क्यों पूछी जाय।

वे आप सदृश साहित्यिक बन्धुओं को तत्काल उत्तर देते हैं। शेष कुशल है।

आपका
वृन्दावनदास

(४८०)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २१-७-७२

बन्धुवर गुप्त जी।

कृपा पत्र टंकित पत्र की प्रति के साथ मिला। वस्तुतः प्रातः स्मरणीय स्व० गुप्त जी की स्मृति रक्षार्थ साहित्यिक श्राद्ध के रूप में आपने जो सुझाव दिए हैं और जिनको कार्यान्वित कराने के लिए आपने जिस प्रकार अभियान छेड़ा है उससे मैं अत्यन्त प्रभावित हुआ हूँ और उससे मुझे बड़ी प्रसन्नता भी है। मैं ब्रजभारती तथा आवश्यक पत्र-व्यवहार के माध्यम से इसे बढ़ाने की चेष्टा करूँगा। समाचार पत्रों में भी इसकी चर्चा करूँगा।

आशा है आप स्वस्थ एवं सानन्द हैं।

आपका
वृन्दावनदास

(४८१)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ७-१-७४

बन्धुवर गुप्त जी, प्रणाम।

कृपा पत्र यथासमय मिल गया। आपने जिस विचार का संकेत किया वह मेरी राय में शर्मा जी के अंक के लिये भी उपयुक्त ही था, परन्तु शर्मा जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर कई स्रोतों से इतने अधिक परिमाण में सामग्री एकत्रित हो गई है कि मुरादाबाद स्थित ग्रन्थ के कार्यालय से इत्यलम् संकेत मिल गया है। अतः आप व्यर्थ परिश्रम न करें।

मैं कुछ इस प्रकार सोचता हूँ कि स्वर्गीय मैथिलीशरण जी गुप्त और सियाराम शरण जी गुप्त के पत्रों का एक संग्रह प्रकाशित कर दिया जाय। साहित्यिक दृष्टि से ये पत्र बड़े उपयोगी एवं महत्वपूर्ण होंगे। श्री सियाराम शरण जी के पत्र तो मेरे पास है परन्तु दद्दा के नहीं हैं। यदि आसानी से उपलब्ध हो सकें तो लिखें। शेष कुशल है।

आपका
वृन्दावनदास

पुनश्च:—

३-४ मार्च को झाँसी में उत्तर प्रदेशीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन का अधिवेशन हो रहा है। आपको पूर्व सूचना मिली या नहीं।

वृन्दावनदास

(४८२)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २१-८-७४

बन्धुवर गुप्त जी।

आपका पत्र मिला। पत्र प्राप्ति के पहिले दिन ही आपको एक पत्र तथा डा० बासुदेवशरण अग्रवाल के पत्र शीर्षक पुस्तक की एक प्रति रजिस्टर्ड बुक-पोस्ट से भेज चुका हूँ। आशा है मिली होगी। मैंने आज ही डा० राजेन्द्र रंजन के० एल० जैन इण्टर कालेज सासनी को आशा के अक आपको भेजने के लिए लिख दिया है। मुझे विश्वास है वे अवश्य ऐसा करेंगे।

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि स्व० गुप्त जी के स्मारक सम्बन्धी आवश्यक कार्यवाही पर विचार किया जा रहा है। आशा है आप स्वस्थ एवं सानन्द हैं।

ब्रजभारती का भाद्र पद अंक छप रहा है।

आपका
वृन्दावनदास

(४८३)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ५-१०-७४

बन्धुवर गुप्त जी ।

कृपा पत्र यथासमय प्राप्त हो गया था । धन्यवाद । मैंने रंजन जी से पुनः कह दिया है कि वे 'आशा' का लोक शास्त्र अंक शीघ्र आपको भेज दें। ऐसा प्रतीत होता है कि उन्होंने भेजा नहीं है, अब पुनः उनसे कहकर भिजवाऊँगा । वे १०, ५ दिन में सासनी से इधर आवेंगे ।

स्वतन्त्रता संग्राम और उसके सेनानी की दो प्रतियाँ प्राप्त हो गईं । पुस्तक की समीक्षा निश्चित रूप से पत्रिका में प्रकाशित होगी ।

पत्रों की प्रतिलिपियाँ करा रहे है और शीघ्र भेजेंगे इस समाचार से अवगत हुआ । शाण्डिल्य जी को लिख दूँगा ।

शेष कुशल ।

आपका
वृन्दावनदास

डा० योगेन्द्रनाथ शर्मा अरुण के नाम

(४८४)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ८-११-७७

बन्धुवर डा० अरुण जी ।

प्राचीन भारत में हिन्दू राज्य की प्रति आचार्य पं. केदारनाथ 'प्रभाकर' सहारनपुर वालों को भेज रहा हूँ । आप उनको पत्र लिख दें ।

बराह मिहिर ग्रन्थ की प्रति अद्यतन मेरे पास नहीं है, उसे भिजवाइये। आप कहेंगे तो उसकी समीक्षा भी कर देंगे ।

मेरे स्वास्थ्य में काफी सुधार है परन्तु चिकित्सक अभी अधिक विश्राम करने का ही परामर्श देते हैं, अतः मथुरा से बाहर भ्रमण को अभी कुछ दिन स्थगित ही रखना चाहता हूँ । आशा है आप स्वस्थ एवं सानन्द हैं ।

आपका
वृन्दावनदास

———

पत्र लेखन पर बाबू वृन्दावनदास के स्फुट विचार-कण

पत्र लेखन एक स्वान्तः सुखाय प्रक्रिया है। जब तक लेखक का मन न होगा वह कभी पत्र न लिखेगा।.........लेखक द्वारा लिखे हुये अपार पत्र संग्रह से उसके व्यक्तित्व का मूल्यांकन हो सकता है जो शायद लेखों द्वारा न हो सके।........मैं विद्यार्थी जीवन से ही पत्र लिखने का अभ्यस्त हूँ।........ दूरस्थ साहित्यिक मित्रों से सम्पर्क पत्र-लेखन द्वारा ही सम्भव था।... ....हिन्दी में पत्र-साहित्य की बड़ी कमी है.........हिन्दी में अनेक विद्वान् अभी ऐसे रह गये हैं, जिनके पत्रों का संकलन होना चाहिये।

(मथुरा, ८-१२-७५, पत्र श्री आंजनेय के नाम)

साहित्येतिहास सम्बन्धी मेरी दो पुस्तकें अधूरी पड़ी हैं।

(मथुरा, २०-३-७५. पत्र डा० अम्बाप्रसाद सुमन के नाम)

मेरी धारणा है कि हिन्दी के साथ अद्यतन न्याय नहीं हुआ है और इसका कुछ दोष अंग्रेजी प्रियता पर आता है। हिन्दी में कोई कमी नहीं है, हमारे देश में ठोस राष्ट्रीय भावना का उदय तो तभी होगा जब यहाँ का जन-जन हिन्दी प्रेमी हो जाय।

(मथुरा, ११-२-७५. पत्र श्री काजी अशरफ महमूद के नाम)

आज से ५००० वर्ष पूर्व भगवान श्रीकृष्ण ने दूरस्थ विदेशी देवता इन्द्र के स्थान पर स्थानीय देव गोवर्द्धन की पूजा का विधान कराया था। श्रीकृष्ण स्वयं जनपदीय संस्कृति के प्रतीक थे।.......जनपदीय भावना को लोक जीवन से पृथक् किया ही नहीं जा सकता।........जनपदीय भावना के उत्कर्ष से छोटे छोटे घटक उन्नति के पथ पर अग्रसर होने लगें तो यह राष्ट्रीय अभ्युत्थान और राष्ट्रीय एकता के लिये एक शुभ चिह्न के रूप में होगा।........जनपदीय भाषाओं का संस्कार करके हमें हिन्दी की शब्द संपदा और अभिव्यक्ति सामर्थ्य बढ़ानी है।........जनपदीय आन्दोलन का वेग अप्रतिहत है।

(मथुरा, ४-२-७५. पत्र पं० कृष्णानन्द गुप्त के नाम)

........हमने हिन्दी सम्वर्धिनी योजना चलायी है। जनपदीय आंदोलन के माध्यम से हिन्दी के भण्डार को भरना है।

(मथुरा, १७-५-६७. पत्र पं० गणेश चौबे के नाम)

मैं चाहता हूँ कि अन्तर्जनपदीय परिषद् को पुनर्जीवित कर उसे सक्रिय बनाया जाय।

(मथुरा, ३-३-६८. पत्र डा० गनेशीलाल बुधौलिया के नाम)

समानशील मित्रों में पारस्परिक मिलने की इच्छा स्वाभाविक है। पारस्परिक सौहार्द्र और सद्भावना से यह इच्छा और भी बलवती हो जाती है।........

(बम्बई, ६-४-६६. पत्र डा० भगवान सहाय पचौरी के नाम)

साहित्यकार के मनोभावों की अभिव्यक्ति का नाम ही साहित्य है, स्थिति के इस सन्दर्भ में स्वयं साहित्यकार साहित्य से भी अधिक महत्वपूर्ण है।

(मथुरा, ३०-१२-७२. पत्र श्री भगवान सिंह सेंगर के नाम)

जनपदीय कार्यकर्ताओं के कृतित्व का लेखा-जोखा इतिहास निर्माण की दृष्टि से अपना विशेष महत्व रखता है........हमें अपनी साहित्यिक धारा का प्रवाह दिखाना पड़ेगा।

(मथुरा, २७-१०-७१. पत्र डा० मलखान सिंह सिसौदिया के नाम)

निःसदेह आप सदृश मित्रों की सद्भावनाएँ ही मेरे जीवन का महान् सम्बल रही हैं।

(मथुरा, ६-६-७५. पत्र श्री यशपाल जैन के नाम)

हमारी संस्कृति महान् है तथा प्राचीनतम भी है। ऐसी बात नहीं कि विश्व में अन्य संस्कृतियों का जन्म ही नहीं हुआ। ईरानियन, वैविलोनियन, मिश्र, रोमन और यूनानी संस्कृतियाँ भी विश्व के अनेक भागों में व्याप्त रहीं।........जो संस्कृति अक्षुण्ण रही वह उन लोगों की ही थी जिनके वंशज आज हम हिन्दू कहलाते हैं। यदि वंशज हिन्दू हैं तो उनके पूर्वज भी हिन्दू ही हुये। ....जब उस काल में मुसलमान और ईसाइयों का अस्तित्व ही न था तो पृथकतावादी थे ही नहीं और परिणामतः सभी वे थे जो मुसलमान और ईसाई कदापि न थे अर्थात् हिन्दू थे।........प्राचीन भारत का इतिहास केवल हिन्दुओं का इतिहास है।........अन्य धर्मावलम्बी तो उस काल में आक्रान्ता के रूप में आये और उनसे उसी स्थिति में निपटा भी गया।........भारतीय तो सब हैं और सब को भारतीय होने का अधिकार भी है परन्तु कुछ लोग यह कहें कि हम तो मुसलमान या ईसाई हैं तो बाकी बचे लोग क्या कहें।........किसी भी देश का इतिहास उसके निवासियों की संस्कृति से भी सम्बन्ध रखता है। संस्कृति का मनुष्य से अविच्छिन्न सम्बन्ध है।

(मथुरा, ४-४-७२. पत्र डा० राजेन्द्र रंजन के नाम)

मेरे हृदय पर तो वैसे ही आपकी, गणेश जी की और जगदीश चतुर्वेदी जी की अमिट छाप है।

पत्र लिखने का एक व्यसन है और यह जरूरी नहीं कि यह प्रत्येक व्यक्ति में हो। (मथुरा, १२-३-७२. पत्र श्री रामरीझन रसूलपुरी के नाम)

अनेक संस्थाओं से सम्बद्ध होने के कारण तथा एक लम्बे अर्से तक सामाजिक सम्पर्कशीलता रहने के कारण बहुत से ऐसे कामों पर भी समय का अपव्यय हो जाता है जिसके लिये अब मेरे मन में कोई रुचि वर्तमान नहीं है। फिर भी आजकल मेरा अधिकांश समय ब्रजभाषा और हिन्दी (जिन्हें मैं एक परिवार समझता हूँ) की सेवा के लिये ही अर्पित है।

(मथुरा, २७-१२-७०. पत्र डा० रामशंकर द्विवेदी के नाम)

हमारे पूर्वज तो सूत्र शैली में विश्वास करते थे पर हम उनके वंशज अनर्गल पाण्डित्य प्रदर्शन को लेखन का मुख्य ध्येय मानने लगे हैं।

(मथुरा, ३१-१-७४. पत्र डा० रामस्वरूप आर्य के नाम)

कार्याधिक्य से पत्र-लेखन में बाधा पड़ जाती है, यद्यपि मैं पत्र-लेखन को आत्मीय सम्पर्कशीलता का सर्वश्रेष्ठ माध्यम मानता हूँ तथा पत्रों को लिख कर और प्राप्त कर एक विशेष आनन्द की अनुभूति करता हूँ।

(मथुरा, १७-७-७२. पत्र श्री हरिश्चन्द्र प्रसाद के नाम)

सभी हिन्दी सेवियों को मैं परिवारी जनों के सदृश मानता हूँ। उनकी हिन्दी सेवा के कारण मेरे मन में इनके प्रति अपार स्नेह है। हिन्दी सेवा को मैं सर्वाधिक पुण्य कार्य मानता हूँ।

(बम्बई, २२-१-७५. पत्र श्री निरंकुश के नाम)

—रमण शाण्डिल्य,

कुछ महत्वपूर्ण तिथियाँ

साहित्यवारिधि बाबू वृन्दावनदास—

जन्म—भाद्र कृष्ण अष्टमी, वि० सं० १९६३ (सन् १९०६ई०)।

स्थान—मथुरा।

शिक्षा-दीक्षा—एस० एल० सी० १९२२ ई०।
आगरा कालेज से बी० ए० १९२६ ई०।
एल० एल० बी० १९२८ ई०।
अग्रवाल शिक्षा मंडलके मंत्रीपद पर आसीन१९३०ई० कन्या विद्यालय मथुरा (अब अग्रवाल डिग्री) कालेज के मंत्री सन् १९३३ से सन् १९५१ ई० तक बाद में अध्यक्ष पद पर आसीन हुए।

साहित्य लेखन—सुधा, माधुरी, विशालभारत, विश्व मित्र, नागरी प्रचारिणी पत्रिका. जनार्दन, म्यूनिसपल गजट, संगठन, चांद, दैनिक नागरिक, गोरक्षण, सरस्वती, नवयुग सन्देश, सैनिक, जागरण, भारती, अमर उजाला आदि पत्र-पत्रिकाओं में अनगिनत लेख, पत्र एवं अन्य रचनायें प्रकाशित।

महत्वपूर्ण पदों पर—ब्रज साहित्य मण्डल मथुरा का अध्यक्ष पद सन् १९६३ ई० से अद्यावधि।

ब्रजभारती का सम्पादन—सन् १६६४ ई० अद्यावधि ।

अन्तर्जनपदीय हिन्दी परिषद् के संयोजक—सन् १६६८ ई० ।

उत्तर प्रदेशीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन के सभापति सन् १६६६ ई० ।

उ० प्र० हि० सा० सम्मेलन के देहरादून अधिवेशन (१६७० ई०) में साहित्यवारिधि से सम्मानित ।

कुछ महत्वपूर्ण अध्यक्षीय भाषण—

उ० प्र० हि० सा० सम्मेलन का १५ वाँ अधिवेशन २३-२४ मई सन् १६७१ को फीरोजाबाद में हुआ, बाबूजी अध्यक्ष बने ।

२७ अप्रैल १६७२, भरतपुर, अ० भा० ब्रज साहित्य मंडल के १६ वें अधिवेशन में अध्यक्ष पद से भाषण ।

३० अगस्त सन् १६७२, मुरादाबाद, उ० प्र० हि० सा० का १६ वाँ अधि०, अध्यक्ष पद से भाषण ।

आचार्य पंडित पद्मसिंह शर्मा स्मृति समारोह एवं अन्तर्जनपदीय परिषद का अधिवेशन (हरिद्वार : १० जून १६७३ ई०) अध्यक्ष पद से भाषण ।

८ मार्च १६७५ : इलाहाबाद, अ० ज० परिषद की बैठक—अध्यक्ष पद से भाषण ।

३० अगस्त १६७५ : मथुरा, अ० भा० जन० परिषद् का अधिवेशन अध्यक्ष पद से भाषण ।

अनेक स्मृति समारोहों, सभाओं, गोष्ठियों, परिचर्चाओं में अध्यक्ष एवं भाषणकर्ता के रूप में उपस्थित होते रहे हैं ।

कृतियाँ—भारतीय संस्कृति के विविध परिदृश्य (सन् १६६८ ई०) ।
प्राचीन भारत में हिन्दू राज्य (६ अप्रैल सन् १६७२ ई०) ।

सम्पादित ग्रन्थ—मार्कण्डेय पुराण (भाषानुवाद) ।
हिन्दी अँग्रेजी विश्वकोष ।

प्रेरक साधक : बनारसीदास चतुर्वेदी अभिनन्दन ग्रन्थ ।
(जन्मदात्री ब्रजभूमि खंड)

आचार्य युगल किशोर चतुर्वेदी अभि० ग्रन्थ ।

एक युग एक प्रतीक (बा० जगजीवनराम अभि० ग्रन्थ के परामर्शदाता सम्पादक)

काव्य नवनीत, वीरवर होरेशस ।

हरिशंकर शर्मा स्मृति ग्रन्थ तथा पं० पद्मसिंह शर्मा स्मृति ग्रन्थ ।

डा० बनारसीदास चतुर्वेदी के पत्र (प्र० सं० ३ जून सन् १६७१) ।

डा० वासुदेव शरण अग्रवाल के पत्र (प्र० सं० १ मार्च १६७४) ।

'चतुर्मुख' (त्रै०, लिलकर, बलिया) वर्ष १२ अंक २ (आचार्य पं० पद्मसिंह शर्मा स्मृति अंक) के विशिष्ट सम्पादक ।

————

डा० रामनारायण शर्मा के नाम

(४८५)

प्रकाश भवन,
मथुरा. १३-३-६६

श्रद्धेय डा० साहिब ।

आपके द्वारा प्रेषित स्व० सत्यनारायण जी की रचना की दो प्रतियाँ ब्रजभारती में समीक्षार्थ प्राप्त हुईं । कविरत्न की रचनायें तो सभी उत्कृष्ट ब्रजभाषा काव्य की अङ्ग हैं । प्रस्तुत रचना भी बड़ी सरस है । यद्यपि यह मत विशेष के खण्डन-मण्डन से सम्बन्धित है तथापि आलोचना में अतीव संयम से काम लिया गया है जो कि स्वर्गीय कविरत्न की शालीनता के अनुरूप है । प्रस्तुत पुस्तिका की समीक्षा आगामी अङ्क में कर दी जायगी । इसकी दो प्रतियाँ पं० बनारसीदास जी चतुर्वेदी फीरोजाबाद तथा दो प्रतियाँ श्री रमेशचन्द्र जी दुबे ११ बी. आफीसर्स क्वार्टर्स जिलाधीश का कम्पाउण्ड आगरा को अवश्य भेजने की कृपा करें ।

कृपा भाव रक्खें ।

आपका
वृन्दावनदास

श्री उदयशंकर जी शास्त्री के नाम

(४८६)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २४-११-७३

मान्यवर शास्त्री जी, प्रणाम ।

डा० वासुदेव शरण अग्रवाल के पत्रों से अद्यतन वंचित रहा । कृपा कर इस पत्र को देखते ही जितने सम्भव हो सकें भेज दें । आशा है आपने अब तक उनका संकलन कर लिया होगा । देखते ही रजिस्टर्ड डाक से भेज दें । अभी ग्रन्थ छप ही रहा है. अब भी आपके पत्रों का समावेश हो सकता है ।

श्री रमेशचन्द्र जी दुबे ने छपी हुई विज्ञप्तियाँ भेजी हैं । आचार्य पं० पद्मसिंह शर्मा की जयन्ती हरिद्वार में मनाने का आयोजन है । १३, १४ अप्रैल को कुम्भ के अवसर पर । एक स्मृति ग्रन्थ का प्रकाशन भी होगा । कृपया स्मृति ग्रन्थ के लिए लेख भेजें तथा उत्सव में सम्मिलित होने के लिये भी आपको अग्रिम निमन्त्रण है ।

डा० रामविलास जी शर्मा को भी लिखूँगा। आशा है आप स्वस्थ एवं सानन्द हैं।

आपका
वृन्दावनदास

(४८७)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ३१-३-७४

मान्यवर शास्त्री जी।

कृपा पत्र आपका यथा समय मिल गया। २३ वें वर्ष के चौथे अङ्क की अधिक प्रति अद्यतन नहीं मिली। शायद भेजने से ही रह गई। आपकी आज्ञानुसार ब्रजभारती के २३ वें वर्ष के तीसरे अङ्क की वाँछित प्रति आपको पृथक् बुक-पोस्ट से भेजी जा रही है। आशा है आप स्वस्थ एवं सानन्द हैं।

आपका
वृन्दावनदास

(४८८)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २०-७-७४

प्रियवर श्री शास्त्री जी।

कृपा पत्र मिला। धन्यवाद।

स्व० मैथिलीशरण जी गुप्त के पत्रों की एक प्रति मुझे अवश्य दें। मैं उनके तथा सियाराम शरण जी के पत्रों को भी छापना चाहता हूँ। जो पत्र आपने छाप दिए हैं उनको पुन. छापना व्यर्थ होगा।

बाद ग्राम के स्थान के सम्बन्ध में आपने बड़ी ठीक बात कही है। मैं उस प्रश्न पर आवश्यक कार्यवाही कराऊँगा। मैंने गोस्वामी बन्धुओं को लिखा है। इस पर अपेक्षित आन्दोलन अथवा पत्र व्यवहार करके अनुकूल वातावरण बनाना होगा।

मैं आज बम्बई जा रहा हूँ। अगस्त के प्रथम सप्ताह में आऊँगा।

आपका
वृन्दावनदास

(४८९)

प्रकाश भवन,
मथुरा. २१-७-७४

मान्यवर शास्त्री जी।

मैं एक मास दस दिन की बम्बई यात्रा के उपरान्त कल प्रातः ही वहाँ से लौटा हूँ। मेज पर आपके द्वारा प्रेषित चिट तथा ब्रजभारती का वर्ष २३ का अंक ३ मिले। आपने ब्रजभारती वर्ष २३ अंक २ माँगा था वह पृथक् डाक से भेजा जा रहा है।

आशा है आप स्वस्थ एवं सानन्द हैं।

आपका
वृन्दावनदास

(४९०)

प्रकाश भवन,
मथुरा. १३-१२-७४

प्रियवर शास्त्री जी।

प्रणाम।

कृपा पत्र यथा समय प्राप्त हो गया था। धन्यवाद।

चिह्नित पुस्तकों की सूची मिल गई तथा पुस्तकों का बीजक तीन प्रतियों में भेजा जा चुका है। अभी बिल्टी नहीं आई है। उसी बण्डल में बनारसीदास चतुर्वेदी अभिनन्दन ग्रन्थ की एक प्रति डा० रामविलास जी शर्मा को दिये जाने हेतु भेजी जा रही है, कृपा कर उसे उनको दे दें।

सूर अध्ययन सामग्री तथा बाँछित सूर सेमिनार की सामग्री मुझे अभी तक नहीं मिल पाई है। पुराना मण्डल तो खण्डहर था, उसमें कुछ था ही नहीं, अतः मण्डल के जरिये से नहीं अन्य किसी स्रोत से आपकी चीज मिलेगी, मैं निरन्तर प्रयास रत हूँ, आपको अवश्य भिजवाऊँगा। मुझे रंजन जी की प्रतीक्षा है जो उसे जवाहरलाल जी से निकलवा कर ला सकेंगे। आपको कुछ दिन उसकी प्रतीक्षा करनी पड़ेगी। मैंने कई व्यक्तियों से कहा है।

शेष कुशल है।

भवदीय
वृन्दावनदास

पं० केदारनाथ प्रभाकर के नाम

(४६१)

प्रकाश भवन,
मथुरा. ८-११-७७

मान्यवर आचार्य जी, प्रणाम।

डा० योगेन्द्रनाथ शर्मा अरुण ने मुझे लिखा है कि अपनी कृति प्राचीन भारत में हिन्दू राज्य की एक प्रति मैं अविलम्ब आपकी सेवा में भेज दूँ। अतः उनकी इच्छानुसार एक प्रति आज ही रजिस्टर्ड बुक-पोस्ट से सेवा में प्रेषित की जा रही है।

आपने साहित्येतिहास, ज्योतिष तथा शास्त्र की अनेक विधाओं पर गम्भीर मनन और चिन्तन के उपरान्त महत्वपूर्ण सामग्री हिन्दी जगत को प्रदान की है। हम हिन्दी सेवी जन मातृभाषा पर किये हुये आपके इस उपकार को कभी नहीं भूल सकते। आपकी हिन्दी-सेवा महनीय है, उपकृत हिन्दी संसार आपका चिरऋणी रहेगा।

मुझे डा० अरुण से ज्ञात हुआ कि 'कालविज्ञान' नामक महत्वपूर्ण पत्र का आप सम्पादन कर रहे हैं। कृपा कर पत्र की प्रति मेरे अवलोकनार्थ भेजने की कृपा करें।

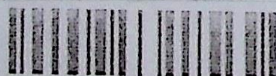
आपकी कृति 'वराह मिहिर स्मृति ग्रन्थ' को देखने की भी उत्कट इच्छा है। कहाँ से उपलब्ध होगी कृपा कर लिखें।

'ब्रजभारती' नामक त्रैमासिक पत्रिका लगभग १२ वर्ष तक निरन्तर मेरे सम्पादकत्व में निकल चुकी है। उसके ४५ अंक साद्यन्त मेरे पास उपलब्ध है। इस पत्रिका के अंक आपके पास हैं या नहीं। यदि न हों तो कृपया लिखें मैं समस्त प्रकाशित अंक आपकी सेवा में अर्पित करना चाहता हूँ।

कृपा भाव बनाये रहें। योग्य सेवा से सदैव सूचित करते रहें।

आपका
वृन्दावनदास




185467

वास्तव में लक्ष्योन्मुखी व्यक्तियों के जीवन में एक विकट बड़वानल जलती रहती है जो उन्हें विश्राम करने ही नहीं देती, जिनके लिए सोद्देश्य कर्म मुख्य और विश्राम गौण होता है वे व्यक्ति महापुरुष की श्रेणी में आते हैं। इस अर्थ में बाबूजी भी महत कार्य में संलग्न महापुरुषों की सीमा-रेखा को स्पर्श कर लेते हैं।

—(डॉ०) मलखान सिंह सिसौदिया

बाबू वृन्दावन दासजी को यदि यह कहें कि उन्होंने लोक साहित्य को संरक्षण देने में अपना समूचा जीवन लगा दिया तो कोई अत्युक्ति न होगी।

—राम नारायण उपाध्याय

बाबूजी का 'पांडित्य' यास्क की कसौटी पर खरा उतरता है। आधुनिक गद्य-लेखकों में वह अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं।

—केशवदेव मिश्र 'कमल'

प्रशस्त विद्वता, गंभीर ज्ञानगरिमा, निस्पृह कर्मनिष्ठ, गहन भावुकता, अपरिसीम सहृदयता आदि महत् गुण जिनके व्यक्तित्व में मूर्त्तिमन्त्र हैं तथा देश समाज और साहित्य की यथार्थ सेवा में निरन्तर संलग्न रहना जिनके जीवन का उद्देश्य है, वे हैं व्रजविभूति साहित्य वारिधि बाबू वृन्दावन दास हमारे राष्ट्र के एक गौरवरत्न और हमारे साहित्य के लिए एक वरेण्य वरदान।

—श्याम सुन्दर खत्री

Printedby — Graphi[illegible] Printers, Mathura

एक साहित्य सेवी व्यक्तित्व-बाबू वृन्दावन दास

(डा० रमेश आंगिरस, एम. ए. पी-एच. डी., हिन्दी)

साहित्य मनीषी बा० वृन्दावनदास के साहित्यिक जीवन की झाँकी वस्तुतः कर्मण्य साहित्यिक सेवा रत व्यक्तित्व का विवरण है। यों तो उनके कर्मण्य जीवन के विविध आयाम हैं किन्तु मौन साधक के रूप में उनका साहित्यिक व्यक्तित्व उनकी कृतियों में मुखर होता है। कथनी की अपेक्षा करनी के पक्षपोषक बा० वृन्दावन दास आज हिन्दी सेवी तीन प्रमुख संस्थाओं अर्थात् अखिल भारतीय ब्रज साहित्य मण्डल, उत्तर प्रदेशीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन और अन्तर्जनपदीय परिषद के प्रमुख कर्णधार हैं। हिन्दी और ब्रजभाषा दोनों को एक दूसरे की सहायक और पूरक मानने वाले बाबूजी दोनों की सेवा में तन मन धन जीवन प्राण और प्रण से संलग्न हैं।

आज के बाबूजी का पूर्ण साहित्यिक व्यक्तित्व सामान्य लेखकों की भाँति छोटे-छोटे लेखों आदि के लेखन से ही हुआ है। बाबूजी के साहित्यिक जीवन का प्रारम्भ हिन्दी और अँग्रेजी समाचार पत्रों के लेखन से प्रारम्भ होता है। अँग्रेजी के लीडर हिन्दुस्तान टाइम्स आदि से अपने लेखों के लेखन का प्रारम्भ कर हिन्दी के सैनिक, अमर उजाला, चाँद, माधुरी, सरस्वती, सुधा, नागरी प्रचारिणी पत्रिका, ब्रज भारती, चतुर्मुख, विशाल भारत, अग्रवाल हितैषी, ज्ञानदा कल्याण, प्रभा नवयुग सन्देश, विश्वमित्र, शंकराचार्य उपदेशामृत, ब्रज सुषमा, जनार्दन, संगठन आदि में अनवरत रूप से अद्यावधि लिखते रहे हैं।

पत्रिकाओं का सम्पादन—यों तो बाबूजी ब्रजभारती पत्रिका का सम्पादन ग्यारह वर्षों से निरन्तर अकेले ही करते रहे हैं पर ब्रजभारती, चतुर्मुख, शंकराचार्य उपदेशामृत आदि एकाधिक पत्रिकाओं पर सम्पादक के रूप के उनका उल्लेख किया जाता रहा है। ब्रजभारती के तो वे त्राता हैं। लगभग ग्यारह वर्षों से निरन्तर समय पर ब्रजभारती का प्रकाशन करना उनका व्यासंग रहा है। प्रारम्भ से अब तक प्रकाशित ब्रजभारती के लगभग अर्धांश का सम्पादन बाबू वृन्दावन दास जी ने किया है यह स्वयं में एक गम्भीर और गुरुतर तथ्य है। सम्पादन के मध्य आने वाले समस्त कष्टों को सहन करते हुए आज भी वे इस कार्य को सोत्साह करते हैं।

सम्पादित ग्रंथ—बा० वृन्दावन दास जी ने अनेक ग्रन्थों का सम्पादन किया है तथा अनेक ग्रंथों का प्रणयन भी किया है। आपके द्वारा सम्पादित ग्रन्थ (१) वीरवर होरेशस, (२) मारकण्डेय पुराण (३) काव्य नवनीत, (४) इङ्गलिश हिन्दी डिक्शनरी हैं तथा विगत पाँच वर्षों की अवधि में आपने (१) भारतीय संस्कृति के विविध परिदृश्य (२) प्राचीन भारत में हिन्दू राज्य (३) डा० बनारसी दास चतुर्वेदी के पत्र (४) डा० वासुदेव शरण अग्रवाल के पत्र (५) सूर सागर नामक ग्रन्थों का सम्पादन एवं प्रकाशन किया है।

अभिनन्दन ग्रंथ—जिन अभिनन्दन, स्मृति ग्रथों में श्री वृन्दावन दास जी सम्पादक मण्डल में हैं उनकी तालिका नीचे दी जा रही है—

(१) प्रेरक साधक (डा० बनारसी दास चतुर्वेदी अभिनन्दन ग्रंथ)
(२) एक युग एक प्रतीक (बा० जगजीवन राम अभिनन्दन ग्रन्थ)

(३) स्वामी रामानन्द शास्त्री अभिनन्दन ग्रन्थ
(४) युगल किशोर चतुर्वेदी अभिनन्दन ग्रन्थ
(५) आचार्य पद्मसिंह शर्मा स्मृति ग्रन्थ

साहित्यिक समारोह—साहित्यिक समारोहों के आयोजक के रूप में आपकी प्रसिद्धि अत्यधिक हैं। ऐसे कार्यों के लिए आप तन मन धन से तत्पर रहते हैं। आपके द्वारा आयोजित समारोहों की सूची नीचे दी जा रही है—

(१) कवि रत्न सत्य नारायण अर्द्धशताब्दी समारोह
(२) महाकवि ग्वाल शताब्दि समारोह
(३) कविवर हरिऔध समारोह
(४) शिशुपाल सिंह स्मृति समारोह
(५) आचार्य पद्मसिंह शर्मा स्मृति समारोह
(६) श्री हनुमन्तसिंह रघुवंशी स्मृति समारोह

पुस्तक समीक्षा के रूप में मौखिक रूप से भी पुस्तकों की समीक्षाएँ की हैं। आपकी कुछ समीक्षाओं का बिवरण नीचे प्रस्तुत है।

सुनयना (नाटक), भीष्म (खण्ड काव्य), नचिकेता, सेवक साधक (अभि० ग्रन्थ) गाँधी चरित माला, निहाल दे सुल्तान (लोक गाथा) मूल्यांकन (आलो०), जुगलपद वन्दन (पद संग्रह), विकास की एक धारा, राष्ट्र मङ्गल (काव्य संग्रह), बाजे पायलिया के घूँघर, माँटी हो गई सोना, क्षण बोले कण मुस्कुराये, आकाश के तारे धरती के फूल, दीप जले शङ्ख बजे, सिंहराज, ब्रज सखुन तुर्रा, श्रीमद भगवत गीता, श्री गोविन्द विनोद, समाजवाद से सावधान, मेरा गाँव मेरा देश, कविता संग्रह (श्यामसुन्दर खत्री) कोशिकायन, धरती के स्वर, व्यूहंजयी, माण्डवी, विप्रवीर परशुराम, मधुपुरी और रावण का विक्षोभ, कैकेयी का अन्तर्द्वन्द, छत्रप्रकाश, तुलसी मानस सन्दर्भ, प्रगतिका, बालकृष्ण भट्ट व्यक्तित्व और कृतित्व (शोध प्रबध)

इनके अतिरिक्त लोक साहित्य, गुरुदेव, रसवन्ती, साप्ताहिक भारती, उदयन, विश्वभारती, ज्ञानदा, हिन्दी स्मारिका, अङ्गमाधुरी बुन्देल भारती आदि सावधिक पत्रिकाओं की समीक्षा भी समय-समय पर की है।

रेखा चित्र—रेखाचित्र लेखन में बाबूजी का मन अत्यन्त लगता है, वस्तुतः यह बाबूजी की मन पसन्द विधा है। आपने लगभग तीन दर्जन रेखाचित्र लिखे हैं जो यत्र-तत्र प्रकाशित हुए हैं, इनकी विवरणी नीचे प्रस्तुत है। बाबूजी के प्रतिपाद्य महानुभाव, साहित्यज्ञ या किसी विषय के उद्भट विद्वान रहे हैं। उनके रेखाचित्रों का संग्रह शीघ्र ही प्रकाशित हो रहा है। सूची इस प्रकार है।

१. सेठ गोविन्द दास
२. कविवर हरदयालु सिंह
३. श्री रूप किशोर जैन गंगेरवाल
४. पं० जवाहर लाल चतुर्वेदी
५. श्री हनुमन्त सिंह रघुवंशी
६. आचार्य पद्मसिंह शर्मा
७. भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र
८. राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर'
९. श्री भगवान दत्त चतुर्वेदी
१०. डा० बनारसी दास चतुर्वेदी
११. लक्ष्मी नारायण सुधांशु

१२. रा० ब० श्री जमुना प्रसाद
१३. मैथिली शरण गुप्त
१४ श्री युगल किशोर चतुर्वेदी (जयपुर)
१५. वैद्यरत्न श्री सोहन लाल जी पाठक
१६. श्री शिव प्रकाश जी
१७. ज्यो० पं० शिवराम शास्त्री
१८. कृष्णानन्द गुप्त
१९ संगीत सम्राट गणेशी लाल जी
२०. श्री हृषीकेश चतुर्वेदी
२१. अमृत ध्वनिकार श्री रामलला 'कवि'
२२. श्री गङ्गाशरण सिंह
२३. श्री सुधाकर पाण्डे
२४. श्री सत्य नारायण कवि रत्न
२५. श्री प्रभात शास्त्री
२६ श्री सोहन लाल द्विवेदी
२७ श्री विजयेन्द्र स्नातक
२८. श्री कृष्ण दत्त पालीवाल
२९. डा० पद्मसिंह शर्मा कमलेश
३०. श्री अमृत लाल चतुर्वेदी

ब्रज और ब्रज साहित्य सम्बन्धी रेडियो वार्ताएँ बाबूजी बड़े परिश्रम से तैयार करते हैं जिनका आधार तथ्य परक ठोस सामग्री होता है। तालिका इस प्रकार है।

१. सूर साहित्य में रास तत्व
२. ब्रज के महाकवि लाल बलवीर
३. ब्रज में होलिका पर्व
४. ब्रजभाषा का क्रमिक विकास और आधुनिक स्वरूप
५. मानस के पुरुष पात्र और श्री दशरथ
६. अकबर का ब्रज साहित्य प्रेम
७. बङ्गला साहित्य और ब्रज साहित्य
८. ब्रज साहित्य में मेघ वर्णन
९. ब्रज भाषा काव्य में ग्रीष्म वर्णन
१०. ब्रज संस्कृति में नाग पूजा
११. ब्रज साहित्य प्रेमी दरबार
१२. ब्रज के वन खिदिर वन और लोह वन
१३. ब्रज जीवन में परम्परागत व्यवसाय
१४. गुरु नानक देव के जीवन सन्देश
१५. ब्रज क्षेत्र में बापू जी का प्रभाव
१६. भक्त गाथा
१७. आज का ब्रज, प्रमुख उद्योग धन्धे, छपाई उद्योग
१८. राष्ट्रीय स्वतन्त्रता आन्दोलन
१९. लाडली जी का मन्दिर, बरसाना
२०. गप्प गोष्ठी
२१. पुस्तक समीक्षा (त्रैमासिकी)
२२. पुस्तक समीक्षा (त्रैमासिकी)
२३ पुस्तक समीक्षा (त्रैमासिकी)
२४. पुस्तक समीक्षा (त्रैमासिकी)
२५. राष्ट्रीय एकता के मूलाधार
२६ भोजन एक समय-प्राचीन भारत में
२७. वे दिन, वे लोग-पुरानी स्मृतियाँ वे विवाह के उत्सव
२८. सहकारी सङ्गठन-नये पुराने सुझाव
२९. सहकारी आन्दोलन-उपलब्धियाँ
३०. सहकारिता में मेरे अनुभव
३१. सहकारिता का महत्व
३२. गाँवों में सहकारी समितियों के लाभ और सुझाव
३३. सहकारिता में मेरे अनुभव

इनके अतिरिक्त और भी वार्ताएँ हुई हैं।

ब्रजभारती की सम्पादकीय टिप्पणियाँ—ब्रजभारती की सम्पादकीय टिप्पणियों के माध्यम से वा० वृन्दावन दासजी सामयिक साहित्यिक और राष्ट्रभाषा सम्बन्धी गति विधियों पर जहाँ प्रकाश डालते हैं वहाँ उनमें बाबूजी के मौलिक सुझाव भी होते हैं।

साहित्यिक संस्थायें, देश विदेश के विद्वान्, साहित्यिक समारोह, दिवंगतों को श्रद्धाँलियाँ और उदीयमानों के प्रति सदाकांक्षायें आदि विषयों को उनकी टिप्पणियाँ अपनी क्रोड में लिए रहती हैं।

संस्मरण और साहित्यिक सेवा मूल्यांकन रेखा चित्रों की भाँति बाबूजी की प्रियविधा है। कतिपय उल्लेखनीय संस्मरण निम्नलिखित हैं—

१. कृष्णानन्द गुप्त
२. कुंवर हनुमन्त सिंह रघुवंशी
३. सत्यनारायण कविरत्न
४. पं० सत्यनारायण शर्मा 'लोक कवि'
५. डा० बनारसी दास चतुर्वेदी
६. आचार्य जीवन दत्त शर्मा
७. नाथूराम शंकर शर्मा
८. ला० कुंजीलाल अग्रवाल
९. स्व० डा० हरि शकर शर्मा
१०. साहित्याचार्य डा० श्यामसुन्दर बादल महोपाध्याय

नवीन लेखकों के प्रोत्साहन दाता—वा० वृन्दावन दास जी के ब्रजभारती के सम्पादन में यह विशिष्टता है कि जहाँ वे पुराने या उच्चकोटि के लेखकों को महत्व देते हैं वहाँ वे नई पीढ़ी के लेखकों को चाहे वे लेखक के उच्चस्तर तक न भी पहुँच पाये हों प्रोत्साहित करते हैं। अनेक बार तो उन्हें ऐसा भी कहते सुना गया है कि यह बहुत उत्साही युवक है यदि प्रोत्साहन मिला तो अच्छा लिखने लगेगा। उनका मत है छपास का रोग तो प्रत्येक नवयुवक को होता है। पर सर्वतो भावेन वे पत्रिका का स्तर बनाये रखने के लिए उच्च स्तर की सामग्री भी अनिवार्य रूप से रखते हैं। विगत आठ नौ वर्षोंके उनके द्वारा सम्पादित अङ्कोंसे देखा जा सकता है कि प्रत्येक अङ्क में प्रथम, द्वितीय, और सामान्य श्रेणी के लेख होते हैं सामान्य लेखों को पत्रिका में प्रकाशित करने का उद्देश्य 'बाबूजी' के शब्दों में नवीन लेखकों या उदीयमान लेखकों को प्रोत्साहन देना होता है। सारे भारत के उदीयमान लेखक बाबूजी की सहृदयता के पात्र बनते हैं तभी ब्रजभारती में कोई लेख दक्षिण भारतीय लेखक का होगा तो कभी किसी मुस्लिम लेखक का, कभी बिहार के लेखक का होगा तो कभी राजस्थान या मध्य प्रदेश के लेखक का। उदीयमान लेखकों को प्रश्रय देकर उन्हें लेखन के प्रति उन्मुख करना आपकी साहित्यिक गतिविधि का विधायक पद हैं।

साहित्यिकता से ओतप्रोत वाग्मिता—साहित्य के नेता के गुण बाबूजी में विद्यमान हैं। एक सरस हृदय साहित्य श्रोता के रूप में उनकी साहित्यिक अभिरुचि जहाँ दर्शनीय और आदर्श है वहाँ साहित्यिक भाषण कर्त्ता के रूप में उनकी वाणी का अजस्र प्रवाह पार्वत्य प्रदेश की नदी की भाँति वेग से गतिमान रहता है। साहित्यिक सूचनाओं से अनुप्राणित उनके भाषण टेपांकित करने योग्य होते हैं।

ब्रजभारती के सुख्यात सम्पादक वा० वृन्दावनदास जी का अभिनन्दन वस्तुतः एक कर्मण्य एवं निस्पृह साहित्य सेवी की अभिनन्दन है। हिन्दी साहित्य की पत्रकारिता के क्षेत्र में बाबूजी ने जो यश अर्जित किया है यह उनकी साहित्यिक रुचि, दत्तचित्तता तथा मनोयोग का सुफल है। ब्रजभारती के सम्पादक वा० वृन्दावन दास जी का हार्दिक अभिनन्दन।

❊ ★ ❊